तैं सो गुन लियो । साम्यभाव अमृत रसपीए ॥ तिनके सिष्य अल्पधी धार। मनसुख सिध संग्या विस्तार। तिन इइ सिखरमहातम ग्रन्थ । भाषा कियो जांनि सिवपंथ॥ * दोहा *

सब्दकोश अरुन्याय के। तर्क छंद लंकार। प्यंमल काव्य प्रबंध श्रुति। पढ्यो न एको सार। अक्षर मात्र सब्द पद। अंश बंध जो होइ। पढ़ो सुनौं तुम शुद्ध करैं। दोश न दीजो कोय। धर्म्म ध्यांन साधन निमत। भव्य जीव हित जानि। सिखरमाहातम भाषा कियो। नहि विद्या अभिमान॥ बांनवेद शसिगये। विक्रमार्क तुम जांन। अस्त्र निशित दशमी सु गुरु। ग्रंथ समापत ठान। भू रवि शशि सुमेर सम आयु ग्रंथ की होइ॥ पढैं पढावैं सुनहिं जे। सिवपद पावैं सोय॥

इतिश्री काष्ठा संगे लोंहाचार्य विरचंत तीर्थमहातमेखुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुद्ध सागरेण वरणनं महावीर चरित्र संपूर्ण ॥२५॥

श्री रस्तु कल्यांणमस्तु शुभं भूयात् । बांचैं पढैं त्यानैं मंगल दाता शुभ होइ। संपूर्ण लिष्यौं मिती फागण शुक्ला ३ । सम्वत १९४१ का॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥

# * भूमिका *

अत्यंत हर्ष का विषयहै कि आजदिन आप सज्जनों के सन्मुख वही श्री बृहत् सम्मेद शिखर महातम ( श्रीमत् श्री आचार्य लोहाचार्य कृत जिसे भाषा छंदोबंदमें श्री ब्रह्मचारी मनसुख सागर जीने रचाहै ) नामका ग्रंथ उपस्थित करता हूं जिसके सुनने तथा पढ़ने की लालसा आप लोगों के बहुत दिनोंसे लग रहीथी वह मनोरथ आपका आज दिनपूरा होगया क्योंकि इस ग्रंथ में प्रत्येक तीर्थंकर के गर्भ कल्याणक से लगाय निर्वाण कल्याणक तकका वर्णन स्पष्ट रीतिसे कियाहै यह सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेद शिखर सब तीर्थोंका राजा समझिये क्योंकि यहांसे पूर्व कालमें अनंतानंत चौबीस तीर्थंकर तथा मुनीश्वर इसी पर्वत से मोक्ष प्राप्ति हुयेहैं और आगे (भविष्य) में जो अनंतानंत तीर्थंकर होवेंगे वहभी इसी पर्वतसे मोक्षप्राप्तकरेंगे परन्तु वर्त्तमान कालमें बीस तीर्थंकरही इस सम्मेद सिखरजीसे मोक्षगये हैं क्योंकि ऋषभदेव कैलास पर्वतसे बास पूज्य चंपापुरसे नेमिनाथ गिरनार पर्वतसे महावीर पावापुरसे और शेष बीस तीर्थंकर सम्मेद शिखर[३]सेही मोक्षगयेहैं परन्तु[४] यह दोष कालकाहै कि अनंतानंत कोडों[२०] कोड़ी उत्सर्प्पिणी काल व्यतीत होनेपर कोई ऐसा काल आजाताहै जिसमें इसनियमका उलंघन होजाताहै अर्थात् उसके प्रभावसे तीर्थंकरों का निर्वाण अन्य२ स्थानसे होजाताहै ऐसे कालको हुंडा सर्प्पिणी कहतेहैं इसमें आप कुछ संदेह न करें क्योंकि यथार्थमें चौबीस तीर्थंकरोंका निर्वाण भूमिसम्मेद शिखरहीहै—

यह क्षेत्र बंगाल प्रान्त के जिला हजारी बाग के ग्रीडी स्टेसन से ९ कोस चलकर मधुबन मुकामपर उपस्थित है तथा ईसरी स्टेसनसे ७ कोस चलकर है इस सम्मेद शिखरसे अनंतानंत तीर्थंकर व मुनी मोक्ष पधारे हैं इस का कंकड़ २ पूजनीकहै इस तीर्थ राजके दर्शन मात्रसे अधिक संसारमें नहीं भटकना होता उनचांस[४०] भवलेकर पचांस

में भव में अवश्यही सिद्धस्थान में जाकर अजर अमर अविनासी सदा जागती ज्योति होकर अचल रहता है इसके सिवाय यात्रा करने वाला नरक तिर्यंच गति में तथा स्त्री पर्याय में भी जन्म नहीं लेता ऐसा नियम है अगर इस ग्रंथ में किसी मुकामपर किसी प्रकार की त्रुटिहो उसे विद्वज्जन सुद्ध कर पढ़ेंगे इसलिये ऐसा महातम इस तीर्थराजका जानकर प्रत्येक गृहस्थी भाई इस ग्रंथ की एक २ प्रति अवश्यही अपने पास रक्खेंगे

निवेदक क्षमाप्रार्थी
रघुनाथप्रसाद जैन पद्मावती पोरवाल
ऐत्मादपुर (आगरा)

## सब से पहिले इसको पढिये

**पाठक महाशयों?**

यह आपका पवित्र धर्म शास्त्र है, हस्ता लिखित ग्रन्थों की समान आपको इसका विनय नमन पूजन इत्यादि करना उचित है क्योंकि जिनवाणीपना दोनों में समान है यदि आप ऐसा न करेंगे तो हम समझेंगे कि आप जिन वाणी के महत्व का विनय नहीं करके केवल रुपियों काही विनय करते हैं यदि ऐसा करेंगे तो आप अविनय संबंधी दोष के भागी होंगे

मिलने का पता
पं० मूलचंद जैन
तथा
बा० रघुनाथ प्रसाद जैन

* ॐनमः सिद्धेभ्यौनमः श्रीजिनायनमः *

# अथ शिखर माहात्म्य लिख्यते

(छप्पै) श्रसंसेवितचरण कमलजुग सबमुखलाइक । श्री शिवलोक विलोक ज्ञानमयहोत सुनायक ॥ अनमितसुख उद्योत कर्म्म वैरी घनघाइक । ज्ञानभांन परगास जास पद सवसुख दाइक ॥ ऐसेमहंत अरिहंत जिनसेवहु निशिदिन भावसौं । पावो प्रमांन अविचलसदन बीतराग गुनचावसौं (दोहा) अर्हंत प्रभुकौं सुमरिकैं सिद्धचरण चितलाय । अष्टकर्म मलत्यागिकैं अष्टमहागुनपाय (सवैया) ज्ञानवरणी कर्म के गयेतैंसबज्ञान होतदर्शना वरणी गयेतैं पटद्रव्यपेखिए । आयुकर्मनाशे अवगाहन सुथिर होतनम कर्म्मनाश तैं अमूरतीकदेखिए ॥ बेदनी क नासै ।निरबाध गुनहोत सारमोहनीके नासैं शुद्धचारित विशेखिये । गोत कर्म्मनाशै तैंअगुरल युगुन होतअंतराय नासै तैंअनंत बीर्य्यलेखिये [दोहा] पंचाचारक्रियाधरैं गुन षटतीस प्रवान । सोआचारिजनमन तैं पावैं पदनिर्वान ॥ पंचवीसगुन जेधरैंपढैं पढ़ावैंसार । उपाध्याय मुनि मनवसौ होहु सुमतिदातार नगनादिगंबर जेरहैं बसुबीस गुनधार · सौसुसाधु प्रनमौंसदा पाउ भवदधपार॥ ये पांचूपद सुमरिकैं बंदौं सारदमाय । जाप्रसाद बुध होयमुझ कहौं शिखर गुनगाय (सवैया) परमपुनीत हिमभूधर प्रगट भई सकल जगतजनपय नाशकरनी । एकादस अंगजु ओउपंगहैं चारिदस द्रव्यषटतत्व सातधारारूप बरनी ॥ बचन विलास भाश भाशत अमल जाकैं लौकालौकलौकियत शोक सबहरनी ॥ ऐसीजिन बांनी भव्यजीवनकें मनमानी पारवेकौं एकशुभतरनी (दोहा) नमस्कारकरि सरस्वति गण धर सीसनवाय । पद्मनंदि मुनि आदिगुर परणमों संवबरदाय ॥ लोहाचारिज मुनिकही प्राकृतसंस्कृत

रूप। काल दोष बुधि हीनअति भाषा रचीं अनूप॥ शिखरमहातम गुनप्रचुर ममेमेधा अति हीन गुरु प्रशाद बर्ननकरौं भगत भाव बश हीन [चौपाई] जंबूदीप दीपहैं सार। लखजोजन ताको बिस्तार॥ मध्यसुदर्शनमेरु प्रधांन। महिमां कौं कवि करइबखान पंद्रह कर्मभूमिजेसार। जिनपतिउपजैं सुखदा तार॥ सुरपाति जिन पाति कौं लेजाय। सहसअठोतर कलशढराय॥ अष्ट प्रकारी पूजाकरैं। जौजै नंदी बृद्धिउच्चरैं॥ सोंसुमेरगिर सौंहैसार। बरनन करत होइबिस्तार॥ ताके पूरब पश्चिम जांन। क्षेत्रबिदेह महा सुखदांन॥ ऐरावत उतरि दिशिकहा। भरत क्षेत्र दोनो दिशिलहा॥ पंचसतक षटबीसप्रवांन। जोजनकला रसाधि+जांन। तहांखंडषट सौंहै सार। आरज खंड मोक्षदातार। जीवअनारजे उपजैं तहां। खंडमलेक्षजो बरतैं जहां। आरजमैं जिय आरज होय। कर्मकाटि पहुचै शिवलोय। मागध नांम देसतहां बसै। अमर खंडकासो भालसैं। परबतपांच अधिकशोभत। नरनारी जनमन मोहंत। बिपुलाचल बिभारागिरदोइ। रत्नसुवर्णउदय गिर होइ। राज गृहीनगरी सुविसाल। बनउपबन सौंहैगुनमाल। राजकरै श्रेणिकवर भूप। न्याय नीति अतिधर्मसरूप पटरानितसुसुभ चेलनां। सत्यसरूप शील गुनवनां॥ जैनधर्ममें आति परबीन। गुणसम्यक्त सहित अमली न॥ जिन पूजावसु बिधि जे करैं। सुगुरसेव हिरदै में धरैं॥ दांनचतुर बिधिनिति प्रतिदेइ। गुनजनकौ गुन गाहि लेइ॥ दंपति सुखभोगैं सुभनीति। पालै प्रजाअहनिस प्रीति [ दोहा ] रितुबसंत सुखदाइनी आई परम पुनीति। बनउपबन फुलसितभएलीएमद नरसरीति (चौपाई) राजा तबमन हरषित भयौ। बनक्रीडाकरनैं चित दियौ॥ रानी आदि सकल परिवार। पुरजन मनहर्षैं अधिकार। बनमैं जायजोकीड़ाकरी जिनपूजा हिरदै में धरी॥ बसुदिन बसु विधि मनहरषाय। नंदी सुरपूजामनलाय [ दोहा ] जिन अरचै आनंद धरै बहुत भगत गुनगाय। रानीमन हरषित भई पुन्यअनल उपराय (चौपाई)

बनहीमें भोजनउपजाय। व्यंजन बहुतकीये हरषाय ॥ राजाद्वारापेषण करैं। मुनि आगमन हियमे धरैं पुन्य उदैंआइमुनि राज भवदाधि तारनतरन जिहाज ॥ तीन लोक मैं दुर्लभ होय। पुन्य उदैं पावैं नरसोय तिष्ट तिष्ट मुख सुं उचरैं। पड़ेगाहन विधिवत विधि करैं॥ नौधा भगति हीए उपजाय। सातौं दातागुन जुतराय॥अंतरायगत भोजन दीयो। पुंन्य कोस बहु शंचै कीयो॥ असैं निधि मुनि बोले जबै। जैजैकार कीयो सुरतबैं॥पुनि अस्तुति करि कैं नरराय। श्रीमुनि थापिसुमस्तक नाय ॥ धर्म्म बृद्धमुनिवर तबकही शिव सुख संपति कारण सही ॥ नरपति कहै नायनिज शीस। धर्म सरूप कहौ जगदीस ॥ बिनकारन तुम वीर समान। हितउपजावन सबसुखखान [ दोहा ] मुनि मुखतैं वानीखिरी हंस अंस रसरूप। सुर्तपुटकरि मनलायकै पीवैं श्रेणिकभूप। (चौपाई) धर्म अनेक एक प्रकार। जिनबांनी मैंबहुबिंस्तार॥ श्रावक धर्म्मप्रथम इहसार। सोअनेक सुभशांचनहार॥ गुनइकबीस प्रथम अनुसरैं। कर्म नशकारनमनधरैं॥ जैन संघसौंराखैं प्रीति। निजअनभौकी धारैंरीति॥ षटप्रकार गृहदोष निवारि छहौं कर्मनिति प्रति अवधार॥ दर्शन जुत जोजपतप करैं। सो अनेक भैपाति गहरै॥ अथ गृहके षट्दोषबर्नन श्लोक ॥ खंडनी पेषनी चूल्ही। उदकं भीसमर्ज्जनं। पंचसून्यगृहस्थस्य। षष्टं द्रब्यमुपार्ज्जनं॥ षटकर्मश्लोक॥ देवपूजगुरू पास्ति स्वाध्याय संयमंतप। दानश्चेति गृहस्थान। षटकर्म्मानिदिने दिने॥ (दोहा) त्रेपन विधि कीजे क्रिया आतम सुख हितहेत। सागारीरुचि धारि कैं अविचल सिवपदलेत॥ त्रेपन क्रियागाथा। गुनबयत वसम पडिमा। दानंजल गालंनच अनयामियं। दंशननान चरितं। किरियाते बनसावया मनिया॥ कुंडलिया॥ बरनै बसु बिधि मूलगुन बारहब्रत अवधार द्वादसबिधि तपआदरैं समगुनएक विचार। समगुनएक विचारसार प्रतिमा एकदस। दानचारि प्रकार और जलगालनकीजस। दर्शन ज्ञानचारित्र रात्रि भोजनपरहरनै। एत्रेपन बिधि

कही सही जिनपति नैवरनै । [चौपाई] धर्म रूपक्रिया सबजांन । सुभक्षेत्र सुनि मिति परमान ॥ तीर्थंकर के बिंब भराइ करे प्रतिष्ठा मनहरषाइ । जिनपूजा बहु बिधि बिस्तरै। चारि प्रकार दांन नितिकरैं ॥ जिन शिद्धांत लिखावैंसार । पढ़ैं पढ़ावैं करैं विचार ॥ जिन मतसंघ चारिप्रकार । भक्ति करैं जिन शक्ति समार ॥ शिखरवद्धा जिनमंदिर करैं । बहुउपकारनातिहाले धरैं ॥ तीरथ भूमि बंदनासार । करै परमपद सुखदातार ॥ सात सुक्षेत्र कहे मुनि राइ । दंपति सुनि हियमैंहरषाय ॥ फुनिसुनि श्रीमुनि धर्म्म बखांन । आतम लीन रहित अभिमान ॥ तेरह बिधि चारित अनुसरैं । षटकाया करुणामनधरैं ॥ अठाईस मूलगुनधार । सुद्ध आतमां करैंविचार ॥ करम कलंक कालिमातास । लोका लोक ज्ञानपरगास ॥ सुखसता अवगम चेतनां । सुद्ध वेद मिति प्रानमुगनां ॥ गुनअनंत लहि शिवपुरवसैं । जगत जाल मैं बहुरि न फसैं ॥ (दोहा) इहविधि मुनि के धर्मकी क्रियाअनेक प्रकार । एकरूप बर्नन करी ग्रंथबटनभयधार ॥ धर्म्मो मंगल मूलं उसहो मूलंच सब्बदुष्कानं । धर्मो वलंचाबिपुलं । धर्मोतानंच शरणंच ( चौपाई ) फुणिश्रेणिक नायौ निज सीस । मोपर कृपाकरो जगदीस ॥ कोसुक्षेत्र तीरथ परधांन । बरनन करौ महागुनवांन ॥ मुनिवर कहैं सुनौ नरराय । सिद्ध भूमि बरनौ सुखदाय ॥ जिसथानक जिन पांति सिव लहै । सोईसिद्ध भूमि श्रुतिकहै अष्टापद फुनिहैं गिरनारि । गिरमंदारमुक्ति दातार ॥ शिखर समैद बीस जिन धांम । और कहे शिव थानक नाम ( दोहा ) इसप्रकार मुनि वचन कहि मारग सुद्ध निहार । करिविहार सुखदाइनी सामायक व्रतधारि ॥ ( चौपाई ) राजा बनसौं निज पुरआय । राजकरै सवजन सुखदाय ॥ धर्म काजमैं अति लवलीन । जिनवर भक्ति सहित परबीन ॥ इकदिन सभामध्य नरनांइ । जिन जात्रा चरचाबरनाइ ॥ सिखरसुमेर बीस कल्यान । मुनि अनेक लीनौं शिवथांन ॥ इम कहि सबनृप उद्यमकीयौ । च्यारि प्रकार

संगनिज लीयौ ॥ राजा चलेपहुचौ वाहि ठौर । जो जनपांच शिखर भू और ॥ क्षेत्राधिप ब्यंतर जहँआय। अति उपसर्ग कियौ दुषदाय ॥ झंझावात मेघ उपजंत । उपलादिक बहु बिधि बरषंत ॥ राजा मनचेतातुर भयौ । कौन कर्म सौं इह दुखथयौ ॥ बिलखबदन हैंनरपातिजदा । निज पुरमेंफिरिआयौ तदा ॥ नीति राजा मारग संचरैं । जयतप हित बहु बिधि आदरैं ॥ निति प्राति पूजादान बिचार । करत हरष हियमैं अवधार । (दोहा) एकसमैं पुरानिकट नग बिपुला चलतहुनाम । समो सरन महावीरजिन । आयो सबसुखधाम ॥ (चौपाई) जोजन एक तनौबिस्तार । तीन कोट सोहैं सुखसार ॥ दरवाजे च्यारचौं दिशभले । अति उतंग शिवकौं मनचले ॥ (दोहा) नृत्यशाल गोपुरनिकट मंदिर बनैं अनूप । सुरदेवी तहइकैं नाचत सरूप ॥ (चौपाई) बीथी बनी बीचि मैं घनी । तूपादिक सोभा सवसनी ॥ तीन लोक तामैं निरखंत । भव्य जीव मनमैं हरखंत ॥ चैत बृक्षसौहैं आति घनैं । नगर असौक बहुसुंदरबनैं ॥ परिषा भरी अमल जल रासि । पुंडरीक तहलयहुलास ॥ षटरितु के फलफूल बिसाल । बनउपवन सोहैं गुनमाल ॥ मत्तमधुप जहँ रुन झुन करैं । मानूजिन गुनगन उच्चरैं ॥ च्यारचौं दिस वापिकाच्यारि । श्रेनी मनहाटक मयसार । सवजन तनसुचिकर सुखपाय । जिन पूजाजुकरैं मनलाय ॥ धुजा पवनकर लहकसौर । भव्य जीव आवन उपकार ॥ धूपकुंभ धूवा नींकलैं । मानौं पाप सकल उड़िचलैं (दोहा) फटिक कोट के अति निकट द्वादस सभानिहारि । रचिधनपाति अति भक्त जुत हरिअज्ञा अवधार ॥ सभा बर्नन (चौपाई) प्रथम सभामुनि गनधरलसैं । नरनरपाति दूजे मैं बसैं ॥ कल्प सुबासी देवसुजान । सभा तीसरी कहबखान ॥ मानुष्यनी चौथी मैंसही । और अरज काते मैं कही । कल्प बासनी देवींसार । सभा पांचई मैं निरधार । षष्टम सभा जोति कीतिया । सप्तम मैंजोतिक कीतिया ॥ अष्टम मैं ब्यंतर सबजान । ब्यंतरनी नौमींमन

आंन ॥ दसमी सभा भवन पति बनी । भवन तिय एका दसगनी ॥ द्वादशमी मैं पसूल संत । देखत सब जनमन मोहंत ॥ ( दोहा ) तीन तीन च्यारयौं दिसा सकल सभसोभंत ॥ श्रीमंडपाति सबीचि मैं बरनत लहौं नअंत ( छंदचाल ) सिंहासन तीन बखानौं ॥ सोभासुभ सुंदरजांनौं । भामंडलकी दुति राजैं । छबि कोटि दिवाकर लाजैं ॥ परजाइ सात लखलीजै । जिस देखत पातिग छीनै ॥ सतइंद्र हर्ष उपजावैं । जिउपरि चौरटरावैं ॥ तहँ छत्रतीन सिरसोहैं ॥ त्रिभुवन देखत मनमोहैं । सुरदुंदभि नादबजावैं किन्नर मिलि जिनगुन गावैं ॥ तहां धर्म चक्र सुविराजैं । देखत मिथ्यातम भाजैं ॥ सुरजात सुमनसुख दाई । बरषैं अति हित उपजाई ॥ गंधोदिक बृष्टि सुहावैं । सबजीवनके मनभावैं ॥ सुभमंदमरुत हितकारी परमल आति आवत भारी ॥ इनि आदिक रचनाबरनी । आतम हित कारण करनी; गुनगावत पारन लहिए । बोछीबुद्धि कैसें कहिए॥ ( दोहा ) अंगुल च्यारि प्रमांणहैं अंतरीक जिनकाय । शुद्धस्फटि कसमानेतेनआनन च्यारि सुभाय ॥ बानीं खिरै अनक्षरी सप्तभंग सुभसार । तीन काल उपदेस मय । सबजीवनहितकार (अडिल) ॥ बन पालिक इहदेखन भयोअचिरज तहां । प्रीति करैंसबजीवबैर ताजि जिनजहां । षटरितु के फलफूल सकल जनमन हरैं । अपने कर अवधारि नृपति आगे धरैं । सीस नाय करि जोरि भूप सो योंकही । समो सरन महा बीर तनौं आयो सही । माहिमां है आति आधिक कहांलौं गाइए । जिस प्रसाद तुम नाथ अमगपद प ईश ( दोहा ) बनरक्षक इमबचन सुनि भूपाति अतिहरषाय । सात पैंड उस दिशि धरे बहुविधि ससिनवाय (चौपाई) बस्त्रा भरन दिएनरराइ । बनमाली चालौ हरषाइ । आनंद भेरि नगर मैंकरी । श्री जिन भगाति हृदै में धरी । राजा रानी पुरके लोग द्रव्य लीऐं जिन पूजा जोग । गमन कियो विपुलाचल जाय । जैजैजैजैजैहोइ ( दोहा ) समो सरन मैं जाइकैं । वंदेवीरजि

नंद । अहौनाथ तुमदरसतैं कटे करम के फंद। निज तन सुचिश्रेणिक कीयौ । वस्त्रा भूषण धारि । जिन पूजावसुद्रब्यजुत । रची अनूपमसार । जलचन्दन अक्षत सुमन । नेवजदीपसुधूप। फलले प्रभु आगे धरे। हरषे श्रेणिक भूप। पूजा करि आनंद सौं । लीये आरती हाथ गुनगर्भित जयमाल सुभ । पढ़त हिए हरषाय ( ढालजयमालपद्धडी छन्द ) जैजै जिनतारन तरन धीर ॥ बिन कारन शिव सुष करनवीर । जै जै जगजीवन सुख निधांन । परमातम गुन सुविराजमान ॥ जै जैं जगनायक अति पुनीति । वरनी बहुबिधि सुभ धर्मरीति । जै जै अनन्त गुन धरन हार । जसगांवत इन्द्रने लहइपार । जै जै कमलानन कुमंदचंद । मुखदेखत नासै कर्मफंद । जै जै प्रभु चिंतामणिसमांन । चिततदाइक सिव सुखनिधान । जै जै समुद्र संसारतार । तुम विनदुखपायो मैं अपार । जै जै करनाकर दीन देषि ॥ मोपरि करुनांकरिए बिशेष । जै जै तुम लोका लाक भास । मिथ्यात महातम कीयो नास । यहि विधि अस्तुति बहुकरिएराइ करजोरि बिनयसों सीसनाइ ( दोहा ) फुनि गनधर मुनि नश्रमिकैं । वैठेसभामझारि । जिनवानीअंमृत मई सुनै श्रवन सुषकार (सोरठा) धरम जगत मैं सार । सुखकारी सब जीवकों । सागारी अनगर । दुविधि भेद बहु बिधि कहै ( चौपाई ) आतम धर्म जगत में सार । मुक्तेरमारमर्नादातार । साततत्वषटदरव सुजांनें । जिनबानी में होतबषांन । सम्यक्दर्शन सम्यकज्ञान । सम्यक्चारित धर्म प्रवांन। जिनवानी पीयुषरस भरी । भविजन पारउतारनतारी । गुनसम्यक्त धर्म की चाल। आवतहृदैं नसैं जगजाल।नय अनेकगुन भेद अपार । गुनथानक चरचा अवधार ( सवैया ) धर्म हिए मैं धारैं सिवपद देनहार धर्म विनाही नरनरक मैं जाइगो । धर्म तैं इन्द्रधरनेंद्र पदपावत हैं धर्म तैं दिवस आनन्द मैं बिहाइगो । धरम जगत सारसिव पद देनहार धर्म करत सब कर्म नशायगौं । ऐसी जांनि चित आंनिहिए मैं बिबेक वांनि कीजे क्यौं न

सुभ जांनि पीछैं पिछताइगो [दोहा] समो सरण के बीच मैं होए धर्म उपदेस । सबजन सुनि हरषित भए । संसय रह्यौ न लेस ॥

इति श्री काष्टांसंग लौहाचार्य्य विरचिते तीर्थ महातमे समेदा चरित महात्म भाषायां मन सुद्ध सागरोणव वर्णनं प्रथम पीठिकाधिकार ॥ १ ॥

( सवैइया ) प्रथम जिनंदसुखआनंदके कंद मरुदेवी जाकेनंदि नाभिराय प्रभुतात हैं ॥ आयु लष पूर्वचोरासीहैमद्युतिदेह लक्षन सुधेन पुत्रचूर्ण सुहातहैं । ऊंचीकायपांच सतधनुषजनम लियो नगर बिनीता माहिदेषे दुःखजातहैं ॥ आदि नाथ नांम जाकौ पूजतसुरेसतम सुषसागर जलधिनमतहरषातहैं ( दोहा ) धर्मकथा सुनिकैं नृपति । हर्षहिएनसमाए ॥ अवसर लषिकर जोरिकैं । भक्तिसहित सिरनाय प्रश्नकरैंश्रेणिकतवैं ॥ सुनौंजगत पतिबीर । तुमसब संसैंहरनकौं ॥ औरनकोईधीर शिषरसुमेद सुबंदने । गयो हर्षउपजाइ ।अतिउपसर्गतहांभयौ मारगसौंफिरिआय ॥ सोसंसै मोमनलसैं । मेटौधर्मजिहाज ॥ किनउप सर्गकीयौमहा । कारण कहौ महाराज ( चौपाई ) जिनबांनी सबसंसैंहरनी । गोतमसुनि जिनवानीबरनी । कारन जात्रा सुनिनृपराज । शिषरसमेद महातमआज। तुमनिये गनांही हैं राय । जात्राहोइनही इहकाय ॥ क्षेत्रपर्श बंध अनुसैं । तेईसक्षेत्रसु परसनकैं। जेनरभगाति भावउपजाय ॥ जात्रा कैं महासुषदाय । नरक पसु गाति छेदनहार ॥ सिवपद दाईते पावैंसार ( दोहा ) जिनमुष तैंएवचनसुनि । भूएति निजसिरनाय करुनां निधि मुझि हृदयमैं ॥ संसैंउपज्यौ आय । रावन शिषर सुमेदपै । गजगहनें कैं आय । प्रतिनारायणनर कथिति । शिषरशौल क्यौंजाइ पूर्वबंध अनुबंध जिस पदवीधारक जांनि ॥ जात्राभावन तिन कीयौ । संसय हृदयन आंन । चित्रा भूमिसुथेरसदा ॥ लाछिनस्वास्तिकसार । द्वादसयोजन मांनभुवं । सिषरनांम जुत

धार ॥ रचना अब इसक्षेत्रकी ॥ महिमांसुनि नरराय। सिद्धभूमि इसक्षेत्रमैं । दर्शन पातिगजाय। भव्यरासि उपजैंतहां ॥ जीवअभव्यनहोइ । काल पाय सिवपद लहैं ॥ एकैंहृदयसोय ॥ सिद्धकूटउहांवीस हैं । च्यारि अंन्यसुभथांन ॥ एचोबीसीकूटके । संग्यासुनोसुजांन ( सवइया ) अष्टापदासिद्धवर दतधवलअनंद अविचल मोहन प्रभासनांमठांनिये ॥ ललित सुकुंभ और सुप्रभ विद्यात कूंटसा कुली मंदारकृत भंजनसुजांनिए । स्वयं भूसुदतवरसुप्रभासंग्यान घरनादिक सवल ॥ निरजर सुबषानिऐ । प्रभव सुकजैयंज सुभद्रजुपावा नामनमत चौबीसी कूटकरम कैंभानिए ।

## * दोहा *

कूट २ प्रति तीर्थ पूति । मुनिवर और अनेक ॥ कर्म्म कलंक निवारि करि लीन भए रस एक ॥

## * चौपाई *

सिषर सुमेद मुकति दातार । भवजल जलधि उतारनहार । संसारी सुख दाइक जांनि । क्रिया सतुपजु जात्रामानि । प्रथम जिनसुर पूजाकरैं । भाव सुद्धकरे पातिगहरैं । क्षमारूप चौसंघसमेत । आहारादिकदांन सुदेत । स्वेत बस्त्र सबधारै अंग । आतम गुनचरचा मुनिसंग । इसप्रकार जो जात्राकरैं । सिव रमणी रामा सो वरैं ।

## * दोहा *

लाल बस्त्र सबधारिकैं जिनवर पूजकरंत । जात्राकरैं सुभाव जुत । कमला लहैअनंत । पहरे पीतमनोग पट । संध भगति अधिकाय । सुमरि सिषरि जात्रा करैं । नंदन सुभ उपजाय । हरित बसन को पहरिकैं । हरषहिय गुन गाए । जिन पूजें जात्रा करैं । सब चिंता मिटिजाय । स्यामदुकूल सुत नितंतन । जिनवर

भक्ति करंत । जात्राकरि अति सुषलहैं तन के रोग हरंत । इस विधि बहु सुख दैनि कौं कल्प बृक्षकेरूप चिंतामनि सुर धेनुसम । सिषिराचलसुनि भूप । क्षेत्रपाल निस क्षेत्र को । पालतहैं दिनराति । व्यंतर दस लषि भूपसौं । भवि जीवन सुखदात । अडिल । ऐसे श्री जिन बचन सुनै श्रेणिक जवैं । मनमें अति हरषाय सीश नायो तबै । वर्तमान जे न राजकहौ किसविधि भए । कौंन कूट के सिखर कौंनाजिनशिवगए ।

*** दोहा ***

भव्य प्रश्न इह तुमाकियो सबजनसंसैंहर्न । मनवच कायाश्रवनदै ॥सुनो कथा शिवकर्न ॥ श्रीगोतम मुखतै कहैं । जंबूदीप सुथांन । पूरब नाम विदेह शुभ । पुष्कल देशबखान ॥

*** चौपाई ***

पुंडरीक पुरहैं तहांसार । वज्रसेन नृप जिन गुनधार । श्रीकांता पटरांनी जांनि । शील सुलछन अति गुनवान ॥ सोलम स्वर्ग देवसो आए । वज्रनाभ चक्री सुतथाए ॥ वज्रसेननृप जेन तेइ बज्र नाभि सुतराज सुदेइ ॥ तपकरि केवल ज्ञानउपाए ॥ करिविहार अति धर्म वटाए ॥ वज्रनाभि चक्री पदधारि । रसमिति खंड साधि सुखकार ॥ राज कियो बहुकाल नरेस । देखे मस्तग धवल जुकेस द्वादस भावन निज मन भाइ अति बैराग भयो नरराय ॥

*** छंद ***

संसार असार विचार लीन । दुखदाइक करिए मोह छीन ॥ जिनतात तीर्थ पाति पास जाय ॥ लै दिक्षा अति तप कियो राय ॥

*** चौपाई ***

थिति पूरी करि धरि संन्यास ॥ सर्वार्थ सिद्धि कीनो बास सुनि श्रेणिक आगे शुभकथा ॥ आदि नाथ अवतार सुजथा ॥

*** दोहा ***

जोतिग चक्र प्रमांन सौ ॥ काल चक्रकी चाल ॥ ऐरावत औरभरत में ॥ रहट घड़ी जिममाल ॥

*** चौपाई ***

इह जोभरत क्षेत्र अभि राम ॥ काल दोइविधि वरनों नाम । प्रथम काल अवसर्पिनजांनि ए उत्सर्पिणी दूजो परमांन । दश कोडा कोडी थितिकही । इतनी फुनि दूजो की लही । यह अवसर्पिनी काल बेचारि । ताहु मैंषट भेदसुधारि । पहिला सुखमासुषमाजांनि कोडा कोडि बेदनदमांनि । मानवती न कोस तनधरैं । तीन यल्प की थिति अनुसरैं । तीजे दिन बदरी परमांन । करैंअहार निहारन जांनि । रोग सोग नहि व्यापै कोइ । सरल सुभावी सब जन होइ । सुरपादप दसविधि के जहां । गेहा गेह । सुख भोगैं तहां । सुख मैं काल बितीतैं जोइ । पुन्य पापनहिं जानैं कोइ ॥ अंत समैं कंन्या सुतजनैं दिन उनचास तरुनता भनैं । ते दोऊ नारि भरतार । भोग भोगवैं सुख भंडार । छींक जंभाई सोंतनुतजैं प्रान त्यागि सुर के सुख भजैं । तनकपूर सम तब खिरि जाय । दुखचिंता कोइन कराइ ।

*** दोहा ***

प्रथम काल की रीतिइह बरनी जैन आम्नाय । अब आगे बरनन सुनौं ज्योंसंशय मिट जाय ।

*** चौपाई ***

काल दूसरे कौ परमंन कोडा कोडिजलधि त्रय जांन। दोय कोस की ऊंची काय। जुगल यल्प तँ आयु बताय। दिवस दुतिय विभीत समांन। असन करैं आतिशय वलवांन ॥ और रीतिपूरव जे कहता समांन जांनौं नृपसही।

*** दोहा ***

अब सुनि तीजे काल कैं ॥ बरनन बहु विधिराइ। कोडाकोडी जलधेजुग। थितिइहदए बताय।

*** चौपाई ***

एक कोस ऊंचौ तन धरैं। यल्प एक की थिति अनुसरैं। असन आंवलेके परवांन। निति प्रति करैं महा गुनखांन। और रीति पूरब समसार ॥ जुगल धर्म इस विधि अवधार। अंतसमैं कुलकर विधिभय। नांत्र मात्र सो मैं निरमए ॥

*** अडिल्ल ***

यल्प अठ मैं भाग काल थिति हैं जहां।। तेम प्रांमाति सुखदय मनुज उपजे तहां। मति श्रुति अवधि विचारि ज्ञान धारी सवैं। जो शंसय उपजांत हरैंसब की तवैं।

*** सवैया ***

प्रति श्रुति प्रथम दुतिय सनमत नांमषेमंकरसीमंकर मांनिए। पेमंधर विमल पानचक्षुष्यांन आव मोहै नौमोहै जसस्वी अभिचंद्र दसो जानिए ॥ चंद्राभ हैं ग्यारमौ मरुदेवहै द्वादश तेरमौ पूंसेन जितमनुज प्रमांनिए। चौदमौ सुनाभिराय मनुज प्रसिद्ध भयोहामारतकीनी सवैं निगम बखानिए॥

* दोहा *

नाभरायकी आयुथिति । पूरबकोटि प्रवांन ॥ सवैंपांचसैं धनुषकी । काया ऊंची जांनि ॥ मरुदेवी बनिता सहित ॥ भोगेभोग महंत । जिनवर जिनवर अवतरे ॥ बरनत लहैं न अंत ।

* सोरठा *

आदि नाथ अवतार ॥ नाभि रायधरहौ एसी । इंद्र अवधि अवतार ॥ धनपति कौं आज्ञादये ॥

* दोहा *

नगर बिनीता तुमरचौ । श्रीजिन जन्मति योग ॥ पंचाश्चर्य करौतहां । सुषी होइसब लोग ॥

* चौपाई *

हरि आज्ञा धनपति सिरधारि । नोद्वादसजोजन सुषकार ॥नगरी रचीपची मनिमई । सुरपति सोआति सोभादई ॥ रसमिति माश अगाऊं जहां । रत्नादिक बर्षावें तहां । छपन कुमारी देवी आई ॥ जिनमाता सेवैंचितुलाई ॥ बदि अषाढ़ दुतिया दिनआय । गर्भस्थिति कीनी जिनराय ॥ जाम जामिनी हैं अवशेष । माता सौलह सुपनेदेषि ।

* दोहा *

जोसर्बार्थ सिद्धिमैं बज्रनाभ बरथाय । निजातिथि पूरन चइतहां ॥ मरुदेवी उरआइ ।

* सवैया *

स्वेत सुर कुंजर बृषभ स्वेत गाजतहैं पंचानन सुंदर रमा बिराजमांनहैं । सुमन सुदाम जुग सोम

रवि मीन जुग जुगल कलस सर जलधि प्रसन्न हैं । सिंघ पीव देव जांन फनिंद आवाश मांन उद्योत प्रकास रावाशरत्न सुखखांनि हैं । धूमबिन पावकजिनेशगुन सूचकहैं षोडस सुपन जिनमात सुषदांनहैं ॥

*** दोहा ***

एसुपन जिनमात लषिसब जीवन सुषकार । तूर्य्यनाद सुनि प्रातलषि ॥ निद्राकरि परहार ॥

*** चौपाई ***

वपुसुचिकरि अतिमन हुलशाय ॥ बस्त्रा भरन सिंगार बनाय । सखीसहित द्रगमन जौकीयो । देषि नाभि नय आदरदीयो ॥ अर्द्धा सनदै पूछ्यो राय । आगम कारण कहुसुखदाइ ॥ षोडस सुपन अंत निसि जांम । देखफल कहए सुखधांम । स्वपन फल नांम फल ॥

*** सवैया ***

गजतैं महंतनंद वृषभतैं राज वाहके हरतैं वली जोररमा लक्षिवांनजू । तीर्थं करतरमाल शसितैं सरम कार रबितैं अज्ञांन हरमीन सुखदांनजू ॥ कुंभतैं निधांन वतसातैं सुचिहुधार सागरतैं ज्ञांनपीठतैंत्रिलोक मांनजू । मोगी सुर जांनथकी मीन गेहग्यानतीनमानितैं सुगन धार वन्हिकर्म्म हांनिजू ॥

*** चौपाई ***

अवधि ग्यांन लखि जंप्योराइ । जिन अवतार होइसुखदाइ ॥ इहविचारि दंपति सुखमार । कोकवि बरनसकै गुनधार ॥ तिहि अवसर सुरलोक मझारि ॥ घंटा सबद भयो अनिवार । जोतिरिलोके नाद हरिहोइ ॥ बाजे भेरिव्यंतरी लोइ । भवन पति सुर संख अपार । स्वयंनाद नादति अधिकार ॥ नम्री भूत मुकट सुरजोइ । सिंहपीठ नमि अनिरज जोइ । सौधर्मेंद्र अवधि अवधार । जान्यो आदिगर्भ अवतार

अति आनंददे चतुर निकाय । देवचले पूजा चित लाइ । आय नभग्रह मन हरषाय । मनि भिष्टि रथपि जिन मांय । करि अभिषेक गर्भ कल्यांन । भूषन वस्त्र पूजि तिहि थान । अस्तुति करि गुन गाय विशेष । अपनू जनम सुफल करिलेषं । हरि आज्ञा सुरवनितादेइ । जिनजननी सेवैं स्वयमेव ।

* दोहा *

इन्द्र गयो सुरपतितबैं । नाभि नृपति हरषाय । गीतनृत आनंद जुत । इह विधि काल बिहाय । नवमासा पूरनभए । जन्म समैं हरआए । सुरजुत अति आनंदउर ॥ जन्मोत्सव चितलाए । मधुरित मधुआलि पक्षजुत नंदपूमितिथितिसार । ऋक्षउत्तराषाढ़ सुभ । आदिनाथ अवतार ॥

* चौपाई *

हरि ऐरापति सोमाकरी । जिनवर भगति हिए में धरी । जोजन एक लक्ष परवांन । सुभ्र उतंग काय अमलांन ॥ बदन एक सतवसुरदमार । रदपूति सर उज्जल जलधार । शरशर पूति कमलानिसोभंत सर कर रूप मांनराजंत । कमलनि प्रतिपंकज सुमसार । सरभु जमितनिद्रागतसार । प्रति पंकजदलवसुसत लसैंजिन जन्मोत्तार सुनिहसैं ॥ नृत्य करैं निजमाजसमेत । सुरवनिताजिन मंगलहेत । सोगज चढ़ि हरिजुत परिवार । नगर विनीता गमन विचारि । सकल सुरासुर जै जै करैं । नंदवृद्धि मुखतैं उच्चरैं । सची सचीपति आयसुपाइ । जिन प्रसूति ग्रह पहुंची जाय । जिनदर्शनकरि हरषीअंग । जिन जननी देखी जिनसंग । अस्तुतिकरि सुखनिद्रा दी । मायामयथाप्यो सिसुसची । तीन लोक पति निज करलेए । आए सची पति के करदेए । जुग दृग देखि रूप जिन राय । तृपतन होइ हर्ष अधिकाय । तब लोचन दशसत परवांन । करदेखे निजरूप निधान । गज चढाय सुरगिरले गए । सब सुरदेखि

अनंदित भए । करकरकर कलसा सुरलाय । क्षीरोदिक बसु सहस भराय निजकर कलस लशे सुरभूप । भांन जांन सुरनग के रूप ॥ पांडक शिला थापे जिनईस ॥ ढोरे कलस लोक पति शीस । सुक्ष्म बस्त्र लै सची सुभांय । निर्जल तनकीनौ जिनराय । कुंडल आदि आभूषन सार । अंजन तिलक कियो सिंगार लैवसुद्रव्य पूजतसु करी । सफलजन्ममानौ तिंहघरी । चौथेकाल आदि अवतारि आदिनाथ संग्या अवधारि । सुरकुंजर जिनवर बैठाइ । जिनमाता करदीनौआइ । तांडव नृत्य कस्यौ सुरभूप । जिनमुख देखे अधिक सरूप । सुरसुर पति राखे प्रभु मानि । क्रीडा निमित महागुनरासि । गंधोपाक शास निज थांन । नाभराय पुत्रोत्सवठांन दांन दीयो जाचिगजन जबैं । जै जै कार भयो पुरतबैं ॥

# * दोहा *

पिता देखि निज तनुजकों । हरष हीए नसमाय । सहस एक बसु अधिक सुभ ॥ लक्षन तन सो भाय । नाना वेषबनाए सुर जिनवर मन हरषाए । वर्द्धिततनशम शशिकला भवन तीनसुखदाय । पूरव लष्य दुगन दसमांन । बालकेलि बीते सुखदांन । जोजबतन मंडित जिनराय । सुरपति देखि अवधिमन लाय । दश अतिशैं जिनजन्मजुतमति श्रुतिअवधि सुग्यांन क्षायक समकितभावउर धर्म ध्यानहित आंन ।

# * चौपाई *

महा कक्ष औ कक्ष नरेश । कन्या जोगि विवाह जिनेस ॥ जस सुति जस नंदा नाम । मघवाल्यायो सब गुनधाम ॥ शुभ मंहूरत ग्रह तिथि घरी । पांनि ग्रहन करि जिनवरहरी ॥ नाभि राय मरुदेवीमात । उत्सव देषि अधिक हरषात ॥ राज काज अभिषेक कराइ । सुरपति सुरपुर गमन सुभाय ॥ नगर विनीता सबजन सुषी । इति भीति कोइ नही दुखी ॥

*** दोहा ***

सुर रुह नष्टभए सबैं ॥ पूजाभई दुखलीन । नामिरायपैं आइकैं सबै बैंन सुखदीन ॥ पूजा संघले नाभि नृप । आये श्री जिन पास । जथा योग्य मुख उचरैं । पूरौ इनकी आस ॥

*** चौपाइ ***

दुखेदखि पुरजन जिनराय । इक्षु जंत्र रसदियो बताय । बंस इक्ष्वाक कहैपुरलोग । क्षुध्या गमावैंरस संयोग । केतेक दिन बीते इसरूप । सुखी नगर जन करिजगभूप । राजा नीत मारग संचरैं ॥ सबजन हिए शंसय प्रभुहरैं ।

*** दोहा ***

काल दोष अति छुधितनर । फुनि आए जिनतीर ॥ असि मसि ऋषि उपदेशदे । हरी सकल जन पीर ॥ जससुती नारी पृथम । सहित रमे जिनराय ॥ भरतादिक ब्रह्मा सुता । तनुज भए सुखदाय ॥ नाम सुनंदा दूसरी । महिल सबगुन धाम ॥ कांमदेव बाहूबली । तनयां सुंदरि नांम । जुग कंन्या इक ऊनशत । शीलवांन सुकुमार ॥ एकोतर सुत पुत्रसब । जांनऊ जिनगम चारि ॥

*** चौपाई ***

एक समय जिनवर मनलाय । सत कंन्या निज निकटबुलाय ॥ जुगसर बरनवताए जबैं । भरतादिक सुत सीखेतबैं । अंक लिखे जोतिक गतसार ॥ ब्रह्मासुंदरि निजमनुमैंधार । इसपूकार सब भाषीरीति ॥ त्रेसठि लखि पूरब सुबितीति ।

*** दोहा ***

सुखसागर में मगनप्रभु । देखि इंद्रचित चिंत ॥ लाख पूर्व अवशेष थिति । कारनजोग विचिंत ॥

*** सवैया ***

नीलं जसानांम इकदेवी सुरपतिल्याए जाक थिति अंतर्महूरत प्रमानिए । गावत सुकंठ गीत नाचत संगीत ताल बाजत मृदंग बासुरी बखानिए ॥ नटति नटाते थिति पूरीखिरिगए देहदेखि जिनईस जगनास नीक जांनिए । त्यागिं राजकाज कीजे आतमी करसपीजे दुखलीजे मुखमोहकर्म्मभांनिए

*** सोरठा ***

इहबिचार जिनराय । भरत बुलायौनिज निकट । राजतिलक सिरधारि । प्रजापालियो नितिजुत राज दीयौ जिनराय । पोदन पुर बाहूबली ॥ सब सुत राज समाज, । देद्वादश भावन भजै । सुरलै कांतिक आइजथा जोग अस्तुति नामि । अहौ जगत पतिराइ ॥ तुमबिन को ऐसीकरैं ॥

*** सवैया ***

तुम जगदीस इस मुकाति रमन हार तुमबिन धर्म प्रगट कौंन करिहैं । ध्यांन धरि धीरज करम गनदाह कहौ चाहकहौ आतम अमल रस भरिहैं । तुम बिन नाथ मुक्ति साथ नाहि पावतहैं तुमबिन सेवा दुखकैसेंहू टरिहैं ॥ धन्य प्रभु पंथ सिवसाधनि जगत जन देहुगे दिखाइसेइभोसमुद्र तरिहैं ।

*** दोहा ***

अस्तुति करि निज थांनकौं । लौकांतिक सुरजाइ ॥ सक्र जुसिव काल्पाय करि । बैठारे जिनराइ शजा दिक सुर सक्र मिलि ॥ मग प्रयाग बनलीन । जाइबसन भूषन तजे ॥ मौहयासिकरिछीन ।

## * चौपाई *

पंच मुष्टिक चलौंच उतारि ॥ तप कल्यांणकसुर पतिकीयौ । दुंदुभि नाद गगन बाजियौ निज निज थानक सब जनगए॥ आतम लीन जिनेसुर भए । सहस चारि राजा तिनसंग ॥ धारिदिष्या तपकीनौंभंग

## * सोरठा *

रिति मिति मांस विचारि ॥ व्रत धार्यौ हैं जगतपति । कायोत्सर्ग निहारि तनमन मेर समानहैं

## * चौपाई *

व्रत पूरन चर्या मनधारि । नग्र बिनीता पंच निहारि ॥ राजा प्रजा देखि जगईस । भाव भक्ति जुत नायौसीस ॥ आडिल हयगय रथ सुदुकूल आभूषन लाइकैं । कंन्यादिक सब भेटधरैं सुखपाइकैं ॥ अंत रायकोउ दौजांनि प्रभु बनगए । रस मिति मास प्रमांन ध्यांन जुत पूरनभए ॥ क्षयक श्रेणी आरूढ ध्यान आविचल ठयौ । धर्मध्यांन के भेदि बिचारि चितदयौ ॥ शुक्लध्यांन एकत्व वितर्क विचारियौ । दुतिय प्रथक्त वितर्क विचार सुमन कियौ ॥

## * दोहा *

बर्ष एक पूरनभए । निराहार जिनराइ ॥ चरीहेत गज पुरचले । थिरकारन तपकाय ॥

## * सवैया *

हथनापुर नगर पतिसोम प्रभ भ्रात श्रेयांस सुपन बसु बाह निसि देखिए । सुकल पतरुमेरुपंचानन धेन सुत रविसोम उदधि गयंद सुभ पेखिए ॥ प्रात उठि भ्रात सेती पूछैं फल कहत सुपुन्य वांन आवै गेह दन्तरखलेखिए । धीर बलवांन धर्मज्ञ सुप्रताप धरतेजसो गंभीर अति महत विशेषिए ॥

## * दोहा *

सुनि फल मन हरषितभए । श्रीश्रेयांस सुराय । सोध स्थिति अवलोकते । श्रजिन दर्शनपाय ॥

## * छंदचाल *

मुनिरूप जिनेसुरदेखे । निज जन्म सुफल करिलेखे । भव सुमिरन ग्यांन प्रकास्यौ । परजाय भवातर भास्यौ । इह बज्र जंघ चर जोई । रानीमैं श्रीमतिहोई । तहँ सर्प्प सरोवरती रे । मुनि चारन पोखेधीरे । यहपुन्य महा उपजंत । इहआदि मुनिसोभंत । मैंनारि लिंग निरवास्यौ ॥ श्रेयांस राय पदधारयौ ॥

## * दोहा *

मुनि अहार विधि जांनिवहै । अग्र भाग ह्वै राय । अस्तुति करि सिरनाय काहि । तिष्ट तिष्ट जिनराय ॥ (सोरठा चामरबंध) । जगत जीवन सबसुख करयौ । जगत जीवरन सुबिचारि । जगत जीवन सबसुख करयौ । जगत जीवन निधतार ॥

## * चौपाई *

नोधाभगति हिएमैं धारि । सप्तसुगुन जुत ह्वै दातार । इछु रस आहार कराय ।

## * दोहा *

अक्षय निद्धि दातार घरि । असन अंत जिनराय । ईर्य्यापंथ सोधत चले । लोग धरयो बनजाय ॥

## * चौपाई *

पंचाश्चर्य कियौ सुरसार । पुंन्य महातम जग बिस्तार । साढे तेरह कोडि प्रमांण । रतन बृष्टि नृपसदन बखांण । नगर नगर देखि इहिरीति । दांन बिषैं अति धारी प्रीति । सुनिनृप भरत हरष मनलाय । श्रीश्रेयांस

ग्रह गमन कराय। धन्य राय पुन्यांतम सार। श्रीजिन तुमग्रह लियौ अहार। अति अस्तुति सन्मांन तवकियौ। आय नगर बहुदांन जुदियौ॥

* दोहा *

इस प्रकार आहारकरि। श्रीजिन ध्यांन लगाय। सहस वर्ष छद मस्थ जुत। तपत पियो जिनराय धर्मध्यांन बल जोरतैं। प्रकृति सप्तक्षयजाय। तपबलतेज प्रतापतैं। रिद्धिजुवसु गुनपाय। प्रथमत गुनथांन चढ़ि। तीनकर्म करसार। क्षिपक श्रेणि आरूढह्वै। प्रकृति छतीस निवारि॥

* चौपाई *

गुन दस मैं गुनथांनकसार। लोभ संजुल निकरि परिहार। सुकल ध्यान पद दूजे जाय। सोलह प्रकृति हनी जिनराय॥

* दोहा *

कर्म घातिया की प्रकृति। त्रेसठि सबमिलि होइ। सो प्रभु नाशछिनक मैं। निर्मल आतम जोय। (अडिल) तेरमैं गुनथांन संयोगी पद लीयो। सुद्धातम सुअनंत चतुष्टै गुनगह्यो। देखि चराचर लोक सारसुख मैं भए। अष्टादस जे दोष दूरि सबहोगए॥

* दोहा *

केवल ज्ञान प्रभावसौं। हरशत आइ निर्मित। सोजिन पति गुनकहनकों। कोकवि ज्ञान लसंत॥ हरि आइस पयोधनद। समो सरण मनलाइ। रची भूमि द्वादश प्रमित। जोजन अति हरषाय।

*** चौपाई ***

कोट तीन दरवाजे चारि । बन उपवन सोभा बिस्तार । नटसला सुरनटनी नटैं । जिन गुनगान करत अघहटैं । चैत्य वृक्ष सोहैंशुभरूप । अतिउतंग राजत हैं तूप ॥ च्यारवौं कोंन वापिकाच्यारि । अमल शलिल अमृत गयसार । मानस्थंभ मांन कौं हरै । देखि अशोक शोक सबटरैं । मनकलिपत कल्पद्रुमदेइ । सरपंकज जुतसोभ धरेइ । पुष्प पराग मधुप तहँ लेइ । जिनवर गुन सुख गानकरेइ । चहुं कोने घट धूप मुवारा । परम लता अति करैं प्रकास । परिखा सोहत वलयाकार । पंकज जुत निर्मल जल सार । सहस एक असी अधिकांन । कहे एक दिसिकेतु प्रमान । सहस च्यारि च्यारवौं दिसि जोए । सतत्रय बीस अधिक सब होइ । मंदमरुत प्रचलत तेकेत । जिन पूजा जन आवत हेत ॥

*** दोहा ***

इत्यादिक सोभा तहां । और अनेक प्रकार । वरनन सक्र न करि सकैं । अलप ज्ञान मैं पार ॥

*** चौपाई ***

श्रीमंडप तिहं मध्य प्रदेश । जहां विराजत मांन लोकेस । द्वादश सभा मनोहर जहां । वृषभ सेनादिक गणधरतहां । धर्म चक्र सोहैं सुखकार । गजजन गजत उतारैं पार । दुंदुभि सघतहां वाजन्त । आठ प्रातहार राजंत । चार अनंत चतुष्टै लसैं । जिन आगम गुन भीतर बसैं । चौंतीसै अतिसैं जुतदेव । गुन छालीस लसैं स्वय मेव । बरनन करत ग्रंथ वढ़जाय । जिन गुन जिनवर पैंबरनाइ । समो सरन हरधन दरचन्द । जिन सोभित सोभा वहु भंत ॥

* दोहा *

फागुन असित एकादसी । प्रथम पहर सुरईस । केवल कल्याणक कीयो । सुनो भरत आधीस । बांनी खिरैत्रिकाल सुभ । सबभाषा जुतराय । सुरनर खग पसु चितदै । सुनै श्रवन सुखदाइ ॥

* चौपाई *

तिन पुर्ष नृप कैढिग आई । करै बीनती सीसनवाई । राततुमरे केवल ज्ञान । उपज्यौ हैं सबसुखदंन । द्वितीय पुरुष नृपकैढिग आइ । करैंबीनती सीस नवाइ । चक्र रतन उपज्यौ सुखकार । पुरुष तीसरे निज मुख चयौ ॥ तुमसंतति बर्द्धन सुत भयौ ॥

* दोहा *

तीनौं चरके बचन सुनि निजमन मांहि बिचारि । धर्म काज कीजे प्रथम ज्यौंसुखलहिए सार ॥

* चौपाई *

चक्री जाय पूजा जिनकरी । अस्तुति भगाति बहुत बिस्तरी । सुनि धर्मोपदेश मनलाइ । करिनमोस्तु पुनि निज पुरआय । करि पुत्रोत्सव हर्ष अपार । चक्ररतन पूजा बिस्तार । साधन करि षट खंड प्रमांन । बृषभाचल नामांकित थांन । नौनिधि चौदह रत्नबिशाल । बहुत रिद्धि जुत है भूपाल । आयो नगर तबें भरतेश । चक्र रतनन करैं प्रबेश । बिजय नांम प्रोहित बुलाय । चक्र तनी एहबात सुनाय । प्रोहित कहै चक्रपाति सुनौ । चक्र रतन गुन हिए मैं गुनौं । षट षंड मांहि जितेनर ईश । चक्र रतन कौं नावैं सीस । नृप एकौ आज्ञा बिनुजांन । चक्र नआवैंसुर इहमंन । भरत कहै प्रोहित सुनि बात । आज्ञा कौंन चहै कहु भ्रात । सुनि प्रोहित बानी उच्चरैं बाहूबल आज्ञा नहिधरैं । तब ततकाल चल्यो नरराय । पौदनपुरदिग पहुंचौ जाय । जुगल चमूज बसन मुख

आय । मंत्री मतो करैं सुखदाइ । चर्म शरीरी दोन्यौं भ्रात । होइनहीं तिन कौ तनघात । बृथासेनि मारी सब जाय । मंत्री नृप सौंकहैं सुभाय । यातेजुद्ध करौ दोऊसार । जीतैं सो आज्ञा सिर धारि । नेत्रजुद्ध जल जुद्धबखांन । मल्ल जुद्धनिहचैं मनआंन । जुद्ध परस पर दोन्योवीर । करैंहिएमैं साहंसधीर । हुंडासर्प्पिणी दोष महांन । चक्रवर्त्ति हारयौ तिहथांन । मनमलीन निज भ्रात निहार । वाहुवली मनकैं बिचार । धृग राज महादुख दाय । जेष्ट सहोदरमांननसाय ।

## * छंद कुसमलता *

यह संसार असार निहारयौ । च्यारौं गति दुख दाइसही । चौंरासी लखि जोनि फिरयौं । जिय दुर्लभ मांनुख देहलही । आश्रव कर्म्म महा दुखदाई । जासु उदैजन जन्मगहै । राज साध धन जोबन जीवन ॥ सब अनित्यथिरनांहिरहै । तीनलोकमैं दरावे चराचर । सूक्ष्म थुल बिशेषभरे । दुर्लभ धर्म्म जिनेसुर भाषित जा प्रसाद भव जलधितिरैं । एक अकेलौ जीवफिरैं इह । सरन जगतमैं कोइनही । सप्त धातुमैं जीव निरंतर । असुचि आया बन देहगही । संवर भाव किये बिनु प्रानी । भव अनंत दुख बंध करैं । कर्म्म निर्जराजीवकरैं जब । सिवरमनी छिनमांहिबरैं ॥

## * दोहा *

वाहुबल बैराग्यहै । द्वादश भावन भाय । पंचमहा व्रत आदरैं । ध्यांन धरयौ बनजाय ॥ भरत चक्रपाति देखिइह । निज मनमांहि बिचार । वाहुबल के तनुज कों । राजदियो सुखकार । इत्यादिक बिधि खंडखट आंन फिराई राइ । फिर आए निजनगरमैं । राजकरैं सुखदाइ ॥

## * चौपाई *

एक समय मनमांहि बिचारि । दांन हेत द्वज थापे सार । फुनि जिन समोसरन मैं जाय । श्री जिन

पूजे मन हरषाय। धर्म्म सुनौं शिव सुखदातार। श्रावक धर्म्म धर्मं: अनगार। फुनि ब्राह्मण विधि पूछै जबैं। सुनि गनधर मुनि भाषी तबैं ॥ मिथ्यामतए धारक होइ। षटमत पोषक जांनौ सोइ। सुनि कंपित चित है पुर आय। पूजादिक करि राजकराइ।

*** दोहा ***

समो सरन आदि प्रभु। जिननाना देश विहार ॥ करि कैलाश गए प्रभु। एक मांस थिति सार। कायौत्सर्ग सरूपजुत। सेष कर्म्म कर नाश। पंच लघूक्षर काल मैं। कीनौं शिवपुर वास।

*** चौपाई ***

इन्द्र आय अष्टापद थांन। मोक्ष कल्याणक करि सुखदांन। सुनि भरतेश चल्यौ हरषाय। गिरकैलास पहुंच्यौ आय। शिवकल्यांणक पूजा करी। बहुप्रकार जिन थुति उच्चरी ॥ तींन चौईस बिंबभरवाय। पूजा करि नगरी फुनिजाय। राजकरैं नृप नीति बिनीत। सब सुखकारी सज्जन रीति। सिव कल्याण कल्यांणक हेत। शिखरजाय चौसंघ समेत। सर्ब सिद्धिवर कूट सुथांन। करि थापनां निजमन आंन। करि प्रभाव नां भक्ति बढ़ाय। पालैं प्रजा नगर मैं आय। हुंडा सर्प्पिणी दोष बखांन। आदीसुर अष्टापद थांन। ना तरि सिखर सुमेर विष्यात। प्रथम तीर्थंकर शिव पुरजात। सुनि मगधेस सिखरम्हात्म। जा प्रसाद लहिए अध्यात्म ॥ सर्ब सिद्धितहँकू अनूप। पूजकरैं सुर नरखग भूप। काल अनंत हुये अरु होइ। भरत आदि जिन शिवतहँजोय ॥ मुनि असंष्य जाय तिसथांन ॥ मुकतिगए कर आतम ध्यांन ॥

*** दोहा ***

सर्ब सिद्धिवर कूटकी ॥ जात्रा करैं नरेस ॥ नरक पसुगति नाशिकैं पदवी लहै सुरेस ॥

## * चौपाई *

नोलख कोटि वरत फल होइ । एकवार वंदैं जो कोइ । अक्षिति अचल जो पूजा कराइ ॥ ताको फल को बरनैंराइ ॥

## * सवैया *

भरत सुक्षेत्र पट् खंड अति सोभित हैंतामैं एक आरज सुखंड परधान हैं। तहां इह शिखर सुमेर विराजमांन भव्य जन जीवनिकौं मुक्ति सुथान है ॥ मनवच कायसेती वंदन करत नरनरक तिर्यग गाति छेदन कपांनहैं । नमत सुमन सुख जलधि विचारि मन पायत मनांसिवेकौं प्रवल सुभांनहैं ॥

## * दोहा *

लौहाचार्य सिखर गुन ॥ वरन्यो प्रकृतवांन । ता अनुसार भापारची धर्म ध्यान मनआंन ॥

इति श्रीकाष्टांसंगे लोहाचार्य्य विरचिते तीर्थमहात्मे सुसमेदाचल माहात्म भाषायांमन शुद्ध सागरेण वर्णन द्वितियो अध्याय समाप्त ॥२॥

## * सवैया *

अजित कर्म जित धरम प्रकास कर जितसत्रु जनक कनक समकायहैं । बिजया सुमात जात नगर बिनीता ष्यात सोभित सुचिन्ह गज सब सुख दाईहैं । आयु लख पूर्व बहतर उतंगनसारव सुचाप सत धनुष सुभाए हैं । असे प्रभुआजित जिनेस मन वचन काय मनसुख उदधि नमत हरषाय हैं ॥

## * दोहा *

आदिनाथ शिवथांन लहि ॥ गुन अनंत अवधार । कौड पचास उदधि गए आजित नाथ अवतार । सुनि श्रेणिक मनुलाय कैं । शिखर मुक्तिसुखधांम । सिद्ध कूट जिंह अजित जिन । कथन सुनां अभिराम

* चौपाई *

जंबूदीप सुबलया कार सबदीपनमैं हैं सिरदार । तहां बिदेहं सुपूरब जांनि । चौथा काल सदा तिहि थान ॥ तीर्थंकर जहां राजैं सदा । इति भीति व्यापैं नाहि कदा । सीता नांम वाहनी सुख । आति निर्मल जल लसैं अतुष्य । ताके दक्षिन दिसा मनोज्ञ । बस्त देस सवजन सुखभोग । नांम सुसीमा हैं तहांपुरी । देखत सुर पुरकी दुति दुरी । तहां बिमल बाहन नृपईस । बहु नृप आइनमावैं शीस ॥ राज विभूति कहां लागि कहौं । सोभा कहत अंतनहिंलहौं । राज काज जिन बहु दिनाकियौ ॥ पूजा दांन विषैं चित दियौ एक समैं नृप कारन पाइ । होइ बिरक्त तप मैं चित लाइ ॥ राजभार निज सुतकों देइ । पंचमहा व्रत ग्रहन करेइ । द्वादस भावन हिएमैं धरैं । जिनभाषित दुद्धरतयकरैं ॥ सम्यक्‌ दर्शन सम्यक्‌ज्ञांन । अरुसम्यक्त चारित्र बखान ॥ षट्‌प्रकार वाहिजतप सार ॥ अभ्यंतर षट भेदविचारि ॥

* दोहा *

बिमल जानि मुनि तपे तपै । भव अनेक इनहार । पोडस कारन भावनां । भावैं निज हितकार ।

* चौपाई *

दर्शन बिशुद्ध प्रथम अनुसरैं । सरकर मिति दूषन परहरैं । मिथ्या भाव हिए मैं आंन । मुखसैं चवै अलीक नवान ॥ उक्तंच । मूढ़त्रय मदाचाष्टौ । तथानायतनानिषट । अष्टो शंकादयश्चेति । दृगदोषा पंचविंशति ॥

* चौपाई *

तीनू मूढ़ मद आठ बिचारि । षट्‌ अनाय तनतजैं बिचारि । शंकादि बसु दोष बखान । त्यागैं सुचि सम्यक गुणथान ॥ विनय भाव नादश विधि कही । बिमल जानि मुनि धारै सही ॥ निरती चार सीलव्रतपाल ।

सहस आठदस दूषन टाल । समय विचारि पाठमनुलाय । पढ़ैं पढ़ावैं हित उपजाय । सुरव्यंजन जुत अर्थ बिचारि । बस्तु गुनज्ञान सहतसुखकार ॥ पुत्रकलत्र मित्र धनगेह ॥ तजैं रागनहि करैं सनेह । कायादिक ममता सबतजैं । सो सबेग भावना भजैं ॥ उत्तिम मध्यम भज धन्य विचिंत । पात्र दांन कर च्यारि सुमिंत । आतम पुदगल त्यागैं सेय । त्यागि भावना निहचैंहोय । द्वादस विधि तपसाधनकरैं । बाहिर अभ्यंतर अनुसरैं ॥ मोक्षहेतु तनुतावैं जहां ॥ शक्ति सतपाशि कहावैं तहां । मरनरोग उपसर्ग निहारि ॥ हितवियोग अनहित जुत धारि ॥ भै ताजि समपरि नाम धराइ । साधु सामाधि कहैं मुनि राय ॥

## * सवैया *

कोइ मुनि राइतपकरत अनेक बिधि वाय पित कफ योग रोगताधरतु हैं । ज्वरि शीत स्वास कास सुलें शिर पीडा आदि तनसेती कोट योग पीप जो झरतु हैं । और जो विविधि गदउपजत देहमांहि श्रम करत पीडा जो करतु हैं । औषधि आहार शुद्ध कर दुखनाश करैं वै या व्रतधारी सोई सुख आचारतु हैं

## * चौपाई *

मनवच काया आति हितलाय । जिन नामक्षरजपै सुभाय । सदा काल सुमरन जपकरैं । अर्हंद भक्ति सुपातिग हरैं ॥

## * सवैया *

जो मुनि-राज महातप साधक कर्म्म कुलाचल नाशक करैहैं । द्वारखड़े अवलोकत जेनरभोजन हेत सुभावधरैं हैं शीशनवायकरैं गुरभक्ति सुवेभवसागर आयुतिरैं हैं । जानि अलाभ मुनी सुरको रसत्यागि करैहिए भावभरैहैं लोक अलोक प्रकाशत है सुभद्वादस अंग सुवेद बखानी । श्रीजिन राज सुआननसे परसूत भई सबही सुखदांमी । जासु प्रसाद सधै सिव मार्ग होत मुनीश महाशुभ ध्यानी । । सो सुतभक्ति धरैनरजे उरतैनर

होत अनंत सुज्ञानी । जो सुभद्रव्य बखानत हैं षट पंच सुकायक भेद बतावैं । जीव अजीव जुतत्व विचारत जानत चित्तु जबैं जौलावैं । अंक प्रमान पदार्थ है जगते जग मैं धनजे उरध्यावैं । जोइह अगम भक्ति करैं पडि कौंन हिए सुभ भाव सुधारैं । तीरथ के करता तिनकी थुति पाठ पढ़ैं श्रुत के अनुसारैं ॥ आवस्यक इह भक्ति करैं सुनि आपतिरैं फुनि औरनतारैं । श्री जिन निकराय मनोहर दांन करैंजिन पूजरचावैं । सो प्रभावन भक्ति करै जन क्यों नहि मुक्ति के नाथ कहावैं । श्रीसुख दाइक चारित पालत सील महानिति चित धेरहैं । सम्यक सुद्ध बिचार करैं व्रत धारक दर्शन ग्यांन धेरहैं । गोर बताइ निकीजु धरैनर आदर मान हिएजु करेहैं । तेजन वात सल्प गुन धारक कर्म्म कलंक जोपंक हरेहैं ॥

* दोहा *

एषोडस सुभ भावनां । भावै मनहि बिचारि । बिमल जांनि सुनि राजनैं । गोत तीर्थ पतिवार ।

* चौपाई *

अंत समैं संन्यास सुधार । प्रांण तजे शुभ भाव बिचारि । बैजयंत नांमाजु बिचार । सज्या तहंउत पाद बिचारि । उपजै अंत महूरत मांहि । जोबन तन आति सोभ धरांहि । जैजै देव करत तहँदेखि । चाकित हैं फुनि अवाधि बिशेषि । पूरब भव जांन्यौ सुरराय । तप फल इहपदवी सुखदाय । श्री जिन भासि तजे तप करैं । ते नर इहि थानक अवतरैं ।

* दोहा *

सोसुर इसाबिधि जांनिकैं । जिन पूजा चित लाइ । मन हर्षित आति भक्ति जुत । श्री जिनवर गुन गाइ । फुनि निज थानक आइकैं । सुर सुख भोग कराइ । फीन आगैं सुनिं मगधि पतिं । सुरचरजहं उपजाइ ।

*** चौपाई ***

इसही जंबूदीप मझार। कौसल देश लसैं शुभसार। कौसल्या नांमा पुरवसैं। अति सुंदरता सोभा लसैं हरि आज्ञा जिन जोगि सरूप। धनपति रची पुंन्य जिनभूप। पंचाश्चर्य वृष्टिजहँ होइ। पूरव सम सव जानैं लोइ। जित सत्रुनृप राज कराइ। प्रजा नीति पालैं सुखदाइ। विजया नांमहैं पटरांनी। गुनगर्भित सवजन सुखदांनी। ससुद नांम राजा लघु भ्रात। परम पुनीति सुलक्षण गात। जैसे नांर मनी सुख खानि। शील शिरोमनि अतिगुण वांन। विजया देवी नृपकी नारि। जिनमाता सुभ लक्षन धारि। पोडस सुपिनां निसि निरषंत। फल सुनिअति मनमैं हरखंत॥

*** दोहा ***

जेष्ट मांस अलिपक्ष जुत। नष्ट कलादिन जांन। सो सुर चयातिथि गर्भकरि। सवजन कौं सुखदांन॥

*** चौपाई ***

इंद्र आय सब देवसमेत। जिनवर गर्भ कल्यानक हेत। मात पिता सिंहासन थाय। पूजा करि हरष्यौ अति आय। फुनि सुर पुर सुर पति फिरिजाय। अति सुख कर नव मास विताइ। जिन जन्मौत्सव मंगल चार। करै अमर रमनी सुखकार।

*** दोहा ***

माघ सुकल दशमी सुदिन। रोहिन नखतर प्रवांन। अजित नांथ जिन जनमियौ। त्रिभुवन जनसुखदांन।

*** चौपाई ***

सुरपति सुरगिरपैं लैजाय। सहस अठोतर कलस ढराय। पूजा अस्तुति बहुविधिकरी। हरिहिय हरषि कहैं धनिघरी। तीन लोक पति श्री जिनराय। अजित नाथकहि नगरीमहंल्याय। जननी अंक दइ सुरईस। करसु

कलत कर नावैंसीस। तांडव नृत्य हिएमैंधरैं। छिन छिन भूंमि गगन संचरैं। बहुविधि भगति इंद्र तवकरी। जन्म सुफल मान्यौ तिंहघरी।

* दोहा *

देव सेवकौं छोड़िकैं। मघवा निज पुर जाइ ॥ नाना भेष बनायसुर। जिन सिसु क्रीडकराइ ॥

* चौपाई *

दस आतिसैं गुन और अनंत। सहस एकवसु चिन्हमहंत ॥ बालापन बीते इहमांन ॥ लाख अठदस पूरबजांन ॥ जोबन तन देखे प्रभुतात। पांनीग्रहन कीयो अवदात। उतसव शक्र आइतव करैं। राजछत्र निजकर सिरधैरं॥ जै जै तीनलोक पतिराज। सब सुखकारन धर्म जिहाज। अस्तुति करि मघवा मनुलाइ। फुनि सुरपुर निज गमन कराइ। जिनवर पंच अनुव्रत करैं। राजनीत मार्ग सुभ धैरं ॥ रागवान लखि पूरब राज। प्रजापाल लखि सहित समाज ॥

* दोहा *

मृतक भ्रमर लखि जल मैं। बैरागित जिनराय। द्वादशभावन भावतैं ॥ लौकांतिक सुरराय ॥ (अडिल)

धन्य जिनेसुरदेव सेवजे तुम करैं। भव अनंत के पाप एक छिन मैं हरैं ॥ तुम बिन कौंन बिचार करैं सुभ धर्म कौ। तुम बिन जे जगजीव लहै नाहि सरमकौ ॥

* दोहा *

इस प्रकारते ब्रह्म सुर। प्रणमिजइ निजथांन। हरिशिवका पारिपाप जिन। जैजै करै सुजांन। राजा सब निज कंधधैरं। सात पैंड लौंजाय। पुनि सुर खग निज कंधधर। बनमें थापे जिनराय ॥

* चौपाई *

जंबू बृक्षतलै सुबिचार। वस्त्रा भूषन सबपरिहार। नमः सिद्धेभ्य मुखउच्चार। पंचमुष्टिप्रभु केस उतार ॥

*** दोहा ***

दस हजार भूपाल मिलि । जिन चरननि चितु लाइ । शीसनवाय दिष्या लई । शिवपदवी सुखदाय ॥
निज आतम गुनलानि प्रभु । ध्यांन धर धर धीर । तप कल्याणक अमर पति । करि बांधी सुख सीर ॥

*** चौपाई ***

मन भाजन मैं जिनकचलेइ । पय समुद्र परवाह करेय । सुरपति अमर नगर मैं जाय। पुंन्य जोग सुख भोग कराय । श्री जिन जुगल दिवस पर वांन । अचल मेर समध्यांन बखान । तीजे बास विनीता आइ । ब्रह्मदत्त पर अशन कराइ । गोपय भुजि अक्षय निधि कही । पंचा चर्ये करैं सुर सही । साढ़े द्वादस कोटि प्रमांन । मनि बरषासुर करैं सुजांन । फुनि प्रभुध्यांन धरयौ बनबीच । कर्मरूप पायोबनकीच । द्वादश बर्षरहे छदमस्थ । कर्म्म घातिया कीने अस्त ।

*** दोहा ***

लोका लोक प्रकाशियो । केवलज्ञान प्रभाव । चौनिकाय सुर आइहरि । ज्ञांन कल्यानक चाव ।

*** चौपाई ***

समे सरन पूरबकी रीति । सार्ध इकादस योजन मीत । अंतरीष जहां राजैंईस । तीनलोक सब नावैंसीस ।

*** दोहा ***

समोसरन सोभाविभो ॥ बरनत लहेनपार ॥ धर्मवढावनकारनैं ॥ करहिविशेष बिहार । माघमालवआदि लै ॥ अंग बंगजेदेश । बृषउपदेश करत गए । सिखर सैल लोकेस ॥ सुनि श्रेणिक अंतरकथा ॥ सगर चक्रवर्ति वात ॥ एकसमय सुबिभूति जुत ॥ सिखर सैलपथजात ॥

*** चौपाई ***

मारग मध्य तपोधनराज । भविजीवन निधि तरनजिहाज ॥ देखि सुमुनि नायौ निज सीस । तुमजग तारन बिस्वाबीस ॥ अस्तुति करबैठो नरराय ॥ धर्म बृद्धि भाषी मुनि राय। बृपसागारी और अनगार । मनधर सुन्यौं सर्म दातार । फुनि मुनि धर्यौ जाय बन ध्यांन । चक्री आगैं कर्यौ पयांन । गयो सिखिर देष्यौ जिनंद । नमस्कार तब कीयौ नरेद । अष्ट द्राबिले पूजाकरी । हिए हरष अस्तुति बिस्तरी । जैजै जिन देवन के देव । सिव ब्रह्मा बिस्नु स्वमेव। जगत जीव तारन तुम नाथ । गतभौ सिव पहूचन साथ । हे जग पति मेरी पर जाय । कहौ जथा वत श्री जिनराइ ।

*** दोहा ***

अबिरल धुनि जिन मुखथकी । प्रगट भईसुख दाइ । गनधर बरनन करहितव । सुनौ सगर मन लाय ।

*** चौपाई ***

एजंबू बर दीप दिपंत । सब दीपन के मध्य बसंत । प्राची नांम बिदेह सुजांन । देशव तसका वती बखांन । भूप पुरी नगरी सोभंत । अमर नगर की सोभ लसंत । प्रजा पाल संज्ञा जैसेन । नर नागर जन सब सुखदेन । जैसे नाना मैं पटनारि । रूप सील गुन लक्षन धारि । जिनकैं जुग नंदन जन मियौ । जाचि गजन बहु दांनजो दियौ । जेष्ट तनय बृत खैन सुजान । रूपवंत सब लक्षण वान । लघु सुतहै रतिखेन मनोग । तिन सुत भूमय भोग भोग । ( अडिल ) एक समै रतिखेन काल बसि हैगयौ। भूपतिके मनमांहि दुख अतिही भयौ । इस संसार असार सकल छिन भंगहैं । धन धान्यादिक पुत्र कलित्रन संगहैं ॥

*** दोहा ***

इहि मन मांहि बिचारि नृप । जेष्ट तनय देराज । निज चित अतिबैराग होइ । बिनय चले तपकाज ।

*** चालछंद ***

जैसेनं नांम नृप ईस। बनजाय लखे मुनिईस। सुखदेन जसोधर नांम। करजोरि कियो परनांम ॥ तुम तारन तरन विशेख। भयो जनम सुफल तुमदेखि ॥ मेरी पूरब पर जाई। कहिए प्रभुतुम सुख दाई ॥ नृपबैन सुनै मुनिराई। मुखबैन चवै हितदाई ॥ इहभरत क्षेत्र शुभधांम। तहां पद्धक पुर अभिराम ॥ संखिक नांमा द्विजवर एक। धनवांन वसै सुविवेक। तसु गेह तपोधन आय ॥ तिन देखि हिए हरषाय। पडि गाह महामुनि लीनौं ॥ आहार सुप्रासुखदीनौं। वहु पुन्य प्रभाव निहार ॥ करु भोग भूमिअवतार।

*** सवैया ***

तहांतैं सुरगज इचयो हैं ॥ महा घोप तात मात चंद्रानी भई सुगात मनसंचै पुरमें पयोचल सोथ योहैं ॥ मुनिहोइ सुर्गजाय जसोधर जीकैंभूम पुरमांहि जय सैन नाम लयो हैं ॥

*** दोहा ***

इसप्रकार मुनि मुखथकी। सुनि जैसेन नरेस ॥ परिग्रह तजिमुनि पद लयौ। कीयौ दिगंवर भेप पंच महा व्रत आदरैं। पंच सुमति मनधारि ॥ तीन गुपति गोपैं सदा दुद्धर तपकर सार। विविधि तपस्या कर तहां ॥ आयु स्वल्प जव जांन। धारिसंन्यास रहेतवैं ॥ प्रांनकिए अवसान।

***चौपाई ***

बिजय बिमांन तवैंउपजाय ॥ सुर संवंधी भोग कराय। हैतैं चए अए सुभथांन ॥ कोसलदेश विषैं तुम जांन। नगर विनीता हैं जिस नांम ॥ जित अरि लघु भ्राता गुनग्राम। समुदराय सवजन सुखकारि ॥ नांम सुवाला हैं सुभनारि। तिनके सगर नामसुत होइ। चक्री पदवहतपवल जैइ ॥ नमस्कार करि निज पुर आय ॥ बहु प्रकार सुख करैं अघाय ॥

*** दोहा ***

पुन्य प्रताप अपार अति छहौं खंड पाति जोइ। सगर चक्रपाति कौविभो वरनत श्रुति अतिहोइ।

सार्ध चारसैं धनुषक काया उन्नतजासु । सतरलाख सुपूर्बकी । आयु बखानी तासु ॥ * चौपाई *

द्वात्रिंशत नृप नृप के ईस । चक्री पतीकौं नावैं सीस । नौ निधांन संचित भंडार । मन बंछित फल सुख दातार। रतन देवेदि गाज ग्रह बसै । और अनेक विभूत जौलसैं । चक्री इनजुत भोगैंभोग । फुनि तहँ भये और इक जोग ।

* दोहा *

चतुरानन मुनि राज इक । करम घातिया नाश । सबजग संसैं तमहरन । केवल ग्यांन प्रकाश ॥

* चौपाई *

चक्री सुनि मनसैं हरषाय । सबबिभूतिं जुत वंदन जाय । तहां सुरासुर आएतबैं । बानी सुनि हर्षे जन सबैं ॥ सुनि चूला नामैं इक देव । देखि चक्र पाति जान्यो भेव । कहै देव सुनि चक्री बात । हमतुम देव मित्र थे भ्रात । तवहम तुम प्रतंज्ञा करी । ऐसी वात हिए मैं धरी । जो पाहल मानुष अवतरैं । ताको देव समोधनकरैं । सो तुम अब चक्री पदपाय । मोह नींद क्यों सोवो राय । विषय त्यागि करिए नरराय ॥ तप करि करिए सिवपुर साथ ॥ * सोरठा *

षट् खंडी सुनि वात । मौन पकरि आति हठ गही । जान्यो सुरमन माहि । इसप्रकार समझनहीं ॥

* चौपाई *

देव एकदिन इह मनधरै । अपनो रूप विप्रको करै । साठि सहस चक्री सुतजहां । सोद्विज देव गयो तबतहां । बोल्यो द्विज सुनि चक्री नंद । खाय पिताधन करत अनंद । धृग तुम जनम हुछत्रीपना ॥ मान रहित यह भोजन गना । निज भुज बल बिनु जोनरपाय । धृग जीवन जोवन अधिकाय । इह सुनि सब मिलि करै बिचारि । सत्य कहत द्विज देखि निहारि ॥

*** दोहा ***

प्रगट जगत में देखिए। उदिम करि नरहीन ॥ तिनें लोग सबयौं कहैं। बड़े क्लीव अति दीन। गणपिता पैंबेगिदै। सुनौंतात हमबात। आज्ञा हम कछु दीजिए। वेगि करोबिख्यात। सुनौं पुत्रछहखंडमैं। अरि हैं कोई नाहिं। आनंदसुतुम सुख करो बैठमंदिर मांहि। बिन उदिम हैं जनकजी। अन्नोदिक नाहि खाय। हठ सुत को इह देखि कैं चित चिंतैं नरराय। अष्टापद पैंश्रीजिन धांम। तिनि चतुर्बिसाति हैं नांम। रतन बिंव कंचनमय थांन। पूजाकरतैं होइ अघहान। भरत किए सबसुख दातार। सुनों पुत्रमनमांहिं बिचार। आगे काल महा दुखदाइ। आवैं पुन्य हीन नरथाय।

*** दोहा ***

मनचंचलह्वो जाहि जन। इहि बिचारि मनलाइ। गंगा परिषावत करौ। सुनि सुत अति हरषाय। ब्रजडंढले हाथ मैं गए गगन तटजोर। नाला करनाबिचारिमन ॥ बज्र बेद का तोरि॥

*** चौपाई ***

तब वहउरग रूप सुरधर। मूर्छित सुरकीने सुकुमार भीम भागीरथ दोन्योभाइ। आएनगर मांहि दुखपाय। मंत्री सुनि मुखतैं उच्चरैं। रायकान इहबात नपरैं। फुनिमणि चूलि भेष द्विजकीयो। निज कंधेइकसुतधरलीयो॥

*** दोहा ***

राय निकट तैंजाइकैं। कहे देव द्विज रूप। मेरो सुतजमलै गयो। देमंगायबड़भूप॥

*** चौपाई ***

सुनि चक्री मुख बैंन उचार। अरेभूप सुरभयो गवार। जमग्रहगयो न कोई फिरैं। ऐसी भूलि हिए मति धरैं। मोहनाश जग दुख दातार। दिक्षाकौं नाहिं लेइ बिचार। सुनौ चक्रपति मोसुतमरो ॥ अति मोहांतर मैंदुखधरो। अति कठोर तुम उरहैंराय। इसप्रकार तुम राजकराय। साठि सहस तुमसुतमरयो। रंचक दुखहिए नाहि धरयौ

* दोहा *

यह दुज बच सुनिं बज्रसम ॥ मूर्छित चक्री होइ । सीत क्रिया मंत्री करी ॥ ह्वै सचेत समजोय ॥

* सोरठा *

लखि संसार असार । मनबैरागित चित ह्वै । चक्री मुनि पदधारि । भागीरथ कों राज दे । * दोहा *
सुत नंदन लघुभीम कौं संग लेइबन जाइ । आतितप करत बिरक्त ह्वै । निज आतम मनलाइ ॥

* चौपाई *

देव देखि इह सुत ढिग जाय । उन्मूर्छित कर गमन कराइ । तेउ बिनि जग्रह आवत भए । सुन्यो पिता दिक्षा ले गए । मन उदास ह्वै राजकुमार । परिग्रहत्यागि महा व्रतधारि । द्वादशभेद तपीतप करैं । कर्म्मकलंक पंकै सब हैंर ।

* दोहा *

निज आतम लौंलाइकैं । शुक्ल ध्यान मनलाय । योग निरोध क्रियोसवै शिवपद लयो सुभाव । भागीरथ बहु राजकरि ॥ श्रुति सागर मुनि देखि । करजुगजोरिनिवायासिर । जनम सुफल करिलेखि *चौपाई*
मुनि उपद सेसुन्यो मनुलाय ॥ फुनि नमोस्तु भाषै राइ । मेरो तात तात सुनतात । समवाइ मूछिं क्रिमजात । औमेरे पूरब भवसार ॥ बरनन करि भवतारनहार । यह संसै मेरो हियबास । नाश करो मुनि ज्ञान प्रकास । सुनि मुनि बोले निजमन लाइ । गिरसमेद महा सुखदाइ । जहां चतुर्विंसति जिन देव । भरत क्षेत्र उपजै स्वय मेव ॥ कालअनन्त हुए अरहोय । मुकति थांन निहचैं हैसोय । और अनंत तपोधन जहां ॥ सिव पदवी पाई हैं तहां ।

*** दोहा ***

सोगिर बंदन जे करै । सुचि करि मनबचकाय ॥ नर्क तिर्य गति छेद करि ॥ सुरनर पदई पाइ । काल लब्धि कौं पाइकरि । ते नरसिव पुरजाइ । सोनर जग विष्यातहैं भवि जीवन सुखदाइ ।

*** चौपाई ***

संघ एक बंदानि केहेत । चल्यो जात मारग चित देत । यपमांहि नगरी इकसार । लोक संघ निंदामन धार । कुंभकारतहं एक विशेष । मन आनंदो संघ जुदेखि । बहु अस्तुति करिमनबचकाय । पुन्यउपार्जन कर्यौ सुभाय ॥

*** दोहा ***

वानगरी को एक नर । गयो न तसकरी काज । राइजांनि पुरदग्धकरि याको इहईलाज ॥ संघनिंद को पापजै भया प्रगट ततकाल । भई गजा ईमरतहां । पुनि पुनि वहभवजाल । कुंभकार वहसमैमैं । गयो अन्य इकथांन । आइ लख्यौ पुरदग्धसब । जान्यौ असुभ पूवांन ॥

*** चौपाई ***

आयु पूर्न वानिक घर भयौ । पुनि नृप है तप दुद्धर थयौ ॥ सोलम स्वर्ग देव पदपाय ॥ बहुत भोग भोगे मनलाय ॥

*** दोहा ***

एक भूप गजपग तलै । मरी गिजाई सोइ । अनुक्रम करिमर है सुनृप । साधिदेव सब होय ॥

*** चौपाई ***

तेसब आय सगर के नंद । भए लहो सिवपदसुष कंद । कुभकारचर तिथि अवसान । सोलम स्वर्ग देव सोजांन । तुम भागीरथ उपजे आइ । संघ स्तुति शुभफल इहि पाय। संध निंदजे तिर्यगगया ।

फल समुदाय कर्म इहिलए। इस बिधि भागीरथ सुनिबैंन। रोगी पथ्य लहैं जिम चैंन। सुनि मुनि
बचन जुमनहि बिचारि। इह संसार असार निहारि। * सोरठा *
निज सुत कौं देराज। चले आतमा काजकौं। तारन तरन जिहाज। तप करिकैं सिवपद लह्यौ॥

* चौपाई *

सुनि श्रेनक निहचै मनलाइ। जहां अजित सिव पद को पाय। सिपरनांम भूधर भूधेंरं। आयसुरासुर
सेवाकरैं। नाम सिद्धवर कूट सुथांन। तहां आय तिष्टे भगवांन। जोगरोध करि कर्म जुनास। कीनौं
मुकति पुरी में बास। * दोहा *
एकलाख पूरब जहां। द्वादशवर्ष जुहीन। केवल ज्ञान बिराजियो। अजित आतमा लीन। चैतपांड्
सुभ सौंम दिन। रैहति पंचमिजंन। सिवकल्याणक सक्रकर। गए अमरपुर थांन। * चौपाई *
अजित आदि संभव अवसांन। चौरासी यकरौर बखान। पैंतालीसलाख अधिकाय। एते मुकति गए
मुनिराय। जेनरटौंक बंदनाकरैं। कोडवतीसवरत फलधरैं नरक तिर्यचगाति नाशैं सोय। एकबार बंदैंजोकोय॥

* आडिल *

एक मुनी सिव थांन सुर्ग सिव सुखकरैं। भव अनेंकके पाप एक छिन मैं हरैं। जहां जिनेंद्र अनंत
मुनी सिव पद गहैं। सोसुक्षेत्र फल बर्नन कहौ कबि कौकहै * दोहा *
लौहाचार्य बिशेषकरि। शिखर शैल गुनगाय। धर्म्मध्यांन हित जांनिरचि। नरभ।पासुखदाय
इात श्री काष्टा संगे लोहाचार्य बिरचते तीर्थमहातमे खुसमदोचल महातम भापायामन सुद्धसागरेण बिरचितसिद्ध बर्ननोतृतीया अध्याय॥३

### * सवैया *

भवके हरन हार नगर साबित्री सार दृढ़ रथ जनक सुमाता देवी सैनाहैं । सुंदर सुवर्ण तन सोभित अनेंक गुन च्यारि सत धनुष उन्नत सुख दैनाहैं । आठ लाख पूर्व सुथिति जिनराज करि तपलियौ जांनि जग जल केशे फेनाहैं । ऐसो जिन संभवजुसेवो मनवचकाय मनसुख सिंधुजोपै सिवसुखलैना हैं ॥

### * दोहा *

अजित नाथ जब सिवगए । त्रिशत लाख करोड । इत नौकाल बीतीतियौ । संभव जिन लगजोए। ते संभव भव नाशि जिन । बंदो मन बचकाय । तिंह चरित्र बरनन करौं । सुनौ सुधमन लाय. आदिम दीप बिष्यातहैं । जंबूदीप सुनाम । लख जोजन बिस्तार सुभ । हैं अनंत सुखधांम ॥

### * चौपाई *

पूर्व बिदेह क्षेत्रसुभ जान । सीता सरिता उत्तिम थांन ॥ कक्षदेश सो हैं सुखकार । क्षेमपुरी नगरी मनहारि । बिमल सुवाहन नृप पुर तनौं बिमल धर्म धारै गुनघनौं ॥ बिमलमती रांनी गुनवांन । सत्य सरूप सीलकी खांनि ॥ भोगैं भाग मनोगत सार । पूरब पुंन्य तनौं अधिकार । एक समैं जिन मंदिर चढ़ै । दिसा अवलोकनि मन अति बढ़ैं । सजल जलद देखे तिंहिबार । नाना बर्न धरै मनहार । दंपति देखि सुमन हरखाय । छिनक मांहिते गए बिलाय । ताहि देखि राजा चितयौ ॥ ध्यांन धांम धनव्याप लेखियौ । क्षिन भंगुर जान्यौ संसार । बिन-सत सकलम लागेबार । * दोहा *

इहबिधि जगमैं जानिजग । सुतकौं दीनौंराज । द्वादश भावन भावधरि । गहन चले जिनकाज । समोशरण मैं जाइकै । जिनपति सीस नवाय । धर्म्म सुनो इकचितकरि । दिक्षा लए सुभाय । अडिल

पंच महा व्रतधारि सार मनमैं लियौ। पंचसुमति सुभेद बिचारन मन दियो । तीनगुप्ति मनुलाय महातप जे करैं । ते मुनि भव दधि पारहोइ सिवसुखवरैं ।

*** दोहा ***

राग दोष परिणांम तजि । सब दुखनकौंटालि । खोडस कारन भावनां । भावैंहिए त्रिकाल ।

**चौपाई**

अंत समैं संलेखन कर्यौ । च्यारि प्रकार असन परिहर्यौ । पूरनआउ प्राण तजिसोय । प्रथम ग्रीवमैं सुरपदहोय । तहां बिमांन सुदर्शन लसैं । अहि मिंद्रक लहि संज्ञा लहि बसैं । देवमहार्द्धिक पदशीपाय अंतर महूरत जौबन थाय । अंगुल खष्टि सुवपु परमांन । सप्तधातु तन रहित वखांन । तीन बीस सागर तिथि धार । भोग सुभोग चणवैंसार । तेईस सहस वर्ष सब जाइ । मानसीक आहार कराइ । साढ़े ग्यारह मास बितीत । स्वासो स्वास लेइ इह रीत । ब्रह्मचर्य जहँ हैं सब देव । करहिन अमर आंन तसुसेव । अणि माहि मांदिक सबरिद्धि और अनेक लसै जुत सिद्धि ।

*** दोहा ***

इस प्रकार ग्रीवक बिपैं । सुर सुख भोग कराय । खटमासी सुरही जवैं । निज पूजा मनलाय ।

**चौपाई**

तदनंतर सुणि श्रेणिकराय । जिन जन्मोत्सव हिय मैं लाय । जंबूदीप भरत तहँखेत जिन चौबीसी उपजन हेत । सावित्री नगरी सुबिसाल । दिढ़रथ नांम तहां भूपाल । नांम सुखेनां हैं पटनारि । वंस इख्याक सबनि सुखकार ।

*** दोहा ***

इंद्र अवधि करि जांनि उर । धनपाति प्रति उपदेस । नगर रचा मानि बृष्टिकरि । ज्यौं सुख लहौ असेस ।

साढ़े तीन किरोर बखांन । एक काल मन बृष्ट सुजांन । सुखमैं बीते हैं षटमास । सोअहि मिंद्र पूर्व तिथि बास । सुरचय गर्भ कियो हैं बास। सुपन लखे जिन मात सुभास । प्रात काल उठिपति दिगजाय। सुपनें षोडस दिये सुभाय । कहि फल सुनि हरषे दंपती । जगपाति सुत उपजै सुभमती। फागुण सुदि

अष्टमी बखांन । गर्भस्थिति जिन देव सुजांन। आयु सुरेस कल्पनंक कियौ। अति उत्सव करि हरख्यौ हियौ ॥ गयौ अमर पति अपनै धांम । जिन जननी सेव सुरतांम । अगहन सुकल पंचमी सार ॥ जनमें जिन तीरथ करतार । अैरापति सुरपाति चढ़ि आय । इंद्रानी जिन ग्रहमैं जाय। प्रनमि करी जिनवर करलेइ ॥ हर्ष सची निजपति करदेइ । जैजै करत गए सुरसैल । जिन मंजन करि निज हर मेल । बसुबिधि पूजा बिशेखि । अपनों जन्म सुफलतसु लेखि। संभव जिनभव हरन बिशाल । संग्या सक्र सुमुख उच्चाल। फुनि ग्रहजाय दिए जिन मात । नृत्य कियौ अति पुलकित गात ॥ अमर अमर पतिराखे तहां । बाल अवस्था श्री जिन जहां । निजपुर जाय भोग बहुकरै ॥ श्री जिन भक्ति हिएमैं धरैं । करैं बाललीला जिनदेव ॥ हरैं नारि नर मन स्वमेव । पंद्रालाख पूर्ब सिसु रूप ॥ जिन जोबन लखि दिढरथ भूप । करिए पान ग्रहन बिचारि ॥ राज भोग सब बन्यौ समाज ॥

* दोहा *

उत्सवकरि निज पुरगयौ ॥ राज करैं जिनराज । श्रावक व्रत समभाव जुत । करैं आतमा काज ॥

* चौपाई

लाख चवालिस पूरब राज ॥ प्रजा सरम उपजावन काज । सिंह पीठ इकादिन थितिराइ ॥ उलका पात देखि जिनराइ । छिन भंगुर जांन्यौ संसार। दृष्टि पड़ै सब बिनसन हार। निज चितमैं बैरागित होय। द्वादश भावन भावैं सोय। ब्रह्म लोक बासी सुर जहां । आए श्री जिनवर हैं तहां । धन्य धन्य जगतारन हार.। तुमबिन कोंन उतारैं पार ॥

* दोहा *

अस्तुति करि जिन देवकी । ब्रह्मलोक सुर जाय । सिद्धारथ सिवकापरी । सक्र थापि जिनराय ॥

### * चौपाई *

सहेतुकवन मैं प्रभुजाय। बस्त्रा भूषन तजि जिनराइ। मागिश्रसुदि पूनिम अवसांन। तप दिन जांनि लेउ गुनवांन।

### * दोहा *

ॐनमः सिद्धेभ्य सबद श्री जिन मुख उच्चार। निर्वि कल्प मन सरस जुत। सिरके केश उतार।

( आडिल ) सहस एक नृपराज तज्यौ मन लाइकैं। दिक्षाले जिन चरन कमल सिरनाइ कैं॥ लागे आतम काज सजतप कौंधरैं। जोपूर्व कृत कर्म्म नांस तिनकौ करैं। बृतधारयो जुग दिवस जगत पाति मौंन सौंचरन कमल थिर जुगल काज नाहि गोनसौं। जोग त्यागी जिनराज जोग गाहि कैरहैं। ध्यांन मेरु समधार कर्म्म अरिकौंदहैं।

### * दोहा *

बेला करिश्रीजिन उठे॥ असन हेत हियधार॥ ईर्यांपथ सोधत चले॥ साबित्री मधि सार॥

### * चौपाई *

तहां सुरेंद्र दत नृपराइ। पडिगाहे श्रीत्रिभवन राय। नौधा भगति भक्ति मय होय। सप्त सुगुन दाताका जोय। गोपथ भुक्ति जुक्त मनधारि। उत्पातो दभदोषनिवारि। अैसैं निधिजिन जबउच्चरी। पंचाचर्य बृष्टि सुर करी। साढ़ द्वादस कोटि प्रमांन। रत्नसुरेंद्रदत्तग्रहथांन। पुनि निर्जन अटवी में जाइ॥ अचलध्यान लागे मनलाइ। दुर्द्धरतप कीनों जिनराज। करन सकल आतमकाज। तारन तरन महागुनधार। नाम लेत भवभव भयहार। करमुनिबरष प्रामीति मुनि राय। छदमस्तक पदवी सुख दाइ। घाति घातिया प्रकृति विशेष। निज शुद्धातम निर्मल देखि। ज्ञान भान परवांन पूचीन। लोकालोक ब्यापगुन लीन। चारि अनंत चतुष्टय सक्ति

जुगलखि जिनहरकीनी भाक्ति। समो सरन प्राग्वांन धन देव। रची बिभूति जोग जिनदेव । बरनत कथा होय बिंस्तार। सुरगुरुकहिनाहि पावैपार।

* दोहा *

सुभ क्रातिग भ्रमरानपत्र । चोथतीसेरजांम । केवल कल्याणक रच्यो सक्र महासुख धांम । च्यारिज्ञान धारिसबैं बानी परखनहार । पंचोतर सत जानिए । गनधर अनभोधार ।

* अडिल *

श्रीजिन धर्म्म प्रकास द्रबिधिकीनौं तबैं। सकल सुरासुरसुनत हिए हरषेसबैं। द्वात्रिंशतशुभ भेद सहस बिहराइ जी ॥ शतजोजन चहुंदिसा सकल सुखदाइजी ॥

* दोहा *

करि बिहार इसबिधि प्रभु। बंगदेशमै जाय। हेमपुरी नगरीतहां । समो सरन तिथिथाय । राजकरैं समदत नृप । सैनानांमानारि ॥ नृपसुनि श्रीजिन आगमन ॥ हरष्यौ हिए अपार॥ सबपरिवार समेतह्वै ॥ लैपूजाउप करन ॥ आयौ राजाभावसौं ॥ जहं तिष्ठौ समोसरण ॥

* चाल *

पूजा करि मनहरषानौं ॥ जिन जन्म सुफलकरि जानौं ॥ तुमदर्शन बिनु दुखपायौ ॥ देखे भवभ्रमनसायो ॥ जान्यौ मैं निजहिए माही ॥ तुमसौ प्रभु दूजौनांही ॥ दुखहीन भएसबहारे ॥ जबपूजे चरनतुमारे ॥ तुम ही सिव बिस्नु बिधाता ॥ तीनौं तुमगुनसुखदाता ॥ मेरेनिहचैं इहआई। तुमसेवै तेसिवजाई । मोको सुतक आभिलाषा । लखियौ तुम सुरद्रुमसाखा। उपदेश महा मुनि दीजै । पतिग जिनमेरे छीजे ।

* दोहा *

इस बिधि थुति करि कैं नृपति । श्रीजिन सीसनवाइ । नरकोठमैंआइकैं । बैठो हिए हरषाय

अडिल

जिनबानी धुनि होत सकल जन सुख करैं। आतम हित उपजाइ और संसैंहरैं। सबभाषा मैं सारमागधी नामहैं । सुनत श्रवन मनहरनपरम सुखधांमहैं ।

* दोहा *

चतुर्थैनगणधरतबैं । बरनन करैंबिचार। सुननरेंद्र मनुलाइकैं । सुतउपजैं जिमसार । सिद्ध क्षेत्र जात्राकरैं ।

सुचि करमनबचकाय ॥ कल्पद्रुमपूजाकरो ॥ संबेगसबैं जु मिलाइ ।

*** चौपाई ***

भाव शुद्धानिज गृहसौ करैं । पीतवसन अपनौ तनधरैं । जिन चैत्यालैं उसादिन जाइ । पूजाकरैं हिएहरषाइ । मगमैं जिनकल्याणकपरैं । पूजाकरैं जिनअस्तुति करैं । आहारादिक च्यारयौं देदांन । करैं नृत्य जिनवरगुन गांन । सिखर जाय सुचि भावसमेत । टौंक चतुर्विंसाति मनदेत । पूजाकरि फिरि निज ग्रहआइ । पुन्य वांन तुमसुत उपजाइ ॥

*** दोहा ***

सुनि नृप मनहरषायबहु । सीसनाइग्रहआइ । विधिवत नृपजात्राकरी सुतउपज्यौसुखदाइ ॥

*** चौपाई ***

संभव जिनवर कर उपदेश । अस्तुति सुरनर करतशुरेस । मास एक थिति रही प्रमांन । सिखर सैल पहुंचे भगवान । दवल दत्त बरकूट निहारि । कायोत्सर्ग ध्यांन चितधारि । पुन्य प्रकृति रसदेसवषिरी । जोगानिरोध सिव सुंदर बरी ॥

*** दोहा ***

आय पाकस्यासन जहां । सिव कल्याणक ठांनि । चैत्रसुकल षष्टी सुरवि । उत्सव करि तिसथांन ॥ (आडिल) तहां सुरासुर आइ बिद्याधरनरतबैं ॥ कियौ महा उछाह हरषि हिए मैं सबैं । ग्रंथदेपि मनसुद्ध सिंधु ऐसैं कह्यौ । जैजैजैजै शब्दसौं दिसि है रह्यौ ॥

*** दोहा ***

फुनि निज थांनक जायसब ॥ सुनि श्रेणिक मनुलाय । महा पुन्य के योग सौं ॥ उपथांनक जियजाय ।

*** सोरठा ***

सौ समेद तैं नरेस ॥ पुत्र पाय बहु सुख कह्यौ । धवल देखि निज केस । राजभार सुतकौं दियौ । दिक्षा लेव न जाइ । तपदुधरधारयोतबैं ॥ केवल ज्ञांन उपाय । कर्म्म काटि सिव पदलह्यौ *** अडिल ***

निवैं कोडा कोडि मुनी सुर जानियै । लाखबहतरि सात सहस्र बखानिये । पंचशतक व्यालीस सिद्ध पदवी लही ॥ सैंभव सै अभिनंदन लौगिनती कही ।

*** दोहा ***

लाखबयालीप्रोषधी । बृतकर जो फलहोइ ॥ धवल कूटबंदनकिये । सौफल हैंभाबिलेइ जे नर पूरन सिषरि गुन । फुनि चौबीसूं कूट ॥ बंदै तिनैं अनंतफल ॥ नरक पसुगाति टूट ॥

*** अडिल ***

लौहाचार्य्य बिचारि सिषरि गुन कहि दियो ॥ सौ अनुसार निहारि जिन गुन में कियो सिद्ध थांन इह जांनि ध्यान हैंधर्म कौ ॥ चौबीसौ जिनथांन हरैं सबकर्म कौं ॥

*** दोहा ***

जात्रा करै त्रिकाल भवि ॥ ऐसी हिए मै धारि ॥ सकल हरैंभ्रम जाल ज्यौं ॥ दोन्यौं भवसुखकार

इति श्री काष्टा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहातमे खुसमेदाचल महातम भाषायामन सुद्धमागेरण विरचितसिद्ध बर्ननो चतुर्थो अध्याय४॥

*** सवैया ***

सकल सुकृत खांन जनम बिनीता थांन सिद्धारथ माता सुख दाता सबजनहैं । संबर जिनतासिव लक्ष्मी बरन हार सो भैं कपि चिन्ह चरन बर्न हेमतनहैं । साढ़तीन शत चाप उन्त सुकाय पूर्व पचास लाख आयसुभमनहैं । अैसे अभिनंदजिनंदमनसुखसिंधुतिनचरनांबुज कौं मेरी प्रनमैंहै

*** सोरठा ***

संभव जिन दशलाख । कोटि उदधि जबहीगए । धर्म्म प्रकासनहार । अभिनंदन जिन जनमियो
अभिनंदन आनंद करि । सब जीवन सुखकंद । जिन चरित्र वर्नन करौ ॥ नासन दुर्मद फंद ॥

*** चौपाई ***

जंबूदीप जगत बिष्यात । सकलदीप के माधि अवदात । पूरब नांम बिदेह प्रसिद्ध ॥ सोभित सोभा धनकनरिद्ध ॥ सीता नन्दी मध्य मे वहै । वज्रकूल जुग जलकौं गहै ॥ ताके जमादिस देश महंत ।

नाम मंगलावती दिषंत ॥ नगर नांम सुभ परम पुनीति । सब नरनारि करैं मिलि प्रीति ॥ महा सैन
नृपराज जो करैं ॥ अरिगन कोऊ धीर न धरैं ॥ पट रानी महसेना नांम ॥ पिय हितकारी सब सुखधाम ।
इकदिन भूप मुकर कर धार ॥ अवलोकै निजमुख हितकार । स्वेतवाल लखियौ सिरतवै ॥ अति संवेग
भयौ हियजबैं ॥ निजदे जघन पाल बुलाय । राज भार सोंप्यौ सुखदाय ॥ वस्त्रा भूषन तजि तिंहथांन ।
चले आत्मा काज सुजांन ॥ हिए बिबेक बैराग समाज । अविचल राज करन के काज । निर्जन
अटवी जाइ महासैन । लषियौ महामुनि सब सुखदैन । बिमल बाहु स्वामी अतिधीर । विद्याजल निधि गुण
गंभीर ॥ बिनैं सहित नृप सीस नवाय । अस्तुतिकरत परम पददाय । कृपासिंधु तुम दीनदयाल । दिक्षा
देहु मिटैं जगजाल । मुनिधर्मोप देश तब दियौ । सुनि हर्षित ह्वै तिन तप लियौ ॥ मूलोतर गुनधारत
अंन ॥ निश्चल मनुजु रहित सब संग । करत ध्यांन जैसैन मुनीस ॥ अति निदाघरित गिरके सीश सीत
समैं सरिता तटजाइ ॥ निज आतम सेती लवलाइ । बर्षा मैं द्रुमकेतर रहैं । पूर्व करम निपन इमदहै ॥
दर्शन बिशुद्ध आदि मनधारि षोडस कारन भावैं सार । प्रकृति बंध तीर्थंकर गोत । तीनलोक सुख
दाइक होत । अंत समैं गहिकरि संन्यास । बिजैं विमांन कियो तिनवास । देव भयौ अहमिंद्रप्रधांन ।
सकलदेव सेवैं तिनथांन । तेतीस जलधि आउतह परी । देहीदुति अति वहु विस्तरी । एकहस्त उन्नत
तनधारि ॥ अंगुलच्यारि उन सुखकार ॥ तेतीससहस्र वर्ष जबजाय । मांनसीक आहार कराय । साढ़ेसोरह
माश वितीत । सुरभितस्वसलेहि सुभरीति ब्रह्म चर्यपद ईसव धरैं । सातत‍त्व की चर्चा करैं । इह
विधि और वर्नन बिस्तार ॥ जानौं ग्रंथ तनैं अनुसार । आयुरही षटमास जुसेपि । रतनमाल मूर्छित
गलदेखि । आभूषण माणितज बिनांस । देखि मरणभै ह्वैदुखरासि । आरत ध्यांन हरन के काज । उद्यत

द्वै पूजन जिनराज। अष्टद्रव्य जुत भव समेत। निज आतम सुख कारन हेत। धर्म ध्यांनमैं अहनिशि जाय। अबिचल पदवी जातैं पाय।

*** दोहा ***

तदनंतर मगदेश सुनि ॥ निज निश्चल मनुलाय। जन्म जहां अभिनंद जिन। वरनैं मन बचकाय। ईह जंबूवर दीप मैं। भरतक्षेत्र अभिरांम कौसलदेश मनोग्य अति। नगर विनीतानांम। बंशइक्ष्वाक विष्यात। जग कासिप गोत्र प्रसिद्ध। संबर नांमां भूपत है। राज करैं जुतरिद्धि। सिद्धारथ नांमां त्रिया। सील वंत सुकुमार। जाके उर जिन अवतरे। तिस गुन लहैन पार।

*** पद्धडी छंद ***

नो द्वादस योजन रचि धनेस। पुर जैजै होत सकल देस ॥ वर्षांवैं रतन त्रिकाल देव। जिन माता देवी करत सेव। वीते षट् मास अनंद मांहि। दुर्जन भैंभीतिनहीं करांहि। एक दिन संबर भूपति सुनारि। अति आनंद जुत कर सैन सार। पछिम निसि खेडस सुपन देखि। गज मुख करत प्रवेस देखि। उठि प्रात सुपन फल सुने सर्व। दंपति हर्षे निज मन अगर्व। बैसाख सुकल छठि सुदिन जांनि। नक्षत्र पुनर्वसुसुभ बखांनि। इंद्रादि अमर आए तुरंत। करि गर्भ कल्यानक मन सहंत ॥ फुनि निज निज थांन कि गमन तेह। नगरी नृप ग्रह उत्सव करेह ॥ नव मांस बितीतेहैं सुछंद। प्रभु जन्म भयौ त्रिभुवन अनंद ॥

*** दोहा ***

माघ मास सुभ सुकल पक्ष। द्वादसि दिवस निहार। शुभ महूर्त जिन जन्मको। तीनभवन हितकार।

*** पधरी छंत ***

अमरेस आय गजपर चढ़ाय। सुर गिर परि जाय प्रभु नहाइ। अभिनंदन काहि पूजेसुदर्व। जय नंद बृद्धि सुर करहिं सर्व। ल्याये नगरी उत्सव करंत। देखत जिन मुख पातिक हरंत। दंपति सिंहासन

थापि इंद्र । जिन माता गोददे कै जिनंद । करि नृत्य अमरपति नाक जाय । जिनवर सुर मिल क्रीडा
कराय । तन हेम बर्न लक्षन समेत । आतिसैं दश सोभा अधिक देत । साढ़े द्वादश लखि पूर्व जांन ॥
प्रभुबाल अवस्था सुत बखांन । जोबन तन जनक जिनेंद्र देखि । प्रभुके विबाह कौ कियौ भेप । दोहा
बस्त्रा भूषन इंद्रलै । प्रभुतन मैं पहराइ । राज सिंघासन थापिकैं मंगल गान कराय । राज कुमारी
कन्यंका । सीलवान गुन थांन । करि विबाह संबर जनक । मन धारि हर्ष प्रधांन उत्सव करिकैं अमर
पति । गमन देव पुरकीन । नित पंथ अनुसारजिन । सब नागर सुखदीन * चौपाई *
पूर्व एक लाख थितिरही । श्री जिन आगम ऐसीकही । इक दिन सिंघासन जिनराज । थिति दिस
दिस अवलौकन काज । पांचौं वरन जलधि तनधरैं । लाल आसि सित पीतजो हरैं । छिनक मांहि गए
बिलाइ । देखि बिचारै श्री जिनराइ । इस संसार अथिर कर जांनि । नाश नीक तन विभौ बखांनि । द्वादश
अनुप्रेक्षा चित धारि । अभिनंदन जिन करहि विचारि । इतनै लौकांतिक सुर आय । अस्तुति करैं त्रिजग
सुखदाय । तुमबिन ऐसी कौ चितधरैं । मुकाति गमन कारन कौ करैं । * सवैया *
तुम जगईस सीस नावन त्रिलोक थुत तुम जग धाता सब साता के करनहौ । मिथ्या तमसेती निजदृग
हीन जन ग्यान की सवाई देइ तिम हरनहौ । भवन दहन सिव रामा के हिए अहार जम जोरावर अरिताहू
के दरनहौ । गुनहैं अगम तुम ग्यांनहैं अलप हम सुख सिद्ध कौ जो तुमाहि सरनहौ । * दोहा *
इमबहु थुति लोकांति सुर । करि निज थांन किजाय । आति रमानिक सुरेस तब । सिवका ल्यावैं चढ़ाइ ॥
* चौपाई *
चलि सुरलतरुतालि ताजि संग । ध्यांन मौंन आविचल मन अंग । बारह सहस वर्ष बन लसैं । नंदनवनशोभा

कौं हंसैं ॥ एक सहस नृप सीस नवाय । तप लीनुं अतंम सुखदाय । तपकल्याणक सुरपति कियौं । अपनौं जन्म सुफल करि लियौ । जैजै करत इंद्र सुर एव । निज निज थांन गए सबदेव । श्री जिन जुगम दिवस व्रत धारि । नगर बिनीता फुनि पग धारि । इंद्र दत नांमा तहं भूप । जिन मुनिवर कौं देखि सरूप । करि प्रनांम जुग चरन प्रछालि । करि पूजा फुनि पढ़ैं गुनमाल ॥ प्रासुकक्षीर धेनु कौं लाइ । भक्ति सहित आहार कराइ । अखैं निद्धिकहि अटवीगए । आतम लीन जिनेसुर भए ।

*** दोहा ***

इंद्रदत ग्रहसुमन सब पंचाश्चर्य करंत । दांन प्रभावन प्रगट करि ॥ मनमांहि हरषंत ।

*** पद्धडी छंद ***

प्रभुमौंनि धारिव्रतकरत जोर । द्वादश बिधि जिनतपकरत घोर । आचारज कियो चारित बिशेष अष्टादशवर्ष प्रमांन लेख । मिथ्यातम नाशक ज्ञान सूर । प्रगट्यौ सिवदायक त्रिजग पूर । तबइन्द्रादिकसुर धनदआय ॥ रचि समो सरन आनंद उपाय ॥ साढ़ेदस जोजन माहिनाय । मंगल जिन गुननिज मुख अलाय ॥ केवल कल्यानक सुरयकीन । अपनैं पातिक सबकिए छीन ॥

*** दोहा ***

पौस सुदि चौदसि दिवस । आभिनंदन जिन ज्ञान । उपज्यौ सबजगसुख करन । पूरन पुन्य निधान ॥

*** चौपाई ***

बज्रनाभि आदिक गुनधार ॥ इकसत आधिक तीन सुखकार । तीनलाखसबसंघ समेत । करौंबिहार धर्म्म के हेत । नाना देश बिहारकरंत । कवि बर्नन करि लहै अनंत । आएसुमेर सिषर के सीस । जैजैकरत सुरासुरईस । आयुमास इकजब थिति रही । मौंनअवस्था फुनि प्रभु गही । समोसरन बिघट्यो तत्काल । संखप्रकाति नासी दरहाल । पुन्य पाप दोन्यौ समकीए । निर्बिकल्प आतम हित हिए ॥ सित बैसाख छठि

सुखरासि । मुक्ति पुरी कीनौं बहुबासि। आनंद नाम कूटके सीस। सिवरमनी परनी जिन ईस । मुनिवर औरै गिनत कछु कही । सोभाषित हौजो सुत लही । कोडा कोडि तिहातरि जांनि । सातकिरोरअधिक परवांन सतरलख फुनि सात हजार । पंचसतक व्यालीसहजार । इतनैं मुनितिस कूटसुथांन । मुकति गएजिन बैंनबखान । ऐसो पर्वत पूजन जोग । बड़े भाग सौं होए संजोग । सिवकल्यानक मघवाकयौ । भक्ति पूर्व है हरषित हियौ । सुर नर खगमुनि पुंज रचाइ ॥ निज निज थांनिकि गमन कराय ॥ *दोहा*

तदनन्तर श्रेणिक सुनौं ॥ जिन इक चित लगाय । हैं अभव्य राजा कथा । भाषैं गोतमराइ । जंबूदीप मध्य रमनीक । भरतक्षेत्र सोभैं शुभलीक ॥ सूरमंद तहं देस प्रधांन ॥ पूरन नगर वसैं सुखखांन । पुर सोभा अति बनी अनूप । मुनि सेषरनांमां तहंभूप । चंद्रमती रानी गुनवंत । चंद्रसमांन रूप छविवंत । तिनके वंस भूप इक भयौ । बिजैं भद्र सौ वन मैं गयौ ॥ सिद्ध सैन नृप लखि मुनिराय ॥ हर्ष सहित है सीस नवाय । पूछै नृपति कहौ मुनि बैन। निज आगम सब जन सुखदैन । मुनिवर कहै सुनौ भूपेस जात्रा करि आए इसदेश ॥ बिजैं भद्र नृप मुनि सिरनाय ॥ निजजात्रा पूछै हितदाय ॥ श्री गुर अवाधि। निरखिक कहै ॥ हैं अभव्य जात्रा नहि लहैं ॥ भूपचमूस जियौ चतुरंग। पुरजन लोग लिए सवसंग। पुहप पुरी कौ नृप जैसेन । सूनि करिचाल्यौ निज सैन । बिजैं भद्र जैसेनसु धीर ॥ जात्रा हेत चले दोऊ बीर ॥ परम प्रीति हित हिए उपाय ॥ तिस अवसर सुनि श्रेणिकराय । दश जौजन गिरि थिति अवसेस। सुप्न लख्यौ जै भद्र नरेस ॥ राजनास सुत जमपुर गयौ ॥ जागत नृप अति व्याकुल भयौ ॥ समझावैं जैसन महीस। मौह उदैं सुनि व्यापैं रीस॥ मैं निज ग्रह फिरि जाऊंआज ॥ तौ मेरौ सोभै सवकाज । हठ धारि निजपुर आयौ वही ॥ कथा अभव्यजीव इह कही। नृप जैसेनि शिषरपैंजाय। कूट कूट पर पूजकराय।

मंगल गांन किये दिन तीन ॥ भौ भौ के पातिक करि छीन । फुनि निजपुर मैं गमन करंत । नितिप्रति अरचैं श्रीभगवंत ॥ दांनच्यारि विधे करैं विचार । च्यारौं संघ सुपात्र निहारि । निज ग्रह आय कीयो उत्साह ॥ परभव कीतिंन लीयो लाह ॥ तनुज विभाव सैन दै राज ॥ दिक्षा लई निजातम काज । द्वात्रिंशतलख संघ सुराइ । तप करि केवल ज्ञांन उपाय ॥ आनन्द कूट शिषिर शिवथांन ॥ अविचल सिद्ध हुवे भगवांन । नृपति विभाव सैन सुतसार । विषै सैन नृपपद गुनधार ॥ आनन्दनांम टौंकपरजाइ । महिमा भगाति करी अधिकाइ । जेनरनारी वंदन करैं । सोरहलाप वरत फल धरैं । गति तिर्यंच नरक गतिनास ॥ मानुष सुरगति पावैंवास ॥ गिरि समस्त जो नरपूजन्त ॥ ताके फल कौ लहै नाहि अन्त ॥ * दोहा *

मन मरकट रोधन निमित । भवि जीवन हितकार । लौहाचार्य कथन लषि । कियौ ग्रन्थ विस्तार ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचतेतीर्थमहातम्येखुसमदाचल महातम भाषायामन सुद्धसागरेण वर्णनसिद्ध कूटनं पंचमो अध्याय ॥५॥

## * सवैया *

सुमाति करत हार दुर्मीति हरन हार जनम विनीता धार हेमद्युति तनकी । तात मेघ प्रय जांनि मात मंगला बखांनि चकवा कौ चिन्ह आस पुरै सब जनकी ॥ तीनसैं धनुष काय सबही हिए सुहाय पूरब चालीस लाख आयु अचरनकी । ऐसे हैं सुमाति नाथ मुक्ति गमन साथ मन सुद्ध सिंधुन मैंदेहुमेरे मनकी ॥

## * दोहा *

नवलख सागर वीतियौ । अभिनंदन सिवथांन । जन्म लियौ जग सुखकरन । सुमतिनाथ भगवांन ।
तिन चरित्र बर्नन करौं । ग्रंथ उक्त मन धारि । सुनत पापमल दूरि है । भवदधि उतरै पार ॥

## * चौपाई *

जोजन ल्यारिलाख बिस्तार। खंडधार की तामैंसार। प्राची दिसि तहन्नांम बिदेह ॥ सुन्दर सुबसबसैगुन गेह। ताके मध्यमा हार मनीक ॥ सीता सरिता हैं शुभ लीक। उतरदिसिं तटदेशवसंत। कवि बरनन कहि लहन अन्त ॥ नाम पुष्कलावती प्रसिद्ध। धन धान्यादिक है नह रिद्धि। पुंडर कनी हैं तहंपुरी। सोभाकर सुरपुर दुति दुरी। नृपरतिषेन नगर कौ ईस। नृपाति अनेक नवावैं सीस। सील सिरोमनि वहु गुन गेह। सब परिजा सौं अधिक सनेह ॥ निति र.ज करिकैं सुखदेइ। नरनारी गुनगान करेइ। स्यांम दांम षट बिधि गुनराइ। दंड भेदकरि राजकराइ। धर्म्म प्रवर्त कबिसन बिनांस। जाचि गजन मन पूरैं आस ॥ इह बिधि सौं राजै राजिंद। अमरलोक सम सौहैं इंद ॥ इकदिन सिंह पीठि थितिराय ॥ करैं धर्म चरचा चितलाइ। तिन अवसर इक पुरुष निहार। लए मृतक सुत करत पुकार। लखि नृप चित विरक्त अति भयो। आतिरथ सुत कौं नृपपददयौ ॥ ग्रंथत्यागि व्रत लयौ अनूप। करैं महातप वहु विधि सूप घौर वीरतप साधन कीयौ ॥ ग्यारह अंग पावकरि लियौ। देह नेह तजि आतम ध्यांन। करैं परीस्यास है निदान। सोलहकारण निज चितधार। गोत तीर्थ पाति बाध्यौ सार। प्रायोप गमन अंत सन्यास। कारि सर्वार्थ सिद्धि सुवास। यद अहमिंद्र लयौ रबिषेन। मन बंछित आति हित सुखदैन। लखि बिमांन बैजयंतसु नांम। सबसुर सेवकरैं अभिरांम। एकहाथ चौ अंगुलु हीन। सुंदरतन सोहत अमलीन। ब्रह्मचर्य तप बुद्धि अपार। सात तत्व चरचा बिस्तार। तेतीस सहस्रवर्ष वीतन्त ॥ मानसीक आहार करंत। जांहि सार्द्ध षोडश जव मांस। सुरभितलेहि अनंदित स्वास। अवधि नर्क सप्त लौजांइ। तहलगि तनवै क्रिया कराइ। लेस्या शुक्ल धरैं सब देव। करैं प्रीति मिलि सुरस्वमेव। ईहाविधि सुखमैं आयु बितीत ॥

षट मासायु सेष लहिरीति। लगे मुकट मनिहै छबिछीन। लगैहारकी जौति मलीन। बिकल भाव ताजि करि मनसंत। पूजा करैं जपैं अरिहंत। अब सुनि श्रेनिक जन्म सुथांन। जहां लहैं पदवी भगवांन। जंबू नांम दीप परतक्ष। सेवैं ताहि सुरासुर जक्ष। भरतक्षेत्र तहं कौशल देश। बसैं नारि नर उत्तम भेस॥ पुरी बिनीता रचि धनिंद। नौ द्वादश जौजन सुखकंद। तीन काल मनि वर्षा होय। रस मित मास अगाऊ जोय॥ तहां मेघ रथ नांम सुराइ। नारि मंगलावती सुहाइ। दंपति प्रीति परस्पर करैं। राज नीति मारग अनुसरैं। इकदिन रानी सैन करंत। लखे सुप्न षोडस निशि अंत। उठि करि प्रात शुद्ध करि देह। पतिढिग जाय चवैं जुतनेह। सुनै सुभ फल अति सुखदाय। सुरनारी मिलि मंगल गाय। इतनेमैं आए सुरईस। जैजै करत नवावैं सीस। थापि सिंह विष्टर नृपनारि। पूजैं बस्त्र आभूषन धारि। अस्तुति करि निज थांनाकि जाइ। देवीसेवकरैं जिनमाय।

* दोहा *

पावस रितु श्रावन सुदी। द्वितीया मघा नक्षत्र। गर्भ कल्यांणक सुर कियौ। निज तन कियौ पवित्र।

* चौपाई *

निज निज काज रचैं सुर नारि। मंगल गांन करैं सुख कार। इसविधि सौं बीते नव मास। जनमैं जिन जग पूरन आस। चैत सुकल एकादसि जांनि॥ सुमति नाथ जिन जन्म कल्यांन। आइ शची पति लैजिन राज। चले देव गिरि मंजन काज। कर कर कलस सकल सुर लाय। क्षीर उदधि सुचि जल भरवाइ। सहस एकब सुकुंभ सुरेस। सनपन करि सुर पूजि जिनेस। जैजै सुमति नांथ जगदीस सुमति दाय हैं बिश्वा बीस। श्रीजिन जोग बस्त्र पहराइ। आभुषन करि भूषित काय। ऐरापति पैंथापि जिनेंद्र। ढारत निज कर चमर सुरेंद्र॥ जैजै सब सुरकरैं निसंक। जिन पति दिए मात के

अंक। नृत्य गांन करि निजपुर जाय। सुर जिनसेवकरैं सुख दाय। बाल रूप बहु भेष धरंत। छिन छिन मैं जिनमन हरषंत। दशलख पूरब बाल कुमार। क्रीडा करैं मात मन हार। देखि मेघ रथ जनक जिनेस। अति पवित्र तन सुरभेस। जान्यौ ब्याह जोग जग राइ। उत्सव करि रमनी पर नाइ। आइ पुलोमि जंपति हरषंत। श्री प्रभु गुन गन सुर गावंत। थापि राज वृष्टिरु भगवांन। आत पात्र फेरैं अम लांन। बस्त्र आभूषन सब पहिराइ। फिरिनिज थांनक सुरपति जाइ। सुमति नांथ जिन राज जोकरैं। प्रजा नीति सुभ मग पगधरैं। ऊनतीस लाख पूर्व करि राज। बहुरि विचार्यौ आतम काज। इह संसार असार निहारि। द्वादश भावनां भावैं सार। तिस औसर लौकांतिक देव। अस्तुति करैं आयस्वमेव। धन्य धन्य प्रभुदीन दयाल। तुमबिन को छेदैं जग जाल। को सिव मार्ग देइ दिखाइ। को इह मुनि पद धरैं सुभाइ। इत्यादिक अनेक थुति करी। बहुत भक्ति निज मनमैं धरी। अपनौ निमित साधि ग्रह गए। सक्रजु सिवका ल्यावत भए। प्रभु बैठाइ लय बन जहां। गए सहेतक नांमां तहां॥ परिग्रह तजि जिन नगन सरूप। एक सहस सह और जो भूप। वृत धारि जुगल दिवसके अंत। उठे आहार निमित मन संत। विजय नगर मैं बधू नरिंद्र। आवत निज द्रग लखे जिनेंद्र। आगैं ह्वै मुकलित कर कर्यौ। निज लोचन निज द्रग पद धर्यौ। कर नमोस्तु विधि अस्तुति ठांनि। दे आहार विधिवत विधि जांनि। अखैं निद्धि कहि जिनवन आइ। धर्यौ ध्यांन आतम लव ल्याइ। नृपति गेह सुर उत्सव करैं। पंचाश्चर्य अधिक बिस्तरैं। जिनवर बीस बरस छदमस्त। रहकरि किए कर्म गन अस्त। चैत्र शुक्ल एकादसि जांन। उपज्यौ केवल ज्ञांन सुभांन। चतुर निकाय देव सब आइ। समोसरन विधि रची बनाय। गनधर इकस्त सोरह तहां। द्वादश सभा जिनेसुर जहां। बतीस

सहस देश विहरंत । दया धर्म उपदेश करंत । सेष मास इक आयुसु जांनि । सिखर समेद आए भगवांन । अबिचल कूट परम पदलेइ । जामन मरन जला जालिदे । आविचल कूटन मैं जोकोई । सो अबिचल रमनी पतिहोई ॥ कोडा कौडी एक निहार । चौरासी करोरमन धारि । लाख बहतरि उपरि कहे ॥ सात सत्तक इक्यासी लहे । इत तैं मुनि सिव पद तिस थांन ॥ लहि करि अबिचल भए सुजांन ॥ एक बेर प्रण मैं जौ कोइ । लाख बतीस वरत फल होइ ॥

## * दोहा *

चैत मास शित पक्ष सुभ । एकादसी निहार । सिव कल्यांणक । इंद्र कर सुमति नाथ गुण धार ॥

## * चौपाई *

और कथा सुनि श्रेनिक राय । शिखिर महातम अति सुख दाइ । जंबू दीप दीप मैं सार । लख जोजन ताकै बिस्तार । भरत क्षेत्र तहं आरिज खंड । जोधदेश सोहै अति चंड ॥ पदम नांम नगरी मनहार । नर नारि सुंदर गुन धार । आनंद । सेन नगर पति नांम । करैं राज सोभित धन वांन । प्रभावती रानी दुतिवंत । सील सुलक्षन क्रियावंत । जेष्ट पुत्र सुभ सैन बखान मित्र सैन लघु तनुज सुजांन । सुख सागर मैं मगन नरेस । शाधे बहुत नृपति के देस । इक दिन भूपति बन मैं गयौ ॥ जुग चारण मुनि देखत भयौ । दै प्रदक्षणा प्रणम्यौराइ । धर्म्म बृद्धि दीनी मुनि राइ ॥ धर्म कथा सुनिकैं नृपतवैं । प्रश्न करैं मुनि भाषैं अवैं । मेरी आचक है हितकार ॥ जिम सुभ गतिमैं पाऊं सार । इम सुनि करि बोलौ मुनि धीर । अवधि ग्यांन जुत गुन गंभीर । आयु मासह षट परमांन ॥ निहचैं करि निज मनमैं जांनि । अबिचल कूट बंदनां करौ । तब अबिचल सिव नारी वरौ । असे बैंन सुने नर ईस । आयौ नगर नाइ मुनि सीस । चारि प्रकार संगलै साथ ॥ सकल बस्त्र पहरे नर नाथ । जिन पूजा करि भाव समेत । बहु विधि दांन सुपात्रन देत ।

चल्यौ शिखर नृप मन हरखंत। पहुंच्यो अविचल कूट तुरंत। टौंक टौंक पूजे जिन थांन। मुनि संजुत चौबीस प्रमांन। निजग्रह आय प्रतिष्टा करी। शुद्ध भाव कीनौं तिहि घरी। सुभ सैना सुतकौं देराज। दिक्षा लई सुआतम काज। तप करिके बल ज्ञांन उपाय। सिद्ध निरंजन पदवी पाय। जो नर शिखर जात इह रीति। करैं देव नर गति सौं प्रीति। महिमां कथन बढ़ै बिस्तार। को मेधा धर पावैं पार। नरक पसू गति नासन करैं। क्रम क्रम सौ सिव नारी वरैं।

## * अडिल्ल *

महिमां सिखर सुमेर कहां लौं गाइए। परम पवित्र पुनीत पुंन्य सौं पाइए। आरिज खंड मझारि क्षेत्र या समनही। यह बिचारि। मन शुद्ध सिंधु मनमैं सही।

## * दोहा *

मद प्रसाद के नाशकौ। इह उदिम लख लीन ॥ लौहा चार्य्य कृत निरखि नर भापी चित दीन।

इति श्री काष्टा संगे लोहाचार्य विरचतेतीर्थमहातम्येखुसमेदाचल महातम भापायामन सुद्धसागरेण वर्णनअविचल कूटनं षष्टमो अध्याय ६॥

जाकौ शत नमत सुरेस तन रतन बरण चरण मैं चिन्ह सौहै जलज नवीनौ हैं। जननी सुसीमा सुभ धारक जनक नांम नगरी। कुसाग्र सुख धाम बास लीनौ हैं। सार्द्ध द्वय सतक धनुष काय उन्नतहैं तीस लाख पूर्व सू आयु कहिदीनौंहैं। अैसे पदम प्रभुके निहारि पद पंकज कौमन सुख समुद्र श्री नमस्कार कीनौंहैं॥

## * सोरठा *

नवै सहस करोर॥ सागर बीतें जानिए। सुमति नाथ सिव और। जनम पदम प्रभु मानिए॥

## * दोहा *

नमस्कार करि कंज प्रभु। सारद सीस नवाय। चरित मुकति थांनक कथा। बरनौं अति हितदाय॥

## * चौपाई *

खंड धातकी सोहैं सार॥ च्यारि लाख जोजन बिस्तार। पूरब नांम बिदेह बखांन। तहां सदा पावैं सिव

थांन। सीता नंदी मध्य मैं बहैं। निर्मल जल करि सोभा लहैं। ताके दक्षिन दिसि इक देश। वत्स नांम सुख दाइ असेस। सोमा नांम नगर रमनीक। सोहैं इंद्र पुरी समठीक। नर नारी मन हरन बसंत। देषि देव देवी लाजंत। अपराजित नामां नृपराज। करैं नीति पथ निज हित काज ॥ चक्री पद सम भोगैं भोग। लखैंन सुपने मैं दुख सोग। जिनवर पूजा करैं त्रिकाल ॥ हृदैं धारि गावैं गुनमाल। च्यारि प्रकार संघ सुख दाइ। करैं भक्ति आति प्रीति उपाइ। दान च्यारि बिधि देइ अहार ॥ पात्र अपात्र जुकरैं विचार। इह बिधि निसिदिन करैं बितीत ॥ जोहैं सिवपद साधक रीति। इकदिन सौध मध्य थिति राइ ॥ लखैं गवाखण मैं चितलाइ। इंद्र धनुष नृप लखि पंचरंग ॥ छिनक माझ ह्वैते भंग। इह संसारी रीत मन जांनि। प्रसम भाव निज मनमैं आंनि ॥ चिंत चत्यौ आतम हितकरौ। कर्म्म महा आरि छिन मैं हरौ। नांम सुमित्र पुत्र बुलवाइ ॥ राज भार दीनौं चित लाइ। पिहिता श्रव मुनिकैं ढिग जाइ ॥ करि प्रनांम ब्रत लीनौ राय। नाना बिधि तप साधन करैं ॥ पूर्व कृत कल्मखसबहरैं। सहैं परीस्याधीरज धारि ॥ करैं अहार बिहर निहार। गज करि मित गुन निज चितु लाइ ॥ साधैं अपराजित मुनिराइ। ग्यारह अंग पाठ मुनि कीन ॥ ग्यानांवरन जलांजुलि दीन। पंचा चार आचारन कियौ ॥ निज आतम सतारस पियौ। दर्श विशुद्ध भावना भाय ॥ करैं बिनैं संपन्न बिचार। उचित दांन तप द्वादश रूप ॥ ब्राह्मां भ्यंतर करैं अनूप। साधु समाधि हिए मैं धरैं ॥ बैया ब्रत मुनिनिकी करैं। अर्हद भक्ति सुविधि बिस्तार ॥ पुनि आचारिज भक्ति निहार। द्वादशांग श्रुत भक्त करंत ॥ प्रवचन भक्ति सुहिए धरंत। षट आवस्यक भक्ति जुदेखि। करैं प्रभावन धर्म्म बिशेष ॥ जेजन जैंन धर्म बृत लीन। चाह करैं ब्रत लैन नवीन ॥ तिनके ब्रतकी थिरता करैं। सो नर वात्सल्य गुन धरैं ॥ षोड़स भावना सुभाइ। तीर्थंकर पद बंध

कराइ ॥ अंत समैं थिर करि परनांम । व्रत सन्यास धरयौ अभिरांम ॥ सर्वोपर ग्रैवे यक सार । जन्म धरयौ मुनि अति गुनधार ॥ प्रीतकर बिमांन मनु लाइ । तहं उत्पातक सेज बिछाय ॥ अंत महूरत जो बन होय । पद अहमिंद्र महा सुख जोय । जुग कर तन उतंगता धरैं ॥ दुतिकर मन सोभा सब हरैं । आय जलधि इकतीस बखांनि । लेस्या सुकल बड़े बुधिवांन ॥ च्यारि सतस चौसठि दिनजाय । स्वासो स्वास लेय सुखदाय ॥ एकतिस सहस बर्ष बीतंत । मानसीक आहार करंत । छहौं दरबि चरचा हित दाइ । सब सुर मिलि चरचैं चित लाइ । रितु मिति मास आयु प्रमांन । राही माल मनि छबि लखि हांन ॥ बीतराग पूजा चित दीयौ । अंतर शुद्ध भावनां कीयौ । तदनंतर जिन जन्म सुथांन । सुनि श्रेणिक निज मन इक आंन । एही दीप जंबू वर नांम । भरत क्षेत्र सुख आतिम धांम । आरज खंड मध्य सुभ देश । ताकी महिमां करैं सुरेस । नगर कुशंबी नांम विख्यात । तहां बसैं शुभ उत्तिम जाति । वन उप वन भूधर परचंड ॥ तहँ काली इह बहै अखंड । धारन नामैं नृप राजंत ॥ सोभा गुन कहि लहौं न अंत । प्रिया सुसीमा हैं पटनारि ॥ सील सुलक्षन शुभ आचार ।

*** दोहा ***

हरि आज्ञा धन देवलै ॥ भक्ति शक्ति उरधारि । पुरी रची जिन जे गतसु ॥ महिमां लहौं न पार ॥ तीन काल षट मास लौं ॥ मणि बर्षाए देव । बहुतक देवी देव मिलि । करैं मात की सेव ॥

*** चौपाई ***

इक दिन निज मंदिर में आइ । सैन करै श्री जिनवर माय ॥ सुपने षोडस लखै तुरंत । गज मुख दसत देखियौं अंत ॥ ( अडिल्ल ) प्रात सूर्य वरनाद सुनैं निज श्रवनदै । क्रत कर वस्त्रसुधार चली निज भवन मैं ॥ श्री पति के ढिग जाय स्वप्न षोड़स कहै । तीर्थंकर सुतहोइ सुनै फल सुखलहै ॥

*** दोहा ***

दंपति निज आनंदमैं ॥ करैं परस्पर नेह । सुर सुर पाति तहँ आइकैं ॥ करैं मात सुचि देह । माघ अशित षष्टी दिवस ॥ उडु चित्रा सुख दाइ । गर्भ कल्यांणक शक्रा करि ॥ निज थांनक पुन जाइ ।

*** चौपाई ***

देवी गांन करैं दिन रात ॥ नाचैं अति पुलकित है गात । निज निज काज गेह को करैं ॥ छिन २ जिन माता मनु हरैं । पंचाश्चर्य होय सुखसार । नगर देश पुरजन दुखहार ॥ इति भीति नाहि व्यापें कोइ । सुख मैं रहैं नगर के लोइ ॥ इस बिधि सौं बीती दशमांस । जन्म लियौ श्री जिन सुख रासि । संची पुलोम जपाति सुर सबैं ॥ ऐरापाति साजि ल्याए तबैं । जै जै करत कौशांबी थांन । सक्र गोद मैं लै भगवांन । सुर गिरिजाय कलस भरवाय ॥ नह्वन कियो सुरपति हरषाय ॥ पदम प्रभु अभिधांन उचार ॥ पूजा करि सिवपद दातार । पुन आए माता के तीर । थापि अंक जिन गुन गंभीर ॥ कियो नृत्य उत्सव गुनगांन । जाचि गजन बहु दीनौं दांन । इन्द्र गयो निजथांन तुरंत ॥ सेवक सुरराखे प्रभु अन्त । नृपधारन मंगल सानन्द ॥ पुरजन मिलि कीनौं सुखकन्द ॥ श्री जिन शिसुक्रीडा सब करैं । मात जनकपुर जनुमनहरैं ॥

*** दोहा ***

कातिक सुकल त्रयोदसी जनमे पदम जिनेस । मनवंछित सुखदाइ हैं । मेटत त्रिजगकलेस ॥

*** चौपाई ***

तीसलाख पूरब हैं आयु । दस आतिसैं तनु सोभ सुभाय ॥ धनुष सार्द्ध द्वै सतक उतंग । रत्नवर्ण छाव हैं जिन अंग । साडासातलाख पूर्ववाल ॥ लीला करत मनोहरचाल ॥ करि विवाह पुन नृपपदधार ॥ राज

कियौ पुरजन सुखकार ॥ इकईसलाख सहस पचास । पूरबराज कियो ग्रहवास । इक दिन वन क्रीड़ा के काज ॥ गऐ मृतक पसुलखि जिनराज । बिनासीक जांन्यौं जबराइ । धन धान्यादिक मानुष देह । आतम काज़ करन अबजोग । अथिर रूप संसारी भोग । द्वादश भावन गनहि बिचार ॥ वीतराग पद सुखदातार । सुरलौकांतिक बिनवैं आइ । निज थांनिक पुनि गमन कराइ । आनन्दनांम पालकी इन्द्र । ल्याय तवैं थापियो जिनन्द । बिपिनि जाय तजि भूपन चीर । लीए महाव्रत धरि मनधीर । कातिग असि तजो तेरसिजांनि । मघवा कियो सुतप कल्यांन । वेला व्रत करि पदम जिनेस । मंगल पुर कीनौं परवेस । सोम दत नृप लखि जिन देव । नोधा भक्ति करी बहु भेव । करि आहार अटबी वन गए । स्वांन भूतरस लीनजोभए ।

*** दोहा ***

सोम दत ग्रह सुर करैं । पंचश्चर्य प्रमांन । प्रगट करैं जैजै सष्ट ऊचरि महातम दांन ।

**पद्धडीछंद**

छदम सत मास षट जिन रहंत । तप कियौ घातिया कर्म अंत । सुभ चैत्र सुदी पूनम वखांन । केवल उपज्यौ जगमैं सुभांन । कल्यांणक सुरपाति कियौ आय । तव समोसरन रचियौ वनाय । कीनौ बिहार बहु देस देव । षटमास हीन लखि पूर्बएव । इकमांस आयु पर मिलि रहाय । समेद सिपर तव प्रभुआय । मोहन कूटपर मोनधारि । परमातम गुन गर्भित अपार ॥ फागुन अलिपक्ष सुचौथि जांन । अविचल सिव वास बसे सुथांन । तब आय सक्र सव सुर समेत । निर्वान कल्यांनक करन हेत ॥

*** दोहा ***

पूजाकरि सुरनर असुर गए सु । निजनिज धांम । भविजनकौं आनन्द करौ । कूट मोहनी नाम ।

(अडिल्ल) निन्याणवैं किरोर चौरासीलाख हैं । ब्यालीसलाख प्रमांन सातसैं भाष हैं । सतासी पुन अधिक

मुनी।तिस थांन हैं । भए सिद्ध गुनलीन अनन्त सुग्यांन हैं । *** दोहा ***
सोई कूट प्रसिद्ध अबैं । जो प्रणवैं सुषरासि । नर्क तिर्यगगति नासिकैं ॥ करि सुर गिरिखगवास ॥

*** चौपाई ***

एक बेर जो बंदन करैं । बतीस कोट ब्रत फल धरैं । सुनि मगदेस कथा इक औंर । महा पुनीति सिखर सिव ठौंर । जंबू दीप भरत सुभ षेत । बंग देश तहां सोभा देत । प्रभां करी नगरी तहं बसैं । धन कन करि आति सोभा लसैं ॥ सुप्रभ नांम भूप सुभ नीति । करो एसौ जोजन सब प्रीत ॥ औंर देश नृप पीडा देइ । सुप्रभु देश लूटि सब लेइ ॥ इह चिंता मैं निसिदिन रहैं । छिनक एक थिरता नाहि गहैं ॥ एक दिवस बन मैं नृप गए । जुग चारन मुनि देखत भए ॥ नमस्कार करि पूछैं राइ । सुनौं महामुनि तुम सुख दाइ ॥ मेरेमन चिंता इक बसैं । सो किहिं बिधि मोसंसैंनसैं ॥ सुनि मुनि बोले अम्रत बांन । सिखरजित करिएगुन बांन । सांतिक पाठ करो चित लाइ । सब संसैं जातैं मिटि जाइ । सुप्रभ राइ महा मुनि बैंन ॥ सिर धारै जानैं सुख दैन । निज पुर आर्चित है जिन राज ॥ संघ सहित कर जात समाज । हर तवसन पहेरे तब भूप ॥ संघ भगति नृप कैं अनूप । जाय सिखर पूजे जिन थांन ॥ सांतिक पाठ करैं सुजांन । कूट कूट प्राति बांधे केतु ॥ दांन दियौ आतम सुख हेत । करि उत्सव आयौ निज गेह ॥ सब नृप मिलि तब कैं सनेह । चिंता सब नृपकी मिटिगई ॥ निर्म्मल बुद्धि अचलता भई । कारन पाय भयौ बैराग ॥ सकल परिग्रह कीनौं त्याग । सुत राति खेन राज पद दियौ ॥ पंच महा ब्रत निज गहि लियौ । चौरासी लख संघ समेत ॥ दुद्धर तप कीनौ निज हेत । *** दोहा ***
घाति घातिया छिनक में केवल ग्यांन प्रकास । पंच लघुक्षर कालमैं । कीनौं सिव पुर बास । सोई

सिखिर सुमेर भुवआति प्रबित्र रम नीक । जो बंदैं आति भक्तिसौं ॥ लह अचल पद ठीक । लौहाचार्य गरव गुरु कीनौं सिखिर महात्म ॥ मन सुख सागर निरखि हित । कीनौं कारज आत्म ॥

इति श्री काष्ठा संगे, लौहाचार्य बिरचते तीर्थमहातमेंखुसमेदाचल महातम भाषायामन सुद्दसागरेण बर्ननं सिद्ध कूट मोहनौं पर पदम प्रभु मोक्ष मगन सप्त परिछेदः सप्तमो अध्याय ७ ॥

*** सवैया ***

परम पुरुष गुन सागर नमत जग सुप्रतिष्ट जन हरित तन वर्णनहैं । पृथिवी देवी हैं मात दोयसैं धनुष गत उन्नत जुस्वास्तिक सुचिन्ह सोहैं चर्नहैं ॥ बानारसि जन्महैं बीस लाख पूरब आयु जिन राज अर कर्म्म जुहरन हैं । ऐसेंहैं सुपारस परमपदै निहार मन सुख सिंधुन मैं चरनकी सरन हैं ॥

*** दोहा ***

नौ हजार सागरगए ॥ पद्म प्रभुशिवधांम । जन्म लियो सिव सुखकरन । निज सुपार्श्वतसु नांम ॥

*** चौपाई ***

दूजोखंड धात कीनाम । सोहैं आतिसुंदर अभिराम । पूरब क्षेत्र बिदेह बखांन । सीतां नंदी बहैजलखान ॥ ताके उत्तर देस प्रसिद्ध । बत्स नांम सोहैं धन रिद्धि । नंदखेना पटनारि समेत । भोग करैं सज्जन सुखदेत ॥ आति प्रताप सोहैं नृप धीर । महाबली बीरन प्राति वीर ॥ एक समय हिए हर्ष अनूप । सौध सिखरपरिबैठौ भूप ॥ जलधि लखे मंदिर आकार । आति सुंदर बिसतार अपार ॥ चित्र कारतव नृप बुलवाय । कह्यौ लिखौ इमपट सुखदाइ । चित्राकार कागद पर लेइ ॥ लेखन लैहग बादर देइ । तौलगि विनसि गए घनसार । सोचकरहि नृप मनहि अपार । तनधन जोबन हैं इहरीति । तापर जन्म न राखत प्रीत । इम

बिचारि करि भूपति तबैं। बस्त्राभूषन त्यागे सबैं ॥ सुत सुखेन नरपति पददयो। चिर बिरकत ह्वै बनमैं गयो। अर्हनंद मुनिके ढिग जाय ॥ दिक्षालै तपकीनो राय। मास पाख बरस ब्रतअवधार। करैं आहार निंहार। बिचार ग्यारह अंग पाठकर मुनी। सप्ततत्वचरचा चित गुनी। षोडस भावन भाइसुछंद। तीर्थंकर पदबंध अनंद। ब्रतसंन्यास धारिगुनवंत। प्रानाकिएयहं बिधि सौंअंत। ग्रीवक मध्य सुभद्रबिमांन। पद अह मिंद्रक धस्यौ सुजांन। हाथ अढाई उन्नत देह। मिलि सब सुर तहं करैं सनेह ॥ सताईस जलधि की आउ। भोगैं भोग सुभोग सुभाउ। बर्ष सहस सताइस जांहि। मानसीक आहार करांहि ॥ इतने पषवारेबीतंत। सासउ साम लहै इहि भंत ॥ सप्तम भूमिथांन लौंसार। करैं बिक्रिया आति बलधार ॥ सप्त तत्व षटदरब सुबेद। चरचा करैं लहैं नहिं खेद ॥ रही आयु षट मास प्रमान। हारहीन छबि लखि मनजांन। मरन समैं अब पहुँच्यौ आय ॥ जिन पूजा रचियौ सुर राय ॥

*** दोहा ***

सुनि श्रेणिक आगे कथा। मन बच काया धारि ॥ अब बरनौं संक्षेपसौं। जहां होय अवतार।

*** चौपाई ***

इह जंबू बरदीप महांन। भरत क्षेत्र हैं तहँ प्रधान ॥ आर्य खंड पुन्य भंडार। जहां लसै बहुसंपतिसार ॥ कासी देश देश सिर मौर। निज उपमां जीती सब ठौर ॥ नगर बनारस उत्तम बसै। मघवा पुर सब सोभा लसैं। सुप्रतिष्ट पुर कौ नरनाथ। सुभट चमूं सेवैं नृप साथ। पृथवी देवी रमनी बांम। आति प्रिय प्यारी बहु सुख धांम ॥ इंद्र दई आग्या धन देव। रचि पुर मानि बरषावैं राव। बीते जब षट मांस विशेष ॥ जिन जननी तब सुपन सुदेख ॥ अंत सोलमोंसुपनाबिचित्र। मुख प्रवेस गज करत पवित्र ॥ उठो शत मंज्जन कर अंग। पति ढिग जाय सहचरी संग ॥ ब्यक्त सुपन बरते मन लाय। सुनि पति निज

हिए मैं हरषाय । तीर्थंकर तुमरे सुत होय । तीन लोक सुखदाई सोय ॥ इंद्र आय थापे मानि पीठ । करि स्नान मात दृग दीठ ॥ बस्त्राभूषन दंपति अर्चि । चरन जुगल मलयागिर चर्चि ॥ सित बैसाख पक्ष सुभ बार । गर्भ कल्यांणक सक्र सुधार ॥ देवी माता सेवन काज । राखि गए सुर पुर सुर राज ॥ षट पंचास कुमारी सुरी । सेवा करन रहैं आतुरी ॥ काब्य प्रबंध छंद जुतसार । कहे पहेली गूढ बिचार ॥ उतर देइ हरषित जिन मात । इहि विधि सौं बीते दिन रात ॥ जेठ बदी द्वादसी पवित्र । तहां विसाषा जांनि नछित्र ॥

## * अडिल्ल *

जन्म लियो जिनराज माइ लखि मुख तबैं । हरष हिए न समाय अंग पुलकित सबैं ॥ धन्य धन्य बड भाग मात पुरजन कहैं । तीन लोक सुख करन अंत शिव पद लहैं ॥

## * दोहा *

इतने में सक्रादि सुर । ऐरापति सजि लाय ॥ सची कपट निद्रा रची । जिन माता ग्रह आय ॥ प्रभु गोद लै आइकै । इंद्र अंक में देइ ॥ गज चढ़ाय सुरगिर गये । जैजै सब्द करेइ ॥

## * चौपाई *

करि अभिषेक आरचि पद दोइ । बस्त्र अभूषन विधिवत जोइ ॥ श्री सुपार्श्व जिन नांम उचार । आय बनारसि करि संचार ॥ मात अंकदै नृत्य करंत । मात पिता जिन मन जुहरंत ॥ सेवा निमित राखि सुर जबैं । गयो पाक सासन पुनि तबैं ॥ अमर सहित निज क्रीडा करैं । जिन बलक सब जन दुख हरैं ॥ द्वैसैं धनुष उतंग सरीर । दस आतिसैं जुत गुन गंभीर ॥ आयु बीस लाख पूरब कही । हरित बरन तन सोभा लही ॥ पांच लाख बालापन गए । तरुण अवस्था श्री जिन भए ॥ पांनि ग्रहन करि राज जो करैं । प्रजा सुपथ मारग अनुसरैं ॥ चौदह लाख सुपूरब राज । करि पुनि चिंत्यौं आतम काज ॥ बिषय भोग दुख दाइनि हार । कदली गर्भ जांनि संसार ॥ द्वादशानु प्रेक्षा जिनराइ । चित चिंत्यौ

आतम सुख दाइ ॥ लोक पाल जिन भक्ति समेत । आए प्रसम दिढाउहेत ॥ तुम बिन कौ ऐसी चित धरैं । तुमबिन कौ दुर्द्धर व्रत करैं ॥ इम अनेंक अस्तुति चित लाइ । बिनय भाक्ति करि निज थल जाइ ॥ अमर नाथ सिव का सिव जोइ । ल्याय आय निज कियौ नियोग ॥ अटबी मध्य नाग तरुतलैं । तपलै सब दयातिग दलमैलं ॥ सहस एक नृप दिक्षा लेइ । श्री जिन चरनन सीसनमेइ ॥ * दोहा *

जेठ मास सित पक्षजुत । दिवस द्वादसी जांनि ॥ श्रसुपार्श्व जिन देवकौ । भयौ सुतप कल्यांन ॥

*अडिल्ल *

पूजा करि वसु भेद गए सुर नर सवैं ॥ प्रभु आतम लौं लाइ ध्यांन धारयौ तवैं । मन पर्यै सुभ ज्ञांन भयौ ततक्षण तहां ॥ करि बेला व्रत गए पुरी पाटल जहां । महीदत नृप देखि चरन सिर नाईयौ नौधा भक्ति बिचारि अहार कराईयौ । असैं निछिकहि प्रभु जाइ बन तप लियौ । पंचाचर्य बिशेष नृपति ग्रह सुर कीयौ ।

* दोहा *

बरस अंग परमांन जिन । तप जुतरहि छदमस्त । च्यारि घातिया कर्मकी । करी प्रकृति सब अस्त । केवल ज्ञांन सुभांन जग । अंग किरन परगास । निस मिथ्यात निवारि कैं । समकित दिन परकास ।

* चौपाई *

आए देव देव पद साथ । समोसरन रचियौ धन साथ । केवल कल्यांणक सुरराइ । करि पूरब सम निज पुर जाइ । फागुन वदी छठि सुभ बार । ग्यांन कल्यांनक श्री जिनधार । बिबिध देश बिहरे जिन भूप । करि उपदेश सुधर्म अनूप । आयु रह इक मांस प्रमांन । आए समेद सिखिरि भगवांन । जोग निरोध मौंन प्रभुगहे । कूट प्रभास ध्यांन धरिरहे । फागुण कृष्ण सप्तमी जांनि । इंद्र आइ करि सिव कल्याण ।

तनु संस्कार क्रिया कर तबैं । गए अरचि सुर सुरपति सबैं ॥ सो प्रभास बर कूट महंत । बड़े पुंन्य सौं इसलहंत । महिमां करत न पाऊ पार । लहि अनंत जिनपति सिवसार । लाख बहत्तरि तीन करोर । सात हजार सात सैं जोर । ब्यालीस मुनिंवर मुकति जोगए । कूट प्रभास बिदित इमभए । सुनि मगधेस कूट फल कथा । एक बार बंदन फल यथा । कोट बत्तीस प्रोषधी सार । होइ बरत फल सुख अधिकार ।

*** दोहा ***

याही जंबूदीपमैं । भरत क्षेत्र सुख धांम ॥ आराजे खंड सुदेस तंह । नगर कुसंबी नांम ॥

*** छंदपद्धडी ***

उद्योत नाम राजा पुनीत । तहं राज करैं सुभ राज नीत ॥ जिन भक्ति यथावत हीए धार । सम्यक्त सहित धर सील सार ॥ नृप कै ग्रह प्रीति मतीसुनारि । सब गुन लक्षन जुतसदाचार ॥ पूरब कृत पाप उदै नरेस । तन कुष्ट भयो भूपति कुभेष ॥ इक दिन दुखकरि बन गयो राय । मुनि चारन जुग तहँ ईसपाइ ॥ करमुकलित कर जुग नाइ सीस । बहु बिधि अस्तुति करि पुर पुनीस । पाछे रिषि सौं निज पूर्व पाप । मेरी पर्यायजो कहौ आप ॥ सुनिकैं मुनि बैंन कहै रसाल । अपनैं दुख फल सुनि नगर पाल ॥

*** दोहा ***

पूरब भव बरनौं नृपति सुनिलै यक चित लाय । याही को संबी विषैं । सोम दत्त द्विज थाइ ॥ प्रभा चंद्र इक सेठ तहं । धर्म्मवंत गुन वंत । ते दोऊ मिलि परस्पर । अतिसैं प्रीति करंत ॥ *** चौपाई ***

लै अहार मुनिवर बनगए । प्रभाचंद्र मन हर्षितभए ॥ सोमदत द्विजमित्र मिलांन । पूछैं मुनि अहारफल दान । सो बिद्या मद गर्भित रहैं । हास्य बचन मुख सौं इम कहैं ॥ जो नर मुनि अहार दै सोय ॥

कुष्ट ब्याधि तन पीडितहोइ । इहसन प्रभाचंद दुखपाय । छोडी प्रीति गेह निजआइ ॥ सोमदत्तनिंदक कहवाइ ॥ मरिकैं प्रथम नरक उपजाय । आउ परी तह सागर एक । लहे महा दुख हरति विवेक ॥ मुनि निंदा फल निज मन जांनि । पश्चाताप हिए में आनि ॥ क्रम क्रम करि सो पूरन आव । प्रणतजे राख्यौ समभाव ॥ आय नरक सें नृप पद पाय । कुष्ट विथु तुमरे उपजाय ॥ इहफलहैं मुनि निंदा तनौं । भुगतौ राव कियौ आपनौ ॥ इम सुनि नृप मनकंपित होय ॥ हाथ जोरि कैं बिनवें सोय । एप्रभु दीनदयाल महंत । कहौ जतन जिमि गदह्वै अंत ॥ सुनि मुनिकहैं सिपर समेद करो जात पूजो बसु भेद । कूटप्रभास गंधोदक लेऊ । संपूरन गद नास करेऊ ॥ मुनि हर्षितह्वै मुनि पद नयौ । बन सौंनिज पुर आवत भयौ ॥ च्यारि प्रकार संघलै साथ । जात्रा हेत चलो नर नाथ ॥ स्यांम बस्त्र पहरे तब भूप । पूजकरैं बसुभेद अनूप ॥ औषधि दांन अभैक विस्तार । देइ अहार दांन । सुखकार । आतम निंदा निस दिन करैं । संग भक्ति बहु विधि विस्तरैं ॥ सिखर सुमेर गए इह रीति पूजा करैं परस्पर प्रीति ॥ संपूरन गिरि बंदन कियौ । अति उत्सव करि दांनजु दियौ ॥ कूट प्रभास गधोदक लयौ । ततक्षिन कोढ़ नृपति को गयो ॥ अति आनन्द हिए मैं ल्याय । फुनि फिरि निज ग्रह पहुँच्यौ आय । बहुत दिवस लौं राज करेइ । ह्वै बिरक्त सुत नृप पद देइ । सुप्रभ राज सुमगपग धरैं । नृप उद्योतक अति तप करैं । लाख वतीस संघ मुनि लेइ । नाना देश बिहार करेइ ॥ अंत आयु आए संमेद । गिरि पवित्र सोहैं बहु भेद । कूटप्रभास सीस पर जाय । केवल लहि शिव पदवी पाय । जो नर नारि बंदनां करैं । नरक पसू दोनोंगत हरैं । अतिसैं कहत पार नहिं लहौं । सुलप बुद्धि कैसैं कर कहौं ।

धन्यभाग जो बंदै कोइ ॥ सुर नर गति ले सिव पद होइ ।

## * दोहा *

लोहा चार्य्य कृत कठिन । अल्प बुद्धि इस काल । मनसुख जलधि बिचारि मन । भाषा रचीरसाल ।

इति श्री काष्टा संगे लोहाचार्य विरचतेतीर्थमहातम्ये भाषायामन सुद्धसागरेण वर्णनं सिद्ध कूट भाषा सुपार्श्वनाथ मोक्षगमन अष्टमो परिछेद ॥ ८ ॥

## * सवैया *

जिनकौं नमत हैं गणेस और सुरेस सेस महा सेन जनक फटिक समेद हैं । सुलष्य नांमांत सोम पुर हैं बिष्यात जग दसलाख पूरब की आयु सब तेरह हैं ॥ उड़पति चिन्ह है चरन सेवैं भावेसती सद्धा एकसत चाप उचगुन गेह हैं ॥ ऐसे चन्द्र प्रभु सिवदायक नमत हम मनसुख सिंधु जिन चरन सौं नेह हैं ॥

## * दोहा *

चन्द्रा प्रभु चारित्रअब । बरनौंहिए हरषाय ॥ शिषरसैल परि सिवगये । तिस आतिसैं अधिकाइ । नौसैं कोटि उदधि गए ॥ श्रीसुपार्श्व सिवथांन । आय अमरपति सोम प्रभु कीनों जन्म कल्यांन ।

## *चौपाई*

सुनि श्रेणिकइक चितमानि आंनि । पंचकल्याण करौं बखांनि । दूजो दीपधात की खंड । सोहै वल याकार अखंड ॥ प्राचीनांम बिदेह महंत । सीता सरिता मध्यबहंत । ताके दक्षन नगर जो बसैं । अमरनगर की सोभा लसैं । नांम मंगलावती प्रसिद्ध । धन धान्यादि भरी बहुरिद्धि । तहां रत्न संचैपुर एक । बसैं नारिनर सहित बिबेक ॥ कनक प्रभु नृपराज करंत । अति प्रतापधर बहु गुनवंत । कनकावलि सुंदरि सुकुमार । पटरानीपति सुखदातार । नृप जिन पूजाबसु बिधिठांनि । अस्तुति पढ़ैं करैं गुनगांन । बृषभावनां अंगजुधरैं । बिनय भक्तिश्रुत गुरु की करैं । जाकै राज सुखी सब लोग । मन

बंछित कर भोगैं भोग। बहुत दिवस इहि विधि करिगए। पद्मनाभि नामा सुत भए। जौवन दाइ पुत्र देराज। मनहि बिचारैं आतमकाज। गए मनोहर बिपन मझारि। श्रीधर तीर्थ कराहि निहारि। करि नमोस्तु सुनि बृष दो भेद॥ मन विकलप सब कियो उछेद। सीसनाइ व्रत लीनों राइ। पद्मनाभि नृपराज कराइ॥ श्रवन नाभि तिनकैं सुत भयौ। जाचक जनमन बंछित दयौ॥ बालकुमार अवस्था भई। नृप पदवी राजानें दई॥ श्रीधर निकटिजाइ सिरनाइ। लयौ चरित्र परमसुखदाइ। सिंघनि क्रीड़ित तप अतितपैं। पूर्व कृत पातिग सबखिपैं॥ पक्षमास उपवास करंत। सुमति महाव्रत गुप्ति धरंत। षोडस कारन भा उनभाय। तीर्थंकर पद बंध कराइ॥ द्वादशानु प्रेक्षा चिंतयौ। गहि संन्य मरन मुनि कियो। सर्वार्थ सिद्धि उपजेदेव। पूरब सम रूब जानौ भेव॥ सुनि श्रेणिक अब आगैं कथा। चंद प्रभु वर्नन हैं जथा। जंबूदीप भरत शुभषेत। कासीदेस जु सोभा देत॥ चन्द्रपुरी नगरी इकबसैं। देवपुरी सम सोभा लसैं। महासेनि भूपति तिंहथांन। करैं राजपुरजन सुखदांन॥ रानी हैं सुलक्षनांनांम। पिय प्यारी गुनजुत अभिरांम। सदाचार धारी मनसंत। सील सिरोमनि लक्षिणवन्त॥

*** दोहा ***

सोपुर निजकर धनंदन। हरि आयस रचि लीन। सोपुर वर्नन करन कौ। मेरी बुद्धि मलीन॥ तीन काल वर्षा करैं। मनसुर अति हरषाय। आगमांस प्रमांन छह। सबजीवनि सुखदाइ॥

***सवैया***

एकदिन सुलक्षना सैन करैं मंदिर मैं षोड़स सुपन लखि लीने निसि अन्त मैं। प्रात उठि तन सुचि करि सखीसंग लेइजाय पति ढिग पूछै सुपन जो संत मैं। सुनि महासेन नृपति अवधि विलोकि कहैं जिनपति सुत उरजन मे महंत मैं। दंपति हरष मन करत सनेहधन इन्द्रआय गर्भ कल्यानक करतंत मैं॥

*** दोहा ***

चैत मास अलि आभ पखि दिवस पंचमी जांनि । सासि प्रभू गर्भ कल्यांन करि गमन करैं निजथांन।

*** चौपाई ***

गर्भ सोधनां करैं बिचार । सेवैं सुरी कुलाचल धार । षट पंचास कुमारी सुरी । निज निज काज करैं न आतुरी । अति मंगल मन हर्षित रहैं । दोहा छंद पहेली कहै । अैसे कर बीते नव मास । जनमें जिन जग पूरन आस ॥ मघवा पूरब सम तहं आइ । जाय सुराचल नवन कराइ ॥ पूजा करि बसु बिधि थुतिकरैं । जे जै चंद्र प्रभू अघ हरैं ॥ सब निज काज साधि हरि गयो । चंद पुरी उत्सव भयौ ॥ जिन बालक सुर सेव करंत । निरखि निरखि निज मन हरषंत ॥ माति श्रुति अवधि ग्यांन त्रयधार । परम पुरुष परमातम सार ॥ आयु पूर्व दश लाख बखान । कायड्यौ डसैं धनुष सुजान ।

*** सवैया ***

तनसुद्ध फटिक समांन देइ । बसु सहस चिन्ह जुत सुगुन गेह । सिसुकेलि लाष पूर्व अडाइ ॥ वीते सुर सेव करैं सुभाइ ॥ माहासेन सक्र मिलि करि उछाह । करि पांनिग्रहन पुनराज चाह । साढ़ षटलाख जु पूर्वसार । कीनौं प्रभूराजसु नीतधार । इकदिन लखि उलकापात देव । छिन भंगुर जान्यो जगत भेव द्वादश भावन मनमांहि भाइ । लौकांतिक सुर पहुंचे सुआइ ॥

*** दोहा ***

अस्तुनि करैं सुभाव सौं । धन्य धन्य तुम धन्य ॥ अैसे कारिज करन कौं । तुमसम नांही अन्य ॥

*** सवैया ***

अहो तुम दीननाथ शिवपुर पंथ साथ तुम बिन यह काजकरैं कौनजगमैं । पंच महाव्रत पंच सुमति

गुपति तीन चरित कौं धारि तुम ठाढ़े सिव मग मैं । तुम्हारी दयासौं सुख लहत जगत जन तुम बिन फिरत चौरासीलाख मग मैं । तुममन मांहिजो विचार सोईधरैं कोई मन सुखसिंधु मुक्ति लहैं एक उगमैं ॥

*** दोहा ***

इम बिनती करि लोक सुर । निज थांनक मैं जाइ ॥ शिव सुंदरि सिव कामधव । श्रीजिनवर बैठाइ ॥ राजा लै निज कंधधारि । सातपैंड लैजाय । पुनि बिद्याधर आपलै । इंद्रादिक बन जाय ॥ मल्लक तरु तालि चंद्रप्रभु । बस्त्राभूषन त्यागि । सहस एक नृप संगलै । आतम ध्यान जो लागि ॥ *** सोरठा ***
इंद्र कियौ कल्यान रितु ग्रीषम बैसाषमैं ॥ कृश्न एकादसि जांनि । पूजा करि निज पुर गए ॥

*** चौपाई ***

पद मासन जुग दिन परमांन । करि उपास भोजन चित आंन ॥ पदमषंड पुर करि प्रवेस । सोमदत्त नृप लखि मुनि भेस ॥ करि नमोस्तु आनन सौंचवैं । तिष्ट तिष्ट तिष्टो मुनि अवैं ॥ नौधा भगति अहार कराइ अषे निद्धि कहि जिन बन जाइ ॥ पंचाचर्य भूप कै होय । जै जै सब्द करैं सुर सोय ॥ दांन अहार सुजस मन धरैं । मानि गंधोदित बर्षा करैं ॥

*** दोहा ***

बर्ष तीन छद मस्त । जिन रहे मोन व्रत लीन ॥ नाना बिधि तप जोगसौं । कीए घातिया छीन ॥ फागुण कृष्ण जो सप्तमी । केवल ग्यांन प्रकास ॥ तिम मिथ्यातं निसा प्रबल संपूरन कर नास ॥ सत मघवा मिलि धनद जू । संमो सरन रच लीन ॥ पूजा करि आति भक्ति सौं । अस्तुत करैं नवीन ॥

*** चौपाई ***

दतसैंन आदिक गुनि धार । सवतिरानवैं सोहै सार ॥ बानी परखैं तीनू काल ॥ सुनत नासैं

जग जाल। बिबिधि देश बिहरे भगवांन। दया धर्म को करत बखान॥ एक मास मिति आयु रहाय। सिषर सुमेद जिनेसुर आय॥ जोग रोधकरि मा भगवान। दयाधर्म को करत बखान। एकमास मिति आयुरहाय। सिषिर सुमेद जिनेसुर आय॥

*** दोहा ***

सकल सुरासुर ब्योमचर। आए अति हरषाय। भादौंसित अष्ठमि दिवस। उत्सव फुनि जाय॥

*** अडिल्ल ***

कोडा कौडि मुनीस चौरासी जांनिए। कोडि बहतर लाख असी मन आनिए॥ चौरासी हजार पांचसैं पच पनैं। ललित कुंभ सिर कूट मुक्ति लहि मुनि गनैं

*** चौपाई ***

नरक पसू दोन्यौ गति हरैं। एक बार जो बंदन करैं॥ सोरह कोटि बरत फल होए। जिन भाषित जानो भवि लोय।

*** दोहा ***

बंदत नर सुर गति लहि। सिव रमनी बस कीन॥ ताकी महिमां कथन कौं। मेरी धिखनां हींन॥ अब आगैं मगधेस सुनि। ललित दक्ष नृप बात। कूट बंदनां करत लहि। चारन रिद्धि अवदात॥

*** चौपाई ***

मध्य दीप जंबू बर नांम। भरत क्षेत्र तामैं अभिरांम। आरज षंड जोध तहं देश। इति भीति ब्यापैं नहिं लेस॥ सुर पुर नगर बसैं रमनीक। नर नारी सोभैं सुक लीक॥ अजित नांम राजैं भूपाल। दुर्जन बैरी उर साल॥ जोबन वंत भयौ सुत सार। दत जुसैन्या ब्याही नारि। कारन पाय भयौ बैराग्न। माह सैंन नृप पदवी त्याग॥ ललित दत कौं दे सब राज। बिपनि चले निज आतम काज॥ तप करिके इल ज्ञांन उपाय। सिव पदवी पाई सुखदाय। ललित दत अवनी प्रति पाल। राज करैं सज्जन दुख टाल॥

एक समैं बन केलकरंत । चारन मुनि जुगलषि हरषंत । सीस नवाय धर्म्म सुनि राय । प्रश्न करै तब औसर पाय । चारन रिद्धिहोय किहि रीति । सो बरनन करिए करि प्रीति ॥ भव्य जीव लखि मुनिबर कहैं । जिस बिधि रिद्धि चारनी लहैं । जात्रा करो सिषर की जाइ । ललितकूट पूजो मन लाय । स्वल्प तपस्या तब आदरैं । चारन रिद्धि क्षिनक मैं फुरैं ॥ यह सुनि मुनि नृप बंदत भए । सीस नवाइ नगर मैं गए ॥

## * अडिल्ल *

संघ च्यारि प्रकार संघ लै आपनैं । धर्म्म ध्यांन मन लाइ त्यागि कै पापनैं ॥ जाय सिखर के सीस ललित घट कूटपैं । अरचै श्री भगवंत करम गन टूटपैं ॥

## * दोहा *

फुनि आए निज नगर मै । कीनौ अति उत्साह । सुख भोगत नृप एक दिन । देख्यौ निज पुर दाह । ललित दत भूपति तबैं । भयौ हिए बैराग ॥ राज भार दे पुत्रको सर्व परिग्रह त्यागि ॥ तप करिकै दिन अल्प मैं । गही चारन रिद्धि ॥ केवल पद लहि कूटपैं । भए निरंजन सिद्धि ॥ सोई कूट सुमेर कौं । मन बंछित फल देइ । संपूरन गिरि की कथा । कौन कबीस कहेव ॥ माहिमां सिखर समेर की । लोहा चारिज कीन ॥ मनसुख सागर श्रुति निरखि । भाषा रची नवीन ॥

इति श्री काष्टा संगे लोंहाचार्य बिरचंत तीर्थमहातमेंखुसमेदाचल महातम भाषायामन सुखसागरेण विरचितं सिद्ध कूटललतेभ्यो नवमौ परछेद ॥ ९ ॥

## * सवैया *

सुमुन रदन पदन मत अमर पति रामा देवी मात तात सुग्रीव बखांन्यौहै । किहकंदीपुर जन्म हाटक बरनत न एक सत धनुष उतंग तन मान्यौहैं ॥ मकर सु चिन्ह चरन दोय लाख पूर्व आयु सुर नर खग तीन

नरभव सुफल सुनिज मन आन्यौहैं ॥

लोक पति जान्यौहैं ॥ ऐसे पुहप दंत जिन मन सुख सिंधुनमि

## * दोहा *

मैं सुजिन तिन प्रति हमरी धोक ।
निवैं कोडि जलधि गए । सोम प्रभु सिवलोक ॥ सुमनरदनजन
पंच कल्याणक सिषरिगुन बरनौ अति हरषाइ ॥
पुहपदंत जिनवर प्रणामि । सारद सीस नवाय ।

## * चौपाई *

खंड धात की सोहैं सार । च्यारिलाख जोजन बिस्तार ॥ प्राचीनांम बिदेह सुजांन । सीता सरिता
मध्य बहांन ॥ ताकी दक्षन तट इक देश । जाकी महिमांकरैं सुरेस ॥ नांम पुष्कलावति प्रसिद्ध । नाना बिधि
सोभित रिद्धि ॥ पुंडरीक नगरी तहैं बसैं । गेह गेह उत्सह करि लसैं । महाराजा राजा परचंड । करैं राज
दुर्जन अरिखंड । प्रजा पुत्र समपालैं भूप । दांन देइ जस लेइ अनूप । बिंब प्रतिष्टा श्री जिन गेह । करैं
च्यारि बिधि सिंध सनेह । पूजा रचैं करैं उत्साह । इह बिधि सौं नर भव फललाह । एक दिना बन गयो
नरेस । देखे मुनिवर खड़े सुभेस । नमस्कार करि बैठो राय । दुबिध धर्म्म सुनि अति हरषाय । सुत धन
दतराज नृप दियो । तेरह बिधि चरित गह लियो । अति तप करि पड़िगार अंग । चौबीसौं बिधि तजि
करि संग । षोड़स कारन भावन भाइ । तीर्थंकर पद बंध कराइ । करि संन्यास मरण तिंयं अंत । नाक
पन्द्र हैं देव महंत । उपजे बिमल देह दुति सार । अंत महूरत जोबन धार । साढ़ेतीन भुजा उतंग । सातौं
धातरहि सुचि अंग । सागर बीस तहां हैं आउ । लेस्या सुकल रहैं सुभभाउ । बीस हजार-वरस बींनत ।
मानसीक तहं असन करंत । दस दूने पषवारे गए । परिमल सहित स्वास जब लए । अवधि भूमि पष्टम
लौं होइ । काय बिक्रिया तहांलग जोइ । साततत्व चरचा मिलि करैं । जिन पूजा जिय मैं निति धरैं ॥

## * दोहा *

आउरही षटमास जब ॥ सुभ उपजोग कराइ । सुन मगधेसुर जिन जनम । कथा परम पदपाइ । इसही जंबूद्वीप मैं ॥ भरत क्षेत्र अभिरांम । पाठ देश मैं नगर इक । काकंदीपुर नांम । राजा तहं सुग्रीव हैं । जयनांमां पटनारि । दंपति सुखबिलास बिपुल । करैं राज चितधार ॥ हरि आग्या धन देवलै । रच्यौ नगर जिन जोग ॥ करैं रतन बर्षा हरष । होइ सुषी पुरलोग ॥

## * अडिल्ल *

जय रामा नृपनारि एक दिन सैंन मैं । षोड़स सुपन निहार पाछिली रैनि मैं । उठि प्रभाति बरनार जाय पतिसौं कहै । बीतराग सुत हुंइ सुनै फल सुख लहै ॥ जबलौं रानी भूप परस्पर नेह मैं । तबलौं अमर सुरेस आइयो गेह मैं । थापि सिंघासन मात नहन बिधिवत कियो । वस्त्राभूषन सार चरचि हरषित हियो ॥

## * दोहा *

फागुन मास असेत पषि । नौंमी दिवस निहारि । सुरनर खगामिलि गरभ थिति । आए हर्ष अपार ॥ पूजा गर्भ कल्यान करि । पुर मैं उत्सव ठांनि ॥ गयो देवपति थांन निज । करिकैं बहु बिधि ग्यांन । षट पंचास कुमारिका । सेवकरैं जिनमात । काव्य पहेली छंद कहि निसिदिन हिए हरषात । बीते हैं नवमास इम । आयो अगहन मांस । गर्भस्थिति पूरन भई । बाढौ परम उलास । कृष्णपक्ष हैं प्रतिपद भांन मूल सुषकंद । तीनजगत जन सुख करन । लीनौं जनम जिनन्द ॥

## * चौपाई *

हरि आए ऐरापति साज । श्री जिननहन करन के काज । देवकरैं सब जै जै नाद । नंद बृद्धं कहिहै अहलाद । जिनवर अकल ईसुरईस । बारंबार नवाबैंसीस । गए देवगिरि देवअनंद पांडुक शिल पर थापि जिनंद । क्षीर समुद्र कलस भरवाय ॥ ल्याइ कियौ अभिषेक सुभाइ ॥ पूजा करि कज्जल दै नैन ॥ कियौ तिलक कुंकुम

सुख दैन । वस्त्राभूषन भूषित अंग । रूप निरखि लाजै जुअंग । पुष्पदंत अभियांन उचार । लाय नगर जिन मंदिर सार ॥ मात गोद है निरत करंत । पूरब कृत सब पाप हरंत ॥ राखै सुर सेवक जिन जोग । जाय नाय भोगैं सुख भोग । दोय सहस पूरब जिन आय । धनुष एक सत उनतकाय । तनकी दुति कलधौत सुमान । बाल सहस पचास बखान ॥ भए तरुन सुग्रीव निहार । आये सुरपति हरष अपार ॥ उत्सव करि विवाह नरनाथ । राज छत्र फेर सुर साथ ॥ राज सिंह बिष्टर पर देव । थापि हरषसों करै सुसेव ॥ इन्द्र गये निज थान कि जबैं । प्रजा नीति प्रभु पोषी तबैं ॥ बहुत दिवसलौं राज करंत । पालि अनुब्रत निज मन संत ॥ दिसावलोकन इकदिन करैं । उलका पात दिष्टि तब परैं ॥ ह्वै विरक्त अनुप्रेक्षा भाइ । लोकांतिक सुर पहुंचे आइ ॥ करि अस्तुति जिन जोग जिनंद । गए ब्रह्म पुर करत अनंद । सुरपति जिन शिवका बैठाइ । गए महा बन हर्ष उपाय ॥ वस्त्राभूषन तजि सबसंग । भए दिगम्बर नगन जुअंग ॥ सहस्र एक नरपति सब लेइ । ध्यान धर्‍यो आतम चित देइ ॥ मन पर्जै युत भये जिनेस । ठाढ़े अस्तुति करत सुरेस ॥

* दोहा *

मार्ग सीर्ष है सेतपक्ष प्रथम दिवस अभिधान । तप कल्यानक करतबैं गए आपने थान ॥

युग्म दिवस ब्रत ध्यान धरि उठ पारने हेत । चित हरपुर सुर मित्र ग्रह जुगयमगाचित देत ॥ नोधा भगति विचारि नृप शुद्ध अहार कराइ । अषैं निधि कहि बन गये ध्यान धर्‍यो चितलाइ ॥ नृप ग्रह सुर बर्षा करैं पंचाश्चर्य्य अनल्प । जस माहात्म्य जग प्रगट करि जैजै मुख जल्प । [अडिल] कीनों तप चित लाय ध्यान शुभ मौनसों । अचल किए करचर्नकाज नहिं मौनसों ॥ कर्म घातिया ज्ञान केवल लह्यो ।

पाय-चतुष्टय चारि निजातम पद गह्यो ॥

*** दोहा ***

समो सरन रचना करी इन्द्र कोस पतिआइ। सुरनर खग मिलि आइ पसु जिन बचन सुन हरषाय॥
कातिग पक्ष शशि किरन सम दुतियां दिनके अन्त। केवल ज्ञान भयो विमल पुष्प दन्त हरहंत॥

***चौपाई***

गनधर नाम बिदर्भक आदि। अग्रासी निजगुण अहलादि॥ चारि ज्ञान धारक सब जान। श्री जिन बानी करत बखान॥ समो सरन सोभा अधिकाय। बरनन करत ग्रन्थ बढ़िजाय॥ देश देश उपदेश महन्त। धर्म्म देशनकरि भगवंत॥ आयुरही षटमास प्रमान। समेद शिषरआए भगवान। प्रकृति कर्म्मकी सबतहं छूटि। मुक्तगए सुप्रभुवरकूट॥ भादोंमास सोप दुतिपक्ष। तेरसि दिवसजान परतक्ष॥ आयु पुलोमिज पतितसथान। शिव कल्यानककरि सुखदान॥ सुप्रभास सोईवरकूठजोवंदतसुपातिगछूटि। सुप्रभुपसुगति नाशनकरै। सुरनरगति लहि शिवपदवरैं॥ एक नत सतकोटि बखान। निब्बैलाख सहस नवजान। चारिसतक अस्सीमुनि राज। सुप्रभासपर निज करकाज॥ सोई कूट बन्दनाकरै। सोरहकोट वरत फलधरै॥ महिमा कहतपार नहिं लहौं। अलबुद्धि कैसे गुनगहौं॥ आगेपुनि श्रेनिक मनलाइ। कहैं कथा कोटी भटराइ॥ जंबूदीप सिरताज भरतक्षेत्र सबमहिमामाज॥ आरजिखंड मध्य में बसैं। कहाकदेश अनूपमलसैं॥ श्रपुर नगरीराज करंत। हेमप्रभ राजागुणवंत॥ जयानाम रानी मनहार। भागैंभोग सरम दातार॥ तिनके पुत्र सोमप्रभ नाम। कोटी भट सोहैं अभिराम॥ एक समय वरसैन सुराज। मंडलीक सब कौ सिरताज॥ चढि आयो निज बल लैसाथ। ताके संग बहुत नर नाथ॥ हेमप्रभ निज चमू समेत। निकस्यो युद्धकरनके हेत॥ भयो परस्पर अति संग्राम। हयगयं पहुंचे जमधाम॥ सोमप्रभ

निज नास निहारि । आत दुष्यत संग्राममझारि ॥ गदात्रिलोकी निज कर लयो । आगे जाय लरतसो भयो ॥

*** दोहा ***

इह कोटी भट अतुलबल । वे नर कुंथ शमान ॥ जिस दिसपै वैभुजन सौं । मार करैं घमसांन ॥ जेवरसैं नर नरेस के हय गय रथ भट सार । ते सब छिन में मारि कैं । डारे रनहिमझार ॥ भाग गयो बरसैन तब सोम दत नर देखि ॥ धृग धृग कहैं बिचार । ईबृथा जन्म निज लेख ॥ एक राज के काज । हम नासे जीव अनंत । भो भौ मैं दुख दाइहैं । ऐसो पाप महंत ॥

***चौपाई ***

जाय अरन्य महा ुनि पासि । नाश करन करमानि की पासि ॥ मिलै बिमल बाहन मुनि धीर । करैं छिनक मैं भव जल तीर । सीस नाय आलोचन करैं ॥ निज पातिग मुनि ढिग उचरैं । कहो गुर गुर पूरब पर जाय । किम कोटी भट पदवी पाय । मुनि बर कहे दीप इहां जानि ॥ यही क्षेत्र मरु क्षेत्र बखानि नगर अनूप सेठ धन दत । बहुत द्रव्य सौं रहे प्रमित । अति लोभी कछु दान न देइ । अपकीरत पुरमैं बहु लेइ ॥ कोइ नांम लेत नाहि तवै । क्रोधसहित ह्वै निकस्यौ तवैं ॥ गयो गहन मैं लखि मुनि राइ । तीन ग्यांन जुत दुर्वल काय ॥ करि प्रणांम पूछैं धनदत्त । देह क्षीन क्यौं कहिए तंत । मुनिवर कहे सेठ सुनि बात । अतितपकरत अहर्निसि जात । पक्षमास जुगमास वितीत । बृतवार्उन्नोदर की रीति । द्वाविंसति परी सहमन एक ॥ सहत जैन तप दुद्धर टेक । क्रोध लोभ माया अरु मांन । तजैं मुकति पद द्यौ निदान । मुनि बचन सुनत लोभ तजि गयौ ॥ सेठ उदार चित तव भयो । फुनि मुनि धर्म्म कथा मनलाइ । करि नमोस्तु फिर निज धरि आय ॥ दांन अहार प्रतिज्ञा करी । जिन पूजा जिन जिन प्रति धरी । देखि पात्र नौ विधि बिधिधार । दान देइ च्यारुौ परकार । एकदिवस सुभ शैन मुनीस । आएपरम

धर्म के ईस । निर्मल तन कंपितब्रत इत धरैं । पाखमाश पर भोजन करैं । प्रासुक अंन्न वोषधी जोग । दै अहार तन कियौ निरोग । तप लाइक मुनि तन बलधारि । अस्तुति करै सुवारंवार । मुनि निज मुखसैं बर्नन कस्यौ । सुप्रभु कूट बहुत गुन भरयौ । मुनिबन जाय धरयौ तप जबैं । सेठ चल्यौ जात्रा कौं तबैं सिषिर भूमि पहुँच्यौ चित धारि । जिनवर पूजा करहि बिचारि । प्रांन तजे सुभ से तिहिं थांन ॥ सोम प्रभु तुम उपजे आंन ।・वह मुनि वर कौं दांनजु दियौ । यातैं आय सबल तन लियौ ॥ करो जात पुनि भाव समेत । शिव पदवी पावन के हेत ॥

### * दोहा *

इहँ सुनि हिए बैराग है ॥ दयौ पुत्र कौं राज । चारित ग्रहन कियो तबैं । करन आतमा काज । शिखर जाय बंदन कियो ॥ सुप्रभास बर कूट । ध्यांन धारि मन अचल किय कर्म कालिमां छूट । लहि केवल सिव पुर गए । सोम प्रभ बलवंत । और अनेक भये सुइमि ॥ बरनत लहौं न अंत ॥ (अडिल) अैसैं सिखर समेद बंदनां जो करैं । सोनिहचै नर नारि मुकति नारी बरैं ॥ लौहाचार्य कियौ ग्रंथ लखि मैं लियौ । कठिन जांनि मन सुद्ध सिंधु भाषा कियौ ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहातम्येषुसमेदाचलमहात्मे भाषायामन सुद्धसागरेण वर्णनं सिद्ध कूट सुप्रभासपुष्पदंत मोक्ष गमन दसमो परिछेदा १० ॥

### * सवैया *

कर जुग जोरिकैं नमत तीन लोक जन दृढ़ रथ जनक सुनंदा देवी माइ है । भद्दलपुरी मैं जनम सहस पूरब एक आयु तन उन्नधनु नवैं थाइहैं ॥ स्वैतहैं बरन काय सब जन सुखदाय सोहत सुभग चिन्ह सुर तरु पाइह ॥ अैसे प्रभु सीतल सुशीत कनहाइ मन सुख सागर नमत सुखदाईहैं ॥

*** दोहा ***

नव कोडि जलधि गए। पुहप दंत सिव धांम। सीतल जिन जनमें तवें। तिन प्रति सदा प्रनाम। तिन चारित्र बरनन करयौ। सिषर माहातम मांहि। सुनि श्रेनिक गोतम कहै। बरनत शेष थकाहि॥

*** चौपाई ***

पुहकर दीप तीसरौ जांन। मंदिर नांम सुमेर बखांन॥ तहां बिदेह पूर्व थिति रहैं। सीता नंदी मध्यमैं बहैं॥ दक्षिन कूट पूरब थिति देस। नग्र सुशीमांलसैं अशेष। पद्म गुलम नृप राज करंत॥ देइ दांन पूजै अरिहंत। पट नारी बसंत श्री नांम। सील सुलक्षण सब गुण धांम। तिनकैं सुत उपज्यौ गुणवंत। चंदन संग्या सील धरंत॥ इक दिन भूप जलद पच रंग॥ देखि जगत जान्यौ छिन भंग प्रसम भाव अति चित मन दियौ। चंदन सुत कौं नृप पद कियो। दिक्षा लई कियो तप घोर। सहैं परीस्या तनपैं जोर। द्वादश बिधि तप करत अभंग। सहैं कष्ट नाना विधिअंग॥ षोडस भावन जिन मन धारि॥ तीर्थंकर पद सुख दातार॥ आयु अंत संन्यास जो लियो॥ निर्मल भाव मरन तब कियौ। दिब्य पंद्रहै देव महंत। ठाढे वऊ सुर सेव करंत॥ पद देवेंद्र जलधि बाईस। आयु पुरी सुर नावत सीस। और भेद पूरब व्रत जांनि॥ कहां लगि अब मैं करौं बखांन॥ जनम थांन अब सुनि मगधेस। जाकी सेवा करत सुरेस। जंबू दीप सुमध्य महंत। भरत क्षेत्र धनुषाकृत संत॥ आरज खंड सुमालव देस। भद्दलपुर जिमनगर सुरेस॥ दिढरथ भूप राज तहं करै। प्रजा नीति मारग अनुसरैं। नारिसुनंदा सील निधान। जिन मणि उपजन की हैं खान।

*** दोहा ***

हरि आग्या धन पति लई। रच्यौ महापुर जाय। तीन काल पट मास लौं। मणिकी बृष्टि कराय॥ चैत

मास शुभ अष्टमी । अंत जामिनी जांम । जिन माता षोडस सुपन । लखे महा सुख धाम ॥ उठि प्रभात अस्नान करि बस्त्राभूषन धारि । सखी संग लेकर चली । पति ढिग जाइ उचार । अवधि चक्षु लखि नृप कहैं ! तीर्थंकर सुत होइ । तबैं गर्भ कल्यान हरि । आय कियौ सुख जोय । छहौं कुलाचल बासनी । षटपचास कुमार और सुरी सेवैं जननि । हरि आग्या सिर धारि ॥

## * चौपाई *

मंगल गीत करत दिन गए । नंदमस पूरन इमभए । माघ बदी द्वादसि सुभबार । श्रीजिनजनम लियौ सुखकार ॥ आएहरि दंपति पतिसाज । जिनचढ़ाय पहुंचे गिरिराज । करि अभिषेक अरचि जिनचर्न । अस्तुति करी जुपातिग हरण । सिव कृतकरआए निज पुरी । सोहरि मंगल गावैं सुरी । तांडव नृत्य इन्द्रकर गयौ । अति उत्साह नगरमे भयौ । पूरब सहस आयुपरमांन । नवे सहस सेततनु जांन । सहस पचीस बालपनगए ॥ क्रीड़ाकरत तरुन प्रभुभए ॥ पानिग्रहन करि राजकरंत । सहस पचीश सिरी भगवंत । देखि तुसारभर बैराग । इछ्या करी परिगृह त्याग । अनुप्रेक्षा द्वादसि मनभाइ । ब्रह्मलोकसुरपैडी आइ । करि अस्तुति पहुंचे जिनथांन ॥ हरि सिवका थापे भगवान । गए महाबन परिग्रहत्यागि । निजआतम सेती लौलागि । सहस भूपजिन सीसनवाइ । ग्रहनाकियौ चारित सुखदाइ ।

## * दोहा *

माघ महीना कृस्न पक्ष दिवस द्वादसी जानि । कचखीरौ दधिडारि कैं । कीनौ तपकल्यान ॥ मनपर्यै प्रभु ज्ञान लहै ध्यान कियौ दिन दोइ । असन हेत हरिपुर गए । मारग सुचिअवलोइ ॥ देखि पुनर्बसु भूप तब ॥ पडिगाहे जिनराय । नौधाभगति उचारि उरगोपयचरी कराय

## पद्धरी छंद

एजिन बन मैं धरयौ धान । नृपकैं ग्रहपंचाचर्य जांन ॥ छदमस्त रहे त्रयवर्ष देव ॥ श्रेकिया घातिया

कर्म रोव ॥ सुभपौषसुदी चौदासि सुअन्हि ॥ करि भस्म करमतप ध्यान बन्हि । केवल मार्तंड प्रकासलीन ॥ मिथ्यातमहातमकरनहीन ॥ तवइंद्र कोस पाति आइचर्न । पूजाकरि कैं रचि समोसरन । गनधरइक्यासी भए सर्ब ॥ जिन बानी परखै है अगर्ब ॥

* दोहः *

पूरब समसोभासकल ॥ बरनतशेष थकाय । मेरी धिखना है अलप ॥ क्यौं करि बरनी जाय । नानादेश बिहार प्रभु कीनौं बृषउपदेश ॥ नरबिद्याधर देवमिलि ।अस्तुति करत सुरेस ॥ आयु रही जबमास इक आये सिषरि सुमेर । जोग रोध करि ध्यान धरि । निजआतम गुनहेर । श्रवनसुकल सुदिवस दिन । पूरन मासी जांन । बिधुतनांमा कूटतैं । लह्यो सुअबिचल थांन

* चौपाई *

सुरपाति सिवकल्याणक कियौ । अपनौ जनम सुफल करि लियो ॥ सो बिद्युत बरकूट सुधार । बंदनकरत लहैं पदसार । पसूनरकगाति छिन में नास । करैं देवनर गति में बास । बत्तीस कोटि प्रोषधी करै । एक बारबंदनफल धरैं ॥ अबआगैं सुनि श्रेनिक भूप । अबिचल राज कथा अनूप । हुंडाकाल दोषप्रगटाय । मिथ्या धर्म चल्यौतव आय ।

* दोहा *

मलय देस मैं नगरपुर । भूपमेघरथनाम । अति प्रताप धरभुजबली । बहुनृपकरैं प्रनाम ।

* चौपाई *

सभा मध्य इक दिवस नरेस । धर्म कथा कौ करौबिसेस । कौनदांन तैं अति सुखहोय । मंत्री प्रति पूछैं नृपसोय । कहैं अमात्य सुनौ नृपबैन । च्यारि दान भाषैजिन अैंन॥ औषध शास्त्र अभै अहार । एई दान मुकति आधार । घनस्यंदन भूपत सुनि कहैं । और दांन इच्छामम बहैं । प्रोहित सोमसर्म सुततहां । मुंडसाल बोल्यौ नृप जहां । सुनौंराइ ए च्यारचौंदांन । करैं दीन राखैं आतिमांन । दान कहे दसबिधि के भेद

करैं भूप सिवलहैं अषेद ॥ गजहय भूम महलबरनारि। तिलस्यंदनदासी सुखकार । अजादान भूपति दसजोग। करि पावै बैकुंठ सुभोग।

* दोहा *

बिद्या मंद आंधो पुरष। लंपट लोभी दर्भ। गिनै न काज अकाज कौं। करै पाप बससर्व ॥

* चौपाई *

मुंडसालए दांन बताय। मिथ्या धर्म जुदियौ चलाय। जैनधर्म्म करलोपमहंत। दुरगति बंदन काज करंत। नृपति बंसभूपति बहुभए। केतिककाल बीतइमगए। अबिचल नांम भूपइम ॥ सोवन मैं क्रीड़ाकों गए। लखि चारन मुनि सीस नवाय। दुबिध सुन्यौ बृषचित्तलगाय। बिद्युत कूट महातम सुन्यौ। जात्रा हेत हिए मैं गुन्यौ। सोरह लाख जीव लैसंग। जात्रा कीनी भूप अभंग। होइबैराग महाव्रतधार। बिद्युत कूट सीससुखकार। लह्यौ मुकति पदपरम रसाल। छूट्यौ जनम मरन जगजाल। जे नरनारिबंदन करैं॥ सो शिवरमणी सम्पति बरैं।

* दोहा *

महिमां एक सुकूटकी सुरगुरबुद्धि असमर्थ। संपूरन गिरि जोनि मैं कौकबि कहन असमर्थ ॥ ( आडिल )

सिखिर महातम ग्रंथ नाम भाषा कह्यौ। लौहाचार्य सूरिसुजग मैं लह्यौ। मनसुख सिधुनि आपनै पठनि कौं। भाषा सरलबनाय ज्ञान के बढ़ानि कौं॥

* दोहा *

चपल चित बरचरसहस। करत ध्यान बनछीन। बांधन सुमति जंजीर कौं ज्ञान खंभइहकीन ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोंहाचार्य विरचते तीर्थमहातमेसुममेदाचल महात्म्थे भाषायामन सुद्धसागरेण बरणनं एकादसमोपरिछेद११

* सवैया *

ताके तनसोहत सुलक्षन। अनेक बिधि सिध पुरजन्म हेमसम छबि काइ हैं। बिमल नृपति तात बिमला

मुदेवी मात गैड़ाकौ चरन मैं मुचिन्ह सुखदाइहैं । चारि बीस चापतनउनत चौरासीलाख वरष प्रमांन जिन देवजी की अइहैं । ऐसे हैं श्रीयांस प्रभू मनसुख सागर कौं देहु शिवमारग नमत शिरनाइ हैं ॥

*दोहा *

निन्याणबे सुलाखवर । अरु निन्याणबैहजार । नौसैंनंद सीतलगए । जनम श्रेयांस सुधार । तिनके पंचकल्याणअब । बरनौं सीसनवाय । कूटशंखुली सिषरिपैं । अविचल पदबीपाइ । * चौपाई *

पुष्करार्द्धसुभदीप महांन । मंदिर मेर सुमेरबखांन । तहां बिदेह सुपूरब नाम । जहांकाल चौथौ सुख धांम । सीतानंदी मध्यमैंबहै । निर्मल जल आति सोभालहैं । उतरकूट देससुभ बसैं । नांम सुकक्ष क्षेमपुर लसैं । नलिन प्रभाराजाराजंत । अरिभंजन हरिजिमगाजंत । सहस्र रवन परम पुनीति । जिमअंतस्वामी सुभरीति । सुनिकैं राजा आति आनन्द । लैपरवार जाइ जिनबंदि । सागांरी अनगारमहंत । द्वाविधि धर्म्म सुनि नृपहैसंत ॥ भोगलखे भोगेंद्रसमान ॥ अक्षविषैं विषसमनृपजांन । राजसुभ्रम कारनलखि लीन । नृपपदवी निज सुतकौं दीन । त्यागि परिग्रह चारित लियौ । निर्जनबन मैं आति तपकीयौ । एकग्राम दिनप्रति जुघटाइ । द्वात्रिंसत दिन दिनहि वढ़ाइ । षोडसकारन ब्रतकरि राज । निश्चै अरुबिवहार समाज । भावन भावैं निजमनलाइ । जिन पति पदबांध्यौ सुखदाइ । धरि संन्यास प्राणतजि दिए ॥ पूरन आउभाउ सुभ किए । सोलम स्वर्ग इंद्र पदधरैं । ठाड़े सबसुरसेवाकरैं । पुष्पोतर विमांन थितिसार । करैं भोगसबसुखदातार द्वाविंशति सागर थिति परी । जिन सेवा छांड़ैं नहिघरी ॥ बाईस सहस वर्ष जबजाइ । मांनसीक आहारकराइ । ग्यारह मास बितीतैंजबैं । सास उसास लेहिं सुरतबैं ॥ * दोहा *

आयुरही छहमास जब । तब जिन पूज करंत । सुनि श्रेनिक बरनौ जनम । श्री श्रयांस भगवन्त ॥

*** चौपाई ***

जंबूदीप क्षेत्र है भरत । कौसल देश कहन असमर्थ ॥ सिंवपुरी नृप बिमल बिष्यात । बिगला रानी बिमल सुगात ॥ रतन बृष्टि तिनके घर होइ । सुखी बसैं पुरजन सब लोइ । आगैं रिति मितिमास प्रमांन ॥ धनद रच्यौ पुर श्री भगवान । जेष्टवदि षट निसि अन्त । सुपन लखि जिन मात तुरंत । षोडस मांन प्रात उठि जबैं ॥ जाइ कहे जिनपति सौं तबैं । बिमल भूप लखि अवधि बिचारि । तीर्थंकर सुत उपजैं सार । इतनें मैं आए हरिदेव । गर्भ कल्यांनक करि सुरसेव

*** दोहा ***

षट पंचास कुमारिका । निज निज काज करंत । गूढ पहेली छंद कहि । माता मन हरषंत ॥

*** चौपाई ***

ऐसी रीति गए नवमास । दंपति मन मैं धरैं हुलास । फागुण बदी द्वादसी जांन । जनम लियौ श्रेयांस भगवांन ॥ ( अडिल ) आए हरि गजराज साजि हरिपुरि बिषैं । सची प्रसूत ग्रहजाइ दृगनि सौं जिन दिषैं । है प्रसन्न थुति कारी मात निद्रारची । लैकैं अंक जिनेस इन्द्र कौं दे सची ॥ सक्र लेइ जिन थापि सुर गिर गए । क्षीरोदक भरि ल्यायन्हवन करते भए । अरचे पदव सुद्रवसर्व आभरन लै । पहिराए मन सुद्ध सिंधु जिन सर्नाह॥ कहि श्रेयांस जिन जगत श्रेयकारी सदा । पुन ऐरापति थापि पुरी आएतदा । मात गोद दै सक्र नृत्य तांडव कीयो । सेवा करन सुरराखि देवपुर मगलियौ ॥

*** सोरठा ***

पिता कियो उत्साह । जाचिकजन बहु दर्व दे ॥ रही नहीं कछु चाह । जिन दर्शन मन तृपाति है ॥

*** दोहा ***

बिबिधि देव खगरूप धरि । जिनमन अति हरषाइ। ईकईसलाख बरष गए । बालष्याल जिनराय ॥

*** चौपाई ***

पांनि ग्रहन शक्र मिलितात । करि मन हरषे पुलकित गात । ब्यालीसलाख वर्ष करिराज । रितु बसंत लखि नृप पदत्याजि । द्वादस भावन भावें सार ॥ लौकांतिक आए तिहिवार ॥ करैं वीनती सीस नवाय । निजपुर गए प्रसन उपजाइ । ल्याय बिमल प्रभसिवका इन्द्र। जै जै करत चढ़ाय जिनंद । जाए बिपिन बस्त्रादिक त्यागि । ध्यान धस्यौ आतम लौ लागि ॥ *** दोहा ***

सहस राय अवनीस पद । निज निज सुत को देइ। श्री जिन चरन प्रनामकरि । शुभ चारित गहिलेइ ॥

*** चौपाई ***

बेला व्रत धरि कैं जिन भूप । अरिष्टनगरनरनाह अनूप । गए गेह करिकैं आहार ॥ निज आतम धरिध्यांन सुधांर । पंचाचार्य भयौ नृपगेह । जै जै सुर कहि करै सनेह । दोय बरष छदमस्थ जो रहै । कर्म घातिया प्रकृति जु दहै ॥ तेदू बृक्ष तलै अरिहंत । धस्यौ ध्यांन जिन मनकरि संत । केवल ग्यानभांन प्रगटाय । जग मिथ्यातम नास कराइ । आए इन्द्र संग लै सची ॥ समोसरन की रचनां रची ॥ कुंथ सौनि आदिक गनधार । जिन बानी के हरषन हार । सतहत्तरि परमांन बखान । चौरासी हजारमुनि जांनि ॥ सब पूरब सम रचनां कही ॥ ग्रंथ उक्त करि जांनौं सही । सहसवर्ती सदेस विहरंत कृपा धरम उपदेश करंत । रही मास मिति आइ जिनन्द । आए सिषरि सुरासुर बन्द । जोग रोध चढ़ि कैं गुनठान । कूट

साकुली प्रकृति जुहांनि । पंच लघुक्षर काल मझारि । चिदानन्द सिवपद लहिसार ॥ * दोहा *
कूटसाकुली सीस पर । सो इंद्रादिक आइ । सिवकल्यांणक कर गए । मनमें अति हरपाय ।

* चौपाई *

सुनि मुगधेस साकुली कूट । बंदितनरक पसु गति छूट ॥ महा पुन्य थानिक हैं सही । अति महिमां जिन श्रुति मैं कही ॥ कोडा कोडी छिनवैं जांनि । अरु छानवे किरोर वखान ॥ लाखछ्यांनबे सहस पैंताल । पांच सतक ब्यालीस मुनि पाल । इतने मुनि सिव पद तहँ लहैं । रुलमख त्यागि मुनिजगुनगहैं कूट बंदना करै इक बार । कोडि प्रोषधी फल दातार । अब आगे सुनि श्रेणिक भूप । मन बंछित फल कथा अनूप । जंबू दीप दीप सिरदार । भरत क्षेत्र तहं धनुषाकार ॥ आरज षंड नांम सुभ देस । नगर कलपपुर बसे अमेस ॥ नंद सैन नरपति सुखदाय । करैं राज अरि नाश कराइ । तिजैं सुसेना रानी सार । ताजुत भोग भोगैंजु अपार । इकदिन आम्र विपन मैं जाइ । लखि मुनि भद्र केवली राइ ॥ करनत्रोस्तु सुनि धर्म्म विसेष । यह संसार अथिर करिलेख । पूछै भूप आतमा काज ॥ क्यौं करि होइ महा मुनि राज । तन कोमल तप होय न लेस । धारि सकैं नाहि चारित भेस ॥ सिव पदकी इच्छाजे रहैं । सो उपाव कहि भूपति कहैं ॥ बोले केवल ग्यानी धीर । सुनौ नृपति अविचल पद सीर । सिखरि कूट संकुली थांन । बंदित सिव पद लहै निदांन । सुनि नृप सीस नवाय । जात्रा करन चल्यौ हैं राय ॥ एक कूट लै संघ सुसंग । पूजा दान जुकरत अभंग । जात्रा करी जाइ नृप जबैं । अति बैराग भयौ जिय तबैं ॥ दै सुतराज दिगंबर भयौ । कूट संकुली परि सिव गयौ ।

* दोहा *

सुनि श्रेणिक इहिविधि बहुत ॥ मुक्ति गए नर नाह । यात्रा करि सिव कूट की नर पद लीनौं लाइ।

महिमां सिखर अगम्यगम। को कबि कह न समर्थ। जौ मनमैं बांछा करैं सो पावै निज अर्थ ॥

*** अडिल ***

लोहाचार्य सूरि सिखरि सुर तरु कह्यो ॥ मन कल्पित फल देइ। फैलि जग जस रह्यो ॥ मनसुख सागर जांनि आपनैं काज कौं करयौ ग्रंथ नर भाष त्यागि कै लाजकौं।

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य बिरचतेतीर्थमहातम्येषुसमेदाचलमहात्म भाषाया मनसुषसागरेण वर्णनं सिद्ध कूटवर सांकुलीजाम श्रेयांसनाथ मोक्ष गमन द्वादसमो परिछेदा ॥ १२ ॥

*** सवैया ***

अमल अनंत गुन सोभित सुवर्ण काय चंपापुर नगर सुजनम बखान्योहै। जननी जयासु देवी जनक हैं बसुदेव उन्नत सुतनु धनुष सतरि प्रमांन्योहै। लक्षण महिष चिन्ह सेवत सुरेंन्द्र सत मंदारगिर कूट सेती कर्मन को भान्यो है। ऐसे बास पूजि जिन बसत जो थिर थांन मन सुख सिंधु नमि सुकृत भी जान्यौ हैं ॥

*** दोहा ***

बास पूज्य बसु दर्व सौं। जे पूजैं मन लाय। बसु करमनितै रहित हैं ॥ बसु गुन जुत सुख पाइ ॥
तिन चरित्र मनुलाय कैं सुनि श्रेनिकनर इंद। मन वच काया सुद्धकर। ज्यौं पद लहैं सुरिंद ॥

*** चौपाई ***

पुष्करर्द्ध मैं दीप महांन। पूरब दिगजो मेर बखान। सीता सरिता उज्जल नीर। ताके पूरब तटके तीर वत्सकावती देस इक बसै ॥ सुर पुरवत सोभा सब लसैं ॥ रतन पुरी पुर उत्तम धांम। अति सरूप गुन जुत नर ठांम ॥ पोह्वोतर नांम नृप भूप ॥ सुरपति वत सोभित हैं रूप ॥ धर्म्म विषै हित अति वृांत

धारि । पूजा दान अधिक बिस्तार । नीति मारग नागरि प्रति पाल । दुरजन जन कोहै उर साल ॥ अति प्रताप राजै नर ईस । बहु नृप आय नवावैं सीस ॥ गुन प्रिय गुन गन जुतहै प्रिया । कुटल रहित सरल सुहिया । सो नृप रानी सहत मनोग । मन बंछित वर भोगैं भोग ॥ नगर बाह्य मन हरि गिरि एक । मन हर सोमा लसैं अनेक । तहं आएजु जुगंधर नाम । तीर्थंकर सवजन सुख धांम । पोह्लोतर नृप सुनि हरषाय । पूजन द्रव्य लेइ नरनाह ॥ जाइ चरन अरचे भगवंत । अस्तुति करि बहु गुन गावंत । करि नमोस्तु नर कोष्ट मझारि । बैठौ मन आनंद अपार । जिन मुख उदित धर्म्म सुनि लियौ । द्वादस भावन मैं चित दियौ ॥ इंद्रजाल जग रीति बखांन । सत्या सत्य न लखै अजांन ॥ पंत्र पराव्रतन यहि जिय करैं । थिति छिन एक नहीं अनुसरैं ॥ देखत देखत इह जगजाइ । इंद्र धनुष सम जांनि सुभाय ॥ अब कीजे कछु आतम काज । पुत्र बुलाय दीजिए राज ॥

* दोहा *

पोह्लोतर बैराग ह्वै । निज सुत दीनौं राज ॥ परिग्रह तजि तप ग्रहण करि । करन लगे निज काज ॥ बहुत राजवी साथि ले दुद्धरतप जुत होइ । यन्हतर मुनि राय अति । आतम रसलौं जोइ ॥ अठाईस जुत मूल गुन । उतर गुन सुबिचार ॥ चौरासी लख आदरैं । करै बरत अनगार ॥ एक दसांग अधीत श्रति । नय बल श्री मुनि राय ॥ षोडस कारण भावनां । भावैं निज लौं लाय ॥ * चौपाई *

तीर्थंकर पदवी दातार । उतिम नांम करम अवधार ॥ बिबिधि तपोधन तप अनुसरैं ॥ पूर्व क्रत बसुकर्म्मनि हरैं । अंत समैं अन सन ब्रतलेइ । निरती चार हिए मै देइ । प्रांण अंतकरि तजि सब आस । महा सुक्र मैं कीनौं बास । महा सुक्र अभिधांन प्रतिष्ट । आमराद्धिप है सब सुर इष्ट । महा शुक्रसु

बिमांन मझारि । सेज्या तहं उत्पात सुसार ॥ अंत महूरत जोबन पाइ । हस्त च्यारि उन्नत सुभकाय । सप्तधातु बर्जित तनु धरैं । सब सुर मिलि सेवा बहु करैं ॥ षोडस उदधि आयुपरमांन । लेश्या पदम विसेप बखांन । अष्ट मास बीते सुभ स्वास । सुरभित सहित बहत है बाम । षट दस सहस वर्ष जब जाय । मांनसीक आहार कराइ । अवधि चतुर्थ भूम लौं होइ । काय बिक्रिया जहां लौं जोइ ॥ ✱ दोहा ✱ इस बिधि सुर सुख भोगकैं । सुनि मगधेसुर राइ । षट मासा पुरही जबैं । जिन पूजा सुकराइ ॥

✱ सोरठा ✱

आगे जिन अवतार । होय तीन जग सुख करन । भो सुनिए मन धार । मन बच काया सुद्धकरि ॥

✱ चाल छंद ✱

इम जंबूदीप मझारा । सुर गिरि सुंदर मन हारा । तिस दक्षिन भरत बिराजे ॥ षट खंड मांहीं शुभ छाजैं ॥ तहं अरज क्षेत्र अनूप सब जन सुख कारन रूप । इक अंगदेस तहँ सोहैं । देखत जन मन मोहैं ॥ चंपापुर सुर विख्याता ॥ बहु सोभ सकल सुख दाता ॥ तहं को बसु पूज्य नरेस । विख्यात सुदेस बिदेश ॥ रानी जयावती नांम ॥ अति प्रिय पति हैं सुख धांम ॥ राजा रानी हित जोगैं । मन इछत भोगैं भोगैं । सुख सिंधु मगन ह्वै राय । जानौं न काल कित जाइ । जिन जन्म लेइ जिन ग्रेह सुख बरनत पार न तेह ॥

✱ दोहा ✱

सुनासीर स्वावधि लख्यौं चंपापुर जिन राय । गर्भस्थिति षट् मास गति । कीनौं अपनौं काज ।

✱ सवैया ✱

आयुसु धनद पाय चंपापुर आयत बनौ द्वादस जोजन प्रमिति परकरियौ । पंचाश्चर्य तीनकाल करत

हरषधार मंदिर विचित्र सुरपुर सोभा हरियो ॥ सजन सनेही रूपके निधांन सब नरनारि रूप निरखि सुदेवी पाइ परियौ । मंगल सुगान नृत्य बीते पटमास इम सौंधे गर्भदेवी आइ हिये भक्ति धरियौ ॥

## * दोहा *

भूमशाभा अषाढ़ पक्षि षष्टी शर्ताभषनाम । महा सुक्र सुरराइ तिथि गर्भ कियो सुख धाम ॥

## * चौपाई *

करत सेव सुरी सब आइकै । अति आनन्द महा सुख पाइकै ॥ करलिये वरवस्त्र मनोहरं । विविधि भोजन भूषन भासुरं ॥ केइक चंदन केसरि गारती । केइक चवर लिये सिरढारती ॥ केइक छत्र लिये कर फेरती । केई एक मात मुखांबुज हेरती ॥ कहत काव्य कलागुन गावती । शुभ पहेली कथा मनभावनी ॥ सुरभि युक्ति सुपुष्प विसेषती । सुरविसेज सुजन्म सुखेलती ॥ धरति चर्न सुनृर्त्यात भावसों । ताथ्रद ताता तता करचावसों ॥ झुनन झुनन नूपुर बाजती । तनन तानन आनन साजती ॥ सुर ससि चिंता गीत उच रती । जननि अग्र करैं शुभ आरती ॥ इंद्र सुअन्य सुसेव करैं सुरी । सकल उत्सव होत महा पुरी ॥

## * दोहा *

फागुन सुकल पक्ष शुभ दिन चतुदसी सार । वरुन जोग जिन जनमियौ त्रिभवन सुख दातार ॥

## * चौपाई *

चौनिकाय सूर सुचक देखि चिन्ह लख्यौ निज जन्म विशेष ॥ नाग जुसाजि गज लायौ तहां । चंपापुर जिन जन्मे जहां ॥ लैप्रभु हरि सुर गिरपर जाइ । पयनिधि जल कलसा भरवाय । मज्जन करि पूजा रचि तबै । अस्तुति करत कहत धन अबै ॥ ग्रह ल्यायौ बहु हिये अनंद । वास पूज्य

कहि जयो जिनंद ॥ अंकमात कैदै सुखपाय । नृत्य कियौ पुन निज पुरजाय ॥ श्रीनृप जिन वसु पूज्य निहारि । जयावती जननी दृग धार ॥ देखि देखि अति हर्षित गात । बढ़ पुलकित निज तनन समाज ॥ पुर उत्सव कर दान जुदेइ । मन बांछित देवहु जसलेइ ॥ गेह गेह मंगल सानंद । सब जन के नाशै दुख फंद ॥ रोगी चकित न दीसे कोइ । नृत्य गान सब थानक होइ ॥ इस बिधि उत्सव जुत पुरसार । बाल रूप जिन राज कुमार ॥ जंबूनन्द तन सोभा धरे । सुर बालक सब क्रीड़ा करे ॥ सत्तरि धनुष सुकाय उतंग । बज्र बृषभ नाराच अभंग ॥ लाख बहत्तरि अष्ट प्रमान । वासु पूज्य जिन आयु बखानि ॥ अष्टादस लख वर्ष बितीत ॥ बाल कुमार अधिक सब प्रीति ॥ इक दिन द्रव्य बिचारन करै । आतम गुन निर्भैमन धरैं ॥ हिये उपज्यो संवेग अपार । जल फेनोपम लखि संसार ॥ इहिजिय काल अनादि अनंत ॥ भ्रमना नहिं पायौ अंत ॥ परभव भावरूप है गह्यो ॥ तजि गुनरूप न कबहु गह्यौ ॥ मोह भूपअपने बसिलेय । अष्टकर्म काराग्रहदेइ ॥ कुमति सुता दीनी परनाइ तिन अपनै बस नाचनचाय ॥ अपनी बिभौ मोहनेदई ॥ डारि निगोद खबर नहिलई । भाग्य जोग्य तहंतैनिकसंत । लष्य चौरसी जोनि भ्रमंत । फुनि निगोद मैं फुनि गति च्यारि । फिरत फिरत नहि पावैंपार । इमचित तजि नवरसबेग । लौकांतिक सुरआए बेग ॥ करजुग जोर नमस्तुकियो । प्रनमलिए थुति कर हरषियो ॥ धन्य धन्य प्रभुतारनहार । तुमबिन कौ इह बातबिचार । जगत जीव तुम नामहि तरैं । गुन गावत भव भव दुखहरैं ॥ थुति करि गए आपने थान ॥ परम सरमसी भाव बखान । सिवकापर जिनलए चढ़ाय । सक्रकंध धरि अति हरषाय अटवी महा मनोहर

नांम । जाइ तहां कीनौं बिश्राम । जंबूतरु तलि तजि निज ग्रंथ । लीनौं तप जान्यौं सिवपंथ । तपकल्यानक सुरपति कीन । किए पूर्व भवपातिग छीन ।

*** दोहा ***

पूजा करि बिनती करी । हरष हर्ष गुनगाइ । सीस नवाय अति बिनसौं । निज पुर गएसुभाय । फागुण कृश्न चतुर्दसी । उड़ बिसाष अभिरांम । दिन के अंत लियौ प्रभु । महाव्रत सुखधांम । छहसैछिहतरि नृपति तबैं । त्यागि परिग्रहभार ॥ निज पदनमि दिक्षालई ॥ करन तपस्यासार ॥

*** चौपाई ***

बेला व्रत धरि निज पद जदा । ध्यांन धरयौ निहचल तनतदा । सुद्धातम गुनमन अति लीन ॥ करन मोह अरिसेना क्षीन । चौथौ ज्ञांन प्रगट भयौ जहां । बेला व्रत धारयौ जिन तहां । चर्या करने उठे जिनराइ ईर्यापंथ चले मनलाइ । सिद्धारथपुर पहुंचे तबैं । सुंदरनांम भूपलखितबैं । ह्वै सन्मुख प्रनम्यौ नरईस । बारंबार नवावैंसीस । जथायोग्य बिधिवत बिधि धार । धेनुदुग्ध दीनौ अहार । अस्तुति करैं हरष निज अंग । पुन्य समं जन कियौ अभंग । अखैनिधि बोले जिनदेव । मनिबर्षावैं सुरस्वमेव । पंचाचर्य कियौ नृपगेह । दांन सुजस करि धरि हिए नेह । फिरि तीर्थंकर बनमैंआइ । आतम ध्यान रहे लौलाइ । एक बर्ष छदमस्थ बखांन कर्म्म कुलाचल नासि सुजान । केवल ज्ञांन भयौ उद्योत । भव्य भवांबुध तारनयोत जैजैकरत । सुरासुर सक्र आइ ज्ञान कल्यानकचक्र । समोसरन बिधि पूरब रच्यौ । धनद देव अपनै करसच्यौ निज २ सभाथांन निज जीउ । करैं परस्पर प्रीति अतीव । जिनबानी अमृत करिपान । ह्वैसंतुष्ट हरष उरआंन । केतक जीव महा व्रतधारि केतकलेइअनोंव्रतसारि । केइक सीलग्रहन करितहां छ्याछठि गनधर जुताजिनजहां । माघसुकल दुतिया दिनअंत । कियौ ज्ञांन कल्यानक अनंत । करिबिहार बरदेस जिनेस ॥ सहस बहतारि संगअसेस । धर्मोपदेस दीयौ

हितखांन। रही आयु इकमास प्रमान। गिरिमंदारं कूटपरिजाइ। जोग ध्यान दीयौ चितलाइ। कृस्न अषाढ़ अष्टमी

सार। अबिनासी पदजिनसंचार।

* दोहा *

मोक्ष कल्यांनक करि तबैं पूजाकरि लैदर्ब। जिन स्तुति करि कैं गए। निज निज थांन किसर्ब॥ चंपापुर

के निकट आति है बैकूट प्रसिद्ध। जेनरपूजैं भावधरि। तेपावैं सिवसिद्धि। एककूंट बंदन किए।कोटि बर्त फल

होइ। सिखर कूट जिन बीसनामि। को फल बनैं सोय।

* अडिल *

सोई सिखर सुमेर सिखर प्रधांनहैं। आतिसैवंत महंत भव्य सिवदान हैं। लौहाचार्य सिखरि महातम

बरनियौ मनसुख सागर देखि सुहित भाषा कीयौ॥

इतिश्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थ माहात्म्येषु समेदाचल माहात्म्ये भाषा यामन सुद्धमागरेण वर्णन सिद्धकूट मंदागिरकूट श्रीवास्य पुज्य जिन मोक्षगमन त्रयोदसमो ध्याय १३॥

* सवैया *

बिमल उपाइ ज्ञांन धर्म भए निधान कंपिला जनमथांन कृत धर्म्म तातहैं। मातहैं सुसीमादेवी लाखन

बाराह सेबी लाल बरन अतिसुंदर सुगातहैं। साठलाख बरष आयुहैं प्रमान प्रभुउन्नत सरीर साठि धनुष

सुहात हैं। ऐसें बिमल जिन मन सुखसागर कौं देहु मीत बिमल नमत हरषातहैं।

* दोहा *

बास पूज्य सिवपदगए बीते सागरतीस। बिमल नाथजनमे,तबैं।तीन भुवन के ईस॥ बिमल करौ मल रहित

बुध। नमौं सीस करनाइ। तुमरे पंचकल्यांन अब। बरनौं अतिसुखदाइ॥

* चौपाई *

उत्तम खंड धातु की जांनि। पश्चिममेर बिदेह बखांनि। मध्य बहै सीतोदानंदि॥ दाक्षिन कूट देस एक

संदि॥ परम मन्य है नाम बिख्यात। बसैं तहां सब उत्तम जाति। महानगरपुर पदम नरेस। करै राज

जिमनाक सुरेस ॥ पूजादान बिषैं अति लीन । पोक्षजन लखि दुखित दीन । अति प्रताप अरिजन भयवंत बिबिधि भेटदै सेव करंत ॥ इतिभीति ब्यापैं नहि कदा ॥ रहै सुखित मैं पुरजन सदा ॥ इक दिन बन पीतंबर जहां ॥ सर्ब मुक्ति मुनि आए तहां । सुनि आगमन भूप बन गए । सीस नवाय पदबंदत भए ॥ बृषउपदश करैं मुनि राज ॥ च्यारि बरग फल सुनि नरराज ॥ प्रथम बर्ग हैं धर्म प्रधांन। जातैं तीनूं साधैं निदान ॥ धर्म्महीतैं आति लक्ष्मी होइ ॥ सर्ब अर्थ पूरैं नरलोइ । धर्म हतैं सब सीझैं काज । धर्म्महितैं ह्वै आतम काज । सोई धर्म्म बर्गा सुनि राइ । पुलकित ह्वै नरपति हरषाय । काम बर्ग मुनि कहै दुतीय । अर्थ बर्ग फुनि भाषै तीय । काम बर्ग कारिज संसार । पुन्य उदै पावैंनरनार ॥ अर्थ मिलै शुभ के परसाद अर्थ बिनां सब कारिज बाद ॥ मोक्ष बर्ग साधनहैं श्रेष्ट ॥ तीन लौक मैं होइ सजेष्ट ॥ आवागमन रहित पदहोइ ॥ सीस नवावै त्रिभुवन लोइ ॥ मोक्ष बर्ग सुनिकैं नरनाथ ॥ जानै मुनि शिवमारग साथ ॥ ह्वै बिरक्त सुत कौ देराज । जात रूपधरि ताजिकै लाज ॥ तेरहबिधि चारित प्रतिपाल ॥ अतिं चारपरमाद जोटाल ॥ ग्यारहअंग कियो अभ्यास । ग्याना वरणकियौ कछु नास ॥ षाडस भाई भावनासार । करैं तपस्या सुचि आचार । तीर्थंकर सुगोत बांधियो । निजआतम सातासांधियो । अंतसमैंब्रतधरि संन्यास । सहश्रारि मैं कीनो बास । परी अठारा सागरआव । सुरसेवैं अतिमन धरिचाव । बारसअठारह सहसबितीत । करैं आहार मानसीक प्रीति ॥ मास गए नव मास प्रमांन ॥ सास उसास लहि सुख दान ॥ इंद्र बिभूति सकल तिन लही ॥ एक भवतारीथिति लही ॥ होय जहां जिनवर कल्यांन ॥ जाइ निक्रिया धर गुण खांन ॥ सप्त तत्व षट द्रब पुनीति ॥ चरचा करैं धरैं शुभ रीति ॥ इस प्रकार पूरन करि आव ॥ रही मास छह सेष सुआयु मूर्छित माला लखि निज अंत ॥ अष्टदरबि जिनपूजकरंत ॥ अब आगे सुनि सेनिक राय ॥ जहां बिमल

जिन जन मै आइ। जंबू दीप लसैं अभिराम। भरत क्षेत्र तामैं सुख धांम। देस हिरन्य मनोहर थांन॥ नगर कंपिली तहां बखांन। कृत बर भूप राज सुख करैं। बहुत राइ अग्या सिर धरैं॥ नांम सुसीमां हैं नृप त्रिया। शुभ लक्षन सोभित तन क्रिया। ते दोऊ दंपाति मनलाइ। बिलसैं भोग मनोगत राइ॥

* दोहा *

हरि भंडारी आइ कैं। करि अपनो नियोग॥ मणि बरषाये मास षट। राचे सुर श्री जिन जोग।

* अडिल *

एक दिना जिन मात सौधपर सौवती। सोलह सुपिन बिभिन्न अंत निसि जोवती। प्रात जाय पतिया सिक है बिधिवत सबैं। तीर्थिकर सुतहोइ नृपति भाषैं तबैं। करैं परस्पर नेह नारि नरहैंजहां। आइ बिजोडा देव करै जैजै तहां। कीनौ गर्भ कल्यान बस्त्रआभरन दै। गएथान सुर छुरी मात की सरनैंहैं * दोहा *

जेष्ट मास भृमराभपष। दसमी दिवसनिहारि। बिमलनाथ जिन देव कौ। भयौ गर्भ अवतार॥

* चौपाई *

आए देवी सेवानिजोग। करैं काज सबआपन योग। पूछैं गूढ़ कथा मनुलाइ। निनैं करि जिन मात कहाय तीनज्ञांन जुत जिन उरबसैं। तिहं प्रभाव जिन संसैनसैं॥ छंद पहेली दोहाकहैं॥ ताकौं सब प्रति उत्तर लहैं। नऊ मास बीते इह रीति॥ दिन दिन सुरी करैं सब प्रीति। माघ सुकल शुभ चौथि बखांन तिसदिन भयौ जनम कल्यांन। पूरब सुर उत्सव हरि कियौ। नन्हन जथावत हरि हरषियो। बिमल नाथ मिथ्या मल हर्न। आइ इंद्र सत सेवैं चरन॥ इंद्र गए थुति करि निज थांन। राखे सुर सेवैं भगवांन। जिन बालक सुर सेवा करैं। बालक रूप आपनौं धरैं॥ केइ होय कबूतर देव। केई मोर रूप धरि सब।

केई ताम्रचूड होजाय । मुनिया भेष धरत अधिकाइ ॥ जिनवर तन बंधूक समांन ॥ उन्नत साठिधनुष परमांन । बर्ष साठलख आय जो परी । जिन बांनी अंम्रत रसभरी ॥ पंद्रहलाख बरष प्रभु बाल । कीनी केलि क्रिया सिसु ख्याल ॥ पांनि ग्रहन राज पद धारि । कियो इंद्र क्रतवर सुख कार ॥ तीस लाख मिति बर्ष महंत ॥ राज कियौ जिनवर मत संत ॥ देखि सुतारा पटल जिनराइ ! है बैराग्य चितअधिकाइ । लौकांतिक पैडी सुर जहां । आय करैं थुति श्री जिन तहां ॥ इंद्र लाय सिवकासिवरूप । बैठाये जिन पति जग भूप ॥ बन मैं जाय महाव्रत लियौ । जात रूप अपनौ प्रभु कियौ ॥ सहस एक भूपति सिर नाय । दिक्षा धरी परम पद पाइ । मन पर्यै उपज्यौ प्रभु ग्यांन । कीनौ मघवा तप कल्यांन । माघ शुक्ल दिन चौथि अनंद । गए सुरासुर श्री जिन बंदि । जुगल दिवस धरि ध्यांन जिनेस । गए महा पुर नंद नरेस । नोधा भक्ति करी नर राय । श्री जिन राज अहार कराय ॥ अक्षय निद्धि कहि जिन बन गए । पंचाचर्य राय ग्रह भए । रहि छदमस्थ बरष त्रय सार । करम घातिया प्रकृति निहारि । माघ स्वेत पख षष्टी जबैं । केवल ग्यांन प्रगट है तबैं । कल्यांणक सुरपति तब कीन । समो सरन तहं रच्यौं प्रबीन । पचपन गण धर ग्यांन अपार । बांनी परखैं संसै हार । करि त्रिहार द्वात्रिंसत देस सेवा करैं सुरासुर सेस । सिखर सुमेद आय भगवांन । क्रतभंजन हैं कूट महांन । जोग रोध सिव नारी बरी । जैजै कार भयौ तिंह घरी । चैत असेत अमावसि जानि । कियौं सक्र तब सिव कल्यांन । नर सुर खगपसु हरष अनंत । क्रतभंजन सुकूलनमत । सत्तरकोटि सातलख सार । छहहजार सत सात निहार । ब्यालीस अधिक महा मुनि राज । क्रत भंजन पै है सिव राज । सोई कूट मनुज मनु लाय । बंदन करै हरष उपजाय । यसु शुभगति नास करंत । सुर नर गति सिव थांन लहंत ॥ गोतम कहैं सुनौं मगधेस

सुप्रभु कथा अनूप नरेस । जंबू दीप सुपूर्व विदेह । सीता नदी बहै शुन गेह । उत्तर कुल देस मद याल । नगर हिरन्य पुरी अघटाल । नृप क्रत सैन तहां कौ भूप । राज करै पुर जन सुख रूप ॥ अरिवै श्रवन प्रजा दुख देई । क्रत सेना पुर लूटि जो लेई । निज बल लेनिकस्यौ क्रत सैन । नृपवै श्रवन महा दुख दैन ॥ जुद्ध परस्पर भयौ अपार । नृप वै श्रवन हार दुख धार । त्यागि भूप पद दिक्षालई । क्रोध सहित तपकरि मृत्यु भई ॥ मरिकैं चौथे दिवमैं देव । भयौ सकल सुरकैं जुसेव । मालवदेस अवंती पुरी । नरनारि मानौ सुरसुरी । रुद्रदत्तराजा बलवान । ताकैनारि सुधर्म्माजांनि । चयौवै श्रवन चरतहैं आइ । सुतसुप्रभनांम उपजाइ । महासरूपी सील गुनमान । तेज तपस्वी सील निधांन । एकसमैं मुनि आए तहां । नगर अवंती बनहै जहां । फुनि नृपगयो बंदन काज । सुप्रभनांम नम्यौ मुनिराज । पूछैं मुकति गमन के हेत । दुविध धर्म उपदेश जुदेत । जिसथांनिक उपज्यौ सम्यक्त । सवल्य तपस्या अपनी सक्त । महापुन्य तीरथ जो नमै । सोनर निहचै सिवपुरगमैं । सिखर कूट कृतभंजन नाम । बंदन करतलहैं सिवधाम सुनि करि भयौ संध संयुक्त । सुप्रभनांम मुनि वानी उक्त । जाय सकल नगपरि जिन थांन । पूजाकरी हर्ष उरआंनि । समाकित की प्रापति जिहभई । तिंह मिथ्यात प्रकृति नासिगई । प्रसम भाव चितमैं अति भयौ ॥ संग त्यागी शुभ चारित लयौ ॥ एकअवर बनकोट नरेस ॥ धास्यो तहां दिगंवर भेष ॥

### * दोहा *

करी तपस्या अतुल अति । क्रत भंजन जहं कूट । सिवरमनी लहि छिनक मैं । जनम जरामृत छूट ।

### * अडिल *

सोई कूट प्रधान जांनि जौं नरनमै । कोट प्रोषधी पाइ महाफल सिवगमैं ॥ लौहाचार्य कह्यौ जो प्राकृत

बचन सौं। मन सुख उदधि जो हेत सुभाषा रचन सौं॥

## * दोहा *

सुगति दैनि अघहरनकौं। यासम तीरथनाहिं। अन्य क्षेत्र अतिसैंघनी। देखत दुख मिटि जांहि॥

इति श्री काष्ठा संगे लोंहाचार्य विरचते तीर्थमहातमेखुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुद्धसागरेण बरणनं सिद्ध कूट कृतभंजन ऊपर विमलनाथ मोक्षगमनौ नांम चतुर्दसोध्याय॥ १४॥

## * सवैया *

दर्शन ज्ञांन सुखसता हैं अन्त जाकै जनम बिनीता थांन तात सिंघसैनहैं। सूर्यादेवी मातहेम बर्न सुभग देह उन्नत पचास जग जस लैंनहैं। सेह चिन्ह चरन मैं तीसलाख बर्ष की आयु लखि जीवन जो जाग जल फैन हैं॥ ऐसे हैं अनंत जिन ब्रत धारि लियौ तिन मन मैं मोंको सुख दैन हैं॥

## * दोहा *

गए जलधि नौबीत कैं। बिमल नांथ सिव थांन॥ जनमे जबरहि अनंत जिन तीन भुवन भगवान॥ गुन अनंत महिमा अतुल मेरी मति अति हीन॥ भक्ति भक्ति बस होइ हम करौ चरित्र नवीन॥

## * चौपाई *

खंड धातकी पूरबमेर। पूरबनांम बिदेह सुहेर। तामैं दुर्ग देस सिरताज। नगर अरिष्ट पदमरथराज। पुन्य प्रताप महागुणवंत। अरि कुलकीनौ छिन मैं अंत। निज भुजबल राजैं नरईस॥ बहुविधि आइ नवावैं सीस। इकदिन सभा मध्य जिनराइ। माली तबैं जुहारयौ आइ। नांम स्वयंभू तीरथराज। आये बनमैं धर्म जिहाज। तिनप्रसाद चिरजीयौ नरेस। आंनि फिरै तुम देस बिदेस। सुनि नरेंद्र हिए हर्ष अपार। करी परोक्ष बंदना सार। निज अंकुस आभूषणदेइ। पुष्प जीव की बिदा करेइ। लै पूजा पाहर

नृपजाइ । अर्चन थुति करि सीस नवाय । श्रावक धर्म्म अनंतर जहां । अनागार नृपमुनियो तहां ॥ पंचमहाव्रत सुमति जुसार । तीन गुपति सिव सुखदातार । तेरह बिधि चारित मुनिभूप । है बिरक्त वैराग सरूप । ततक्षिण धनुद तनुज दैराज । आपुन भयौ महा मुनि राज । पाखमास उपवास करंत । नानाविधि तप हिए धरंत । ग्यारह अंग पढ़ैमनुलाइ । ध्यान धरन मैं अह निसि जाय ।। आयु पूरन करि धरि संन्यास ॥ कीनौ सुर्ग सो लहै बास । पुष्पोतर विमान मनहर्न । ठाढ़ेसुरसेवैंजुगचर्न । द्वाविंसति सागर परवान परी आयुसुख सहित सुजान । कृतम अकृतम श्रीजिनधाम । निति प्रति सबकों करें प्रनाम । मन बंछित सब भोगैं भोग । व्यापै नाहि रोग तन सोग । बहुतक अमर सभा थितिकरैं । छहौं द्रबचरचाविस्तरैं ।

*** अडिल ***

इहबिधि सो वह देव आयु पूरनकरी । सेषरही पटमास माल मूर्छाधरी । मरन चिन्ह लखि अमर भाव बिकल पत जौनिसि दिन लै बसु दर्ब चरन श्रीजिनजजैं ।

*** दोहा ***

आगें सुनि मगधेस नृप जिन अनंत अवतार । धर्म प्रगट करि मुक्ति लहि तीन लोक सुखकार ॥

*** चौपाई ***

सब दीपन के मध्य बखांनि । जंबूदीप अनूपम जांनि ॥ भरत क्षेत्र मैं कोसल देस । साकेतापुर बसैं सुभेस ॥ सिंह सैनि नगरी पति कहां । नरनारीजन सब सुखलहां ॥ सूर्या देवी नारि समेत । करैं भोग दंपति अति हेत ॥ सोपुर सोभा करी धनिंद । मान वर्षा तहं करै सुरेंद्र ॥ इहि विधिसौं बीते षट् मास । नगर बसैं महा सुखरास ॥ सूर्या देवी इकदिन रैनि ॥ सोध सिषरी करती सुख चैंन । सोला सुपिन देखि निसि अन्त ॥ कहैं प्रातपति सो हरषंत । अवधि ज्ञांन बलि भाषैं राइ ॥ तीन जगत

पति सुत उपजाइ । करैं परस्पर दंपति नेह ॥ मगल गांन होइ तिन गेह । कार्त्तिक बादि एक दिन [illegible] ॥ कीनौं इन्द्र गर्भ कल्यांन । राखि सुरि सेवन जिन मात ॥ जांनि नयो सुरपुर अवतार । छप्पन देव कुमारी आइ ॥ निज निज सब ग्रह काज कराय । गूढ़ प्रश्न पूछैं सुरनारि ॥ उतर देइ मात चित [illegible] । गए महिनां नौ इहि रूप ॥ जनमे तीन जगत के भूप । आइ इन्द्र सुर गिरि लैगयौ । जन्म कल्यांण [illegible] इह बिधि ठयौ ॥ अनन्तनाथ गुन अन्त न लहौं । अल्प बुद्धिमैं कैसैं कहौं । जैजै करत नगर फुनि आइ । जिन मात के गोदथपाइ । तांडव नृत्य इन्द्र तव कियौ । निरषि निरषि जिन सुख हरिषियौ । बालरूप सुर सुरपति थाय । गए सुछिन मैं सुरपुर आय । जिन बालक सुरबाल समेत । क्रीड़ा करैं धरैं बहुहेत । अगूठा अमृत रस थापि । करै सरीर पुष्ट अतिजांनि । दस आतिसैं सोहैं सुखदाइ । एक सहस बहु लक्षन काइ । बरस तीसलखि आयु महंत । काय पचास चापि बलवन्त । सातलाख पंचास हजार । बालरूप बीते मनहार । पांनिग्रहन करि कीनौं राज । विधि पूरव सब बन्यौं समाज । पंद्रहलाख बर्ष मर्जाद । प्रजा पोषन करि अहलाद । इक दिन सिंघ पीठि थिति देव । ठाढे सुरनर करत सुसेव । उल्कापात देखि दिसि एक । मन मैं श्री जिन धखौ विवेक ॥ छिन विध्वंसी इह संसार । विविधि रूप जग दुष भंडार । द्वादस बिधि सुभावन भाय । सुर लौकांतिक पहुंचे आइ । अस्तुति विनैं भक्ति चित धारि । करि कैं गए ब्रह्म सुरसार । सागरदत पालकी जबैं । जिन बैठाये मघवा तबैं । गए सहेत कवन के मध्य । जै जै करैं देव आनिवध्य । सुभ दुकूल आभूषन त्यागि । निहचल ध्यांन आतमा लागि । दस सत भूप राज तजि जहां । करि प्रनांम तप लीनौ तहां ।

* दोहा *

जेठ असितथिति द्वादसी । जिन अनंत तप लीन । सुरनर खग सुत इन्द्र मिलि । तप कल्यांनक कीन ॥

### * चौपाई *

निज निज थांन गए सबजीव । दुद्धर तप जिन करै अतीव । मनपर्यै उपज्यौ तिनिवार । जुगल दिवस जिन बृत धार ॥ तदनंतर पारन चित लाय ॥ धर्मगढ़ पुर गमन कराय । नृप बिसाख लखि अस्तुति करी । नौधा भक्ति हिए में धरी । प्रासुक धेनु दुग्ध आहार । करिकै औसै निधि उचार पंचाचार्य देव तब कियौ । नर नारी तब लखि हरषियो ॥प्रभुजी जाय बिपिन धरि ध्यांन ॥ जुगल वर्ष छद मस्थ बखांन ॥ घात घातिया कर्म्म महंत । जे चेतन गुण घात करंत ॥ केवल ज्ञांन भांन प्रगटाइ मिथ्या तम छिन मांहि नसाय । समो सरन रचना धर निंद ॥ कर थुति करैं सुरासुर इंद ॥ व्योम बांन मिति मन धर सार । जिन बांनी धुनि परखन हार । द्वादस सभा जीव सब भरे । जिन भाषा समझैं रुचि धरे । केवल कल्यानक करि इंद । गयो निजास्पद हरष सुरिंद । तीनकाल बांनी धुनि होय । धर्म बखांन सुनै सब कोय ॥

### * दोहा *

नष्ट कला थिति चैत की उपज्यौ केवल ज्ञांन । व्रत विधान जे नर करैं । तिनको होय कल्यांन ॥

### * अडिल *

नाना देस बिहार कियौ जिन राजनैं । दुबिधि धर्म्म उपदेश भव्य जनका जनैं । मास एक थिति आयु रहीपर मिति जवैं।आए सिषर सुमेद सुरासुरजु तबैं ॥

### * दोहा *

समौ सरन तहं परिगयौ । कूटस्वयंभू शीस । जोगरोध श्रीजिन रहै । तीन लोक के ईस । जेठ सुकल तिथि चौथि कौं । मुक्ति बास प्रभुकीन । गुन अनंत जामैं लस । मुष्य आठगुन लीन । नरसुर गलपसु असुरपति । आए अति आनंद मंगल गान बिधान करि पूजा करि रजवंदि ।

### * अडिल *

सिवकल्यानक सक्र कियो बहुकूटपै । जेनर नमै त्रिशुद्ध पाप सबछूटपै । नरक पसुगाति नास देव पदनर । लहै । क्रम क्रम सो सिव जाय जैन बचयौ कहै

*** दोहा ***

और मुनी सुरसिव गए ॥ वहैकूटसिर थान ॥ जो आगम गिनती लही । तिन कौ करो वखान ।

*** अडिल ***

मुनिवर कोडाकोडि छ्यानवैं जानियो ॥ सतरि कोडि लाख सुसतरि मानियो । सतरि सहस प्रमांन सानसै अघहरी । कूटसुयंभू सीस मुक्ति रमनी वरी ॥

*** दोहा ***

ऐसे क्षेत्र पुनीति की महिमा कही न जाइ ॥ भक्ति सहित जात्राकरैं । तिनके-दुख्य नसाइ । औरकथा श्रेनिक सुनो । च्यारि सैननृप बात । जात्राकरि जो फल लह्यौ । सोबरनौं अवतार ।

*** छंदचाल ***

यह जंबूदीप विराजै । बलया क्रनसोभाछाजै । तहं भरतक्षेत्र सुखदाइ । धनुषा क्रनसोभपाइ । कौसांबीपुर इक सोहै । देखत सबजन मनमोहैं । एकसेठ बसै बृतसेन ॥ धारिद्रव्य प्रचुर सुख दैन ॥बरनी सुमसैंना नांम । बहुरूप सील गुनधाम । तिनको कोई पूर्ब नियोग । भयो पुत्रअसुभके जोग । छिनमैं लक्ष्मी सबनासी । समदत नांम सुखरासी । फुनि मात पिता तिस मूवा । तबही अति कुष्टत हूवा । उछिष्ट उदर भरि जीवैं । सरसरिताको जलपीवैं । इक दिन बनभ्रमतो डोलैं । मुनि देखि प्रनम इमबोलैं ॥ मै कौंन सो कर्म कमायौ ॥ जासौं इहविधि दुखपायौ ॥ मुनि निरखि दयाउरआंनि ॥ बोलेशुभ अंम्रतबानि । इहअंत रायबलकर्म ॥ उपज्यौ बलवन्त असर्म्म । जय पूजा जिनवर करिए । पूरब क्रन पातिग हरिए । सुनि बोल्यौ इमसमदत्त । सुनियौ मुनि बच रत ॥ मेरो मन चंचल रूप । तन छीन पेट जिमि कूप ॥ कैसे बृत पूजा कीजै । किहि विधि जय ध्यांन धरीजै ॥ सबसौं मैंहौं असमर्थ । कछू होय नहीं बिनअर्थ ॥

* दोहा *

फुनि मुनि बोल्यौ मधुर वच । निज मन लेकरि संत ॥ सिखर सुमेद जात्रा करौ । लक्ष्मी होय अनंत ॥ सुनि बूझैं समदत्त इम । किहिं बिधिं जात्रा होय । सोभाषौ अनुकंपि धरि । भाग उदै तुम जोय ॥

* चौपाई *

कहैं तपोधन हित मित बैंन । श्री जिन मारग भाषित अैन ॥ पीत बसन पहरैं मन सुद्ध । जिन ग्रह जाय नमैं धरि बुद्ध । संघ भक्ति जिन सक्ति समांन । करैं च्यारि बिधि बिधिवत दांन ॥ इह प्रकार जो जात्रा करैं । लहि लक्ष्मी सिव लक्ष्मी बरैं । दे उपदेस गए मुनि राज ॥ नमि समदत चल्यौ निजकाज आम्र बृक्ष तर बैठि तुरंत । निज मन मांही सोच करंत ॥ मोकौं मिलै बसन केहि पीत । जात्रा होय कौनसी रीत । इह बिधि चित करैं तिस ठौर । कारन आइ बन्यौ इक ओर ॥

* दोहा *

पदम प्रभु पूजा निमति । इक बिद्या धर आय । पूजा थुति कर न्याय जुत । वनमैं केलि कराय ॥ दीन हीन दुखित निरखि । दया दांन बहु देइ । जैन धर्म्म धर्म्मज्ञ अति । पर उपगार करेइ । सो चतुर समदत्त लखि । खग पूछै कुसलात । तरुन रूप है के कहै । अपने दुख की बात ॥

* चौपाई *

गद गद बचन सुनै खग जबैं । करुणा भाव भयो हिए तबैं ॥ दिए वस्त्र पीरे आभर्न । चलौ साथ लै जात्रा करन ॥ पूजा दांन करत वह गए । सिखर सुमेर निहारत भए । कूट स्वयंभूपैं जिन नाथ अनंत नाथ कौ सिव कल्यांन ॥ जहां जाय जिन पूजा रची । भगति बहुत अपने मन सची । विदा किये खग कौतिहिं घरी । आय दिगंबर पदवी धरी ॥ तप करि धरि सैन्यास महंत । सुर पद सोलम सुर्ग लहंत । द्वाबिंसति सागर थिति धार ॥ और कथा कौ सुनि बिस्तार

* दोहा

इह सुनि जंबू दीप में। भरतक्षेत्र तहं जांनि ॥ तहं कुरु जंगल देस में। हथनांपुर सुभ थांन। रतन सैंन भूपत जहां। सूर बीर अभिराम। मलया देवी नारि घर। सीलवंत सुख धांम। तिनकै सोम दंतचर सोलमं स्वर्ग मझारि। सुरपद तजि तहं जनमियौ। चारिसैन सुतसार। रतन सैंन दिक्षालई। चारि सैंन दै राज। प्रजा पोषनां करत सुख। राखत सबकी लाज ॥ * अडिल *

एक दिन बन केलि करत नरपति गयौ। महादरिद्री पुरष एक देखत भयौ॥ पूर्व भवस्मृति जांनि कहै मुख से तबैं। सिखर जात प्रसाद लह्यौ इह पद जबैं। * दोहा *

आंनि फिरी परदेस मे। बिभौ भई अति गेह। सेवा करैं अनेक नृप। राखै सब जन नेह ॥

* अडिल *

फुनि अब जात्रा करहु जथावत गिरितनी। जौ मन बंछित काज होय सब विधि बनी॥ जनम जरा मृतिनासिवास सिव मैं करौं। आवागमन निवारि कर्म आठौं हरौं * दोहा *

असी मनहि बिचार नृप। फुनि आये निज गेह। अवर दस क्षौहनि संग लै। चल्यौ भक्ति धरिनेह

* चौपाई *

थांन थांन जिन पूजा करैं। च्यारि प्रकार दांन बिसतरैं। सब जीवन कौ राखै मांन। परम विवेक बुद्धि कौ खांनि॥ जाय सिखर जिन जात्रा करी। कूट कूट पूजा बिस्तरी। जेठे सुत कौं दीनोराज। आप लियौ तप आतम काज। चारि सैन दुद्धरतप धारि। सिव पदवीपाई सुख कार॥ भाव सहित जो जात्रा करैं। सिव रमनी सो निहचै बरैं॥ कूट स्वयंभू बंदैं कोइ। कोट प्रोपधी फल तिस होय॥ जो सब गिर बंदैं मन लाइ। ताकौ फल बरन्यौ नहिं जाइ॥ * दोहा *

जानौं इह सिव पंथ ॥
लौहाचार्य नैं कह्यौ ॥ सिखर माहातम ग्रंथ ॥ रचि भाषा मनसुख उदधि।

इतिश्री काष्टा संगे लोहाचार्य बिरचते तीर्थ माहात्म्येषु समेदाचल माहात्म्ये भाषा यामन सुद्धसागरेण बर्णनं सिद्धकूट स्वयंभूपर अनंतनाथ जिनमोक्ष गमन पंचदसमो परिछेद ॥ १५ ॥

*** सवैया ***

कर्म हरन हार धर्म्म कहन हार सिव केल हनहाररत्न पुरजनम हैं। रत्न सैना तात मात सुव्रता सुनै विख्यात बज्र दंड चरन चिन्ह हेम दुति तनहैं। दशलाख पूर्व आयु पैतालीस चाप काय देखि जग सुभ समजाइ बसै बनमैं। ऐसे धर्मनाथ जी कौ मनसुख सिंधु नामि सुफल जनम जानि हर्षित ह्वै मनमैं ॥

*** दोहा ***

जिन अनंत मुकतैं गए। बीते सागर चारि।धर्म्मनाथ जनमैं जबैं। त्रिभुवनसुखदातार। तिनके पंच कल्यानक अब। बरनौं आगम देखि। धर्म्मा धर्म्म प्रकास करि। सिव रमनी छबि पेषि। कूटदत रवि प्रगट करि। भव्य जीव सिवराह। भाव सहित जात्रा करैं। लेइ सुनर भवलाह। पूजाखंड धातु की जांनि पूरव जहां बिदेह बखानि। सीता नंदी याम्यादिसि कूल। देस बत्स नामा सुखमूल। तामैं नगर सुसीमां सार। बसैं नारि नरसब गुनधार। आति प्रतापी दसरथनाम। राजा राजकरैं सुखधाम। प्रजा पोषनाकरैं नरेस। निसि दिन पूजाकरै नरेस। धर्म ध्यान सौं राखैं प्रीति। निकट भव्य जनकी इहरीति। सरद पूरणमास लखि रैंनि। जगत समस्त जांनि हिए फैंन। ह्वै बैराग्य महारथ राज। सुतकौं देय हुवे मुनि राज। अठाईस मूल गुण धार। उतर गुनकौ करै बिचार। द्वादर ब्रत धारै मुनिराइ। षोड़स कारन करि मनलाइ।

*** दोहा ***

तीर्थंकर के गोतकौं। कीनौं सदरथ बंध। अंत समैं संन्यास लै। तजे प्राण तजि धंध। उपजे छिनमैं जाइकैं

जहं सर्वार्थ सिद्धि। पद अहमिंद्र लह्यौ तहां। पाई बहु विधि रिद्धि पूरव समसव जानिए। आयु काय सुख सर्व। सबसुर मिलि चरचाकरैं। सात तत्व पट दर्व। त्रय त्रिंशत सागर उमर बीते हैं इह रीति। रहिमास पट शेष जब। जिनपूजा करि प्रीति ॥

## * चौपाई *

अब सुनि श्रेनिक जिन अवतार। धर्मनाथ स्वामी विस्तार। यहजंबू वरदीप महंत। सबदीपन के मध्य बसंत। भरत क्षेत्र तहं कौशल देस। रत्नपुरी जिम पुरी सुरेस। रत्नसेननृप राजसुकरैं। राजा प्रजानीति पगधरैं सो मृतसैना भूपति नारि। दंपति भोगे भोग अपार। तहां आय धनपति सुररच्यौ। नौ द्वादस जोजन विधि सच्यौ। रत्नबृष्टि करि तीनू काल। बीते इमपट् मास विसाल। थिति बैसाखअष्टमी एंन। करैं मात निजमंदिर सैंन। सो अहमिंद्र चरचइआय। गर्भस्थिति करि सुभलखाय। पोड़स मिति उठि मज्जन कियो। प्रातजाइ पति सौं कहि दियो। श्रीजिन जनम सुपन फलजानि। हरष-परस्पर करैं बखान। इतनेमें आयो अमरेस। जैजै करत सुरासुर शेष। सिंह पीठि थापे जिनमात। करि अस्नांन पूजहरषात। गर्भ कल्यानक कीनों जबैं। निज निज धांम गए पुनि तबैं। छप्पन देव कुमारी आइ। निज नियोग साधे सुखपाइ। निति प्रति गीत नृत्यघर होय। उत्सव करैं सकल पुरलोइ। क्रम करि बीते हैं नवमास। पूरन भए गर्भ की आस। माघ शुक्लतेरसि अति सार। लीनौं धर्मनाथ अवतार। मघवा ऐरापति साजिलीन। जैजै सकल सुरासुर कीन ॥ आये नगर जिनालय चढ़ाय। भक्ति सहित सुर गिरि लेजाय ॥ विधिवत न्हौन्ह पूज्य करिवंदि। गंधोदिक लै भद्र अनंदि ॥ वस्त्राभूषन सब पहराइ। माता गोद दिए पुरआय ॥ तांडव नृत्य कियो तब इन्द। गयो राखि सुरसेव जिनन्द ॥ मति श्रुति ज्ञांन अवधि प्रभुधरैं। बाल केल करि सब मनहरैं॥ पैंतालीस चाप उतंग। वज्रकाय द्युति हेम अभंग ॥ दसलख सबैं आयु परमांन। सहस एक वसु चिन्ह

बखान ॥ दस अतिसैं जुत जन्म जिनेस । बर्ष अढ़ाई लखि सुभेस ॥ गयो व्याह करि नृप पद धारि । बरस पांचलख नीति बिचारि ॥ एक समैं प्रभु सभा समेत । बैठे बात करें हित हेत ॥ इतनै इन्द्र धनुष देखियौ ॥ नासनीक सब जग लखिलयौ। निज हित निरखि प्रसम उपजाइ ॥ राज दियौ सुत कौं सुखदाय । द्वादसानु प्रेक्षा भावन्त ॥ सुर लौकांति तब आवन्त । थुति करि ब्रह्म लौक सुरगयौ। सक्र पालकी लावत भयौ ॥ नाभिदतपुर श्री जिन थाप । गए लवन वन श्री जिनथाप ॥ *दोहा* धर्म्मनाथ जिन राजजहं ॥ जात रूप करि अंक । चौबीसौं परकार कौं ॥ तजियौ जिनवर संग । आतम ध्यांन धर्‌यौ तबैं ॥ लषन आतम रूप । निरखि धरननमि सहस इक ॥ दिक्षा लीनी भूप । अडिल

तप कल्यांणक सक्र कियौ हरषाय कैं ॥ क्षीर सिंधु केशडारियौ जाइकै । जन्म दिवस तवजांनि सक्र सुरनर जबैं ॥ निज निज थांन के गए सुनामिनमिकै तबैं ॥

* दोहा *

दिन द्वै करि ब्रत ध्यांन धरि । उठे असन के हेत। धरमनमी जिनपुर गए ॥ सुधर सैन से केत ।

* चौपाई *

जिन मुनि भेष लए धरि सैन । जांने ए प्रभु जग सुख दैन । नौधा भक्ति करै तवराइ । धेनु दुग्ध आहार कराइ । असैं निधि जिन जब उच्चरैं ॥ पंचाचार्य देव तहं करैं । फुनिवन आइ धर्‌यौ प्रभुध्यांन । एक बर्ष छदमस्थ बखांन

* दोहा *

पौष सुदि दसमी सुदिन । कर्म्म घातिया नास । केवल ग्यांन भयौ तबैं । लौका लौक प्रकास । समौ सरन रचियो धनपति । द्वादस सभा बिसाल । आइ सुरासुर नर पसु । बांनी सुनै रसाल ॥

*** चौपाई ***

गनधर तेतालीस सुनीस । आदि अरिष्ट सैन गन ईस ॥ बिबिधि देस में करयौ बिहार । दीनों धर्म्म देसनांसार ॥ मास प्रमांन रहि थिति जवें । समेद सिषर आए प्रभु तवें । पोष सुदि दसमी थिति जांनि । कीनों सक्रग्यांन कल्यांन ॥ पुंन्य पाप सम करि जिनराय । समो सरन तब बिमोनसाय । कूटदत पर ऊपर गए । जोगरोध निज गुनलौ दिए । जेष्ट सुकल तिथि चौथि बखांनि । गए अचलपुर श्री भगवांन । तनकपूर समजब खिरि गयौ । वेनष केस गाय जो दियौ ॥ इन्द्रआय श्री षंड मगाय । अगर कपूर सुरभि बहुल्याय । सुर रचितन माया मई कियौ ॥ वेनष केस गाय जो दियौ । अगनि कुमार प्रणमि युगचर्न । प्रगटी अग्नि भस्म तन कर्न । छिन मै ढारभई अति सीत ॥ ताल लगावें सुरनर प्रीति । पूजाकरि बसु बिधि ले द्रर्ब । जैजै करैं अमर गनसर्ब ॥ इह बिधि सिवकल्यानक सार । करि करि निज निज पुरसाचार । सोई कूटदत वरपूत । बंदित सुर नरगन संजूत । नरक पसुगति छिन मैं हरैं क्रमक्रम सौं सिव नारी बरैं

*** दोहा ***

महिमा दतबर कूटकी । मोपै कही नजाइ । इतनैं मुनि तहं सिव गए । संख्या कहो सुभाय । **अडिल**

कोडि उनईस बखान लाखनौं जानिए । नौहजार सतसात पचास खवांनए । भए निरंजन सिद्ध लह्यौ पद आपनौं । कर्म्म कुलाचल भांनि हींनि सब पापनौं ॥

*** दोहा ***

और कथा मगधेस इक । सुनौं सुद्ध मन लाय ॥ भाउ दत्त नृप जात्रा करि । फल पायौ सुखदाय ॥

*** चौपाई ***

जंबू दीप सुचक्राकार । लख जोजन ताको बिस्तार । भरत क्षेत्र चापाकृत जांनि । श्री पुर नामैं

नगर बखांन ॥ भवदत्त नांम तहांहैं भूप ॥ त्रिया महेंद्रदता अति रूप । दंपति पूजैं श्री जिव राज ॥
निति प्रति दांन देइ हित काज ॥ संघ भक्ति विधिवत बिस्तरैं ॥ जैंन प्रतित हिए मैं धरैं । द्रव्य खरचे
जिन मंदिर कियो । बिंब भरा द्रव्य बहु दियौ ॥ च्यारि प्रकार संघ लै साथि । जात्रा हेत चल्यौ नर
नाथ। जाइ सिखर परि पूजा करी । इंद्र धनुष की बिधि उचरी । निस मैं ध्यांन धर्यौ मनु लाय। लखिकैं
निर्जन थान कि जाय । निसि दिन तीन बितीते जबैं । अंतर कथा सुनो इक तबैं ।

* दोहा *

प्रथम स्वर्ग के इंद्र की ॥ बैठी सभा सुनंत ॥ समकितकी चरचा करैं । देव परस्पर अंत ॥ भरत क्षेत्र
मैं कौन नर । समकित सहित बखांन ॥ सक्र चवैं निज मुख थकी भावदत्त नृप जांनि ॥ सो आयौहैं
सिखरि परि ॥ कूट बंदना हेत ॥ पूजा करि अब ध्यांन धरि । तिष्टैं निहचल देत । देव अनखुशा अंबिका ।
चल्यौ परिक्ष्या लैन । बिन देखै मानो नहीं । इंद्र कहे जे बैंन ॥ तीजे दिनके अंत निसि । आइ कियो
उप सर्ग । भाव दत मन बचन । चल्यौ नहीं तन वर्ग ।

* चौपाई *

इतनें मैं पुनि भयौ प्रभात । नमस्कार करि सुर हरषात । रतन अमोलि बस्तु वउ लेइ । बिनौ भक्ति
करि भेट धरेइ । कहे बचन सुर अस्तुति किये । सुरपति भेट तुमैए दिए । भाव दत तब ऐसैं कही
मेरे काम न यको सही । अति आग्रह सुर करि तिंहि थांन ॥ भावदत यको नहिमांन । निश्चल चित देखि
सिर नाथ ॥ कहै धनि समकित धरराय ॥ तुम अस्तुति जिम सुर पति करी । इहमैं देखी सो इहघरी
बारंबार पूणामि सुर जबैं । एक भेरि दीनी करैं तबै । भेरी सप्ट जहां लौं होइ ॥ नौकरार गद नासन सोय ॥
इह गुन सुनि करि भेरी लेइ । पर उपगार चित में देइ । याद करौं तब प्रगटौं आय । ऐसा कहि सुर

सुर पुर जाय । भावदत पुनि संघ समेत । आयो गेह राज सुख हेत । शुक्क चतुर दसि व्रतकोधारि । सांतिक पाठ जंत्र रचि सार । राजा रानी पूजा करैं । भाव भक्ति अपने हिए धरैं । तिस दिन भेरि बजैं दिन रात । सुनत सबदवाके गद जात । मास मास इह रीति बखांन । देस देस जस भयो निदांन । इह विधि सौं बहुने दिन भए । बहु रोगी आरोगित भए । राज ग्रही को भूप विसेष । वाइ पीडित नारी एक । भेषज करी अनेक प्रकार । अधिक रोग बाढो दुख कार । भेरि सुजस सुनि आयौ तहां । भावदत्त भूपति पुरजहां ॥ पूछैं नृप भेरी की बात । कहै नगर बासी दुखदत । परबी परे मास के अंत । सुनत सबद गद नसैं तुरंत । भेरि बजैं जबलौं सुखदाइ ॥ तबलौं पूंन नासि है जाय निज अमात्य सौं भूपति कहैं ॥ इहांउपाय कौंनसरदहैं ॥ मंत्री कहैं चिंतमति करो ॥ एकबात मेरीजियधरो दरबि खरच करिए नृपअबैं । जाइ रोग छिन मेये सबैं । जाके सष्ट सुनत दुखजाय । घसिलगाय गदक्यों नमिटाय । राजासुनि मनभयो आनंद । रोगनास कौपायो छंद

*** दोहा ***

भेरि अनुचर शीघ्र तबैं । लीनौं एकबुलाय । मिष्ट बचनतब योप करि । बातकहैं इमराइ ॥

***चौपाई***

कोटदर्ब तुम हमसौं लेइ । भेरी सष्ट सुनाइ जु देइ ॥ सुनि किंकर ऐसैं उचरैं ॥ नृप अग्या बिनु कैसैं करैं । फुनि । भूपति इम बोलै बैंन । सुनु सेवक हम तुम सुख दैन ॥ गुप्ति द्रव्य लै कोटि सुजान ॥ भेरिखंड रंचक दे आंन ॥

*** दोहा ***

बात मानि राजा तनी । ग्रप्ति दर्ब लै लीन ॥ भेरि खंडकारि छिनक में । आइ भूप कौं दीन ॥ राज ग्रही को भूप तब । लै घसि देह लगाय ॥ बाय बिथा नास तुरत ॥ देह अरोगित थाय ॥ हरिषित होय नरेस ॥ फुनि आयौ अपने धांम । खण्ड खण्ड होइ सब गए ॥ भेरि लोभ बस दाम ॥ भेरि सेवक भरि लखि । चिंता

तुर अति होइ ॥ जो कदापि राजा सुनैं ॥ दुख दे डारै खोइ । वही भेरि की खोलि परि ॥ करि भेरि इक आन
वाजै भेरि अनेक बल ॥ रोग नासनहि जांन राजा मन मैं सोचित करि ॥ कहैं कौनइहबात ॥ सुमरन कीनौ
देव वहै ॥ आयौ सुर हरषत ॥ कहै राय सुनि देवजी ॥ भेरि गयौ गुनआज ॥ सोहम सो तुममति कहौ ॥
अबवह कौनेकाज ॥ देव चवै इमृत बचन ॥ सुनि भूपति मनुलाय । मो भेरी गदनासनी । गई लोभवसिगइ ।
यह भेरी हैं कृतिमअर्व । क्यों करि नासै रोग । सुनितराय चक्रति भयौ । वढ्यौ हिए मैं सोग । रोग नासिन
भिरि यह । खोये अनुचर मूढ़ । खंडखंड करि लोभ वासि । करि राखी पुनि गूढ़ ॥ धृगहैं ऐसे लौभकौं । धृग
अनुचर धृगलोग । धृगइह राज बिभूतिकौं धृगपंचेंद्री भोग । देव कहै सुनि भूपअव । राज करौ सुखदाइ ॥
और भेरि तुमलेऊ अब । सबगुन आगमराइ । भाव दतसुर सौं कहैं । सुनौं देव मुझि बात । राज करत
बहु दिन गए । बृथा मनुष भवजात । जाय सिखर परि तपकरौं हरौं पूर्व कृत कर्म्म । जन्म जरा मृति नासि
करि । लहौं मुक्ति गत भर्म्म । राज दियौ सुत जेष्ट कौं । संघ साथि लै राय । सिखर जाय करि कूट नमि । व्रत
लै तपजुकराय । पाखमास उपवासकरि । सही परीस्याघोर । जिन गुनसता सक्ति सव । ध्यान कियौ वल
फौर । कूटदत बरसीसपर । कर्म घातिया नासि । केवल ज्ञान प्रकासि करि । कीनौं सिवपुर वास । इह विधि
जो नरभावधरि । करै जात्रा मनलाय । इष्टवस्तु पावैं तुरत । सेवकरैं सुरआय । कोडि प्रोषधी फललहैं । कूटसुदत
नमंत । जो सब गिरि वंदैंमनुष । तिंहिफल लहैं अनंत । लोहाचार्य मुक्ति मग । इहश्रुत दियौ वताय ।
मन सुखसागर पठिनकौं । भाषा रची बनाय ॥

इति श्री काष्टा संघ लोहाचार्य विरचते तीर्थमहातमेसुमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुख सागरेण वरणनं सिद्ध कूट दतवर धर्मनाथ जिनमोक्षगमन नामषष्टदसोध्याय ॥ १६ ॥

## * सवैया *

बिघन हरन हार सुखसांत के करन दुखनासन जिनेस नागपुर अवतरे हैं। बिश्वसेनि नृपतात ऐरादेवी नाम मात मृगकौ चिन्ह तन हेम दुति धरे हैं। धनुष चलीस काय एक लाख बर्ष आयु सहस अठोतर सु चिन्ह आयु पेरे हैं। ऐसे सांतिनाथ जीकौं नमैं मनसुख सिंधु उनही के चरन की आसहमकरे हैं।

## * दोहा *

धर्म नाथ सिवपुरगए ॥ भए जल दधि जवतीन ॥ शांति नाथ सिवसुख करन ॥ जनम अएतब लीन ॥ जिन के चरनांबुजजुगल ॥ नमौं जोरि करि दोइ। कहत पंचकल्यान अब ॥ बिघन सांति सबकोइ

## * चौपाई *

इहजंबूवर दीप महांन। तहां बिदेह सो पूरब जांन। सीता नंदी मध्य में बहैं। अंमृत सम पांनी तसु कहैं ॥ याम्य कूल दिसिबसैं सुदेस। लखि बिभूति लाजे अमरेस। पुंडरीक नगरी मनहार। बन उपबन सोभा अधिकार। श्रीयखेन नामैं नरपाल। दुर्जन जनकौ हैं समकाल। सहसीमयु रांनीअतिसंत। सीलरूप निधि बहु गुनवंत ! राज भोग भोगैं दिन राति। जानैं नहिं काल कित जात। उत्तम कार्य करे मनु लाय। श्री जिन भक्ति धरैं हिय राय। मृतक पुरुष लखि है बैराग। छिनमैं राज बिभै सब त्यागि ॥ राज भार जेठे सुत दियौ। जाइ महाब्रतं गहि लियौ। जैंन महाब्रत दुद्धर धारि। कीनो बृत द्वादस बिधि सार। दर्श बिशुद्ध भावनां भाय। तीर्थंकर पद ले सुख दाइ। उदैं परीस्या आवैं जबैं। धरि सम भाव सहैं मुनि तबैं। आयु बितीत भई इह रीति। ब्रत सन्यास धारि अति प्रीति। मरन कियौ निज गुन चित देइ। जासौं सिव पुर गमन करेइ। जहं-सर्बार्थ सिद्धि बिमांन। सिव नगरी लघु लात

समांन । पद अहमिंद्र लयौ गुन धार । ठाढ़े सुर सेवैं अधिकार ॥ निर्विकार हिए समता धरैं । चरचा सात तत्व की करैं । आउ परी सागर तेतीस । तीन ग्यांन जुत बिस्वा बीस । पूरब सम सब जांनि जुलेहु । मन बच काय चित निज देहु । अंत मास षट आव जो रही । तब जिन पूजा हिए सरदही आगै कथा सुनौं मग धेस । जहां होय अवतार जिनेस ॥ यह जंबूबर नांम सुदीप । लवणार्ण वतिस लसैं समीप । भरत क्षेत्र मैं आरिज खंड । सोहैंतहं कुरु देस अखंड । गजपुर नांम नगर इक बसै । अमर लोग पुर सोभा लसैं । विश्व सेनि नृप राज करंत। बहुत देसके नृप सेवंत । ऐरा देवी हैं पटनारि रूप सील गुन लक्षन धारि । ते नर नारि करैं सुख भोग । श्री जिनवर थुति जनम नियोग । हरि आग्या ले धनपति आइ । रतन बृष्टिकर नगर रचाय । पछिम रैनि सैन जिन मात । सोरह स्वप्न लखे सुख दात । उठिकरि प्रात स्नांन सिंगार । अलि साथि ले चली बिचार । सभा मध्य पति लखि नमि जबै । अर्द्धासन नृप दीनौं तबैं ॥ आगम कारन पूछे राइ । भिन्न भिन्न सब सुपन बताय ॥ ग्यांन चक्षु लखि जांन्यौ भूप ॥ जिन जन्मोत्सव होइ अनूप । ऐरा देवी सुनि हरषंत । करैं परस्पर नेह अनंत । भादौं बदि सप्तमी जांनि । आइ सक्र करि गर्भ कल्यांन । कीनौं उत्सव अधिक सुरेस ॥ इति भीति नासी वह देस ॥ छहौं कुलाचल बासनी जबै । गर्भ सोधनां करती सबैं॥ पट पंचास कुमारी आइ ॥ जिन माता सेवैं सुख दाइ ॥ कथा पहेली करन हुलास ॥ इइ विधि सों बीते नव मास ॥

*** दोहा ***

जेष्ट मास अलि अभ पक्ष । चतुर दसी सुख दांन ॥ तीन ज्ञांन संयुक्त तब । लियौ जन्म भगवांन । निज निज चिन्ह बिचार सुर । आए चतुर निकाय ॥ जन्म कल्यांन करि सबैं । निज निज

थांन किजाय ॥ सुद्ध सुवर्ण समांनतन । सांति नांथ जिननांम ॥ बालपनैं क्रीडा करैं । सब जनके सुख धांम । आयु एक लख बरसकी । तनुज चाप चालीस ॥ बाल केलि मैं तेवरस ॥ गए सहस पचीस ॥ दक्षन पग मृग चिन्ह सुभ । दस अतिसैं जुत देव । बिश्व सेन सुत तरुन लखि । करत सुरा सुर सेव पानि ग्रहन करि भूप तब । कियौ राज अभि षेक ॥ सक्र सुरा सुर मिलि करैं । जै जै घोष अनेक ॥ जनम्यौं आय गेहमैं । चंक्र रतन अभिरांम ॥ जिनवर चक्री मदन पद ॥ सांति नाथ सुख धाम । आंनि फिरिछह खंड मै चंक्र रतन की जांनि । एजिनेंद्र पदवी धरैं त्रिभवन आग्या मांन ॥

## * चालछन्द *

सबरे छहखंड जो साधैं । चक्री जनसवनि आराधैं । तबचौदह रतन जो पाए । नौ निधि आयुनेत आए । चक्रवति बिभौ अधिकारी । तिह सौं जिन लक्ष्मीभारी । किमबरनौ राजबिभूत । मेरी अति बुद्धि कभूत । तिसतैं भुगतैं सुखसागरैं तवबर्ष पचासहजारैं। इकदिन बैठेहरिपीठे। चपला चमकत लखि जुगदीठे इहजग वस चंचल जान्यौं । बैराग हिएमैं आन्यौ । तबलौकांतिक सुरआवैं । जबद्वादस भावन भावैं । थुति करिबेनिज पुरजाई । सचीयत तबसिव कल्पाई । गङ्गातट अटवी भारी । तहं जाइ भए बृतधारी । मनपर्यै ज्ञान प्रकास्यौं । जैजै जै देवानि भास्यौं । जादिन तपकल्यानक कीयौ । अपनौं अपनौं मंगल लीयौ बोइदिन व्रतकरि जिनराई । सोमनस नगरतवजाई । पिय मिष्ट नृप जिनवर देखे । नमिं जन्म सुफल करि लेखे । गोदुग्ध अहार जो दीनौ । थुति करि शुभ संचै कीनौ । सुरपंचाचय बखानै । बनजाय धस्यौ प्रभु ध्यानै । तबकीनो बिबिधि प्रकारी । जिन संयम दुद्धरधारी । मर्जाद जो षोड़सबर्ष । छदमस्थ रहे जिनमर्ष । दसमी सुदि पोष महंत । प्रभु ज्ञान भयौजु अनंत । समवाद सरनकी रचना । धनदेवकरी अति रचना ॥

*** दोहा ***

देवमनुज खग व्यौंमचर ॥ आए सब तिहिं थांन ॥ मिलिसक्रादि करैं । सबैं श्रीजिन ज्ञांनकल्यान । तीन कली बानी खिरैं ॥ भव्य जीव हित हेत ॥ जे हिएधारैं भावसौं ॥ ते पावैं सिव खेत ॥ (: अडिल) सांतिनाथ जिनराइ सांति करतामए । करि बिहार बहु देस सिखर उपरगए । रहिमास मिति आयु जो गरोथ न कीयौ । जहं प्रभास बरकूट ध्यान तुह धरि दियौ *** दोहा ***

सितवैसाखी प्रथम दिन सांति गए सिवलोक । मन सुखसागर भावसौं करमु कलित दे धोक । वहीं कूट परि सिव गए ॥ मुनिवर और अनेक ॥ श्रुतलाखे कछू संष्या कहौं ॥ जितनौ हिए बिबेक ॥

*** अडिल ***

कौडा कोडि एक कोडि नौ सतक नौ । फुनि नौलाख प्रमांन जानिए सहस नौ । नौसैं अधिक निन्याणवैं मुनिं इतनें कहे । भए निरंजन सिद्ध आपनैं गुनलहे । सोप्रभास बरकूट नमत जो भावसौं ॥ सोनर सुरगति पाय लहै सिवचावसौं । नर्क पसुगति नास करैं छिनमें । सही धरै हिए सम्यक्तजैन श्रुतिइमकहि ।

*** चौपाई ***

कूटप्रभास कथा सुखदाइ । जात्राकरि सुदर्शन राइ । सोम सरम द्विज वंदन कियौ । फल निदान वंदन कौं लियौ । सोमुनियौ इक चित लगाय । बरनन करौ जथावतराय । जंबूदीप अनूपम सार । भरत क्षेत्र तहं धनुषाकार । देस विरंच मित्रपुर बसैं । नरनारी अति सोभा लसैं । नांम सुदर्शन राजै भूप । रानी जैसेना बहुरूप । बहुत बिभूति भूप कैं भई । रोग सोग दुखवाधा गई । दंपति राज भोग सुख करैं । काल जात हिय मैं नहि धरैं ॥ इक दिन भवन क्रीड़ानृप गयौ । सुनि अनंत वीरज लखि

लियौ। केवल ज्ञानलसैं अवदात। जैजै सद्दहोहि दिनराति। तिनकी तीन प्रदक्षणदई। हिए भगति अति अदभूत भई। नमि कैं पूछैं निज परजाइ ॥ कौन पुन्य इहलक्ष्मी प्राइ ॥ कहे केवली मुनि नरनाथ ॥ पूरब जनम चलाए साथ। सिपर सुमेद बंदना करी ॥ पूजादांन भक्ति बहुधरी। जोनर मन वचकाय समेत ॥ जात्रा करैं लहैं सिवषेत। इतनी विभौ कौनसी बात ॥ जो तुम राइ पाइ दरषात। इह विधि सुनि नृप मनहि बिचार ॥ करैं राज पुनि सिवदातार। करि नमोस्तु आयौ निज गेह ॥ करैं संघ सामग्री जेह। तदनन्तर इक कथा विसाल। सोम सर्मद्धज की भूपाल ॥ सुनौ श्रवन दै गोतम कहै। जातै भव्य मुक्ति मग लहै ॥ योदनपुर इक नगर मनोग। धन धान्यादि सहित सव लोग ॥ सोम सरम भूसुर धन हीन। तहां वसैं अति आतुर दीन ॥ दुःखकर अटवी अटैं अनेक। जुग चारन मुनि लखि दिन एक ॥ धाइ पाउ मैं दीनौं सीस। गद गद जल्पौ भूसुर ईस ॥ दुखित देखि दया मुनि भई। श्री जिन धर्म्म देसनां दई ॥ जात्रा करौं सिषर की जाइ। तव मन बंछित लक्ष्मी पाय ॥ सोम सर्म नमिकैं मुनि राज। चल्यौ सिपर बंदन के काज ॥ नयैं मित्रपुर पहुच्यौ जाय। जवैं सुदर्सन सिंघ मिलाय ॥ पूजा करैं सुनैं श्रुति जैंन। सोम सर्म उपज्यौ हिय चैंन ॥ राय सुदर्शन भाव समेत। संघ भगति अपनैं मन देत ॥ पहुंचे सिपर सुमेर गिरीस। कर जुग जोरि नवावैं सीस। पूजा करत भयौ वैराग। भूप सुदर्शन परि ग्रह त्याग। अपनौं राजपुत्र कौं दियौ ॥ कूट प्रभास सीस तप लियौ। सोम सर्म्म इह देखि तुरंत। धर्यौ महाव्रत मन महं संत। जात्रा हेत एकखग आइ। वर विभूति जुत अति सुखपाइ ॥ सो निज नारि सहित तिह थांन। बंदत फिरैं टोंक भगवान ॥

*** दोहा ***

सोम सर्म लखि खग विभौ। कियौ निदांन जो बन्ध ॥ जात्रा तपफल होइ मुझि। छूटैं दालिद

दुन्ध। आयु अन्त करि प्रांन तजि । बिजयार्द्ध उपजाइ। द्वै खगेस सुत बिभौ लहि। फुनि जात्रा कौं आइ। भई भवस्म्रति सिपर लखि भयो हिये वैराग। पंच महाब्रत आदरैं। बिभौ करि सव त्यागि। और अनेंक मनुष्य तहि। लीनौ चारित भार। करि करि तप सिव पद लह्यौ। पायौ सुख भंडार। जो नर पूजैं भाव समेत। बसौं कूट प्रभास महंत। कोट प्रोषधी फल लहै। गदैत भव पाय दहंत। सिषर महातम ग्रन्थ यह। कीनौं लोहाचार्य। मनसुख सागर कठिन लखि। भाषा रची सुआर्ज॥

इति श्री काष्टा संगे लोहाचार्य विरचतेतीर्थमहातम्येपुसमेदाचल महातम भाषायामन सुद्धसागरेण वर्णनं सिद्ध कूटप्रभास सांति जिन मोक्ष गमनं सप्तदसमो परिछेद ॥ १७ ॥

## * सवैया *

ग्यानधर नांम कूट सिवमग पग दियौ अजाकौ चिन्ह अवतरे गजपुर मैं। सूर सैनि जनक सु कनक समांन तन श्री मती सुमात हैं। निपुन दया धर मैं। वर्ष पंचासनवैं सहस आयु पैतीस ज़ुचाय। ऊंची देह केलि करी बालसुर मैं। ऐसे कुंथनाथ जिन कूंथ वादि जीव रक्ष मनसुख सिंधु नमि हरपित उरमैं॥

## * दोहा *

शांतिनाथ मुक्तै गए। अद्धायल्प वितीत। कुंथ नाथ अवतार लेकरि प्रगट वृष रीति। कुंथनाथ पद पंकज कौ। मौमन मधुकर रूप। पंच कल्यांनक बरनि हौ सिवपद सादन भूप॥

## * चौपाई *

जंबूदीप अनूपमथांन। तहां विदेह सुपूरव जानि। बहैं बाहनी सीतानाम। मध्य प्रबाइनीरगुनधाम। ताकेदक्षन देसबसाय। बत्सदेसनि आवि काय। नांम सिंघपुर नगर मनोग्य। जहांवसैं सब उतिमलोग। सिंघनांम भूपति महाराज। करै राजपुर जन सुखकाज॥ सिंघसमांन पराक्रम जानि। चौदह बिद्या करैं बखांन। प्रसम भाव

उपज्यौ दिन एक। जब जिय धार्‌यौ परम विवेक। दियौ तनुजकौं तबहीं राज। लियौ महाव्रत आतमकाज अठाईस मूल गुनधरै। पटकाया जिय रक्षाकरैं। पालै सील बाडिनौ धारि। अतीचार जियधारैं विचार। दर्स विसुद्ध आदि भावना॥ भावैं मुनि आतम पावना॥ तीर्थंकर पद बांध्यौ गैन। जहां छियालिस अतिसै होत। दुद्धर व्रत धारैं मुनि राय। अंत समैं संन्यास धराइ। किये भाव सब सौं अविरुद्ध प्रांण तजे मन वचतन सुद्ध। सर्वार्थ सुसिद्धि अभिराम। पद अहमिंद्र लयौ सुख धांम। तेतीस जलधि आयु तहं लही। और कथा सब पूरन कही। रही आयु षट मास प्रमांन। तब जिन पूजा रची सुजान अब मुनि श्रेनिक जन मैं जिनेस। बर्नन करैं होय जिम देस। जंबू दीप भरत जहं खेत॥ उत्तम जन उपजावन हेत। कुरु जंगल इक देस बसाय। नाग पुरी नगरी सुख दाय॥ सूर सेन नाम भूपाल॥ सब जीवन पै रहै दयाल। श्री यमतीरानी मन हार॥ सील रूप जुत सदा अचार। जिन के उर तीर्थंकर होय। जिन थुति करन सकबिकोइ। वह पुर धनद आइ पुनि रच्यौ। मनि मानिक मोतिन करि सच्यौ॥ तीन काल बरषावैं रत्न॥ श्री जिन जनम करैं सब जन। श्रावक कैं तिथि दसमी निसि माता षोडस सुभ निहार। उठि करि प्रात जाय पति पास। भिंन्न भिन्न सुभ स्वप्न प्रकास। सूर सैन सबके फल कहै। बडे भाग जिनत सुत तुम लहै। इतने मैं अमराधिप आइ॥ गर्भ कल्यांन कियो हरषाय। देवनि कौं हरि आइसु देइ। नाक लोक पुनि गमन करेय। देवी सेव करैं बहु मात। गत नृत्य करि अति हरषात॥ गूढ प्रश्न पूछैं नर नारि॥ जिन अंबा उत्तर दै सार। क्रम सेती बीते नव मास। पूरन भई गर्भ की आस। सित बैसाख प्रदिपदा जानि॥ आइ इंद्र करि जन्म कल्यांन॥

## * अडिल *

दंती परि हरिल्याय थापि जिन राज कौं॥ सुर गुर जाय नहावन कियौ निज काज कौं॥ पूजै

ले बसु दर्ब आय राज पुर जबैं ॥ नृत्य कियौ सुर रायगयौ थानिक तबैं । * चौपाई *

सुर निज बाल रूप धरि तहां । जिन बालक हरषावैं जहां ॥ केलि करावै धरि खग रूप । जिनवर क्रीडा करै अनूप । पंचास हजार ऊन एक लाख । आयु कुंथ जिनवर की भाष ॥ उन्नत काय चाप सै तीस । हेम बरन तन बिश्वा बीस ॥ द्वाबिंशति हजार मन आंन ॥ सात सतक पंचास बखांन । इतनैं बर्ष बाल पन गए । फुनि बिवाह करि चक्री भए । चक्र नियोग बिभौ सब भई । जिन बिभौति अधि की बरनई । राज कियौ श्री जिन सुख दाइ । सुर नर खग मिलि सेव कराइ । साढे सैंतालीस हजार बीते बर्ष राज पद धारि । हरि बिष्टर बैठे दिन एक । मौंन धारि हिए करत बिबेक । इहतौ राज दुःख भंडार । अथिर रूप लखिए संसार ॥ इम चिंतत उपज्यौ बैराग । द्वादस भावनसौं चित लाग ॥ इतनें में लौकांतिग देव ॥ अस्तुति करी आइ स्वमेव । तारन तरन कहे तुमनाथ । तुमहीहौ प्रभु सिवपुर साथ

* अडिल *

इह बिचारिमन मांहि करै को तुम बिना । सिवपुर सारथ वाह एक तुमही बिना । करन योग इहवात दयानिधि जानिए । अष्टकर्म्म अति दुष्ट पुष्ट सबमानिए ॥ * दोहा *

इहबिधि और अनेक थुति । करि जिन थानिक जाइ मुक्ति गमनी पलिकी । सक्रथापि जिनराइ । सुर सरिता तट बिपनमैं । सकल ग्रंथ परिहार । पंचमुष्टिक चलौंच करि । धरे महा ब्रतसार । मनपर्यै अव बौधलहि । निज गुन भिन्न कराय ॥ सहसराय जिनचरन नमि । उत्तम तपसुद्धराय । मिथुन दिवस श्री कुंथ जिन । धर्यौ आतमा ध्यान । गए सुरासुर खग मनुज ॥ करि करि तपकल्यान *चौपाई *

असन हेत तबचले जिनेस । मंदिर पुर बरदत नरेस । देखे श्री जिन इर्य्यापंथ । सोधत आवत हैं निरग्रंथ ।

नौधाभक्ति करी तबसार । दीनौं तहं प्राशुक आहार । असन अंत काहि अखैं निधान । कांनन जाइ धरयौ मुनि ध्यान । नृपग्रह पंचाचर्य करंत । सबसुर भूपसुजस गावंत । साढ़ाद्वादस कौडि सुरत्न । बरषाए नृपघरि करियत्न । द्वादश बिधि जिनतप तापिताप । निर्मल करीआतमा आप । द्वाविंसत उपसर्ग सहंत । जिस दिन उदैं जोगिआवंत । थिति छदमस्थ जो षोडसबर्ष । रहे कुंथ जिन तजिदुखहर्ष । च्यारयौ कर्म घातियानासि केवल ज्ञान सूर्यपरगासि । लौका लौक बिलौकनि कियौ । समोसरन धनपाति रचिलियौ । द्वादस सभा बापिका तूप । जिनमंडप तिंहि मध्य अनूप । तीन पीठ सुभजाडित जडाव ॥ श्रीजिन अंतरीक सिसुभाव ॥ उपरि तीन छत्रराजन्त । तिंहि लखि त्रिभवन दुतिलाजंत ।

*दोहा *

चैतशुकल तृतियादिवस । आइसुर सुरराइ । केवल कल्यानक करैं । फुनि निज थानिक जाय ॥

* चौपाई *

तीनकाल जिन बानी होइ । संसैं मेटन समर्थ सोइ । आदिस्वंभू गनधरजांनि । और सबैं दैतीस बखान साठि सहस बस जु कहे । देवी देव असंखलहे । करि बिहारि बहुदेस बिदेस । सेवैं शेष धनेस सुरेस । आयु रही इकमास जिनन्द । आय सिखर सुमेद सुछन्द । पुन्य पाप दोन्यूसम भए । नरसुरखग पशुनिज थलगए । रचना समोसरन की तबै । भई बिनास छिनक मैं तबै । कूट ज्ञान धरऊपर जाइ । जोगरोध कीनौं जिनराइ । जरी जेवरी समजे रही । कर्म प्रकृति जहं सबजन दही । आइ उकल समय समान । अचल भए सिव मैं भगवांन । सम्यक्तादि मुष्य गुनआठ । तेई करन जोग मुखपाठ । और सुगन गुन सहित अनेक । को कबि बरनै रसना एक । सितबैसाख सु पडिवा जानि । भयौ कुंथ जिन सिव कल्यान । कूट ज्ञानधर पर जिनअर्च । रजपलाय तनकेसरअर्चे । सुरपति गीत नृत्य करि तहां । कहैं सुरासुर जैजै तहां ॥ उतसव करिते गए सुजान ।

अब मुनि संख्या कहौं बखानि । कोडा कोडि छयानवैं कहे । कौडि छयानवैं उपरि लहे । सहसछयानवैं लाख बतीस । सात सतक ब्यालीस मुनीस । निर्मल करि आतम बिधि नास । कीनौं मुक्ति पुरी मैं वास । सोई कूट मैं जो कोइ । कोडि प्रोषधी फल तिस होइ । नरक पशुगति नास तुरंत । नरसुर गति लहि मुक्ति बसंत । जो जात्रा करिसिवपदपाइ । अबातिन कथासुनौं नरराइ । जंबूदीप बिषै सुखदैन । भरतक्षेत्र कहियतु हैं अैन देस मनोहर उतिम लसैं । अति सुंदर नर नारी बसैं ॥ भूप जसोधर राज करंत । पुत्र सोमधर भयौ तुरंत ॥ पाय पिता पद पर उपगार । करन सील सुख भोगैं सार । महा बिवेकी सब गुन धरैं । जिन पूजा गुर सेवा करैं ॥ च्यारि प्रकार देइ सो दांन । राज नीति मैं परमसुजान॥ क्रीडा हेत गयौ वन जहां महा मुनी सुर देखेतहां ॥ जाइ निकट नमि जुगपद कंज ॥ अस्तुतिकरि निज पातिग भंज । धर्म वृद्धि दीनी मुनिजबै । तिंहि है प्रश्न करी नृपतबै । कौनधर्म्म सेवन सुखहोइ । किहि बिधिमुक्ति लहै नरकोइ । सुनि मुनि बोले अमृतबांन ॥ सुनौं रायतुम धर्म्म बषांन ॥ दर्शनग्यांन चारित्र जो तीन । करै प्रभावन समकितलीन । श्री जिन चर्न धरैं जिय भक्ति॥ चौबिधि दांनदेइ निजसक्ति॥ जात्रा करैं सिखर सुमेर । धर्म्म चक्र पूजा बिधि हेर । धरसनादि धरै वसु अंग ॥ लहै मुकति तजिकै सब संग ॥ बिन सम्यक्त जीव नहिं तिरैं ॥ इह बिधि मुनि नृप सौं उच्चरैं ॥ भव मुनि कहौ कहै इमराव । किहि बिधि उपजै सम्यक भाव ॥ फेरि तपो निधि बैन उचार । सुनौं भूप निज चित दे सार । श्री जिन मंदिर करैं उछाह । पूजा करि नरभौ लैं लाह ॥ च्यारि प्रकार संघ लैं साथ । जात्रा करै सिखर गिरि नाथ ॥ जैन सिद्धांत सुगुरु मुख सुनै । सातं तत्व चरचा जिय गुनैं । तब उपजै सम्यक्त सुभाव । परगा तम देखनि इहि भाव । सुनि नरेंद्र मानि हर्ष अपार । मुनि पद नमि घर आइ बिचारि । प्रथम कियौ श्री जिनवर

थांम ॥ बिंब भराय खरचि कैं दांम ॥ संघ बुलाय प्रतिष्टा करी। अपने हिए भक्ति अति धरी। नीद देखि सब संघ समेत। चल्यौ भूप जात्रा के हेत ॥ सिखर सीस मेत्रा धर कूट। करि पूजा अनभो म्म लूट ॥ आइ सुरा सुर नर खग जहां। थांन थांन पूजे जिन तहां ॥ गिरि परि ध्यांन धरैं मुनिराज थान थ न ठाढे हित काज। देखि सोमधर गिरि रमनीक। जान्यौ सिवपुर की इह लीक ॥ समकित भाव प्रबल तब भए। चारित मोह कर्म नसि गए ॥ उपज्यौ प्रसम हिए नरराज ॥ करन विचार्यौ आतम काज। जेठे तनुज राज पद दियौ ॥ आपुन पंच महा व्रत लियौ ॥ त्रिविधि महा तप तपियौ राज। केवल ज्ञांन भान उपजाइ। कूट ज्ञांन धर सीस महांन। लियौ सोमधर मुनि शिव थांन॥ और अनेक महा मुनि ईस। लए मुक्ति धिपनां धर सीस।

## * आडिल *

सो शिवदायक सिखर प्रधान वखांनियौ। ऐसा क्षत्र पुनीति और नहिं जानियौ ॥ जो नर भाव समेत सुगिर बंदन करैं। नर सुर पद सुख भोग मुक्ति रमनी वरैं।

## * दोहा *

सिखर क्षेत्र महिमां अतुल ॥ लोहाचार्य वरन ॥ भाषा निज गुन लखि रची। मन सुख सागर सग्न

इति श्री काष्टा संगे लोहाचार्य बिरचते तीर्थ माहात्म्येषु समेदाचल भाषा यामन सुखसागरेण वर्णनं सिद्धकूट ज्ञान धरा परकूंथ जिनमोक्षगमन नाम अष्टादसमेः परिछेद १८

## * सवैया *

नृत्य नाम कूटसीसौ भए हैं मुकति इस हस्तनागपुर अवतार तिन लियौ हैं। जनक सुदर्शन हैं मित्र सैना जननि हैं स्वर्न सम तन मीन चिन्ह कहि दियौ है। तीन चाप ऊंचीकाय चौरासी वरस आप जाइ बन तप करि ज्ञांन अमि पीयौ हैं॥ ऐसे अरह नाथजी कौं नमि मन सुख सिंधु जिन

गुन गाय सुभ संचैं बहु कीयौ हैं ।

* दोहा *

याउ यल्य बीते तहां गए कुंश सिव थान । आइ सची पाति अर्हजिन। कियौ जन्म कल्यान। अरह जिनेसुर चरन जुग। बंदौं मनवचकाय। गर्भ जन्म तपज्ञान सिव ॥ बरनौं हिय हरषाय।

*चौपाई*

जंबूदीप-जगत बिख्यात । तहं पूरब बिदेह सिवदात । सीता अपगाउतर कूल । कक्षदेस सोहै सुखमूल । क्षेमपुरी नगरीहैं तहां । धनपति राज करैं नृप तहां । धनरेखा रानी जुतराइ । भोगै भोग सजन सुखदाइ । नगर नारि नरसुखमैं रहैं । मन बंछित सब जन धनलहैं । प्रजा पाल उठि देइ असीस । राज करो राजी अव नीस ॥ बनआनंद नगर तटलसैं । बंदन बन छबि लखि मन हसैं । अरह नंद जिन के बलधारि । समोसरन आयौ सुखकार । सुनि धनपति मनहर्षित होइ । करि परोक्ष बंदन दिसि जोय । लै परिवार चल्यौ नरनाथ । दर्बि लिए बसु पूरजन साथ । जाइ प्रनामि पूजायुतिकरी । अपने हिए भगति अति धरी । नरकोठे बैठेनरनाह । दुबिध धर्म सुनिबे कीचाह । ग्रहआचार प्रथम सुनि लियौ । मुनि बृष सुनत प्रसम उपजियौ । राज दीयौ सुत कौं तिहि थांन । लियौ चरित्र प्रनामि भगवान । धनपति मुनिपातिपदवी धारि । सही परीस्या तपकरि सार। बांनी ग्यारहअंग अधीत । त्रसथावर जिय सौं अति प्रीति । सोरह कारन ब्रत धरिजबैं । तीर्थंकर पदबांध्यौतबैं । अन्त समैं धरि कैसंन्यास। सर्बार्थ सिध कीनौं वास ॥ पद अहमिंद्र लह्यौ तहं जाइ ॥ तेतिस जलधि आयु सुखदाइ । पूरब सम बरनन और । जांनि लेहु बुधि जन बुध गौर। सात तत्व चरचा दिन रैन ॥ करत आयु बीती सुख दैन ॥ रही सेष षट मास प्रमांन ॥ बसु बिधि पूजा रचि भगवांन ॥

* दोहा *

सुनि मगधेस नरेस अब ॥ बरनौं जिन अवतार॥ अरह नाथ जिन गुनकथन। सिवलक्ष्मी दातार ॥

*** चौपाई ***

जंबूदीप लसैं अभिराम ॥ भरत क्षेत्र मैं आरिज नाम। खंडतहां कुरजंगल देस। महिमा कहिनसकै अमरेस। नागपुरी नगरी तहंबसैं ॥ घरघर धनधान्यादि लसैं ॥ सोमबंस मैं सबगुन लीन॥ राइसुदर्शन अति लवलीन ॥ नारि मंत्र सेना सुखदाइ। जिनके उरनिज उपजे आइ ॥ करै राज सुख संपति भोग॥ रहै अनंदित पुरके लोग

*** दोहा ***

भव्य जन्म जिनशहरि जांनि पठाइ धनेस। रचि पुरआगम मान मित थुति थुति करैं नरेस ॥ तीन समैं षटमासलौं। करैं रत्न की बृष्ट। आति अद्भुत रचनारची। और न यासम सृष्ट ॥

*** चौपाई ***

इकदिन सौंध सिषरि नृपनारि। उठि प्रभात त्रित ह्वै अहलाद ॥ जाय सुपनपति सौं बरनए। फल बिचारि आनंदित भए ॥ फागुण सुदी तीज हरिआइ। गर्भ कल्यांनक करि गुनगाय। सेवाकरनि राखि सुरसता। षट पंचास प्रमिति गुन जुता ॥ आपुन गयौ इन्द्र सुरलोक। त्रिभवन जिनमिंद्र दै धोक ॥ सब निजजोग कुमारी देव। करैं भक्ति जिन माता सेव ॥ सरस कथा दोहा चौपाई। काव्य पहेली कहत सा भई ॥ क्रिया करम करता करनाय। बनैं स्वर व्यंजन बहु लोय ॥ कहत श्लोक निरोष्ट बिचार। अन्तर बर्हिलापकासार। गीत नृत्य बीते नवमास ॥ जिन जनमें जगपूरन आस। अगहन सुदि चौदसि दिन जांनि ॥ आइ इन्द्र करि जन्म कल्यांन। अरह जिनेस जगत जयवंत ॥ सुर गिर से आए पुर अन्त। थापि जिनेस जननि के अंक॥ तांडव नृत्य करैं अति वंक। बालक सुर सेवन तजि तहां। गयो इन्द्र अपनें पुर तहां। सुरसिसुजिन सिसु सेवा करैं। क्रीड़ा करि सब जनमन हरैं ॥ जंबू नन्द सम देह दियन्त। बरनत चिन्ह लहौं नां हंत। दक्षन चरन मीन मनहार॥ उर्द्ध रेख पगतली

निहार । पदम चक्र असि चाप मनोग । कलस दाम तोरन हय जोग । गज स्वस्तिक अंकुस मन बिंध । चमर छत्र रेषा अनूसंध ॥ इनि आदिक लक्षन तन लसैं । एकहजार आठ दुख नसैं ॥ सहस वर्ष चौरासी आयु । तीन चाप उन्नत हैं काय ॥ निरखि देह दुति अद्भुत भूप । कोट कांमही मंत सरूप ॥ इक्कीस सहस बर्ष परजन्त । बालकेलि कीनौ भगवंत ॥ सक्र भूप मिलि कियो विवाह । सुरपति पद कौ लीनौ लाह । सहस बर्ष ब्यालीस प्रमांन । राज कियो अबिचल भगवांन । नीत बिनत प्रजा पति पाल । ईति भीतिपुरजन सब टाल । रत्न चतुर्दस नौ निधिसार । अर्हनाथ चक्र पदधार पाइ अनौ वृत धारी धीर । तीन ज्ञांन जुत गुन गंभीर । इक दिन सभामध्य थिति जबैं । स्यांम घना घन देखे जबैं । छिन मैं बिनसे लखि जिन राइ । अथिर जगत जांन्यौ दुपदाइ । अति वैराग हिए मैं भयौ । द्वादसांनु प्रेक्षा चित दियौ । लौकांतिक निर्जरतब आय । अस्तुति करि वैराग दिढाय । गए देवलौकांतिक जबैं । इन्द्र पालकी ल्याए तबैं । भक्ति सहित बैठाय जिनंद । गए महावन करत अनन्द । भए दिगंबर परिग्रह त्यागि । निज चिद्रूप ध्यांन तब लागि । नृपति हजार जात पद धार ॥ करि नमोस्तु तप लीनौ सार । अरहनाथ सब परिग्रह टाल । मन पर्यै उपज्यौ तत्काल । अगहन सुदि दसमी सुख दाय । भए भूप जिनवर मुनि राय ॥ तप कल्यानक मघवा कियौ । सुर नर खग पसु हर्षित हियौ । निज निज थान गए सब जीव । द्वै दिन मौनि ध्यांन धरि देव । चले असन कारन तब एव । पाठ अढाई सुद्ध निहार । धरैं चरन चितदया सुधारि ॥ गजपुर जाय राज पद देखि । ऐरा नृप जिन आवत पेखि । ह्वै सनमुख करजोरि नरेस । अस्तुति करि नमि भूप जिनेस । आगैं ह्वै मंदिर ले गयौ ॥ तिष्ट तिष्ट कहि आसन दियौ । प्रासुक धेनु खीर अहार । नौधा भक्ति सहित दै सार ।

करि भोजन सुख अखै निधांन। तिंहि औसर बोले भगवांन। आइ अमर जे जै उच्चरैं। पंचाचर्य भूप ग्रह करैं॥

*** चाल छंद ***

फुनि आए श्री जिन बन मैं॥ आतम अवलोकि निम नमैं॥ लखि निर्जन प्रासुक थांन। धरि ध्यान खड़े भगवान॥ सुद्धातम गुन सुधि धारैं॥ पूरब कृत फंद उचारैं। निश्चै नय लोक प्रमाणैं बिवहार देह मम जानैं। निश्चय जग जीव अबंध। बिवहार पर्यौ जिम धंध। निश्चय गुन तीत्र अनंत। बिवहार उदै आवंत। जिय धरैं चतुष्टय च्यार। सुद्ध प्रांन च्यारि प्रकार। इनकौं नहि धारैं जीव॥ दुख सहैं निगोद अतीव। जग जौनि चौरासी लख। बहु कष्ट सहे विधि साख॥ निज गुन धारैं जीय वही। बसु कर्म नसैंगे तबही। इह विधि जिन मनहि बिचार। तप कीनौं सिवदातार। बसु दुगुन बरस छदमस्थ॥ कर कर्म घातिया अस्थ।

*** दोहा ***

कातिग सुदि एकादसी। उपज्यौ केवल ग्यांन। हरि आयसलै धनंद॥ तब समोसरन रचिअंद। पूरब सम सब जांनिए। कोट पीठ बन तूप। बीथी गो पुर नृत घर। सोभावनी अनूप। कुंभ सैनि आदिक तहं गनधर तीस लसंत। च्यारि ग्यांन जुत जिनसु। धुनि वर्नन भेद करंत। देवी देव अनंत जहं। करैं नृत्य गुन गांन। नर नारी पूजा करैं। अंतरीक्ष भगवांन। तीन काल बानी खिरैं। सब जन संसै हरन। मन सुख सागर नमहि तब। अरहनाथ जिन चरन। देस विदेस बिहार करि। बृष उपदेस करंत। आयु रही इक मास जब। सिखर गए भगवंत।

***चौपाई ***

नाटिक कूट सीस जिन राइ। जोगरोध धरि ध्यान सुभाइ। चैत कृश्न दिन अंत मैं जांनि। भए सिद्ध अबिचल भगवांन। आए सुरासुर सक्र नरेस। लै पूजो याहार सुभ भेस। क्रया हुतासनकरि

रजबंदि। निज निज मंदिर गए अनंदि। सोनाटिक बरकूट प्रसिद्ध। वंदन करैंत लहै सिवरिद्ध। नरक पसुगति नासन करैं। श्रीजिन सासन इमउच्चरैं। गएमुकति मुनिवर तिहिथांन। तिनकी संख्या करौं बखानि। निन्यानवैं हजार सुजान। नौसैनि वैं इहपरमान। इतनै की मैं संख्या लही। नाटिक कूटमुक्ति मगसही * दोहा *

नृत्यकूट जात्रा करी। सुप्रभा नाम नरेस। तासुकथा मगवेस सुनि। भव्यंलहैं उपदेश॥ * चौपाई *

सकल देश सबमैं परधान। नगर भद्रपुर तामैं जानि। भूप अनंद सैनि हैंजहां। सुखी प्रजासब दीसै तहां। विजया पटरानी जुतभूप।। राजभोग सुखकरैं अनूप। तिनकैंसुप्रभ सुतइकभयौ। नृपति राज पदताकौं दयौ। आपजाइ बन दिक्षालेइ। आवागमन जलांजुलिदेइ। सुप्रभ राजकरैं सुखदाइ। प्रजाधर्मारग चलिजाइ। एकसमैं निजसभामझारि। जिति है धर्म्मकथाबिस्तार। तिहि अवसरबनरक्षक आय। वेणपात्र भरि पंकज ल्याय। निजकर एक सुमन नृपालियौ। फेरत म्रतक भ्रमर पेषियौ। भयौ हिए बैराग्यअपार। राजा मनमैं करै बिचार। ताही समैं एकमुनि राज। आए तहं असन केकाज। नौधाभक्ति करी तवराइ। प्राशुक भोजन देमुनिराइ। फुनि श्रुतिकरि थुति कीनीभूप। पूछैं धर्म्मा धर्म्मसरूप। मुनि बोलेसुनि क्षिति पतवैन। जिन भाषित बृष है जग ऐंन। पूजा दान दया वृतबर्नं। सीलसुतप ए सब अघहर्नं। कल्याणक जिनवर जिहथांन। जात्रा करत होइकल्यान। सिखर महातम बर्नं मुनीस। सुनि नरेस मुनिनायौ सीस। धर्‍यौ ध्यान सुनि बनमैं जाय। चल्यौ सिखर भूपति हरषाय। च्यारि प्रकार संघलै साथि। पूजा दांन करत नरनाथ। जहां जाय नामि नाटक कूट। सबगिर वंदित पातिगछूट। तप कारन सुतकौंदेराज। लीनौं वृत निज आतम काज। अचिरकाल मैं त्यागे प्राण॥ लहे स्वर्ग सोलह विमान * दोहा *

सोपुनि जंबूदीप मैं भरतक्षेत्र ऋजु खंड। सुरम्य देश पोदनपुरी। नृप श्रीखंड प्रचंड। तिनके सुत है

सुगन जुत सुकंभव नाम प्रसिद्ध । जात्रा सिखर सुमेरकर । लहै मुकतिपद रिद्धि । नाटिक कूट प्रसिद्धसो जो बंदैं मगधेस ॥ नरपसुगाति नासकारि नरगाति लहै सुरेस । धन्य भाग वे मनुजहैं । बंदैंसिखर सुमेर । मनुष धारि भवसिव वैरैं ॥ जन्म धरै नहि फेर ॥ कोटिछ्यानवैं प्रोषधी । वरत कियौ फल होय ॥ सोई नाटिक कूटकौं बंदनकौ फलजोय ॥ ऐसे सिखर समेद गिर ॥ महिमा कहिनजाइ लोहाचार्य कृतनिरखि ॥ भाषा सुगम बनाय ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहातमेखुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामव सुद्ध सागरेण वरणनं नाटिककूट परअरहनाथ जिनमोक्षगमन एकोनविंस परिछेद ॥ १९ ॥

### * सवैया *

जाके पद पूजत सुरेस सतभावसेती कुंभराय जनक सुरेखा देव माइहैं ॥ कलस चरन चिन्ह हेम के वरन तनधनुष सची सुप्रभ उन्नत सुकाइहैं ॥ मिथुला जनम आइ साढ़े दसआयु हैसंवल सुकूट सीस सुकाति सुभाइहैं ॥ ऐसे मल्लिनाथ सुबिधि मल्ल मल्लडारै मनसुख सागर नमित तसु पाइहैं

### * दोहा *

वर्ष किरोरहजार जब बीते अरह जिनंद । मल्लिनाथ जिनजन्म लै ॥ कीनौ त्रिजग अनंद ॥ तिनके चरनांबुज सुनामि ॥ सारद सुमरि सुभाइ । गर्भ जन्म तपज्ञानासिव । वरनैं हिए हरषाय ॥

### * चौपाई *

बलयाकृत यह जंबूनांम । दीपनमध्य दयसुभधांम । अचल सुमेर अचल हैं जहां ॥ श्रीजिन नन्ह होतहैं तहां । प्राचिनाम बिदेह प्रसिद्ध । धनधान्यादि लसैं बहुरिद्ध ॥ देस वतसकावती महंत ॥ उपमां कहत न पाउ अंत ॥ बीतसोक पुरसोहैंपुरी । नागर हैंमानो सुरह पुरी । आति उतंग राजैं जिनधाम ॥ रतन मई प्रतिमां

अभिराम । समोसरन बिहरै सर्बदा । बानीखिरैं जथारथ तदा । बर्तैं काल चतुर्थमसार । ह्वै मुनिभवदधिउतरैपार ।

*** दोहा ***

महिमा सोपुरदेसकी । बरन कोविधि सार । पंथवृधि भयधारमन । नाहि कियो बिस्तार *** चौपाई ***

वै श्रवन नांमां तहं भूप । लखन जुतरतिपति समरूप । महा प्रतापी सुगुन अनेंक । न्यायवंत हिएधार बिवेक । तीन काल अरचैं अरहंत । प्रसम सहित पुर राज करंत । इक दिन श्री मुनि अटवी आय । मुनि भूपति चाल्यौ हरषाय । नगर बाह्यवट बिटप जुएक । तापरि पंछी वसैं अनेक । छाया सघन वड़े बिस्तार । अति सीतल परमलगुन धार । राइ सराहन करिकैं जाहां । फुनि आगैं चाल्यौ मुनि तहां । बिद्युत पात भयौ बट सीस । भस्म भयौ छिन मैं नग ईस । राइ जाय मुनि सीस नवाय । दुविधि धर्म सुनियौ चितलाय । च्यारयौ गति चौरासी लाख । जोनि निभेद भिन्न मुनि भाख । लौका लौक द्रव्य षट वर्नें । कहे तत्व जिय संसै हर्नें नमस्कार । करि उठ्यौ नरिंद । धर्म्म बृद्धि तब दई सुनिंद । आवत मध्य मध्य लखि भूप ॥ दामिनि दग्धित बृक्ष अनूप । छिन भंगुर जांन्यौ संसार । दुख दाई कहि जग निरधार । जात समै देख्यौ वट बृक्ष । आवत नास लख्यौ प्रतक्ष । द्वादसांन प्रेक्षा चित लाइ । पुष्पित भयौ प्रसम नगराइ ॥ अग्रज तनुज राज पद दियौ ॥ आपसु ग्रंथ रहित पद लियौ । निर्जन गहन जाइ कैं जवैं ॥ रत्न त्रय ब्रत धरे तबैं ॥ तप करि अति उठ्यो ग्रमहंत । ध्यान अग्नि बसु कर्म्म दहंत ॥ द्वादसांग ग्यांनी हिय ज्ञान । तप बल कियौ अचल निज ध्यांन । फुनि सोडस कारन धर अंत । गोत तीर्थंकर बंद करंत । ब्रत सन्यास लेयतन त्यागि । निज अनुभूत कियौ अनुराग । बास कियौ सरबार्थ सिद्धि । देव मर्द्धिक पाइ रिद्धि

*दोहा*

त्रय त्रिंसत सागर तहां। उत्कृष्टी हैं आयु। तेतीस सहस बरस गए। लेह आहार सुभाव॥ सादे सोरह मास जब। बीते सास उसास॥ आवत इहि स्वय मेव थिति। दिस दिस होत सुभास *अडिल*

देव खडे करजोरि सुसेवा करतहैं। देवीं गावैं गीत नृत्य अचारत हैं॥ रहै सुथिर हरि पीव मूल देही तहां रमैं बिक्रिया धर होत निज मन जहां।

*दोहा*

इह बिधि तेतीस जलधिकी। आयु सुपूरन कीन॥ सेष रही षट मास जब। माल भई छावि छीन॥ आंभा रहित सरीर लखि। जान्यौ अपनौं मर्न॥ चैत्याले मै जायकैं। अरचे श्री जिन चरन॥

*चाल छंद*

अब आगैं सुनि मगधेस। सोचर उपजैं जिस देस। उनीसम जिन पद धार॥ भावि जीव उतारैं पार। इह जंबूदीप बिराजैं। नाभी सम सुर गिरि राजैं। ताके दक्षिन दिसि सोहैं। इक भरत क्षेत्र मन मोहैं। तामैं हैं आरिज खंड। बरतै जहां धर्म अखंड। तहां बंक देस सुख दाई। उपमां नाहि बरनी जाई॥ उपमां बन सोभा एक। बापी सर कूप अनेक। मिथुलापुर नगर महंत। कलसा पति कुंभ कहंत॥ रानीं जुसुरेखा नांम। जुत सील सुलक्षण धांम। दंपति मिलि भोगैं भोग। पालैं सुर पूजा सुनि रोग॥

*दोहा*

इक दिन नाक सुधर्म्म पति। अवाधि ज्ञांन सो जांनि। मिथलापुर उनीसमौं। जनमैं जिन सुखधांम॥ आयुस दयो धनेस। तव नगर रचना के हेत। पंचाचर्य करौं अबैं। श्री जिन जनक निकेत॥

* अडिल *

आयौ तुरत कुबेर। रच्यौ जिन पुर तहां ॥ उन्नत कीयौ आवास । कुंभ भूपति जहां । बरषैं उत्तम रत्न
सुमन जलकन झरैं। बाजैं दुंदभि मंद मरुत जन हित करैं। * दोहा *
इह विधि बीते मास षट उत्सव जुत सर्व । निरखत मंगल गेह छबि । जाय सची पति सर्व ॥

* अडिल *

इह दिन मंदिर सीस सुरेखा सैन मैं सोडस सुपन निहार पाछिली रैनिमैं ॥ चय सर्वार्थ सिद्धि थकी
सो आइकैं। करि गर्भ थिति प्रात उठि हरषाइ कैं। * दोहा *
मंजन करि शृंगार जुत । गए नाथ के पासि । कहे सुभफल सुनि तहां । दंपति भए हुलास ।

* चौपाई *

चैत शुक्ल परिमां सुभवार। कीनौ गर्भ कल्यांणक सार। सेवन आज्ञा दै सुर सुरी। सक्र गयौ फुनि
अपनी पुरी। मिथुलापुर घर घर सानंद। मंगल गीत जौ होत सुछंद ॥ देवी सेवै श्री जिन मात ॥
करैं मनोगत हिए हरषात। इह बिधि गर्भ दिवस दस भए। अंक मास दस आहिनिसु भए॥ जन्म लियौ
श्री त्रिभुवन नाथ। भव दधि भव्य उतारन हाथ। * अडिल *
कल्प बासि घर घंटा अनाहद बाजियौ। जोतिष घर हरनाद सहज गलगाजियौ। संख सष्ट अनिवार
भवन सुर गेहमैं ॥ पटहाव्यंतर गेह बजैं अति नेह मैं। * दोहा *
निज निज चिन्ह सुभाव सौं। जान्यौं जन्म जिनंद। करि बंदन सौ धर्म्म पति। पायौ हिए अनंद।
ऐरापति असवार है। संघ साहित परिवार। मिथुलापुर के गगन मैं। जै जै करत अपार। हरि आयुस

ले कैं सची । जन्म गेह मैं जाय । माता माया नींद रचि । अंक लिए जिन राय । *सवैया*

सहस खयेंदु मांन जोजन सुनाग राज सतहैं बदन आति तन छबि सितहैं । बदन बदन बसु रदन रदन प्रति सर सर प्रति काजीसर रंभ्र मितहैं । कमलनी प्रतिवांन भुजै मातु पुंडरीक बसु सत दलसुभ सोभा छबि अतिहैं । दल दल प्रति नटी नटत समाज जुत सताईस कोट इम अपछरा बिदितहैं ।

## * चौपाई *

जै जै नन्द बृद्धि जिनदेव । चतुर निकाय करैं मिलि सेव ॥ सुर गिरिपैं यां इकवन जहां । जाय न्हहन की बिधिवत तहां ॥ करम मल्ल मलि डारन हार । मल्लि नांथ संज्ञा उच्चरैं ॥ फुनि आयेपुर उत्सव कियौ ॥ श्री जिन मात गोद तव दियौ । निज सिसु तट बहुसुर सिसुथाय ॥ गयौ जिनालय सुरपति आय । कुंभराइ जिन सुत उत्साह । करि जाचिक जन पूरन चाह । पंचोनर पंचास हजार ॥ परी आयु थिति जन मनहार । देह हेम दुति धनुष पचास ॥ उन्नत काय लसैं जिन ईस ॥ बालपन सतबर्ष प्रमांन । धार अनुब्रत रहे सुजांन ॥ इकदिन उल्कापात बिलोक । सकल चराचर जांन्यौ लोक ॥ द्वादसान प्रेक्ष्यां चित लाय ॥ लौकांतिक सुर पहुंचे आय । अस्तुति करि निज मंदिर गए ॥ इन्द्र पालकी ल्यावत भए । प्रभु चढ़ाय गए बन जहां ॥ अति उन्नत चंपक तरु तहां । बस्त्रा भरन तजे तिहिवार ॥ नमः सिद्धेभ्यः मुख उच्चार । पंच मुष्टिक चलौंचन कियौ ॥ निज आतम आतम चितु दियौ । सहस राइ नमि श्री जिन चर्न । लीनौं पंच महाव्रत सरन ॥

## * दोहा *

मघवा तप कल्यांन कर गयौ आपनैं धांम । अगहन सुक्क एकादसी ॥ मल्लिनांथ जिन नांम । मन पर्यै उपज्यौ तहां जब बेलाव्रत धारि । नंद सैन नृप सोध फुनि । लीनौं जाय आहार ॥ चौपाई

अर्थ निद्धि जिन मुख उच्चरैं। पंचाचार्य देव तब करैं। नौसैंचौवन सहस जु बर्ष। जाय विपन कीनौं तप हर्ष। ताही मैं षट्वर्ष प्रमांन। रहि छदमस्थ भयौ तव ज्ञांन। समोसरन रचि हर्ष कुवेर। श्री मंडप सब सोभा हेर। गनधर अठाईस महंत। च्यारि ग्यांन धारी बुद्धिवंत ॥ पूरब सम सब और विभेद। जानहु सास्त्र देखि बिन खेद ॥ कियौ बिहार देसपूति देस। दीनौं दयाधर्म्म उपदेश। रही आयु जुग पक्ष प्रमांन। सिषर सीस आए भगवांन। पुन्य पाप प्रकृति समभई। समो सरन सोभा सब गई ॥ जोग निरोध रहे जिन राइ। निज निर्मल चेतन लौलाइ। फागुण कृष्ण द्वादशी सार। लहि सिवथांन अष्ट गुणधार। इन्द्र कियौ कल्यांणक आइ। संवल कूट सीस सुखदाइ ॥ जिन निर्वाण प्रासु हगवाय। करि पूजा अस्तुति गुनगाय। नर सुर पसु खग असुर महंत। निज निज आलय गमन करंत ॥ * दोहा *

धनि घरी वह अहन की। धन्य महूरत जांनि। निसिदिन संवल कूट पैं। इन्द्र कियौ कल्यांन। सिषरमहातम प्रचुर अति। बरन्यौं श्री जिन ग्रन्थ। जांनहू संवल कूटपल। संवल है सिवपन्थ अडिल

अब आगैं सुनि राय कथा इकराइकी। जात्रा संवल कूट जथावत भायकी। तदभव सिवपद पाइ अष्ट विधि जारिकैं। किनौ हैं तप स्वरुप निजातम धारिकैं ॥ * दोहा *

जंबूदीप प्रसिद्ध इह भरतक्षेत्र अभिरांम। जोध देस श्रीपुर नगर। इन्द्रपुरी समधाम ॥ चौपाई

बंकदम नांमां अवनीस। भूप अनल्यनवावैं सीस। बिजय पटरानी जुतराय। भोगैभोग अैष सुखदाइ। तिन कैं तनुज भयौ बलिवंत। गुन लक्षन कहि लहौं न अंत। सतसेन संज्ञा बुधिधार। जौबनवंत भयौ अविकार। कारन मातपिता तपलियौ। सतसेनिकौं नृपपददियौ। राज बिभूति पाइ सुखदाइ। इंद्री जनित सुभोग कराइ। पौंल प्रजाप्रजा समभूप। न्याय नीति चितधारि अनूप ॥ इकदिन सत्य सोनि गुनरास ॥ पूजन हेत गयौ

कैलास ॥ तहां सुलोचन श्री मुनिएक ॥ लखि प्रनाम करि धरि सुविवेक ॥ थिर ह्वै विधि धर्म सुनि राइ। निर्धन धन लहि इमहरषाय। फुनि मुनि सिखर महातम कह्यौ। सुनत भूप दर्शन वृतगह्यो॥ आइ गेह लैं संघमहंत। जात्राकरन को चल्यौ तुरंत॥ क्रमक्रमसौं मधुवन में गए। देखि सिखर आनंदित भए। लै पूजो पहार मनहर्न गएकूट परपूजा करन। आत्रिचरन गुनगाय अनंत। त्रिभैंभक्ति हिएधारि सुछन्द। ह्वै वैरागलीयौ तपसार। तेरहविधि च रित्रउरधार। संवलकूट सीस सिवगये। सिद्धि गुनज्ञांन रंजन भये। ऐसो कूट नमें जो कोइ। सोई सिवनारि पतिहोइ। निन्याणवैं कोटमुनिराय। वही कूटपरि सिवपदपाइ। कोटि छयानवैं व्रतफल होइ। एकबार वंदै जोकोइ॥ नर्क पसुगाति नास करंत। जात्रा करें भावधरि संत। नर्क पसुगाति नैंलहि सिवपदलेइ। जन्म मरन जनांजुल देइ॥

* दोहा *

इहविधि लोहाचार्यगुर। वरन्यौ सिखर महात्म। मनसुखधि भाषारची कीनौं सुचि निज आतम॥

इति श्री काष्टा संगे लोहाचार्य विरचतेतीर्थमहातम्येसुसमेदाचल महातम भाषायामन सुद्धसागरेण वर्णनं नाम संवल कूट वर्ननं मल्लिनाथ मोक्ष गमनं वर्णनं परिच्छेद ॥ २० ॥

* सवैया *

सुब्रतधर निहारसुमित्र जनकसार नगर कुसाग्र नाम सबसुखदाईहै। मात पदमावतीहैं हेमके वरनतन कक्षप सुलखन सुचरन सुभाईहैं। त्रिसत हजार जो वर्ष आयु भाषियतु उन्नत धनुषवीस अति सुभकायहैं। ऐसे व्रतसुकूट निर्जर सिव मनसुद्ध सागर नमत जिनपाइहैं॥

* दोहा *

चौवनलाख वर्षगए। अन्तर मल्लि जिनेस। मानि सुव्रत जिन जनमियो॥ हरषे त्रिजग अशेष॥ नमि मुनिसौ व्रत चरन जुग॥ सारद सीसनवाय वरनौं पंच कल्यान अब श्री गुर भये सहाय॥

## * चौपाई *

सबदीपानि मैं नाभिसमान ॥ जंबूनाम सुदीप बखान । भरत क्षेत्र सेवै सुरसुरी अंगदेस चंपावतपुरी ॥ सुरसरिता जुतलसैं नरनारी सब सुंदरबसैं ॥ धनधान्यादिक रिद्ध बहुलसैं ॥ बनउपबन बापी सरकूप ॥ राजकरैं चंपापुर अनूप ॥ हरि बर्मा राजा बालिवन्त । न्याय निपुन गुनवंत अनंत ॥ महाप्रतापी सीलसुभाव । कारन एकभयौ पुनि राव । पाविसेना पटनारि समेत ॥ भोग करैं इंद्री सुखहेत ॥ पालैं प्रजा तनुज समसवैं ॥ भ्रमैं तबैं । पुरतट बनआए मुनि तहां ॥ षटऋतु पुष्पफलोत्कर जहां ॥ बनपालिक लखि अचिरजएह ॥ चल्यौ नगर कौं मुनि विपन मैं करसंदेह । अटत अटत देखे मुनि राज ॥ अनंत बीर्य गुन धर्म्म जिहाज । सुनि मुनि सिरटेक ॥ लै षटऋतु फलफूल अनेक । भेटधरी भूपति के अग्र ॥ दै आसीस बचचवै समग्र ॥ करि आगम राइ अनंद ॥ बस्त्राभूषण दिए सुछंद ॥ करि परोष बंदननृप जबैं ॥ आनंद भेरि दिवाई तबैं । सुभेष नृप पुरजन सर्व । लेचाले पूजन वसु द्रव्य । भूपादिक सब जाइ नमंत । अस्तुति करैं हिए हरषंतै । थिति है दुबिधि धर्म्म सुनि भूप । सागरी अनगार अनूप । मन बैराग भयौ नर राउ । दिक्ष्या लेन चल्यौ हिय चाउ ॥ अग्र सुतकौं दीनौं राज । लीनौं ब्रत नृप आतम काज । दुबिधि ग्रंथ तजि भजि अरहंत । षोडस कारन हिए धरंत । जीवा जीव दर्व षट भेद । निर्नै करि निज साता वेद । द्वादस रूप अग्र तप तप्यौ । पूरब कृत दुःकृत सबखप्यौ । तीर्थंकर तब बांध्यौ गोत । तहां पंच कल्यानक होत ॥ अंत समैं धरिकैं सन्यांस । प्राणतनाकजु कीजौ बास ॥ जलध बीस थिति पदवी इंद्र । अरचैं तीन काल जिनेंद्र ॥ सात तत्व की चरचा करैं । निर्विकल्प निज गुन उचरैं ॥ जहं जहं पंच कल्याणक होइ । करैं प्रतक्ष बंदना सोइ ॥ बीस हजार बर्ष बीतंत । मानसीक तब असन करंत ॥ गए मास दस

सासउसास । लेत् दसौं दिसि होइ सुबास । इह विधिसौं बीती सब आयु । रही शेप षट मास सुभाव । मणि माला मुर्छित जब भई । रतन अभूषन तन दुति गई ॥ मनहि विचारि जोइ जिन धांम ॥ करि जिन पद अष्टांग प्रनांम । पूजा रची दर्व वसु ल्याय । अस्तुति करैंसु निज गुन गाए ।

*** दोहा ***

तदनंतर सुनि मगध पति । इक मन ह्वै अमलांन । सौ चरचइ जिन पद लहै । वह वरनौं सुभथांन ।

*** चाल छंद ***

इह जंबू दीप मझार । तहां भरत क्षेत्रहैं सार ॥ गंगा सिंधु अचालै ॥ हैं आरिज खंड विसालै । तामैं सुभ मागध देस । सरब बन उपवन जुअसेस । कदली सहकार अनेक ॥ श्री फल बन सोभा एक ॥ उन्नत द्रुम खारिका राजैं ॥ जाती फल बृक्ष विराजैं । पूंगी फल लगेहैं अनंत । बरनत मैं लहौं नांअंत । ता बन श्री मुनिवर आवैं । जिन भाषित धर्म्म चलावैं ॥ तहां बसैं जुउत्तम ग्रांम । छात्रवत कुसाग्रसु नांम ॥ उन्नत सुभ सोभ महंत । गिरि फटिक शृंग सम संत ॥ पुर मध्य जिनालय सोहैं । सबसौं ऊंचे मनमोहैं ॥ तहां आय भव्य जिन अरचैं । गुन गाय करै सिव परचैं ॥ सुर देवी सम नर नारि । पुर सुर पुर सोभ अपार ॥ राजा सुमित्र तहं राजैं । दुति देखि सची पति लाजैं ॥ भुजदंड प्रताप अखंड ॥ अरि जीत अधिक प्रचंड । नृत नीति प्रजा सब पालैं । ठगजार चौर सबटालैं ॥ पदमावति नारि समेतं । सुख भोग करैं बहु हेतं ॥

*** दोहा ***

एकह दिनि सो धर्म पति । सुमिरन जिन कल्यांण ॥ पद्मावती सुमित्र घर । जन्म लख्यौ भगवांन । आग्या दई धनेस कौं । जाइ रच्यौ पुर सार ॥ पंचा चार्य करो तहां । होइ सुखी नर नारि ॥

*** अडिल ***

आयौ तवहि कुबेर सक्ति निज धारिकैं। नौ बारह प्रमांन नगर बिस्तारकैं। पुर कुसाग्र नृप गेहरत्न बरषा करैं॥ बाजैं दुंदुभि सुमन अनिल जलकन झरैं॥ तीन काल मन हरन गान सुर करत हैं॥ घर घर उत्सव होइ सब जन मन हरतहैं। इह प्रकार षट मास गए अति चावसौं। अब जिन गर्भ कल्यांन सुनौ भवि भावसौं॥

*** दोहा ***

श्रवन दुतिया असित पक्ष। प्रांनत सो सुर आइ। पद्मावति उर थिति करी। तीन लोक सुखदाय।

*** सोरठा ***

एक समैं जिन मात। सैन करत निज महल मैं॥ सुप्न लखे अवदात। षोडस पछिंम जांमिनि॥

*** दोहा ***

सूर्य उदय उठि स्नांन करि। पहरि आभूषन चीर। सखी संग लै हर्ष धर। गई तुरत पति तीर॥ व्यक्त व्यक्त सुनि सुपन फल। कहै हर्ष नर नाह। तीन लोक पति होइ सुत। लेह मनुष भव लाह। कहैं परस्पर प्रीतिवच। दंपति सुख्य अपार। इंद्रआयु सुर सहित कर। गर्भ कल्याणक सार। छहौं कुलाचल बासनी। मघवा आयशपाइ। गर्भ सोधनाकरहिनित। सबैंनिज चितलाइ। छप्पन देवकुमार सब। निज निज काज समारि। सक्रगयौ निज थांन सब। हरषे सुर नरनारि। घरघर मंगल होइनिति। गीत नृत्य संगीत। कोइ कबहुन देखिए। बदन पीत भैभीत

*** चौपाई ***

इहबिधिसौं बीते नवमास। आनंद मैं बीते सुखरास। असित दसैं बैसाख निहारि। श्री मुनि सुब्रत जिन अवतार। द्विरद राज साजि आइसुरेस। दीनौं पुलौमजा आदेस। जिन प्रसूति मंदिर मैं जाइ। अंकलेइ प्रभु

जबतुम आइ। जाइ सची निंद्रा रचि अंब। थुति करि गोद लियौ अबिलंब। आइ सचीपति अंकैं देइ। पुलकित ह्वै मघवा प्रभु लेइ। तृप्त न होइ निहारि जिनेंद्र। सहश्राक्षत तबभयौ सुरेंद। दंती पति पैं थापि तुरंत। जय जय नंदि वृधि उचरंत। सुरगिरि जाय नन्ह बिधि करी। भक्ति सहित पूजा बिस्तरी। मुनि सुब्रत बृत धर्म धर्न। जाइ सची पति नामि पुनि चर्न। आइ नगर कीनौ उत्साह। नाक ईस पद लीनौ लाह। मात अंक दै नृत्य करंत। छिनक भूमि छिन नभि बिचरंत। बीन बासुरी बेन बजाइ। ताल मूर्ज मुहु चंग चढ़ाइ। जल तरंग मिरदंग सितार। सारंगी पटताल बिचार। सिलमदरा कानून जफीर। बाजैं खंजर अति गंभीर। इत्यादिक बाजैं अमलोंन। साढ़े द्वादस कोटि प्रमान। सुरसातौं सुरजुत गुनगाइ। साढे बाराह ताल बजाइ। बालक सुर सुरपति सुरथाइ। नामि जिन लोक गयौ पुनि आइ। पिता आदि पुरजन मिलि सबैं। पुत्रोंत्सव बहुकीनौं तबैं। बीस चाप उन्नत प्रभुकाय॥ तीस हजार वर्ष जिमराइ। हेमबरन सुरबाल समेत। बाल केलि कीनौं सुख हेत। सात हजार पंच सत बर्ष। बाल पन बीते जुतहर्ष। पुनि बिबाह कर राजकरंत॥ नीति सुपथ हिए धरंत॥ पंद्रह सहस बर्ष लगराज। कीनौं मुनि सुब्रत जिनराज। प्रसम मैं जब पहुंच्यौ आय। कारण एक भयौ सुनिराय। धन धानि गजप्रभु ह्वै असवार। चले चमूले करन बिहार। सो गजलखि पावस ऋतु जबैं। पूरब भव जिन जान्यौ तबैं॥ ह्वहौं नागदत पर जाइ॥ माघा उदै भयौ गजआइ। इह बिचारि जल असन तजंत। ह्वै बैराग भजैं अरहंत। एह बिवस्था दोखि गइंद॥ अवधि ज्ञान लखि कहै जिनंद। अरेमतंग जीव जग भ्रमैं॥ नरक देव पसु नरगति गमैं। क्रोध लोभ माया अरु मान। च्यारौं गति मैं होइ निदांन। चौरासी लखि जोनि भ्रमंत। काया धर दुख सहै अनंत॥ गज सो कहि पूरब परजाई। पंच अणु ब्रत दिए सुणाई॥ निज भूपति पद सुतकौ देइ। जीवा जीव बिचार

करेइ। बारह भावन भाव धरंत ॥ सुरलौकांतिग आइ नमंत। अस्तुति करत प्रसम अधिकाइ। गए ब्रह्मसुर अति हरषाइ। अपराजित सिवकातिह थांन। लाइ सक्र थापे भगवांन। जैजैकरि पालकी उठाइ गएमहाबनमंगल दाइ। बकुल बिटपि नीचें थिति धारि। नमः सिद्धेभ्यः मुखउच्चार। पंचमुष्टिक चलौंचन कियौ। सहस रायतनजिन व्रतलियौ। कृस्न दसै बैसाख सुजांनि। इंद्राकियौ जिन तपकल्यांण। मन पर्यै को भयौ प्रकास ॥ सूक्ष्मपुद गलानु सब मास। बेलाब्रत करि रव गिर आइ ॥ बिजयसेन घर असन कराइ। अखै निद्धि जिनवर सुखचर्यौ ॥ पंचाचर्य भूप घर भयौ। वर्ष जु साढ़मात हजार ॥ कीनौं तप आतम चित धार। फुनि बनजाय कियौ तप घौर ॥ बसु बिधि कर्म पटल सब तौर।

## * सोरठा *

भयौ जु केवल ग्यांन। मुनि सुब्रत जिनराजकौं। तीन लोक सुखदांन ॥ प्रसित नवमि वैसाखकी। समो सरन धर निंद ॥ रचि निज सक्ति समांन सब। राजैं तहां जिनन्द॥ कल्यांनक बिधि इन्द्रकर।

## * दोहा *

मल्लिसेनिहू आदिदे। अठदस गणधर सार ॥ ग्यारि ग्यांनधारी सबैं। बानी परखन हार ॥

## * चौपाई *

देश देश बिहरैं भगवांन। दुबिध धर्म्म को करैं बखांन ॥ त्रेपन क्रिया कहि सागार। तेरह बिधि चारित्र अनगार॥ पुद्गल जीवकाल आकास। धर्म्म अधर्म्म द्रव्य षट् भास। सात तत्व पंचास्तिकाय॥ नौ पदार्थ भाषे जिनराइ। गुनथांनक चौदहभाषंत चौदह मारग ना बरनन्त। उनईस जीव समास जु कहे। चौबीसौं दंडक जिय गहे। मुनि सुब्रत श्री जिनवर ईस। बिहरत गए सिपर गिरि सीस। कूट निर्जरा ऊपरि जाइ। जो गरोध कीनौं जिनराइ। आयु अन्त पहुंचे निर्वांण। आइ इन्द्र करि सिव

कल्यांन। सुरनर असुर तिर्यंच खगेस । वंदैं रज थुति करैं फनेस॥ महिमां निर्जर कूट विचार। निज निज थांन गए चितधार॥ सोवर कूटन मैं जो कोइ। सुरनर गति लहि सिवपतिहोइ। मन वचकाय भक्ति चित धरैं। नरक पसु दोन्यौं गति हरैं। आगैं और कथा सुनिराइ। निज जात्रा कीनी मनलाइ। कौसल नांम देस विख्यात॥ तहां अयोध्यापुर अवदात। रामचन्द नांमां अवनीस। आइ बहुत नृप नवावैं सीस। पटरानी सीता संयुक्त॥ भोगैं भोग निगमके युक्त। एक दिवस थिति सभा मझारि। धर्म कथा महिमां विस्तार॥ तिहिं अवसर इक खगपति आइ। अहमिंद्र दुतिवंत सुभाइ। आइ सभा मैं देखे राम। कर जुग जोर कियौ परनांम॥ आज्ञा लहि नभचर थिति भयौ। धर्म्म कथा सुनि वेचित दयौ। औसर पाइ कहै खगबात। जीव उधारन धर्म विख्यात॥ लहि सुद्धोप योग जिय सार। भवि जीवन निधि उतरैं पार। सुभ उपयोग जुसाधन करैं। तौ मन वंछित कारिज सरैं। * दोहा *

कहै व्यौमचर मिष्ट बच। सुनौं रामजी बात। सिषर सुमेर पुनीत गिरि। नमत पाप सब जात॥

* सोरठा *

मुनिसु व्रत जिनराज। सिव कल्यान कहते भयो। तिनकी जात्रा काज। जात हते हम भाव सौं॥

* दोहा *

देखि सभा हम आपकी। धर्म कथा संवाद। सुनि आए लखि दरस तुम। भयौ हिए अहलाद

जात्रा के बच रांम सुनि। मुनि सुव्रत कल्यांन। संघ च्यारि विधि संघ लै। ततक्षिण कियौ पयांन॥

* चौपाई *

करतदान पूजा श्रुत सौन। कलह विवाद करत धरि मौंन॥ खेचर आदि संघ बहु भूप। मधुबन

गए सुथांन अनूप ॥ पूजा सामग्री सजिसार । मन बच काय भक्ति चितधारि ॥ जै जै करत चले गिरि जहां । मुनि सुब्रत कल्यानक तहां ॥ पूजा करि गुनगाय अनन्त । निर्त कियो हिए धरि सुविवेक ॥ दांन अल्प दियो तहां राम । फुनि आए हर्षित निज धाम ॥ राय सहस बाहु भूपेंद्र । खगपति आदिक नमैं मुनेंद्र । कोटि एकपैंतालीस लाख । दिक्षा लीनी श्रीजिन साख । धरि बैराग महातप कियौ । कर्म्म रिपु सुजलांजल दियौ । बिबिधि परीस्या सहि तिंहि थांन । धर्म शुक्ल फुनि धार्यौ ध्यान केवल ज्ञान कियौ परतक्ष । भई आतमा केवल सुक्ष । निर्जरनाम कूट के सीस । मुक्ति गए है भिवन ईस ।

## * दोहा *

तिहिं थांनक मुनि ध्यांन धरि । पायौ पद निर्वान ॥ मुनि सुब्रत पर्यंत नामि ॥ संख्या करौं बखान ॥

## * अडिल *

एक ऊनसत कोडा कोडि बखानिए । सितानिवैं किरोर लाखनौं जानिये । नौसैं अधिक निन्याणवैं मुक्ति गएतहां । सिखर सुमेद सुकूट निर्जरा हैं जहां

## * दोहा *

एक बार एक कूट कौं । जो नरवंदै कोइ । कोटि प्रोषधी फल लहैं । सिवपद पावै सोइ ॥ ऐसे सिखर सुमेर नग । महिमां कहत न अंत ॥ बनबच काया भक्ति सौं ॥ मनसुख जलधि नमंत ॥ लोहाचार्यतना वचन । सिखर महातम बर्न ॥ तिहप्रति मनसुख सिंधु कहि ॥ नरभाषा मन हर्न ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते समेदाचल माहात्म्ये भाषा यामन सुख सागरेण वर्णन निर्जर कूट तैं मुनि सुब्रत नांथ मोक्षगमन नाम वर्णनं नाम ईकीसवां पर्व संपूर्ण ॥ २१ ॥

## * सवैया *

आठो अपराजित विमान सों जनम लियौ मिथुला नगर तात विजय सुराइहैं ॥ विप्रो देवी नाम मात हरित वर्ण गात पंद्रह धनुष कंज चिन्ह मुख दाइहैं। आयु हैं वरष दस सहस सुमेर गिरि प्रभव सुकूट सीस सिव पदपाइहैं। ऐसे नमि नाथ नोमि धार कै मन सुख सिंधु प्रनामि चरन हिए हर्ष रढ़ाइ हैं ॥

## * दोहा *

गए वर्ष षट् लाख जव। मुनि सुव्रत सिव लोक ॥ जनम लियौ नमि नाथ तव तिनपद मेरी धोक। गर्भ जन्म तप ग्यांन सिव। एई पंच कल्यांन। पढैं सुनैं अर्चैं त्रिविधि ते पावैं सिवथांन ॥ चौपाई

शुभ सहस एकशत मांन। जंबूदीप जिनेश वखांन। मध्य सुमेर मनोहर अंग। एकलाख जोजन उतंग। ताके यमदिसि क्षेत्र वशंत। भरत नांमजुत देश महंत। आर्यखंड वत्स हैं देस ॥ वन उपवन सरकूप असेस। कालिंद्री कूलजल भरपूर। अति गंभीर उर्म्मिजुत भूर। ताही के उपकंठ ज बसैं। को संबीपुर उत्तम लसैं नगर सब सुरपुरी समांन। बहु विधि पूजैं श्री भगवांन। पढ़ैं जैन श्रुत निज मन लाइ। चौ विधि दांन देइ सुख दाइ। प्रार्थ नांम नृप राज करंत। वंश इक्ष्याक मध्य गुनवंत॥ न्याय मार्गमैं अति लवलीन। प्रजा दुख नासन परवीन ॥ इक दिन मुनि आहार के हेत। आए भूप गेह सम चेत। दै आहार नमिश्री मुनि चर्न। दुविधि धर्म्म सुनि पातिगहर्न ॥ करि नमस्तु पूछैं फुनि भूप। कहिए सुनि सम्यक्त सरूप श्रीजिन भाषित तत्व सरधान। इहनिहचै सम्यक्त बखान। बर्नन करि मुनि गमन कराइ। ध्यांन धर्यौ निर्जन बनजाइ ॥ प्रार्थनृपति सम्यक्त गुणधार॥ राजकरैं पुरजन सुखकार॥ पुरवहिरवन हैं रमनीक॥ नाम मनोहर सिव वृथलीक ॥ तहं आए केवली मुनीश। जुगधर नाम नमे सो ईस। बनकै नगसेवा

पहुँ अचिरजलखि अनुकूल। हरष सहित भए फलफूल। जयजय शब्द तहंकरैं। पूजैं जिन थुति उच्चरैं। यहअचिरजलखि
अनुकूल। हरष सहित भए फलफूल। जयजय शब्द तहंकरैं। पूजैं जिन थुति उच्चरैं। करमुकुलत करबैन कहेइ। तुम
मालाकार। षटऋतु फलसु मनोहर सार। धर नृपभेट असीस जो देइ। करमुकुलत करबैन कहेइ। तुम
वन आएहैं केवली। सिवनिकेत निरखावैं गली। सुनिवच नृपहै पुलकित अंग। नमन चल्यौ पुरजन
ले संग। लैवसु दर्ब अर्चि पद कंद। दुक्रन कर्म्म कुलाचल भंग। सागारी अनगारी धर्म्म।
सुनत हिए नृप नास्यौ भर्म्म। उपज्यौ प्रसम मोह करि छीन। निज पद श्री धर सुतकौं दीन। आप
दिगंबर पद आदर्यौ। जन्म जन्म कौ पातिक हर्यौ। भाई भावना सोडस जहां। तीर्थकर पद
बांध्यौ तहां। बिबिधि प्रकार महा तप कियौ॥ अंत समैं संन्यास सुलियौ॥ अपराजित बिमांन मैं
जाइ। पद अहमिंद्र लयौ सुखदाय॥ जिन पूजा करि लै सुर संग। सुकल बर्ण भास्वत सुचि अंग॥ सब
मिलि अमर सभा थिति होइ। सात तत्व चरचा चित जोइ। आयु कायु भोजन उस्वास। मै पूरब भव
कियौ प्रकास॥ क्रम क्रम करि सुखसिंधु मझारि। सेषमास षट आयु बिचारि॥ सोअहमिंद्र निरंतरसंत।
पूजैं जिन गुन गांन करंत।

## * दोहा *

आगैं अब सुनि मगध पति। नमि कल्यानक थांन। धर्म प्रगट करि सिव गए। अष्ट कर्म अरिहांन

## * सवैया *

जंबू दीप मध्य मेर दक्षिण भरतक्षेत्र। तहां आरिज खंड बंगदेसमौ रहैं। तामैं हैं नगर नांम मिथुला
पुरी सुधांम बन उपबन सर कूप बहु ठौरे हैं॥ उन्नत नगर कोट कांगुरे बिराज मांन मन के हरन
हार छबिपुर घौरेहैं। उज्जल अवासु केतु पवन चलत इमि कहत कहत इहां कौसम सोभा नहि औरहैं।

*** दोहा ***

विजय सैंन अवनीप तहं । करैं पूजापर्त पाल ॥ जार चौर ठग दुष्ट जन । इति भीति सब टाल। विप्रा पट रानी सहित । भोगैं भोग सुभूप । तदनंतर इक कथन अब सुनि मगधेस अनूप । *** अडिल ***

प्रथम नाक नाकेस सभा में थिति करैं । धर्म्म कथा संबंध अबहि हिय में धरैं । ग्यांन दृष्ट लखि कहैं नमी जिन राजजी । मिथला पुर अवतार होइ बृषराजजी ।

*** दोहा ***

हरि आग्या ले धनपती । आइ रच्यौ पुरसार । नौ द्वादस जोजन प्रमिति । ग्रह ग्रह मंगल चार । तीन काल दुंदुभि बजैं । बरषैं रतन मनोग । साढे द्वादस कोटि मिति । श्री जिन जन्म नियोग ॥

*** चाल छंद ***

एक दिन निज मंदिर मांहीं । जिन मात सैन कराहीं । निशि अंत सुभ सब देखे । प्रातहि पति पाशि बिशेखे । सोई चरत्रय अहमिंद्र । थिति गर्भ कल्यान जिनेंद्र। आए तहं सुरनाकेश। करिकै निज उत्तम भेष । हरि पीठि थापि जिन मात ॥ करि पूजा हिय हरषात । अश्वनि बदि दुतिया जांन । हरि कीनौं गर्भ कल्यान । सेवैं देवी जिन अंब । त्रिभवन पति गर्भ अवलंब । निज धांम गयौ पुर ईस॥ हिए भक्ति जु विस्वा बीस । क्रमसे नवमास वितीत। जिन भाषी पूरब। रीति। अषाढ बदी सुभवार दसमी नमि जिन अवतार ।

*** दोहा ***

आए देवी देव पुनि । चौं निकाय सुर ईस । गजपै थापि जिनेंद्र तब । गए मेर गिरि सीस ।

*** सवैया ***

पूरबसामांन जिमज्जिन विधान करि अंतुक अभूषन तन पहिराईयौं । लेइबसु द्रब सुचि चरन चढाय

तब बहु विधि थुति प्रभु गुन गाईयौ ॥ फेरि ऐरापति थापि अवधि न जाय जपत जय सुर सुर जिन
पुर आईयौ । मात गोद थापि नृत्य करि निज थांनक गयौ मन सुख सिंधु ऐसे प्रभु सिर नाईयौ ॥

*** दोहा ***

तन उन्नत पंद्रह धनुष । हरित वर्ण दुति वंत । आयु वर्ष दस सहसकी । लक्षन सुगुन अनंत । सहस
अढाई बाल जिन । बीते नमिय जिनंद । पांनि ग्रहन करि राज फुनि । कीनौं प्रजा अनंद । धारि
अनुव्रत नीति पद । प्रजापाल हिय हर्ष । तीन ग्यान धरि धर्म्म जुत । सहस पंच गत वर्ष ॥

*** चौपाई ***

एकदिन श्री जिन वन में गए । नाना विधि द्रुम देखत भए ॥ कमल सरोवर जल करि हीन ॥
मलिन जलज पल्लव मबछीन ॥ तनछिन लखि हियहु बैराग ॥ आतमीक पद करि अनुराग ॥ द्वादस भाव
न कौं बिचार । अथिर रूप जांन्यौं संसार । इतनेंमे लौकांतिक देव ॥ आय जे जे करि स्वय मेव ॥ धन्य
धन्नि निज निज गुनधार ॥ भव्य भाव बुधि तारन हार ॥

*** सवैया ***

अहो नाथ तुम बिन कौंन इह काज करैं दुर्द्धर वरत तुम बिन कौन गहिहैं ॥ वसु विधिरूप धरि जीव गुन
नासि कीनौं ऐसे कर्म्म । बैरी बिन ध्यांन कौंन दहिहैं ॥ निज गुनपाय लोका लोकको प्रकास करि सिव
थान जाइ जीव थिर होय रहिहैं । मन बचकात मनसुखसिंधु सेवैं तुमसे उभव दधितरि सिवपुर लहिहैं ॥

*** दोहा ***

अस्तुति इह बिधि लैक सुर । करि बैराग दिढाइ । ब्रह्मलोक वासी अपर । नमि नमि थानक जाइ ॥

## * चौपाई *

विजय सेन पालकी जुल्याये। पुलोम जाय तिन जिन बैठाये। बनमैं जाय दुकूल उतार ॥ नमः सिद्धेभ्यः मुख उच्चार ॥ कायोंत्सर्ग ध्यांन धारि दयो। तप कल्यानक सुरपति कियौ। सहस एक नृप नमि नमि नाथ। लीनौ तप कियो सिव साथ ॥ मनपर्यै तब उपज्यौ ज्ञांन। बेला वृत कीनौ तिहि थांन। जाइ सूर्य गिरि क्षीर आहार। देत राउघर लीनौं सार। पंचाश्चर्य तहां सुर कियौ। देखि नगर जब हरख्यौ हियौ। फुनि प्रभु बनमैं जाय तुरंत। निश्चलांग होइ ध्यांन करंत। प्रमिति वर्ष नै रह छदमस्थ। च्यारि घातिया करमनिरथ। मगि शिर सुक्ल रुद्र थिति जांनि। नमि जिन उपज्यौ केवल ज्ञान। समो सरन रचियौ धनदेव। सुर नर पसु आए स्वय मेव। पूजा करि वसु दर्ब चढाइ। निज निज सभा बैठ हरषाय। स त्रह गणधर सुखदातार। श्री जिन वांनी परखनहार। सहस बीस सब संघ बतांहि। ग्रंथ वृद्ध भय बरन्यौ नांहि।

## * दोहा *

देस देस उपदेस करि। समो सरन नमि नाथ। गए वर्ष पचीस सत। करत सुरासुर साथ। रही आयु इक मास मित। गए सिखरि गिरि सीस। प्रभव कूट परि ध्यांन धरि। भए मुक्ति के ईस।

## अडिल

रहे सेष नख केस शक्र रचितन तहां। मलया गिरि श्रीखंड प्रमुख सर साचि जहां। प्रनम्यौ अगनि कुमार मुकट माणि क्रांतिसौं। प्रगटी अगनि महंत भस्म करि सांतसौं।

## * दोहा *

सोरज भालनि लाय करि सुर नर खग पसु सर्व। शिव थांनिक पूजा करैं हाथदइ वसु दर्व। मास अषाढ सुकृष्ण पक्ष तिथि अष्टमी महंत। बिवहारी वसुगुन धरे निश्चै सुगुन अनंत। कल्यांनक निर्वान करि। हरि अपनैं पुरजाय। सो प्रभास बरकूटफल कोकाबिजन बरनाइ। भाव सहिततहं जाइजो पूजैं

लियौ मुकति नमि शिवथांन। कोटतीस सुप्रोषधी। वर्त कियौ फल जान। जितने मुनि तिहिं थांनसैं। अरु पैतालिस लाख पद सार॥ तिनकीमैं संख्या कहौं॥ श्रीजिन श्रुत अनुसार। नौसैं कोडा कोडिभीति। सुनिश्रेणिक मनलाइ। संघ सात सहस नौसैं अधिक॥ ब्यालीस श्रीजिन भाष। मेघदत को कथन अव। सहित लै शिखर नामि। तपकरि सिवपुरजाइ।

## * चौपाई *

श्रीपुर नाम नगर इक बसैं। धनधान्यादि सहित जनलसैं। महा बर्तनामा भूपती। शिव सेनापति रानी सती। दंपति भोग करत दिन गए। मेघदत सुततिनके भए। पाइ पिता पदराज करंत। निति प्रति अरचैं श्रीअरहंत। श्रीषेना तिनकै पटनारि। सील सुलक्षन सबगुन धारि। इकदिन नृपरानी जुततहां। क्रीडा हेत गयौ बनजहां। लखे बसंत सेन मुनि राइ। भक्ति सहित भूपति शिरनाइ। धर्म्म बृद्धि दै धर्म्म बखांन॥ मन बचकाय सुनौंदे कांन॥ फुनि मुनि आगम पूछि नरेस। बरनन करै सहित उपदेस। सिखरि महात्म कह्यौ सुभाय। जात्रा फल सिव पंथबताय॥

## * दोहा *

नमस्कार करि भूपतव। आयौ अपने गेह। जिन मंदिर मैं जाय कैं। पूजा करि धरि नेह॥

## * चौपाई *

च्यारि प्रकार संघ लैं साथि। जात्रा हेत चल्यौ नरनाथ। साततत्व चरचा चितचाव। दांन च्यागिविधि देन सुभाव। क्रमक्रम से मधुबन मैं गए॥ मधुऋतु समछवि देखत भए। जायकूट परि पूजाकरी॥ जय जयजय आरव उच्चरी। इतने मे चारन मुनिराज। आए जुगल सुधर्म जिहाज॥ जिन थुति कीनी प्रसम सरूप। सुनि चित मै बैराग्यौ भूप। निज पद जिन सुतकौं राइ॥ मुनि पदनमि तप लै शुखदाइ। एककोटि पैतालीस लक्ष्य। भए महा मुनि मुनि परतक्ष। तपकरि अष्टकरम गननाश। ततक्षिन लौकालोक

प्रकास। अविनाशी पद पायौ तहां। कूटप्रभास नाम हैं जहां। *** दोहा ***

मन बचकाया शुद्ध करि ॥ प्रणमैं शिखर सुमेर ॥ सुरनर सिवपद पाइ करि ॥ जन्म धरै नाहि फेर ॥

*** अडिल ***

लोहाचार्य धर्म्म ग्रंथ वर्णन कियौ प्राकृत रूप अनूप कठिन अति करि दियौ ॥ निज कल्याणक पाठ हेत अति चावसौं ॥ भाषा मनसुखसिंधु रचिबहु भावसौं ॥

इति श्री काष्टा संगे लोहाचार्य विरचत तीर्थमहातमेखुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुद्ध सागरेण वरणनं प्रभास कूटने नमि नाथ मोक्षगमन वर्णन नाम वाईसवां पर्व ॥ २२ ॥

*** सवैया ***

सील सिंधु धारक बिदारक मदन दल सुरी पुर जन्म सुर संभरत हैं ॥ सागर बिजय पिता सुमाता शिव देबी नामक चिन्ह चरन सोभासु धरत हैं। उन्नत सुतन दस धनुप सजल घन बरन बरस आयु सहस चरतहैं। ऐसे नेमनाथ नेमधार अन सुख सिंधु नमत चरन सिव संपति करत हैं *** दोहा ***

नेम नाथ जिन के चरित ॥ सल्प मात्र मनधारि। सुनि श्रेणिक मनलाइकैं। ज्यौं पावैं भवपार ॥

***चौपाई ***

दीप प्रथम जंबू बरनाम। मध्य सुदर्शन सबसुखधाम। भरत क्षेत्र दक्षिण दिसि बसैं। अवनि तहां खंड खंड जु लसैं। आरिज खंड खंड सिर मोर। तदवत सोभा औरन ठौर। तहां देशबहु बसैं असेस ॥ जाइ करैं जिन बृषउपदेस। कुरजांगल इकदेस बिसाल। प्रजा सुखित सोहैं गुनमाल। गज पुरनाम नगर प्रसिद्ध। बर बिभूत जुत सोहै रिद्ध। लक्ष्मीचन्द्र नृपति परचंड। राजकरैं बहुआरिजन खंड॥ श्रीयमती नामा प्रिय

प्रिया । सीलसुलक्षन सुंदर तिया । सोलम स्वर्ग देवइक आइ । तिन दोन्यौ के सुतउपजाइ । सप्रातिष्ट अभिधान बिचार । धर्यौ गणक सुभलग्न निहार । क्रमक्रम बढ़ै बाल तियथांन । रूपसुलक्षन अतिगुणवान । शास्त्र शास्त्र बिद्या पढ़ि लई । नृपनिज कारिज मनमें ल्याइ । पानिग्रहन पिताकरि दियो । नारि सुनंदा सुत जुग कियौ । नृप निजकारिज मनमें लाइ । राज दियौ निजसुत सुखदाइ ॥ जाइ सुमिंद्र मुनि शिर नयौ । पंचमहाव्रत तिन गहिलियौ । दुद्धर तप श्रचंद मुनीस । करैं हानि त्रिभुवनक ईस ॥ *दोहा*

पंच अनुब्रत राइ सुत लिये पिता मुनि पास । करि नमोस्तु पुर जाइ निज पूरै सबकी आस ॥

* चौपाई *

राज करैं सुप्रतिष्ट नरेंद्र । अरिगन गज मद हरन मृगेन्द्र ॥ प्रजा पुत्र सम पालैं राइ । इतिभीति भय दूर नसाय ॥

* दोहा *

तिस अवसर मुनि राज इक आए सब सुखकार । नाम जसोधर जगत हित उपजावन गुनधार ॥

* अडिल *

देखि नृपति ऋपराइ अग्रह्वै भक्तिसों । तिष्ट तिष्ट मुख चवै करे थुति सक्तिसों ॥ धन्य तपोधन धीर बीर तुमहो सही । जेतुमसेवैंचरन मुक्ति तिनही लही ॥ * दोहा *

अस्तुति करि नव भक्ति युत दाता गुन पुनि सात । शुद्ध आहार सुमुनि दियो देखि नृपति हरषात ॥ अषै निद्धि मुखतैं जकहि ध्यान धरे बनजाइ । पंचा चर्य अमर कियौ देखि नृपति हरषाइ ॥ *चौपाई*

सुख सागर मैं मन नरेस । साधिलिये वहु नृपके देस ॥ वहुत कालबीते इसरीति । भोगै भोग नारिनर प्रीति ।

*** अडिल ***

एक दिना नरनाह सहित नारी तहां । बैठे अति हित मनसो धर्युपर जहां ॥ दिस विलौकन करत एक दिसि देखियौ । उलकापात उद्योत नृपति तहां पेषियौ ॥ *** दोहा ***

सुप्रतिष्ट नृप देखि इह मन विरक्त अति होय । तव धन पुत्र कलत्र ग्रह उल्कापत पिव जोइ ॥ अष्टान्हिक पूजाकरी । निजमन हर्ष वढ़ाइ । अष्ट द्रव्य शुभ भाव जुत श्री जिन चरन चढ़ाइ ॥ निज सुतकौं सब राजदे भावैं भावनसार । सुमंदिर जिन निकट नृप मुनि मुद्रा अवधार ॥ *** अडिल ***

पंच महाव्रत सुमति गुप्ति त्रय धारही । वसुकरि गुनमन धारि जिनात्म विचारही ॥ द्वादस विधि तप करहि लीन मन तत्व सों । सहे परीस्या बिबिधि आपने सत्वसों ॥ *** दोहा ***

षोड़स कारन भावना मन धरि करहि बिचार । तीर्थंकर सुगोतकौं बंध कियौ सुखकार ॥ अंत समाधि मरन कियो पंच अणुव्रत नाम । तहां जयंत बिमानमैं उपजे सब सुखधाम ॥ *** चौपाई ***

अहमिंद्र पदवी तिनधार । अंत महूरत जोवन सार ॥ दिव्यरतन मुक्ताफल भले । सहित सुगंधित माला गले ॥ एक हस्तकी उन्नत काय । अति सुंदर लक्षण हितदाय ॥ समुद तीस अरु तीन प्रमान । आवेल तिनकी करी बखांन । लेस्या शुक्ल भाव मनधरैं । छहोंद्रव्य की चरचा करैं । नोः प्रविचार भोग सुखजोइ । सील सहित नारी नाहि होइ । इत्यादिक सोभा गुनगीत । आन्य शास्त्र सौ जानौं मीत ॥ इह जिय जिन उपजैं हरिवंस । सो सुनि श्रेनिक है अवतंस । अथै जंबू बरद पसु नांम । भरत क्षेत्र तामैं अभिराम । देस बत्स नाम तहं एक । कौशांवीपुर हैं सुभ टेक । मघवा नृप नागर प्रतिपाल । दुर्जन जन कौहैं उरसाल । बीत सोकनागिपटनारि । सीलसुलक्षन अति गुनधार । रघु नांमां तिनकै सुतभयो ।

सब जन बल्लभ सुंदर ठयो । वा नगरी मैं आति बंलवन्त। सुमुख नांम हैं सेठ महंत । देस कलंग नगरपुर दत । तहसैं आयो बीरक दत । बनमाला तिस तनीं । रूप सुलक्षन सोभा घनी । सुमुख सेठ निज ग्रह मैं थाप । बहु आदर करि राखैं आप । ऋत बसंत बन क्रीड़ा न गयो । बनमाला तहँ देखत भयो । ससुख कांम सर पीडित होइ । आति बिह्वल है चितमैं जोइ ॥ बीरदत कौं अति धन दियौ । देसांतर कौं तिन गमन कियौ ॥ तिस पीछैं उसकी वह नारि । निज ग्रह राखि करैं सुखकार ॥ बस्त्राभरण दिए बनवाय । कांम क्रिया करि सुख उपजाइ ॥

## * दोहा *

कार्य अकार्य नही लखैं । कांम अंध जे होइ ॥ जो जन्मांध मनुक्ष सब । मारग कौं नहि जोइ ॥ द्वादस बरष बीति जब गए । बीरदत तब आवत भए ॥ देखि चरित्र शोक तहं भयो । लज्जित है बन में उठि गयो ॥ धृग संसार अक्ष के भोग । लेन जोग हैं श्री जिन जोग । दिक्षा लै सुरहुवौ सोर । चित्रांगदसौ धर्म्म मझार ॥ सुमुख सहित बनमाला एक । दिन आहार दियौ बिवेक ॥ सहित सुधर्म्म सिंघ मुनिराइ। पुन समर्जन करि सुखदाइ॥ चपलापतन भयो इककाल । दंपति प्रांन तजे तत्काल । येही भरत जो क्षेत्र बिसाल ॥ देस तहां हरि बर्ष रसाल । पुरी भोग पुरनांम सु बसैं ॥ नृपति प्रभंजन अति गुन लसैं ॥ बंश नाश हरिबंस बिख्यात । मरकंडूनारी सुखदात ।सुमुख जीव तिनको सुत भयो ॥ बिद्याजुत जोबन तन लयो । वही देशमैं शीलपुरेश । बज्र घोषनारी शुभ बेस ॥ बनमालाचर इनकै आइ । पुत्री बिद्युन्माला थाइ ॥ पूरब पुन्य जोग इहनारि । सिंहकेतु परण सुखकार ॥ ते दंपति है भोग कराइ । एकादिन बन क्रीड़ाके काज ॥ दांनपुन्य करिजुग सुखपाइ । गए नारिनर सब सुखसाज ॥

* अडिल *

वादिन सौचित्रांगद देव सुआईयौ । देखि पूर्व भव जांनि रोश उपजाईयौ ॥ लैदोन्यौ कौं देवबिमांन चढाईकै ॥ खंडकैरें तनु सिंधु डारिहौं जाइकैं । पूरब भव जो सुसुखमित्र रघु नांमसौं । पालि अनौवृत देव भयौ सुखधांमसौं ॥ कहै देवसुनि देव पाप जनभंगकौं ।

* दोहा *

संसार्णव पतनकौ । कारणहैं इक काज ॥ रवि प्रभु कोय वचन सुनि ॥ अनुकंपा चित साज । चंपा पुर के अरण मैं । दंपति थापे जाइ । गमन कियौ निज अमरपुर ॥ कियौ कांम सुख दाइ ॥

* अडिल *

तापुर कौं नृप चंद्र कीर्ति सुतरहित है । मृत्यु भयौ तिसकाल सचीमन चिंतहै ॥ करै बिचार नरेस थापिए कौन कौं । गज सुख कलसा देइ न्हावैं जौन कौं ।

* दोहा *

गंधोदिकसौं पूर गज । छोडि दियौ तिसबार ॥ गज कलसा लै बनगयौ । सिंहकेतु सिरदार ॥ प्रजा सहित सब सचिवते सिंह पीठपै थाप । करि अभिषेक नरेस पद । सिंहकेतु नृप आप ॥

* अडिल *

मंत्री पूछैं बात कहौ नृप कौंनहौ । तात मात फुनि जात देस पुर जौनहौ । सुनि हरि वर्ष सुदेस भोग पुरराइहौ । परभंजन हम पिता मृकंडू माय हो ॥

* दोहा *

सिंघकेतु तिस पुत्र हम रिपु सुर हम लैआइ । सुनि नागर मंत्री सबैं । हिए मैं अति हरषाय ॥

* चौपाई *

मरकंडू माता सुत जांनि । मारकंडतिस नांम बखांनि । फुनि ताकेसुत हरि गिरि भयौ ॥ हरि गिरकैं हिम

गिर सुत ठयौ ।

* दोहा *

इत्यादिक हरि बंसमैं । राजा भए अनेक सुरसेन नृप अतिबली । विद्या अधिक बिवेक ॥ निजभुज बल अरि जीति बहु । कीनौं अति सुख काज ॥ निज नामा कित नगर करि ॥ कैं जहां कौ राज ॥

* चौपाई *

तिनके सूरबीर सुत भए । जुगनारी जुत तिन सुखलए । प्रथम धारिणी नामा सती । दुतिय सुकांता अति गुणवती । धारिणिसेन सुत उपज्यौ एक । अंधकविष्टी सबगुण टेक ॥ नांम सुकांता दूजी तिया ॥ पाति विष्टी तिन सुत जनमिया ॥ अंधकविष्टी नृप पद पाइ । नाम सुभद्रा अति सुख दाइ ॥ पुत्र भए दस अति गुणवान । तिनके नाम सुकरौ बखान ॥ * दोहा *

जेष्ट तनय सागर विजय सागर वतगंभीर । दानी बेष सुर द्रुम सरस अरु बीरनि मैं धीर ॥ * चौपाई *

जिनकैं तीर्थंकर अवतरैं । कोबुद्धि तिनको वर्नन करैं ॥ दुतियक्षोभ हैं पुत्र उदार । सत मित समुद्र तीसरो सार ॥ हिमवन तूर्य्य बिजै शुभ खान । पंचम षष्टम अचल प्रमान ॥ धारन सप्तम अष्टम देख । पूरन पूरन पुन्य बिशेष ॥ अभिनन्दन नवमौ गुन धार । विद्या रूप कला विस्तार ॥ दसमैं हैं बसुदेव मनोग । रति पातिव्रत सुन्दर तन जोग ॥ अंधकविष्टी दस सुत युक्त । दश लक्षन द्रव बहु सुख भक्त ॥ तनया जुग उपजी सुख दाइ । कुंती मांद्री सुंदर काय ॥ समुद बिजैके नारि प्रवीन । शिव देवी रानी गुनं लीन ॥ जिनके जठर तीर्थंकर होइ । वर्नन करत सकत नहिं कोइ ॥ औरनके प्रिय तिया मनोग । करि बिवाह सब अपने लोग ॥ पाति विष्टीके पदमावती । प्राण बल्लभा अति गुणवती ॥ पुत्र भए त्रिय तिनकै सार । उग्रसेन आदिक गुण धार ॥ देवसेन दूसरो महंत । महासेन तीजो गुणवन्त ॥ एक

सुसा उपजी थुति रूप । इन कुटुंब सहित राजैं भूप ॥ सूरी पुर नगर सुखदाइ । सूर वीर नृप राज कराइ ॥

* दोहा *

गंध मादन गिरि जहां आए मुनि तपसार । सुप्रतिष्ट नामां तहां सब जीवन सुखकार ॥ नृप सुनि सब परिवार थुति सूरबीर जहं जाइ । करि नमोस्तु सुनि धर्मको दिक्षालई सुभाइ ॥ *चौंपाई*

अंधकविष्टी नृप पद पाइ । राज करैं परिजा सुखदाइ ॥ फुनि सुप्रतिष्ट मुनी सुर तहां । गंध मादन गिरि आए जहां ॥ निशा समैं धरि ध्यान सुजोर । करि उपसर्ग शत्रु सुर घोर ॥ सहै धीर धरि श्रीमुनि राइ । केवल ज्ञान सबै उपजाइ ॥ सुरनर खग आए तिस थान । पूजा करैं नृत्य गुनगान ॥ अंधक धिष्टी गज चाढ़ि जबैं । जुत परिवार सुआयौ तबै ॥ करि नमोस्तु ब्रष सुनि मनलाय । सुर उपसर्ग पूछि सुनि राइ ॥ निज सुत भव छैनर ईश । सुनि हरष्यौ फुनि नायो शीस ॥ * दोहा *

समुद बिजयको राजदे दिक्षा लेइ बिचार । अति तप करि शिव पथ लियो निज आतम सुखकार ॥

* अडिल *

सूरी पुरको राज समुद्र विजय करैं । नरनारी पुरलोग सबनिको मन हरैं ॥ सुनि श्रेनिक मनलाइ जनम जिन राइको । शिव देवी उरआइ होइ सुखदाइको ॥ एक समयसुर ईश सभामें थुति करैं । जिन जात्राके बचन सकल सुर उच्चरैं ॥ अवधि ज्ञान सुजोय शब्द ऐसै कहैं । समुद बिजय ग्रह श्री जिनवर उपजै सही ॥

* दोहा *

ताही समय सुरेसनै धनपति आज्ञा दीन । नौ बारह जोजन तनी नगरी रचौ नवीन ॥ * सोरठा *
पंचा चर्यकराइ आय धनंद रचना करी । अति उत्सव सुखदाइ गर्भ अगाउमास छह ॥ *अडिल*

शिव देवीकी सेव कुचालाचल बासिनी। करै कुमारी सर रमा नखुद्दासिनी। बीतेहैं पटमास महा अति सरससै। बहु उत्सव गुनगान नृत्य कर परम सैं॥

*** दोहा ***

एकदिन रैनि सुसैनिमैं षोडस सुपन निहार। पूरब बर्नन जो कियौ ताहि देखि मन धारि॥ कार्तिक शित शुभ छठि दिन ऊखा नक्षत्र बखान। सो अहमिन्द्र सुर तहां गरभ स्थित भगवान। प्रातसमै जिन मातउठि। मंजनकरिशृंगार। निकट जाइ पति सैं सुनैं। सुपनै फल सुखकार॥

*** छंदपद्धडी ***

जिनमंदिर मैं जिन मात॥ आइ सुर बनिता सेव करैं सुभाइ केई नाचैं गुनगावैं विशेष केई सुकर दिखावैं शुद्ध सुरेष केई वस्त्राभूषण हाथ लेइ। जिन माता के करमांहि देइ केई ले सुमन सुगंध सारैं। पलंकरचैं सुखसहित धार। केई मंजन करि जल सु ल्याइ। गज चरन प्रक्षालै अति सुभाइ। केई ग्रहकाज करै मनोक्ष। रस काव्य पहेली मात जोग। केईतनरक्षा करत सेव। केई कर जै जै देव देव। इत्यादिक और अनेक रीति। निज निज कारज करि करैं प्रीति। जिनमातानन सोभा लसंत। सुख वर्नन कहत लहन अंत। नवमास वितीते इसप्रकार। सुनि श्रेनिक जिम जन्मावतार॥

*** दोहा ***

श्रावन शुक्ल सु छठि को। चित्राउड सुखदाइ। तीन लोक सुखकरन कौं। जन्म लियौ जिनराइ॥ अपने अपने चिन्ह सौं। सुरजान्यौ सुविशेश। निज निज जान सु चाढ़ि तहां। आए सकल सुरेस॥

*** सवैया ***

सूरीपुर शक्रआय ऐरापति साजि ल्याय जिन जी चढ़ाय सुर मेर गए तवहीं। पांडुक शिला पैंप्रभु पूरब सुमुख थापि क्षीरोदिक ल्याइकर कर कुंभज वहीं जिन कौं नहाय वसु द्रव्य चढ़ाय अति मनहरपाय नेम

नाथ नामजवहीं । कहि गेह लाय मात अंक थापि नृत्य कर कहत सुफल सक्र पनौ मेरौ अवहीं

*** दोहा ***

कल्यानक जिन जन्म को । करि सुरपति निज थान । । जाइ भक्ति बसि होइ हरि । करै भोग सुखखांन

*** चालछन्द ***

जिन बाल अवस्था राजैं । देखत सब जन दुखभाजैं । जिन श्रवन कुंडल सोहैं । दुतिनील वर्ण मन मोहैं । लटपट पगधरत मनो गैं । सबजीवन को हरैं हसो गैं । करही कर करत विहारैं । नरनारी जनसुख कारैं ॥ बसु सहस सुलक्षण काया । गुनकहत पारनहिं पाया । आलिसैं दसयुत जिनराइ । वह बाल क्रिया सुख दाय ॥

*** दोहा ***

तदनंतर वसुदेव सुत । कृस्न नाम गुणवंत । भ्राता हैं बलदेव जिस । बलनारायणशंत ॥ * चौपाई * जिनवर क्रीडादेखि सुभाइ । हर्ष हिए आति अंगन माइ । सब परिवारसहित नरईस । समुद बिजैं नृपराजै ईस ।

*** अडिल ***

एक समय श्रीकृस्न गये मुथरा तहां । कंशराय ह्वां भूपजुद्ध हूवौ जहां । मार्‍यौ मुथरा राय नारि जीवंजसा । गई तात के पासि कहै मो पति नसा । जरासिंधु सुनि बात कहे किन नाशियौ । आति गदगद ह्वै वचन तबै तिन भाषियौ ॥ कहै कौंन श्रीकृस्न कहां वहरहत हैं ॥ नास करैं छिनमाहिं जरासिंधु कहत हैं ॥

*** सवैया ***

पुत्रन कौ आज्ञा देइ सूरी पुरजाइ तुम आयसु को पाय सैन लेइ तब चले हैं । आदि दस भ्रात सब आइ रन भूमि जुद्ध कीयौ नहि टले हैं । जरासिंधु सुत बिजबल सही न देखि भाग गए छिन मांहि सब मदगले

हैं । हारे सुत जानि और पुत्रन कौं आज्ञा दीनी तेउ आइ हारि गए जान्यौं अति बले हैं । * दोहा *
समद बिजय तबैं । मंत्री सो इक बात । कौंनमतौ अब कीजिए ॥ ज्यौं होवैं कुसलात ॥ सुनि मंत्री ऐसै कहै । सुनौं नृपति ममबैन । जोबलवांन बिरोध है । तजे देश ह्वै चैंन । नगर दूसरो कीजिए । इहां तैं चलि सुनि राइ । जरासिंधु को मरन ध्रुव । निश्चै कृस्न कराइ । इह विचार मनमांहिं कर हुंडासर्प्पिनि काल । दोष जानि ताजि नगर कौं । चले तबैं तत्काल ॥ * चौपाई *
सिंधु देव जिन आगम देखि । अपनौं जन्म सुफल करि लेखि ॥ नौ द्वादश जौजन परमांन । जल संकोच कियो सुरथांन । नंदआय नगरी सुचि रची । माणि मानिक मोतिन करि खची ॥ जिनवर सौध सत षनै किये । पंच षनौंति षनै कै दिये । पंचाचार्य कियो सुरसार । सदन थापि जिन हर्ष अपार । ऐसी क्रिया करी सुरराइ । अमर नगर फुनि गमन कराइ । समुद बिजै नृप सोभित जहां रत्नाकर त्रयुत तहां ॥ * दोहा *
सुखकर श्री जिन नेंमजी । क्रीड़ा करै सुभाइ आगैं बर्नन और कछु । सुनिए श्रेनिकराइ । जरा सिंधु लखि पुत्र कौं । हारजांन दुख मांनि काल जमन आग्या लई । गमन सूरपुर थांन चौपाई
आय देखि सूरीपुर तबैं । जांन्यो भाग गए जन सबैं । आगैं देखि चल्यौ कुलसुरी । माया रची भक्ति अनुसरी । चिता अनेक जलत तहां करैं । रुदन रूप नारी तन धरैं । कालज पूछैं मन लखि नारि । कारन कौंन कहो तुम सार । देवी कहै सकल यदुवंस । अग्नि जले सब भए निरंस । सुनिकरि फिरि आयो निज थांन । पिता अग्र सब चरित बखांन * दोहा *
सुख करिकैं तिष्टैं तहां ॥ कारन हवौ और राज ग्रही कैवानिकइक । गयौ द्वारिका ठौर । रत्नादिक

बहु लेइकैं। फुनि राजग्रह आइ जरा सिंधु कैं जाइ तट। रतन सुभेट कराइ। * चौपाई *
रतन देखि पूछै नरराय। सब विरतंत तिन दियौ वताय। सुनि जादू कौंप्यौ नरनाथ। लडने चल्यौ चमूले साथ॥ सुनि श्रीकृश्न और बलदेव। मनमैं उपज्यौ अति अहमेव। मंत्र विचारनेम ढिग गए। जिन मुख हर्षित देखत भए। जयउपनी जानी मनमांहि। जीति होय इम मिथ्या नांहि। सेन्याले आए रनबीच। शुद्धभयौ अति बहु जनमीचि। श्री श्रीकृश्न जीति तवभई। तीन खंड जन आज्ञा लई॥ आवे लोग बहुत तिसमैं॥ सुख मैं काल वहुत तहां गमैं॥ * सवैया *

इकदिन सभामाहि सागर विजैकौं आदि दसो भ्राता बैठे अतिमन हरषायकैं। कृश्न बलदेव पांच पांडव अनेक नृपबल वर्नन बात कहै सुखपाइकैं। कोई बलदेव कौं बतावै कोई पांडव कौं कृश्न बलवांन कहैं अन्य कौं बताइकै तवबलदेव कहैं काहे झूठी बात कहौ नेमनाथ अति बली देखो तुमजाइ कैं। *सोरठा *

इह सुनि तबहिं मुरारि। कहे नेम बल देखिए। तिस अवसर मनधारि। आए अब निज पेंषिए।

* चौपाई *

तदनूकूल ह्वै बातैकरैं। बैन परस्पर बल उचरैं। कहै कृश्न प्रभु नेम कुमार। बलदेखन इच्छाअवधार। स्वाभाविक जिन हाथ प्रलंब। करकनिष्टका चक्रनलंब। नारायण निज बल अति कियौ। सरल करन अंगुरी मन दियौ। स्वर्ण शाकुली फुनि पहराइ ऐंचखैंच बिहल दुखदाइ। ऊंचौ करि जिन कर पंकाय। कृश्न झुलाय अति हरषाय। लज्जित ह्वै नायौ निज सीस। तुम प्रभु तीन भवन बख्शीस॥ इकदिन सिव देवि ढिगजाय॥ निज सुतव्याह करो किन माइ। कहै मात सुनि कृश्न कुमार। तुम इहबात करो सुविचार। आज्ञा लै आए निज थांन। निज नारी सौं बात बखान। ब्याहमनावो केलि कराय। नेमनाथ सौं अति हरषाय॥* दोहा *

ऋतु बसंत आए नहां। फूले सब बनराय। रोगी गंधारी सबैं। निज जुत है बनजाइ ॥ जल क्रीडा प्रभुसैं करैं। कहि बिवाह की बात ॥ हर्षित जिन मुख लखि तबै ॥ हरष हिए न समाय ॥ क्रीडाकरि कटि बस्त्र तजि। प्रछालन हित काज ॥ जंबूवती मख उचरैं। हम न जोग इह काज ॥ धनुष संख अहिसेज कौं। दलन पराक्रम धार। सो कटि बस्त्र न देइ हम निर्जल कारन सार। सतभामां सुनिइम कहैं ॥ नवदि मूढ एवैन। तीनलोकमैं अति बली त्रिभुवन पतिए अैन।

* सवैया *

जिन सुनि वैंन आए आयुध सदन मांहि संख धनु अहि सेज दलमल डारी हैं ॥ संख धुनि सुनि हरि आइकैं चरन गहे धनुष टंकार सुनि अति भय धारीहैं। आए बलदेव थुति करत अनेक विधि कांपैं कोपन कीजे प्रभु तुम बल भारीहैं ॥ तीनहू भवन सक्र सेव सबकैंर आइ चल्यौ निज थांन प्रभू बिन ती हमारीहैं।

* दोहा *

निज मंदिर आए प्रभु। मनमैं हर्ष अपार ॥ हरि बलमतो बिचारिकैं। पत्री भेजी सार। स्वस्ति श्री सुभ बांचिकैं। उग्रसेन नृप राज ॥ राजल कन्यांदीजिए। नेम बिबाहन काज ॥

* सोरठा *

उग्रसेन पढि लेखि ॥ हर्षि हिए नसमातेहैं। लगन लिखाय बिसेख

* चौपाई *

आयौ लगन द्वारका जबैं। अति उत्साह भयौ पुरतबैं। लगन लेइ द्विज दांन सुदइ। मंगल पांनि ग्रहन करेइ। सुभ मंडप बेदी तब करी। मणि माणिक मुक्ता रचिधरी। नृत्य बधावा मंगल गांन। गेह गेह उत्साह बखांन ॥ सहज नेमतन अतिसो भाय। और षोडश सिंगार बनाय ॥ सब विवाह सामग्र साथ। समद बिजैं आदिक नरनाथ। उग्रसेन द्वारैं जब गए ॥ पसुगन आइ पुकारत भए। सुनौं नाथ त्रिभवन पतिबात। बिन तकसीर हमारी घात।

* सवैया *

सुनौंदयानाथ हमउपरि दया विधायमहि छुड़ाय सवजग जस लीजिए। तुम तीनलोक कारन परबंध दयाहेत जांनि सुखलास हमकीजिये। हाहा जिन तुम विन नाइकैं पुकारैं कहावत्सैं हमछूट बनसौं मिलाय दीजिए देखिनेम जिन कहैं धृगहै विवाह इहै कारन जगत तजि स्वारथकौं पीजिये।

* अडिल *

स्यंदनेश प्रभु उतरि पाशि खोली जबैं। दैअसीस सवन जाइ पसु हरषे सबैं॥ द्वादश भावन भाइ बिरक्त भए जहां। ब्रह्मोतर लोक अपर आए तहां॥

* दोहा *

अस्तुति करि निज पुर गए। शक्रपालकी ल्याय प्रभु चढाय गिरि उर्जिपैं। गए सुआनंद पाय॥

* सवैया *

परिग्रह त्यागि सब ध्याय तरुतल प्रभु ॐनमः सिद्धेभ्ये मुख तबही उचारयौ हैं। पंच मुखी लौंच करि श्रावन सुकल छठि मोह मंदनासि राग दोष सबटारयौहैं। नृप एक सहस सहित सुभलियो तप आतम सुरस लीन महाव्रत धारयौहैं। सुतप कल्यांनक अमरपति कीनों तप कच लेइ क्षीरोदिक सिंधु मांहि डारयो हैं

* दोहा *

प्रभु ध्यांन मैं लीन है॥ करैं आतमांकाज। सीस नवाय गयौ तबै। अमरलोक सुरराज। राजल इह सब बात सुनि। चली तबै गिरि नारि। अस्तुति करि सिरनाइकैं छुल्लनी व्रत धारि॥

*चौपाई*

नारायण बलदेवकुमार। करि नमोस्तु निजग्रह संचार। राजकरैं श्रीकृष्ण नरेस। तीनखंड सुखकरन विशेस। श्री जिन बेला व्रत करिजबैं। उठे आहारहेत फुनितबैं। ईर्यापथ अवलोकनकरैं। पट काया रक्षा मनधरैं॥ द्वारावत पुरकै पसार। वीर दत्त नृप प्रभु निहार॥ आगे आय नमोस्तु करी। विनय भक्ति तिन मनमें धरी॥ तिष्ठ तिष्ठ तिष्ठो मुनि राइ। पडि गाहन विधि करि नर राय॥ माशुक क्षीर सुभोजन दियो। अपनो जन्म

सुफल करि लियो ॥ असैं निद्धि जिन मुख उच्चैं। पंचा चर्य अमर तब करैं ॥ साढे द्वादस कोटि प्रमाण। रतन बृष्टि नृप रुदन बखान ॥ दुंदुभि शब्द व्योम अनिवार। होय सुजल कनतन मनहार ॥ सुर द्रुम सुमन सुरभ बहु लिए। जैजै सकल सुरासुर किये ॥ एपांचौ अचिरज नृप गेह। करैं परस्पर सब जन नेह ॥ नेमि जिनन्द बनमें जाय। अचल लोइ आतम लौलाय ॥ षट पंचास अहनि जिन देव। छद्म मस्तक बरते स्वय मेव ॥ करमघातिया प्राक्राति हानि। केवल ज्ञान प्रकास्यो भान ॥ सूक्ष्म थूल चराचर जिते। युगपत भासतहैं सब तिते ॥ जीव अजीव सुगुन परजाय। गए समैंमें सब दरसाय ॥ * दोहा *

महिमा केवल ज्ञानकी कौप्रवन बनराइ। कैतो वह गुन सिद्धमें कैजानै निज राइ ॥ अस्वनि सुदि प्रति प्रद सुदिन अपरान्हक थित सार। कल्यानक सुरपति कियो अति उछाह मनधार * चौपाई *

समोसरन धनपाति रचि लेइ। तीन लोक श्री सोभा देइ ॥ तीन कोट गोपुरहैं च्यारि। नृत्य शाल नाचैं सुर नारि ॥ पूरब वर्नन को उनमान। समो सरन रचना सबजान ॥ जुग जोजन परमान विशाल। क्षेत्र पाल राखे रखवाल ॥ गणधर एकादशहैं तहां। श्री जिन मुख धुनि उपजत तहां ॥ नौसत मन पर्यैके धार। अवधि धारि पंद्रह सौसार ॥ ग्यारह सहस नाग सत कहैं। सिष्यनिकी गिनती यह लहैं ॥ एकादश शत वैक्रिया युक्त। षोड़स सो केवली प्रयुक्त ॥ वेद सतक पूरबके धार। गज सत मितवादी अतिसार ॥ सष्टादस सहस्र परमान। सर्व संघ मित करी बखान ॥ तीन लक्ष श्रावकनी कही। एक लक्ष श्रावकहैं सही ॥ द्वादश सभा बिराजे भले। होत सुधुनियातिक टले ॥ * दोहा *

अलप ज्ञान मेरे हिए सोभा अगम अपार। कौशिक सूरजि किरनि किम बरने अति बुध धार ॥

* चौपाई *

आवैं सुरनर खग के ईस । पूजा करैं नवावैं शीस ॥ सुनि श्रीकृष्ण और वलदेव । पूजन आए तजि अह मेव ॥ धर्म्म सुन्यो मन अति हरषाय। शीस नवाय फुनि निजपुर जाय ॥ अर्द्ध चक्र सुख भोगै भोग। करैं राज सब जन सुख जोग ॥ सुत प्रदुमन मदन पद धारि । भानु सुभानु संबु सुखकार ॥ सब परिवार सहित सुख करैं । पूजादान अधिक विस्तरैं ॥

* दोहा *

समौसरन श्री नेम जिन नाना देश बिहार । करि आए गिरि मेरपैं सुर करि जैजै कार ॥

* सवैया *

आए कृष्ण वलदेव पूजा करि धर्म्म सुन्यो प्रश्न कियो द्वारका की तिथि कहि दीजिये । नारायण आयु फुनि गन धर कहै द्वादश वर्ष पूरी तिथि सुकहीजिये ॥ दीपायन कोप जोग नगर भसम होइ जरद कुमार कर नारायण छीजिये । ऐसी सुनि शीस नाय जाय पुर राज करैं संका मन हरिवंस सेती जानि लीजिये ।

* दोहा *

वर्ष सात सत नेम जिन। केवल पदवी धारि । आदि ऊन छप्पन दिना । अंत मास इकसार । उर्जयंत परजोग प्रभु । रोध कीयौ जिनराय। लघु पंचक्षर कालमैं सिद्धि क्षेत्र थितिपाइ। चैत असित शुभ आदि दिन॥ मघवा मन हरषंत ।कल्याणक उत्सव करैं ॥ बरनत लहूं न अंत।

* चौपाई *

जै जै सुरनर खग सबकरैं। पूरब कृत पातिग सबहरैं। सुरयुत सिखर सैल परिजाइ। सुनि श्रेनिक निहचैं मनलाय। द्वाविंसाति तीर्थंकर होइ। कूट प्रकास धाम शिव जोइ। हुंडा दोष जानि सुरराइ । जाय कूट पैंध्वज कराइ ! फुनि जिन थांन अमरपति गयौ। जान्यौ जन्म सफल अब भयौ। जोनर कूट वंदना करैं ॥

स्वभ्रम सूं बिबगाति परि हरैं। सकल सिखर प्रणमैं जो कोइ। तिस फल बरनत अंतन होइ ॥ * सवैया *

ऐसे सिद्ध क्षेत्रसु कर्म जोग पाइयेत होइ मन सुख जिन पूजा क्यौंनैं कीजिए॥ गेह देह नेह धन जोवन सकल इह चंचला समान छिनक एक मांहि छीजिए। रागदोष त्याग मन समभाव आनि उर संघ कौं चलाइ बहु जनदान दीजिए। फेरि न मिलैगी दांव जांयगे नरक जब सिखर कूटवंदनिज भौ सुधारिलीजिए।

## * दोहा *

सिखर महातम बरनियौ ॥ लोहाचार्य विशेष। मन सुखउदधि सुकथन करि। सुफल जन्म निज लेख।

इति श्री काष्टा संगे लोंहाचार्य विरचंत तीर्थमहातमेखुसमेदाचल महात्म्ये भापायामन सुद्ध सागरेण वरणनं २३ ॥

## * सवैया *

सुख करन हार हरत दुख संकट के सेवत धरनेंद्र। चिन्ह चीनोहैं। अस्वसेन तात मात वांमा नामा देवि सुभ बाना रसी नगर मैं जन्म शुभ लीनो हैं। सजल जलद तन वरन वरप सत आयु नव धनुप तन ऊंचौ कहि दीनौहैं ॥ ऐसे पार्श्वनाथ मनसुख सिंधु सुख दायकर जुगजोरि कैं नमस्कार कीनो हैं ॥

## * दोहा *

ऐसे पारस नाथ प्रभु ॥ सेवत संकट जाय ॥ तिन गुनकथन चरित करि ॥ हिए हर्ष उपजाय ॥

## * चौपाई *

जंबूदीप परधान। लखजोजन विस्तार बखान ॥ मध्य सुदर्शन मेर निवेक ॥ उन्नत जे जन लाख सु एक ॥ ताके दक्षिण क्षेत्र सु लसैं ॥ भरत नाम धनुपा कृत वसैं। तहां खंड छह सोभा देत। परम धर्म्म सुख कारन हेत ॥ आरिज खंड मध्यमैं सार ॥ आरज जन उपजैं सुख कार ॥ धर्म्म ध्यान ते साधन करैं।

सिवरमणी रामा कौं बरैं। नाना देस बसैं बहु भांति। मानौ अमर लोक की पांति। जहां जाइ समोसरन जिनेंद्र॥ सेवत सुरनर खग धरणेंद्र। पुरपट्टन कर्वट सो भंग॥ षेट गांव कहि लहूं न अंत। तामै कोसल नाम सुदेस। इति भीति दुख होइ न लेस। बन उपबन सोभैं बहु पास। पंथिक छुधिगतनपूरै आस। कुंवा बापिका निर्मल नीर। सरबिहंग सोभैं बहुतीर। बारिज करि छादित सुखदाइ। पिए मिष्ट जल जन हरषाय। पुष्प पराग मधुर झंकरैं। मानो देससुजस उच्चरैं। तहां तरंगिनि शुचि जलधार। बहै प्रभाव महासुखकार। तटनी तट मुनि ध्यान धराइ। निश्चलांग आतम लौ लाइ। श्रावक जन आवैं तिसपास। सुनैं धर्म्म करि चित्तहुलास। अधिक सुसोभा कही न जाइ। इंद्र जन्म चाहैं तहां आय। नगर विनीता सोभैं तहां। बरनन करत मोहि बुधि कहां। सजल षातिका च्यारौं वोर॥ तिन तट नृत्य करैं शुभ मोर। पुष्प बाटिका सोभा घनी॥ सुमन जात बहु जातन गनी। तहां सरोवर त्रिविधि प्रकार॥ तिन तटतर बर अति सुखकार। मुनि आगम होइ तिस थांन॥ केवल बांनी करैं बखांन। सोपुरजन पूजन उर हार। बस्त्राभूषण बहुत समार॥ आइ अचिर पद धर्म्म जु सुनैं। जीवां जीव भेद हिए मुनैं॥ च्यारिप्रकार दांन कर सुखी। कोई न बदन पीतम भय दुखी॥

*** सोरठा ***

सोभा अगम अपार बरनत ग्रन्थ बढ़ैं बहु। आगैं सुनि बिस्तार॥ कारय मात्र कहि लीजिए॥

*** सवैया ***

बज्रबाहु भूपति नगर मांहि राज करैं बंस हैं इष्याक अति नीति सुखदाइ हैं। सुंदर सुतनु सुभ छबि राजत हैं देवा गुरू ग्रंथ कहिए भावनां सुभाई है। प्रभा करि नांम तिया पिया सिय उनहार तेई दोन्यौं दंपति सु प्रीति उपजाई हैं। भोगत सुभोग बहु धर्म्म मैं लीन नित ऐसी राजपदवी सु पुन्य

जोग पाई है ॥

**❋ दोहा ❋**

एकदेव अहमिंद्र पद आयु पूरन तजि आइ। प्रभा करी के गर्भ में। थिति कीनी सुखदाइ॥

**❋ सोरठा ❋**

पूरन गर्भ प्रमांन। सुदिन महूरत शुभ घरी। प्रसव पुत्र गुणखांनि ॥ मांन अनंद कुमार इम।

**❋ चालछन्द ❋**

आनन्द नांम सुत जायो। नृप देखि महासुख पायो॥ दुति चंद कला समवालैं। दिन दिन बाढैं सुख मालैं। अति तेज सुलक्षनधारैं। देखत सबजन दुखटारैं। वल वीर्य बर्मे शुभ देह। उपजावैं अधिक सनेह। गुन बरनत पार न लहिए। बुधि अल्प कहौं किम कहिए। जेवन तन देखि जु तात। बहुतैं हिय में हरषात। अति सुंदर रति समनारि। व्याही आनन्द कुमार। क्रमसों पद जनक को पायो।

**❋ दोहा ❋**

मंडलेश पदवी लही। पूरब पुंन्य नियोग। नवैं आठसैं छत्रपति। सुखकरि भोगैं भोग॥

**चौपाई**

एकदिन सभा मध्य थिति राइ। स्वामी हित मंत्री सुखदाइ कहै सुनौं नृपमो बचसार। ऋतु बसंत सब जन मनहार। नंदीसुर पूजा चित धरो। पूरब कृत पातिग सब हरो। सुनिआनंद नृपति सानंद। जाय जिनंद निरखि पदवंद। सुद्ध द्रव्य बसुभाव समेत। पूजा करि बोयो सुभ खेत॥ फुनि नृप मन शंका इक भई। प्रतिमांधात उपल निरमई। रूप अचेतन क्यौं सुखदेइ। संसै नृप निज चित करेइ॥ विपुल मतीगण धर तटजाय। निज शंसैं पूछैं नृपराइ। गणधर कहैं सुनौं नृपभूप। जिनपूजा फल अदभुतरूप। जैसे भाव करैं इह जीव। तैसे फलको लहैं अतीव। अमरवृक्ष जानैं फलदेइ। चेत न रहत

सरूप कहेइ । चिंतामन मनचिंतत करैं । सोजडत्त पदवी कौं धरैं ॥ सुद्ध सरूप बिंब अवलोक । सुद्ध भाव उपजैं गत सोक । सोवह शुद्धभाव परभाव । सुखउपजावन कारन चाव । बीत राग गुन गर्भित लसैं सो सुभाव आतम मैं बसैं । सोई इहफलदेइ मनोक्ष । इहकारणहिं सबसुखजोग । सुनि राजा हिए संसैंगई निर्मलबुधि नृपतिका भई । नमस्कार करि निजग्रहजाइ प्रतिदिन पूजा रचिहरषाय । राजाकियो बहुदिवस नरेस । मस्तग देख धवलजु केस । निजमनमें जान्यौ इमकेतु । भयकंपाते मानौं दुखहेत । जेष्ट तनय सिरदीनो राज । करण बिचारयौ आतम काज । सागरदत्त तपोवनधरी नमस्कार करि बैठो तीर । धर्म्म श्रवनकरि दुविधि प्रकार । लख्यौ अथिर सब जगसंसार । बहु नृप संग महाब्रतलेइ । तेरह बिधि चारित्रधरेइ । तपकरते आनंद मुनीस । जेष्टमास पर्वतके सीश । बृषाकाल बृक्षतल रहैं । अचल अंग सुभध्यांन सुगहैं । सीतसमैं तटनीतट जाय । जोग धरैं निज चित्त लगाय ॥ रत्न त्रयजुत हैदस भेद । धर्म्म धरै पालै बिनखेद । द्वादस बिधि अनुप्रक्षा भाइ । तप द्वादस बिधि करैं सुभाय । खोडस कारन करैं बिचार ॥ तीर्थंकर पदवी दातार ऊंच गोत बांध्यौ सुख कंद । इस बिधि तपै मुनी आनंद । एकदिना सुक्षीर बनाइ ॥ निश्चल ध्यांन धरयौ मनलाइ । पूर्व सहोदर चर रिपु एक । सप्तमभू दुख सह्यौ अनेक । सोचर बाहन उपज्यौ आय । पंचानन की देह धराय । देखि मुनी कोप्यो बिकराल । लाल नेत्र मुखबक्र जुकाल ॥ आइ अचानक ग्रीवा गही । सब उपसर्ग सह्यौ मुनिसही ॥ करि प्रनांम निहचल धरधीर । निर्मल गुन साधी निजसार ॥ प्रान तजे सुभ भाव समेत । आनंत स्वर्ग परम सुख हेत ॥ उपजत अंतमहूरत सार । जोबन तनसुभ लक्षण धार । बीस उदधि परमायु प्रमांन । सुख सागर मैं मगन बखांनि । बीस यष्यगत सासोसास ॥ सुरभि सहत लेवैं गुनरास । बिंसति सहस बर्ष जबजांहिं । मांनसीक आहार कराहिं । पंचम नरक अवधि

परवांन । करैं बिक्रिया तहां लग जांन । देवांनेत्र कमल दिनराइ । तिनसहै भोग करैं सुखदाइ। इंद्र नांम अहमिंद्र उचार । बिबिधि प्रकार करैं सुखसार । आयु मास पट द्रव्य जुलेख । जिनवर पूजा करैं बिवेक । पंचानन मरि नरकहि गयौ। मुनि उपसर्ग महादुख लयौ ॥ मुनि श्रेणिक अहमिंद्र नरेस । जिनथानक तीर्थंकर देस ।

*** दोहा ***

सो बरनन मनलाइ कैं । सुनत हर्ष उपजाइ ॥ जिनकी थुति पूजा करैं । सुरपद सिवपद पाइ ॥

*** मोती दांम छंद ***

सुंदर इह जंबूदीप मनोहरं । परम सैल सुदर्शक भासुरं ॥ जामदिसाता सुक्षेत्र बिराजितं । भरतखंड सुषट प्रबिराजितं । सरपमांन मलेछ जनाव्रतं । प्रथम आरिज आरिज आव्रतं । लसन्तदेस अनेक जनाकरं । जिन बिहार पवित्र सुभाकरं ।

*** चौपाई ***

तहां सुकासी देस अनूप हैं । सकल मालव अधिक सरूपहैं ॥ पुर पुनीति बनारसि सोहती । धन सुध्यांन सजन मोहती ।

*** दोहा ***

अश्वसेन नांमां नृपति । राजकरैं सुखदाइ । बामीदेवी नारियुत । अधिक प्रीति उपजाइ ॥ शक्राग्या धनपति तहां । नगर आशु सुभकीन ॥ पंचाचर्य करै जहां ॥ तीनलोक सुखलीन ॥ अशितद्वैज वैसाखकी । नखत बिशाषा जानि । सो अहमिंद्र चरगर्भथिति । संपुटसीपसमांन ॥ मुक्ता जिमतिष्टै गर्भ अतरीख जिनराइ ॥ कुभव्योम ज्यौं कुंभमें । लखिए व्योम सुभाय ॥ पछिम निशि षोडस सुपन । लखि फुनि पति ढिगजाय ॥ फल सुनि मन हरषत भई । बांमां अंगनमाय ॥

*** चौपाई ***

देवी सेवकरैं जिन माइ । अति आनंद महा सुखपाइ ॥ बीतेहैं नव मास अनंद । जन्म महोछव सुनि

सुखकंद । पौष मास सुभ अलिपक्ष धारि । एकादसमी तिथि कहि सार । बांमां देवी दिसि पूर्व जांन ॥ उदयादि अस्वसेन बषांन ॥

## * पद्धड़ी छंद *

मति श्रुताकिरण बलि अवधि भास । जिनचर सुभानु तम मोह नांस । उदित त्रिभुवन परकास कर्न सतइंद्र आइ जिसनमत चरन । आयौ तब सचि पाति हरषाय। जिनवर लै सुर गिरि सिखर जाय । मंजन पूजा बिधि सकल साधि ।पारस संज्ञा कहि जिन अराधि । फुनि ल्याए कहै करि अंब देइ । तांडव नट मघवा तवइ । सुर सेवन ताजि निज थांन जाइ । ऐसे शुभ जोग जुसुख कराइ ॥ दंपाति लखि श्रीजिन तन मनोग । इक सहस अधिक बहु चिन्ह जोग । उत्सव पुरमैं बहुभांति कीन । जाचिग जन मन बंछित सु दीन ।

## * चौपाई *

बाल अवस्था श्री जिन पास । नरनारि जिन पूरैं आस । लीला करैं मंजनं मनहैं । सब जन देखि चरन प्रभु धरैं । सुर नारी जिन अंकै जेइ । जैजै करि माता करदेइ । सुर अपनी वह सक्ति उपाइ । श्री जिन हिए आनंद बढ़ाइ । करैं अनेक बिबिधि विधि ज्ञान । बाल पन क्रीड़ा इम जांनि । आगे जिन कुमार पदधारि । और कथा सुनिए सुखकार । वह पंचानन पंचम नर्क । जासहे दुख रहित जुतर्क । सत्रह सागर आयु महान । भक्ति निकरि तिर्यंच बखांन । जलध तीन बीते इसरूप । महीपाल पुर हूवो भूप । महीपाल अभिधांन जुगही । जिन जननी को जंनक जुसही । रानी मृत्य देखि दुख कियौ । दुर्मति तपसी ब्रत गहिलियौ । पंचानल साधत सो आइ । नगर बन शिवन तिह थाय । सुर गज चढ़ि जिन बनमैं गए । क्रीड़ा करत हर्ष उरभए । करि बिहार ग्रह आवत जबैं । पंथ मध्य तपसी लखितबैं । कोपयुक्त इम वचउच्चरैं । अहो कुमार अति मान जु धरैं । मेरी सुता पुत्र इहसार । मोप्रमांण क्योंनाहीं धार । इमकहि करि

कुठार लै सोइ। दारु खंड नै जिनवर जोइ ॥ कहै पाश सुनि तपसी धीर । इह जुकाठ ताकौं मति चीर ॥ जुगल नाग यामैं सुख करैं । सो ततकाल दुःख लहि मरैं । इह सुनि कहै बड़े सुरज्ञान । ब्रह्मा विष्णु रुद्र तुम जान । ऐसो बचन कहि चीरन लाग । खंड भयौ तन उरध अभाग । जिनवर देखि दया मन लाइ । पंचसुपद तिन श्रवन सुनाय । तिस प्रभावजुग ते भुजगेंद्र। पदमावति हूये धरनेंद्र । धन्यभाग उन सर्पनसार। अंत समैं जिन दर्श निहार । लज्जित ह्वै तपकरि बुतप्रान। जोतिग देव भयौ सोजान । प्रभु निज सौध आइ सुख करैं । पंचअणुव्रत हिए मैं धरैं। जिन तन सवगद रहत बखान ॥ वाय पित कफ को पनठान । इष्ट बियोग न कबहूं होइ। और आनिष्ट संजोग न जोइ।

*** दोहा ***

तीन लोक पति जगत प्रभू । जो सोभागुन युक्त। सो पूरववत जानि फुनि । कहे दोष पुन रुक्त ॥

*** चौपाई ***

अति सुख करि वासुखहु गए । त्रिशत सब्द जिनेसुर भए । तब नृप एक अजोध्या भूप । संज्ञा जिस जैशेन अनूप । भक्ति प्रीति जिनकी हियधारि । भेट बस्तु हयभेजेसार । आइ दूत अस्तुतिबहु करी ॥ भेट बस्तु प्रभू आगे धरी । श्री जिन पूछैं अवधि सुथान । दूतजोरकर करैं बखांन। प्रथम आदि जिन बरनन कियौ । मुक्ति गमन बिबरन कहिदियौ ।सुनि पारस प्रभु प्रशमन उपाय । मानुष भव इह योंहीं जाय ॥ ए दुख दाई हैं सबभोग ॥ आतम काज करन अब जोग । प्रभू मनमैं इह भावन भाइ ॥ लौकांतिक देव तव आय ध्याय ॥ थुति बहु बिधि करि निजपुर गए ॥ बिमल सिवका ल्यावत भए ॥ इंद्रचढ़ाय सजिया जिन जबैं ।! अश्वनाम बनपहुंचे तबैं ॥ जात रूप धरि जिनवर देह । इंद्रनल माणि तेज सु एह। दुविधि परिग्रह ताजि तिसिबार ॥ नमः सिद्धेभ्य मुखउच्चार। पंचमुष्टिक चलौंचन करैं ॥

पंचमहाव्रत दिढ़ करधरैं ।

## * सोरठा *

इह धीरज अब लेइ । तीन सतक नृप छत्रपति । ब्रत धारयौ हैं सोय । श्री जिनपद परनांम करि ॥

## * दोहा *

पोह कृष्ण एकादसी । प्रथम पहर शुभवार । कंजाशन श्री पार्श्व प्रभु लीन आतमा सार । शक्र क्षीर निधि जाइके । कच प्रवाह करि लेइ । निज नियोग कल्यांनकर । गमन सुथांन करेइ ॥

## * अडिल *

बेला करि उपवास देह थिति कारनैं । ईर्यापंथ बिलोकि गमन करि पारनैं । गुलम षेट पुर जाय नृपति ग्रह अभिमुखे । ब्रह्मदत्त बहुभाग भूपति जिनवर लखे ॥

## * दोहा *

सन्मुख ह्वै करजोरि नमि । अस्तुति करै हरषाइ । नौधा भक्ति सुगुन सहित । पाडि गाहे जिनराइ ।

## * सोरठा *

प्राशुक लै आहार । अषैं निद्धि सुख उच्चरैं । सुरगन हर्ष अपार । पंचाचर्य तहां करैं ॥

## चौपाई

गहन आइ लागे निजध्यांन । महा घोर तप तपैं महांन । बन आहिछत नगर तट एक । लता बृक्ष नग सहन अनेक । तहां पार्श्व प्रभु अविचल अंग । कायोत्सर्ग रहित सब संग । धरयौ ध्यांन आतम रसलीन । कर्म करन बैरी दलहीन । कारन कल देस इक भयो । सो सुनिए ग्रंथन बरनयो । पूर्वक मठचरत तपकर एव । संबर नांम जोतिषी देव ॥ तिस बिमांन बिहरत बनआय । जिनपर छत्रोपम ठहराय । अवधि बिलोकि कोप अति भयो ॥ लालनेंत्र करि उपसर्ग ठयो । महाबात झंझा झंक करैं ॥ बृष महांन गजरसे ढरैं । घटा घोर घन गर्जत बहु ॥ चपल चलत चला चला

चला चहू । मूसल प्रमांन धार जल धार॥ बरषावैं उपलादिक भार । सरपस्यांम तन बरन दिखंत । लोपन लालजीभ ललकंत । अति फुंकार फुंकारैं झाल ॥ निकल महा अगनि समलाल । भस्म होय बन बेलि बिहंग ॥ निहचल हैं तहां श्री जिन अंग । सिंघ स्याल सूकर बिकराल । वानर व्याघ्र गजानन भाल ॥ मार मार करि शव्द प्रचण्ड । मत मतंग सोर कर चंड । और अनेक वैक्रिय धार । कर उपसर्ग महादुखकार । आसन तव कंप्यो धरनेंद्र ॥ तुरन आइ शिरनाय जिनेंद्र ॥ * दोहा *

निर्विकल्प प्रभू मन भयो । सप्तम गुण तिथि धारि । चेतन गुण निर्मल करन ॥ धर्म्म शुक्ल सुबिचार ॥

* चौपाई *

पद्मावती प्रभूतन सार । असन करण छत्र सुधारि । संबरदेव भज्यो भयमांनि । नरकबन्धकरि अति दुख खानि ॥

* दोहा *

क्षायक श्रेणी प्रभू चढ़े । मनधरि अति बैराग । गुनथांनक चाढ़े बार हैं । आतम गुन अनुराग । च्यारि घातिया नाश करि । प्रगट्यो केवल ग्यांन । पारस जिन छदमस्थ रहि । अष्ट एक परमांन । पौष कृष्ण एकादसी ॥ इन्द्रादिक सब आय । कल्यानक पूजाकरी । हिय मैं हर्षउपाइ । समोसरन धनपति सुरचि । भूमि मुकर समसार । श्री मंडप द्वादश सभा । हिए भक्ति अवधारि । सर्वसंघ षोडस सहस । गणधर दस गुणवन्त । च्यारि ग्यांनधारी सबैं । श्री जिन भक्ति धरंत । * सवैया *

ग्यांन के प्रकास लोका लोक कौं प्रकास भयो चेतन सुदग ग्यांन सतासुख धारी हैं । आठ प्रात हार्य बिराजमांन आठोंजांम ॥ छयालीस सुगुन शुद्ध काया अविकारी हैं । देश देश धर्म्म उपदेश देत जिनराइ सुचि निजगुन पर्याय के बिचारी है । ऐसो अरहन्त पद परम पुनीति जग सोवो भव्य

जीवतुमैं बिनती हमारी हैं ॥

*** दोहा ***

सेष आय इकमास जब । रही पार्श्व जिनराइ । तब सुमेरगिर शिखरपैं । प्रभव कूटपर आइ ॥ जोग ध्यांन करि सिव गए । भए निरंजन सिद्ध । निज अनुभूति अनंत जुत । लही आपनी शिद्धि । और कोडि इक मुनि तहां । पैंतालीस जुलाख । सहस सात सत सात दस ॥ मुक्ति गए श्रुतभाष ॥ प्रभव कूट सोहैं महत । जो बंदै मनधारि ॥ नरक पसु गति नासिकैं ॥ सुर नर गति संचार ॥ **चौपाई**

आगे एक कथा सुनि राय । प्रभासेन नाजि संघ चलाइ ॥ इसही आरिज खंड मझारि । अगर देस देसनि शिरदार ॥ गंधपुरी नगरी तहं एक । बसैं पूजा सब सहित बिवेक ॥ प्रभासेन भूपतिबडभाग । जैन धर्म्म मैं अति अनुराग ॥ शांतिजुसेना है पट नार । शील सुलक्षन रूप अपार ॥ दंपति भोगैं भोग महंत । जात न जान्यौ काल अनंत ॥ तिनकैं सुत उपजैं मरजाइ ॥ इह दुख नर नारी अधिकाइ ॥ एकदिन बन क्रीडा कौं गये । सोम सेनि ध्यांनी लखि लये ॥

*** दोहा ***

करजुग जोर नमोस्तु करि धर्म्म बुद्धि मुनि देइ । प्रश्न कियौ नृपकौं । सुनि मुनि बैन कहेव । जो तुम जात्रा शिखर की । करो नारि नरदोइ । बिंब प्रतिष्टारचिहुतहैं । तौ उत्तम सुत होइ ॥ कोट प्रोषधी ब्रत फल । तुम जानौं भवि लोइ । एक कूट बंदन करत मन बंछित सुख होइ ॥ इह सुनि कैं आयौ नृप गेह । जात्रा करन धस्यौ हिए नेह । देशदेश के भव्य बुलाइ ॥ चौबिधि संघ चल्यौ ले राइ । पूजा दांन करत तहं गए । सिखर सुमेर निहारत भए ॥ पार्श्वनाथ प्रतिबिंब भराइ ॥ करि प्रतिष्ठा हिए हरषाय ॥ और कूट सब पूजन कियौ । दांन आहारादिक नृपहि दियौ ॥ संचैं पुन्य कियौ बहु तहां । फुनि आयो जिन मंदिर जहां । राज करत बीते दिन स्वल्प । भावसेन सुत सुगुन अनल्प । जन्मोत्सव कीनो भूपाल । जाचिग जन

सब किए निहाल। क्रम क्रम वृद्ध भयो सुतसार। कीनौ पानिग्रहन बिचार। कारन पाय भयौ वैराग। अवकीजे आतम वैराग। इह संसार असार महंत। भ्रमत भ्रमत नहिं पायौ अंत

*** दोहा ***

राजा सुत कौं राज दे। श्रुत सागर सिरनाइ। पंच महाव्रत आदरैं। यासैं कर्म नसाय। तपकरि प्रभव सुकूट पै प्रजासेन मुनिराज ॥ और अनेक मुनीश जुत कीनौ आतम काज। जोनर नारी भावसौं ॥ जात्रा करैं नरेस मन बंछित फल पाइ। सिवलहै न शंसैं लेश लोहाचार्य आरज गुरु। कीनौं सिखरविलास। भाषा मनसुख सिंधु कहि ॥ पूगी जिन मन आस

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचंते तीर्थमहातम्ये सुमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुद्ध सागरेण वरणनं प्रभव कूटपैसे श्रीपारश्वनाथ मोक्षगमन २४ ॥

*** सवैया ***

सुमाति सदन भव कदन मदन हर सिद्धारथ जनक सुहाटक वरनहैं। त्रसला सुमात गात उन्नत धनुष सात बर्ष बहतरि सु थिति जु धरन हैं। पंचानन चिन्ह पर कुंडलपुरी बिष्यात ऐसो महावीर सिवसंपति करन है ॥ मनसुख उदधि निहार काल पंचम मैं और कोई नांहि जिन चरन सरन हैं ॥

*** दोहा ***

सन्मति सन्मति देत हैं। परम परम रसलीन। सरम सरम अनुभूति जुत। धर्म्म सुधर्म्म प्रवीन। महावीर के चरित को। अल्प कथन मन धारि। सुनि श्रेनिक गोतम कहैं। मन बंछित दातार।

*** चौपाई ***

छत्राकार नगर मनधारि। बसैं नारिनरसब सुखकार। धन धान्यादिक सोमालसैं। अतिगुणवांनसुजनतहं बसैं। सुर सम मनुष रूप अति धरैं। बनितासुर बनता दुति हरैं ॥ घरि घरि मंगल गीत बिलास बिद्यु

तडत नारी मुखहास । ऐसी सोभा नगर वखांन । बरनत श्रम उपजै मन आंन ॥ नंद सुबर्द्धन तहां को भूप ॥ सुंदर तन अति अधिक सरूप । धर्म्म बुद्धि धारक धर्मग्य । गुनिजनगुन जानन बहुतग्य ॥ दर्शन ज्ञांन चरित्र सुधार । निहचैं गुन निज हिए बिचार ॥ जाचिग जन सुद्रुम सम जांनि ॥ जिन पूजा बृत अति हित आंन । ग्रही कर्म्म षट साधन करैं । बहु विवेक पटना बिस्तरैं । बीरवती रानीजु न सार । सुंदर सुगुन सुलक्षन धार ॥ सुख मयंकतैं अति सोभाय । बरनत बहुत कथा बढि जाय ॥ तिन कि तनुज जन्म इक लियौ ॥ बंछित जनम न बंछित दयौ ॥ सुभ महूरत सुभ लगन निहारि । अश्व नंद अभिधांन सुधारि । क्रम क्रम बालकुमार सुभयौ ॥ प्रग्या प्रबल सुगुन जुतथयौ । इक दिन पौष्टिल गुर ढिग जाइ ॥ धर्म सुन्यौं अति हित मनलाइ । आगम अर्थ सुगुन मन जांनि । तिनैं करि परकास्यौ ग्यांन । प्रशम भाव हिए मैं लिये । परभव भाव सकल तजि दिये । ग्रंथ त्यागि जिन दिक्षा लई ॥ तप करि अति निर्म्मल बुधिभई । आराधनां ध्यांन धरि लेइ । कृत कर्म्मनि जलांजुलि देइ ॥ घोर बीरतप धीरज धरैं ॥ निज आतम गुन निर्मल करैं । अनसन अमोदर्य बिहिरंग । षट प्रकार तप करत अभंग ॥ प्रायश्चित बिनय मन लाइ । अभ्यंतर तप करत सुभाइ । षोडस भावन भावैं सार । निहचैं अरु बिवहार बिचार तीर्थंकर सुनांम को बंध । ऊंच गोत को कियौ प्रबंध ॥ सल्लेखन बृत निज मन धरैं । अंत समैं सुभभावजु करैं ॥ सोलम स्वर्ग अच्युत अभिरांम । निर्जर पति पद लहि सुखधांम ॥ पुष्पोतर बिमांन मन हरैं । अंतमहूर्त तरुनताधरैं । द्वाबिंशति सागर मित सही । लेस्या शुक्ल सहित तहां कही ॥ बाईस पक्ष बितीहैं जबैं । सुगभितस्वास लेइ शुभजबैं । ग्यारह अगुन बरस अंतरैं । मानसीक भोजन आचरैं ॥ सदा मनः प्रवीचार सुभोग । भोगैं भोग आपने जोग ॥ अष्टम अब निलग अवाधि निहारि ॥ काया

वैंक्रियां तहां लगधारि। तीन हस्त उन्नत तनलसैं। इसप्रकार सुभ सुरपुर बसैं। भोगत भोग काल बहु बीत। सुखसागर मैंमगन सुरीत। मास एक षट आयु प्रमांन। माला मुर्छित लखि जिय जांन। बिना सीक निज तन लखि लियौ। जिन पूजा करनैं चित दियौ। सुभ सुभाव चित अति बैराग। भोग प्रमांण किए सब त्याग॥

*** दोहा ***

बरनन कर जिन अवतारकौं। सुनौं मगधपतिईस॥ अंतम प्रगट जिनेंद्र प्रभू। गुनगाउ नमि सीस।

***चौपाई***

जंबूदीप मनोहर सार। भरतक्षेत्र इहअति सुखकार। आरजखंड बिदर्भ सुदेस। बसैं सुजन जन उत्तिम देस। कुंडलपुर नगरी इक बसैं। अति अद्भुत सुंदरतालसैं। सिद्धारथ नामां भूपती। राज करैं राजा सम कितो॥ त्रमलापट रांनी मनहार। गुन गर्भित सुभ लक्षन धार। मनईसित नारी पति जदा। इंद्रअवधि करि जांन्यौं तदा।

*** दोहा ***

सिद्धारथ नृप गेह तुम। जाउ धनद मनलाइ। नगरी रचि मणि बृष्टि करि। शक्र कहैं हरषाय॥

*** सोरठा ***

आज्ञा निज सिर धार। आइ नगर रचना करी। कोटि सार्द्धशतसार। दिन प्रति मणि वरषाकरैं॥

*** दोहा ***

रससिति मास बितीतियौ। मंगल नृत्य सुगान। सित अषाढ़ खष्टी स्वस्वनि। ऊषानक्षत्र बखान॥ पश्चिम निसि षोडस सुपन॥ लखे महा सुखकार। गज सुख प्रविसत अंत मैं सोच्युतेंद्र थिति धार॥

*** चौपाई ***

प्रात सूर्य शुभ शब्द अपार । जैजै रव बहु जनउच्चार । तिन करि जिन माता प्राति बोध । उठि अंजन करि काया सौधि । लई सहचारी संमि अनेक । मृदुबानी युत हिए बिबेक । पति के निकट जाइ हरषाइ । अर्द्धासन थिति दीनौं राइ करि । आलाप परस्पर जबैं । आगम कारन पूछो तबैं । पहर एक निशि अंत प्रमान । षोडस सुपन लखे सुखदान । तिनके फल जंपो मनधार । सुनत श्रवन हित तन मन हार । अवधि चक्षु सिद्धारथ भूप । लखि बरनें फल अधिक अनूप । तीनलोक मंगल सुखकरन । सेवैं आइ सुरासुर चरन आतम उपजै अति सुखकार । आतम काज करि सिवपद धारि । सुनि तृशला देवी सुखपाइ ॥ निज गृह गमन कियो सुखदाइ । शुभमन सापित बुध समेत । आए गर्भ कल्यानक हेत । थापे सिंघ पीठ दिपती । करि अभिषेक हरप सुरपती बस्त्राभरण भेट बहु देइ । निज निज थांनक गमन करेइ ॥

*** दोहा ***

सित अषाढ़ खष्टी शुदिन ॥ ऋषि जुज्जखानाम । गर्भ कल्याणक आइकैं ॥ कीनौं पहिले थांम ॥

*** चौपाई ***

श्रीह्री धृति देवी मनलाइ । कीरति बुधलक्ष्मी हरषाइ । गर्भ सोधना सेवा करैं । श्रीजिन भक्ति हिए मैं धरैं । षट पंचास कुमारी सुरी । सेवाकरन रहैं आतुरी । अन्य देव बनिता तहं रहैं । बहु रस काव्य पहेली कहैं ।

*** सवैया ***

केई सुचि जल ल्याइ मंजन करैं सुभाइ केइ खड़ी नाना बिधि अंस लिए करमैं । केई बहु बिधि सूं करत बिबिधि रूप केई सु सुमन लाइ सेज रचैं सरमैं । केई अंग रक्षा करैं सुकरि दिखावैं केई एक नागबेलि देइ हार हिए हर मैं । केई काब्य रसकी पहेली पूछैं नृत्यकरि केई गुन गावैं सुसर्म जन दै घर मैं ॥

**❀ दोहा ❀**

इस विधि देवी सेवकरि ॥ जिनमाता हरषाय । मास जुनव बीते तहां । जन्मोत्सव सुनि गाय ॥ सित त्रयोदशी चैतकी। जन्मे श्री जिनराज। सौ धर्म्म साग मनकर। लेकै सकल समाज॥ ❀ **चौपाई** ❀

चतुर निकाय देव पति युक्त । आए जैजै रव मुख मुक्त । सची ल्याय जिन पति करदेइ ॥ गज चढाय निज हरष धरेइ॥ सुरगिर जाइ सची पति जवैं ॥ क्षीरोदिक जल ल्याए तवैं ॥ सहस एक वसु कलस मनोग श्री जिन राज नहनके जोग। करि अभिषेक पूजि जिनचर्न । भव अनेक पातिग के हर्न । फुनि आए कुंडलपुर बीच। जग मग पुर सुर मुकट मरीच । जिन जननी के अंके देइ । तांडव नृत्य जु सक्र करेइ । नगर महोत्सव तब अति भयौ । सुरपति जव निज पुरमैं गयो। सिद्धारथ नृप हरषंत । उत्सव करि कहूं लहुं न अंत । जिन बालक पद क्रीडाकरैं। नरनारी जनमन आति हरैं ॥ सरभऊ भेष धरैं मनलाइ । केकी कोकश रूप बनाइ । नृत्य ततालव धुनिधार । जिन गुन गान सुमुख उचार ॥ पावअटपटे जिन भूधरैं । घुटुवन चलत सकल मनहरैं। गले माल मुक्ता फल लसैं। कटि करिधनी कमर शुभ कसैं॥ हीराकनी जड़त किंकिनी। रुण झुण चरण होय रवधनी । करपल्लव मैं मूंदरी देइ । हिए हरष जन मन हर लेइ ॥ सुर वालापन भेष बनाय ॥ जिनवर संग केलि सुखदाय ॥ काव्य कला अरु श्लोक बखान। दृष्ट कूलवहु विधिमन्न आंन। अंतर्लपन छंद उच्चरैं। बहुरि लायका वहुविस्तरैं॥ सुर सुनिहर्ष हिएमैं धरैं। तदनुकूल ह्वै सेवाकरैं॥ दुतिय इंदु जिम कला प्रकास। क्रम क्रम जिनतन बढै हुलास ॥ भई कुमार अवस्था जवैं। पंच अनु व्रत धारे तवैं ॥ सुरमिलि अश्वरूप अवधार ॥ जिन चढाय वहु करैं विहार। चपल चाल छिन छिनक्रम वहै। जिम जिनमन तिम हय गतिगहैं। फुनि सुरगज संगार समेत। देखन सब जनमन हरलेत ॥

बस्त्राभूषण करि सोभंत । कर असवार सुजिन हरषंत । वनउपवन विचरैं मनलाइ । इस प्रकार सुर सेव कराइ । जिन क्रीडा जो करैं मनोग । सो को कवि पटु बरनन जोग

* दोहा *

सुरुगुरु शक्र नकहिसकैं । गण धर लहनपार । मंद बुद्धि अतिज्ञमैं । किम गुरु वरनौं सार । जोनग अतिमय मन गज ढाहन समर्थहीन । सोनग ससंक जुसि । सुवली किमढाहैं अति हीन ॥ बरस तीस इस विधि प्रभु । बालक्रीड सुखलेइ । मति ज्ञांन क्षयो पश महि । प्रगट पूर्व भव जोइ ।

* चौपाई *

लखि पूरब भव श्री जिनराज । चित बिरक्त परनंम समाज । छिनभंगुर जांन्यौं संसार । अंजुलजल विनशत नहिं बार । अथिर देखियत सब जगरीति । निज आतम सौं करिए प्रीति ॥ इह जबलगि चिंतैं जिनराइ । लौकातिक सुर तबही आय । करमु कलितकर अस्तुति करैं । बारबार चरनन में परैं होजिन जग तुम तारनहार । तुम बिन को इह करैं विचार । धर्म्म जिहाज प्रकाशन बीर। जग जल निधि तुम तारनतीर ॥ तुमबिन जगत जीव दुखलहैं। लौकांतिक सुर थुति इम कहैं ॥

* सोरठा *

फुनि निज थांनक जाइ । ब्रह्मलोक बासी अमर । चरचा करैं सुभाइ ॥ द्रव्य छहौंनिर्णैं नियत ॥

* चौपाई *

शक्र इंदु प्रभु सिव का ल्याइ । प्रशम युक्त जिन राज चढाइ ॥ गए खंडवन श्री जिन देव । नर खग करत सुरासुर गेह । परिगहपरि हरवीर जिनंद ॥ अघहरन कर्म अरि फंद । नमः सिद्धेभ्यः आननयो ॥ पंचमहा ब्रत जिन गहिलियौ । पंच मुष्टिक चलौंचन धार । निज गुन ध्यांन लगे सुबिचार । सुरपति तप कल्यांनक क्रियौ । अस्तुति करि बहु हरषित हियौ ॥ कचमणि भाजन धरि सुरराय । क्षीरोदधि परवाह

कराइ ॥ निज पदथान जाइ सुखकरैं। जिन पूजा बहु विधि विस्तरैं। * दोहा *

मागशिर दसमी कृशन शतहस्त रिषि शशिवार नगन दिगंबर रूप प्रभू। लियौ महातप सार ॥ व्रत बेला जिन राज कर। अशन ग्रहन के हेत ॥ कुंडलपुर परवेस कर। ईर्यापंथ चितदेत * चौपाई *

कुंडल नांमां नृप लखि महावीर। भक्ति सहित ह्वै आयौ तीर ॥ तिष्ट तिष्ट प्रभू प्रासुक अन्न। जल प्रासुक तुम जगमैं धन्न। चरन प्रछाल अरच बहुदर्व। जन्म सुफल निज जांन्यौं सर्व ॥ क्षीर भक्ति अक्षय निधि चवैं ॥ जै जै आरव बहु सुर रवैं। पंचाचर्य अमर मनलाइ। नृप ग्रह करैं अधिक हरपाय। दुगुन सार्द्ध षड रत्न सुइष्ट। माहिमां कहिकहि करैं सुविष्ट। * दोहा *

जिन आहार करि बन गए आतम गुण मनधारि। निश्चलांग करि ध्यान धरि। परम प्रीति सुखकार ॥

* चौपाई *

धर्म ध्यान मन करैं विचार। विविधि भांति तप तपै सुचार। मन पर्यै उपज्यौ तत्काल। हीन भई भव भूमन कुमाल। दर्शन ज्ञान चरित्र विशेष। सब दूपन तजि कर प्रति लेख। घोरवीर चर्य्या तप करैं। माहा बरपातें उचरैं। सन्माति धरी हिये प्रभुधार। सम्माति नांम कहैं संसार। दिन दिन बढती पदव जोइ। वर्द्ध मांन कहते सब लोइ। * दोहा *

सब जिनेंद्र के अन्त मैं। जनमे तीरथ नाथ। यातैं धर्म जनेस सुनि जपैं जांनि शिवनाथ। द्वादस वर्ष प्रमांन प्रभु। रहे छद्मस्थ अखण्ड। फुनि केवल ज्ञांनी भए। तीन भुवन मार्तंड। आप सुरा सुर्नरपसू। विपुलाचल बनथांन। दशमी सित अषाढ़ शुभ। कीनौं ज्ञांन कल्यांन। सर्वसंघ चौदह

सहस ।। गणधर ग्यारह जांनि । विद्यमान सो तीर्थ पति। वर्द्धमान अभिधांम। आयुषा को अन्त लहि । यही शैल के शीस । बिपुल कूटपर ध्यांन धर । होइमुक्ति के ईस ॥

*** सवैया ***

एक जिनराज शिवथांन मन बचन काय भाव सेती जात्राकर शिवपद लहै हैं । शिषर सुमेर बीश जिन शिवपद लह्यौ औरहू अशंख मुनि सुस्वभाव गहे हैं । ऐसो क्षेत्र नर्कतिर्यंचगति कभौं न जाँ जायतेई जीवजे अचल पद चहै हैं । बिना पूर्व पुन्य ऐसे क्षेत्र मैं न जाइ जीव मनसुख सिंधु धुर जांनि ऐसें कहै हैं ॥

*** दोहा ***

इह बिधि शिषर बिलाश की । रचना सुनि मग देस । करि प्रनांम निज ग्रहगयो । संसैरह्यो न लेस । कल्यांणक चौबीस जिन । बरन्यो शिषरविलास । भाव सहित जात्रा करैं । लहैं मुक्ति बिधि नांश । भाषा सिषर सुमेर की । सुनैं निरंतर सोय । नरपद सुरपद सौं लहैं । मन बंछित फल होइ ॥

**चौपाई**

मूल ग्रंथ करता महावीर । फुनि गोतम श्रेनिकते हितधीर । ग्रन्थकार तदनुतर जांन । निजमन चितदे सुनौ सुजान । काष्टा संघ जैन आमनाय । मथुरा गछ भव्य सुखदाय । पुष्करगण गुरु मूल बखांन । लौहाचारिज कृपा निधांन । तिनके पट्ट बहुभए जे जती । ह्वै निरग्रंथ भए सिवपती । महीचन्द गुरु उपजे संत । तिनको पट्ट माहा गुनवन्त । दीपचंद फुनि भए गुनज्ञ । सकल कला जल निधितज्ञ । तिनके पट्ट भटारक एक ॥ बिदित भए जग सुगुन अनेक । इंद्र प्रस्थ पद पदवी धार । नांम गुलाल कीर्ति सुखकार । तिनके शिष्य ब्रह्म ब्रतवांन । हैं संतोष जलधि अभिधांन । सिष्ट मिष्टवादी गुनवंत । सबबिद्या निधि महत महंत । सकल शास्त्र पाठी सुखधार । भबिजन धर्म्म प्रकासन हार । जथानांम

आतम सुख दाइ ॥ लोक पाल जिन भक्ति समेत । आए प्रसम दिढाउहेत ॥ तुम बिन कौ अैसी चित धरैं । तुमबिन कौ दुर्द्धर व्रत करैं ॥ इम अनेंक अस्तुति चित लाइ । बिनय भाक्ति करि निज थल जाइ ॥ अमर नाथ सिव का सिव जोइ । ल्याय आय निज कियौ नियोग ॥ अटबी मध्य नाग तरुतलैं । तपलै सब दयातिग दलमैलैं ॥ सहस एक नृप दिक्षा लेइ । श्री जिन चरनन सीसनमेइ ॥

*** दोहा ***

जेठ मास सित पक्षजुत । दिवस द्वादसी जांनि ॥ श्रसुपार्श्व जिन देवकौ । भयौ सुतप कल्यांन ॥

***अडिल्ल ***

पूजा करि वसु भेद गए सुर नर सवैं ॥ प्रभु आतम लौं लाइ ध्यांन धारयौ तवैं । मन पर्यै सुभ ज्ञांन भयौ ततक्षण तहां ॥ करि बेला व्रत गए पुरी पाटल जहां । महीदत नृप देखि चरन सिर नाईयौ नौधा भक्ति बिचारि अहार कराईयौ । अरैं निद्धिकहि प्रभु जाइ बन तप लियौ । पंचाचर्य बिशेष नृपति ग्रह सुर कीयौ ।

*** दोहा ***

बरस अंग परमांन जिन । तप जुतरहि छदमस्त । च्यारि घातिया कर्मकी । करी प्रक्रति सब अस्त । केवल ज्ञांन सुभांन जग । अंग किरन परगास । निस मिथ्यात निवारि कैं । समकित दिन परकास ।

*** चौपाई ***

आए देव देव पद साथ । समोसरन रचियौ धन साथ । केवल कल्यांणक सुरराइ । करि पूरब सम निज पुर जाइ । फागुन वदी छठि सुभ बार । ग्यांन कल्यांनक श्री जिनधार । बिबिध देश बिहरे जिन भूप । करि उपदेश सुधर्म अनूप । आयु रह इक मांस प्रमांन । आए समेद सिखिरि भगवांन । जोग निरोध मौंन प्रभुगहे । कूट प्रभास ध्यांन धरिरहे । फागुण कृष्ण सप्तमी जांनि । इंद्र आइ करि सिव कल्याण ।

तनु संस्कार क्रिया कर तबैं । गए अरचि सुर सुरपति सबैं ॥ सो प्रभास बर कूट महंत । बड़े पुंन्य सौं इसलहंत । महिमां करत न पाऊ पार । लहि अनंत जिनपति सिवसार। लाख बहत्तरि तीन करोर । सात हजार सात सैं जोर । ब्यालीस मुनिवर मुकति जोगए । कूट प्रभास बिदित इमभए । सुनि मगधेस कूट फल कथा । एक बार बंदन फल यथा । कोट बत्तीस प्रोषधी सार । होइ बरत फल सुख अधिकार ।

* दोहा *

याही जंबूदीपमैं । भरत क्षेत्र सुख धांम ॥ आराजे खंड सुदेस तंह । नगर कुसंबी नांम ॥

* छंदपद्धडी *

उद्योत नाम राजा पुनीत । तहं राज करैं सुभ राज नीत ॥ जिन भक्ति यथावत हीए धार । सम्यक्त सहित धर सील सार ॥ नृप के ग्रह प्रीति मतीसुनारि । सब गुन लक्षन जुतसदाचार ॥ पूरब कृत पाप उदै नरेस । तन कुष्ट भयो भूपति क्लेष ॥ इक दिन दुखकरि बन गयो राय । मुनि चारन जुग तहँ ईसपाइ ॥ करमुकलित कर जुग नाइ सीस । बहु बिधि अस्तुति करि पुर पुनीस । पाछे रिषि सौं निज पूर्व पाप । मेरी पर्यायजो कहौ आप ॥ सुनिकैं मुनि बैंन कहे रसाल । अपनैं दुख फल सुनि नगर पाल ॥

* दोहा *

पूरब भव बरनौं नृपति सुनिलै यक चित लाय । याही को संबी विषैं । सोम दत्त द्विज थाइ ॥ प्रभा चंद्र इक सेठ तहं । धर्म्मवंत गुन वंत । ते दोऊ मिलि परस्पर । अतिसैं प्रीति करंत ॥ * चौपाई *

लै अहार मुनिवर बनगए । प्रभाचंद्र मन हार्षितभए ॥ सोमदत द्विजमित्र मिलांन। पूछैं मुनि अहारफल दान । सो बिद्या मद गर्भित रहैं । हास्य बचन मुख सौं इम कहैं ॥ जो नर मुनि अहार दै सोय ॥

कुष्ट ब्याधि तन पीडितहोइ । इहसन प्रभाचंद दुखपाय । छोडी प्रीति गेह निजआइ ॥ सोमदत्तनिंदक कहवाइ ॥ मरिकैं प्रथम नरक उपजाय । आउ परी तह सागर एक । लहे महा दुख हरति विवेक ॥ मुनि निंदा फल निज मन जांनि । पश्चाताप हिए में आनि ॥ क्रम क्रम करि सो पूरन आव । प्रणतजे राख्यौ समभाव ॥ आय नरक सैं नृप पद पाय । कुष्ट बिथु तुमरे उपजाय ॥ इहफलहैं मुनि निंदा तनौं । भुगतौ राव कियौ आपनौ ॥ इम सुनि नृप मनकंपित होय ॥ हाथ जोरि कैं बिनवैं सोय । एप्रभु दीनदयाल महंत । कहो जतन जिमि गदह्वै अंत ॥ सुनि मुनिकहैं सिषर समेद करो जात पूजो बसु भेद । कूटप्रभास गंधोदक लेऊ । संपूरन गद नास करेऊ ॥ मुनि हर्षितह्वै मुनि पद नयौ । बन सौंनिज पुर आवत भयौ ॥ च्यारि प्रकार संघलै साथ । जात्रा हेत चलो नर नाथ ॥ स्यांम बस्त्र पहरे तब भूप । पूजकरैं बसुभेद अनूप ॥ औषधि दांन अनेक बिस्तार । देइ अहार दांन । सुखकार । आतम निंदा निस दिन करैं । संग भक्ति बहु बिधि बिस्तरैं ॥ सिखर सुमेर गए इह रीति पूजा करैं परस्पर प्रीति ॥ संपूरन गिरि बंदन कियौ । अति उत्सव करि दांनजु दियौ ॥ कूट प्रभास गधोदक लयौ । ततक्षिन कोढ़ नृपति को गयो ॥ अति आनन्द हिए मैं ल्याय । फुनि फिरि निज ग्रह पहुँच्यौ आय । बहुत दिवस लौं राज करेइ । ह्वै बिरक्त सुत नृप पद देइ । सुप्रभ राज सुमगपग धरैं । नृप उद्योतक अति तप करैं । लाख बतीस संघ मुनि लेइ । नाना देश बिहार करेइ ॥ अंत आयु आए संमेद । गिरि पवित्र सोहैं बहु भेद । कूटप्रभास सीस पर जाय । केवल लहि शिव पदवी पाय । जो नर नारि बंदनां करैं । नरक पसू दोनोंगत हरैं । आंतिसैं कहत पार नहिं लहौ । सुलप बुद्धि कैसैं कर कहौं ।

धन्यभाग जो बंदै कोइ ॥ सुर नर गति ले सिव पद होइ ।

*** दोहा ***

लोहा चार्य्य कृत कठिन । अल्प बुद्धि इस काल । मनसुख जलधि बिचारि मन । भाषा रचीरसाल ।

इति श्री काष्टा संगे लोहाचार्य बिरचतेतीर्थमहातम्ये भाषायामन सुखसागरेण वर्णनं सिद्ध कूट भाषा सुपार्श्वनाथ मोक्षगमन अष्टमो परिछेद ॥ ८ ॥

*** सवैया ***

जिनकों नमत हैं गणेस और सुरेस सेस महा सेन जनक फटिक समेद हैं । सुलष्य नांमांत सोम पुर हैं बिष्यात जग दसलाख पूरव की आयु सब तेरह हैं ॥ उड़पति चिन्ह है चरन सेवैं भावसेती सढ्ढा एकसत चाप उचगुन गेह हैं ॥ ऐसे चन्द्र प्रभु सिवदायक नमत हम मनसुख सिंधु जिन चरन सों नेह हैं ॥

*** दोहा ***

चन्द्रा प्रभु चारित्रअब । बरनोंहिए हरषाय ॥ शिषरसैल परि सिवगये । तिस आतिसैं अधिकाइ । नोसैं कोटि उदधि गए ॥ श्रीसुपार्श्व सिवथांन । आय अमरपति सोम प्रभु कीनों जन्म कल्यांन ।

***चौपाई***

सुनि श्रेणिकइक चितमानि आंनि । पंचकल्याण करों बखांनि । दूजो दीपधात की खंड । सोहै वल याकार अखंड ॥ प्राचीनांम बिदेह महंत । सीता सरिता मध्यबहंत । ताके दक्षन नगर जो बसैं । अमरनगर की सोभा लसैं । नांम मंगलावती प्रसिद्धि । धन धान्यादि भरी बहुरिद्धि । तहां रत्न संचैपुर एक । बसैं नारिनर सहित बिबेक ॥ कनक प्रभु नृपराज करंत । अति प्रतापधर बहु गुनवंत । कनकावलि सुंदरि सुकुमार । पटरानीपति सुखदातार । नृप जिन पूजाबसु बिधिठांनि । अस्तुति पढ़ैं करैं गुनगांन । बृषभावनां अंगजुधरैं । बिनय भक्तिश्रुत गुरु की करैं । जाकै राज सुखी सब लोग । मन

बंछित कर भोगैं भोग। बहुत दिवस इहि विधि करिगए। पद्मनाभि नामा सुत भए। जौवन दाह पुत्र देराज। मनहि विचारैं आतमकाज। गए मनोहर बिपन मझारि। श्रीधर तीर्थ कराहि निहारि। करि नमोस्तु सुनि बृष दो भेद॥ मन विकल्प सब कियो उछेद। सीसनाइ ब्रत लीनों राइ। पद्मनाभि नृपराज कराइ॥ श्रवन नाभि तिनकैं सुत भयौ। जाचक जनमन बंछित दयौ॥ बालकुमार अवस्था भई। नृप पदवी राजानैं दई॥ श्रीधर निकटिजाइ सिरनाइ। लयौ चरित्र परमसुखदाइ। सिंवानि क्रीड़ित तप अतितपैं। पूर्व क्रत पातिग सबखिपैं॥ पक्षमास उपवास करंत। सुमति महाव्रत गुप्ति धरंत। षोडस कारन भा उनभाय। तीर्थंकर पद बंध कराइ॥ द्वादशानु प्रेक्षा चिंतयौ। गहि संन्य मरन सुनि कियौ। सर्वार्थ सिद्धि उपजेदेव। पूरब सम सब जांनौं भेव॥ सुनि श्रेणिक अब आगैं कथा। चंद प्रभु वर्नन हैं जथा। जंबूदीप भरत शुभषेत। कासीदेस ज़ु सोभा देत॥ चन्द्रपुरी नगरी इकबसैं। देवपुरी सम सोभा लसैं। महासेनि भूपति तिंहथांन। करैं राजपुरजन सुखदांन॥ रानी हैं सुलक्षनांनांम। पिय प्यारी गुनजुत अभिरांम। सदाचार धारी मनसंत। सील सिरोमनि लक्षिणवन्त॥

*दोहा*

सोपुर निजकर धनंदन। हरि आयस रचि लीन। सोपुर वर्नन करन कौ। मेरी बुद्धि मलीन॥ तीन काल वर्षा करैं। मनसुर अति हरषाय। आगमांस प्रमांन छह। सबजीवनि सुखदाइ॥

*सवैया*

एकदिन सुलक्षना सैन करैं मंदिर मैं षोड़स सुपन लखि लीनै निसि अन्त मैं। प्रात उठि तन सुचि करि सखीसंग लेइजाय पति ढिग पूछै सुपन जो संत मैं। सुनि महासेन नृपति अवधि बिलोकि कहैं जिनपति सुत उरजन मे महंत मैं। दंपति हरष मन करत सनेहधन इन्द्रआय गर्भ कल्यानक करतंत मैं॥

* दोहा *

चैत मास अलि आभ पखि दिवस पंचमी जांनि । सासि प्रभू गर्भ कल्यांन करि गमन करैं निजथांन।

* चौपाई *

गर्भ सोधनां करैं बिचार । सेवैं सुरी कुलाचल धार । षट पंचास कुमारी सुरी । निज निज काज करैं न आतुरी । अति मंगल मन हर्षित रहैं । दोहा छंद पहेली कहै। ऐसे कर बीते नव मास । जनमें जिन जग पूरन आस ॥ मघवा पूरब सम तहं आइ । जाय सुराचल नवन कराइ ॥ पूजा करि बसु बिधि थुतिकरैं । जै जै चंद्र प्रभू अघ हरैं ॥ सब निज काज साधि हरि गयो । चंद पुरी उत्सव भयो ॥ जिन बालक सुर सेव करंत । निरखि निरखि निज मन हरषंत ॥ माति श्रुति अवधि ग्यांन त्रयधार । परम पुरुष परमातम सार ॥ आयु पूर्व दश लाख बखान । कायड्यौ डसै धनुष सुजान ।

* सवैया *

तनसुद्ध फटिक समांन देइ । बसु सहस चिन्ह जुत सुगुन गेह । सिसुकेलि लाष पूर्व अडाइ ॥ वीते सुर सेव करैं सुभाइ ॥ माहासेन सक्र मिलि करि उछाह । करि पांनिग्रहन पुनराज चाह । साढ़ षटलाख जु पूर्वसार। कीनौं प्रभूराजसु नीतधार । इकदिन लखि उलकापात देव । छिन भंगुर जान्यो जगत भेव द्वादश भावन मनमांहि भाइ । लौकांतिक सुर पहुंचे सुआइ ॥

* दोहा *

अस्तुति करैं सुभाव सौं । धन्य धन्य तुम धन्य ॥ ऐसे कारिज करन कौं । तुमसम नांही अन्य ॥

* सवैया *

अहो तुम दीननाथ शिवपुर पंथ साथ तुम विन यह काजकरैं कौनजगमैं । पंच महाव्रत पंच सुमति

गुपति तीन चरित कौं धारि तुम ठाढ़े सिव मग मैं। तुम्हारी दयासौं सुख लहत जगत जन तुम बिन फिरत चौरासीलाख मग मैं। तुममन मांहिजो विचार सोईधरैं कोई मन सुखसिंधु मुक्ति लहैं एक उगमैं ॥

*** दोहा ***

इम बिनती करि लोक सुर। निज थांनक मैं जाइ ॥ शिव सुंदरि सिव कामधव। श्रीजिनवर बैठाइ ॥ राजा लै निज कंधधारि। सातपैंड लैजाय। पुनि बिद्याधर आपलै। इंद्रादिक बन जाय ॥ मल्लक तरु तालि चंद्रप्रभु। बस्त्राभूषन त्यागि। सहस एक नृप संगलै। आतम ध्यान जो लागि ॥ *** सोरठा ***

इंद्र कियौ कल्यान रितु ग्रीषम बैसाषमैं ॥ कृश्न एकादसि जांनि। पूजा करि निज पुर गए ॥

*** चौपाई ***

पद मासन जुग दिन परमांन। करि उपास भोजन चित आंन ॥ पदमषंड पुर करि प्रवेस। सोमदत्त नृप लखि मुनि भेस ॥ करि नमोस्तु आनन सौंचवैं। तिष्ट तिष्ट तिष्टौ मुनि अवैं ॥ नौधा भगति अहार कराइ अषे निद्धि कहि जिन बन जाइ ॥ पंचाचर्य भूप कै होय। जै जै सब्द करैं सुर सोय ॥ दांन अहार सुजस मन धरैं। मानि गंधोदित बर्षा करैं ॥

*** दोहा ***

बर्ष तीन छद मस्त। जिन रहे मोन व्रत लीन ॥ नाना बिधि तप जोगसौं। कीए घातिया छीन ॥ फागुण कृष्ण जो सप्तमी। केवल ग्यांन प्रकास ॥ तिम मिथ्यातं निसा प्रबल संपूरन कर नास ॥ सत मघवा मिलि धनद जू। संमो सरन रच लीन ॥ पूजा करि अति भक्ति सौं। अस्तुत करैं नवीन ॥

*** चौपाई ***

दतसैंन आदिक गुनि धार। सवतिरानवैं सोहै सार ॥ बानी परखैं तीनू काल ॥ सुनत नासैं

जग जाल। बिबिधि देश बिहरे भगवांन। दया धर्म को करत बखान॥ एक मास मिति आयु रहाय। सिषर सुमेद जिनेसुर आय॥ जोग रोधकरि मा भगवान। दयाधर्म को करत बखान। एकमास मिति आयुरहाय। सिषिर सुमेद जिनेसुर आय॥

* दोहा *

सकल सुरासुर ब्योमचर। आए अति हरषाय। भादौंसित अष्टमि दिवस। उत्सव फुनि जाय॥

* अडिल्ल *

कोडा कौडि मुनीस चौरासी जांनिए। कोडि बहतर लाख असी मन आनिए॥ चौंरासी हजार पांचसैं पच पनैं। ललित कुंभ सिर कूट मुक्ति लहि मुनि गनैं

* चौपाई *

नरक पसू दोन्यौ गति हरैं। एक बार जो बंदन करैं॥ सोरह कोटि बरत फल होए। जिन भाषित जानो भवि लोय।

* दोहा *

बंदत नर सुर गति जुलहि। सिव रमनी बस कीन॥ ताकी महिमां कथन कौं। मेरी धिखनां हींन॥ अब आगैं मगधेस सुनि। ललित दक्ष नृप बात। कूट बंदनां करत लहि। चारन रिद्धि अवदात॥

* चौपाई *

मध्य दीप जंबू बर नांम। भरत क्षेत्र तामैं अभिरांम। आरज षंड जोध तहं देश। इति भीति ब्यापैं नहिं लेस॥ सुर पुर नगर बसैं रमनीक। नर नारी सोभैं सुक लीक॥ अजित नांम राजैं भूपाल। दुर्जन बैरी उर साल॥ जोबन वंत भयौ सुत सार। दत जुसैन्या ब्याही नारि। कारन पाय भयौ बैराग्य। माह सैंन नृप पदवी त्याग॥ ललित दत कौं दे सब राज। बिपनि चले निज आतम काज॥ तप करिके केवल ज्ञांन उपाय। सिव पदवी पाई सुखदाय। ललित दत अवनी प्रति पाल। राज करैं सज्जन दुख टाल॥

एक समैं वन केलकरंत । चारन मुनि जुगलषि हरषंत । सींस नवाय धर्म्म सुनि राय । प्रश्न करै तब औसर पाय । चारन रिद्धिहोय किहि रीति । सो बरनन करिए करि प्रीति ॥ भव्य जीव लखि मुनिबर कहैं । जिस बिधि रिद्धि चारनी लहैं । जात्रा करो सिषर की जाइ । ललितकूट पूजो मन लाय । स्वल्प तपस्या तब आदरैं । चारन रिद्धि क्षिनक मैं फुरैं ॥ यह सुनि मुनि नृप बंदत भए । सीस नवाइ नगर मैं गए ॥

## * अडिल्ल *

संघ च्यारि प्रकार संघ लै आपनै । धर्म्म ध्यांन मन लाइ त्यागि कै पापनैं ॥ जाय सिखर के सीस ललित घट कूटपैं । अरचै श्री भगवंत करम गन टूटपैं ॥

## * दोहा *

फुनि आए निज नगर मै । कीनौ अति उत्साह । सुख भोगत नृप एक दिन । देख्यौ निज पुर दाह । ललित दत भूपति तबैं । भयौ हिए बैराग ॥ राज भार दे पुत्रको सर्व परिग्रह त्यागि ॥ तप करिकै दिन अल्प मैं । गही चारन रिद्धि ॥ केवल पद लहि कूटपैं । भए निरंजन सिद्धि ॥ सोई कूट सुमेर कौं । मन बंछित फल देइ । संपूरन गिरि की कथा । कौन कबीस कहेव ॥ महिमां सिखर समेर की । लोहा चारिज कीन ॥ मनसुख सागर श्रुति निरखि । भाषा रची नवीन ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोंहाचार्य बिरचतं तीर्थमहातमेंखुसमेदाचल महातम भाषायामन सुखसागरेण विरचितं सिद्ध कूटललतेभ्यो नवमौ परछेद ॥ ९ ॥

## * सवैया *

सुमुन रदन पदन मत अमर पति रामा देवी मात तात सुग्रीव बखांन्यौहै । किहकंदीपुर जन्म हाटक बरनत न एक सत धनुष उतंग तन मान्यौहैं ॥ मकर सु चिन्ह चरन दोय लाख पूर्व आयु सुर नर खग तीन

ऐसे पुहप दंत जिन मन सुख सिंधुनमि नरभव सुफल सुनिज मन आन्यौंहैं ॥
लोक पति जान्यौंहैं ॥

*** दोहा ***

सुमनरदनजन मैं सुजिन तिन प्रति हमरी धोक ।
निवैं कोडि जलधि गए । सोम प्रभु सिवलोक ॥ पंच कल्याणक सिषरिगुन बरनौ अति हरषाइ ॥
पुहपदंत जिनवर प्रणमि । सारद सीस नवाय ।

*** चौपाई ***

खंड धात की सोहैं सार । च्यारिलाख जोजन बिस्तार ॥ प्राचीनांम बिदेह सुजांन । सीता सरिता
मध्य बहांन ॥ ताकी दक्षन तट इक देश। जाकी महिमांकैं सुरेस ॥ नांम पुष्कलावति प्रसिद्ध । नाना बिधि
सोभित रिद्धि ॥ पुंडरीक नगरी तहँ बसैं । गेह गेह उत्सह करि लसैं । महाराजा राजा परचंड । करैं राज
दुर्जन अरिखंड । प्रजा पुत्र समपालैं भूप । दांन देइ जस लेइ अनूप । बिंब प्रतिष्टा श्री जिन गेह । करैं
च्यारि बिधि सिंध सनेह । पूजा रचैं करैं उत्साह । इह बिधि सौं नर भव फललाह । एक दिना बन गयो
नरेस । देखे मुनिवर खड़े सुभेस । नमस्कार करि बैठो राय । दुबिध धर्म्म सुनि अति हरषाय । सुत धन
दतराज नृप दियो । तेरह बिधि चरित गह लियो । अति तप करि पड़िगार अंग । चौबीसौं बिधि तजि
करि संग । षोड़स कारन भावन भाइ । तीर्थंकर पद बंध कराइ । करि संन्यास मरण तिंयें अंत । नाक
पन्द्र है देव महंत । उपजे बिमल देह दुति सार । अंत महूरत जोबन धार । साढ़ेतीन भुजा उतंग । सातौं
धातरहि सुचि अंग । सागर बीस तहां हैं आउ । लेस्या सुकल रहैं सुभभाउ । बीस हजार-बरस बींतत ।
मानसीक तहं असन करंत। दस दूने पषवारे गए । परिमल सहित स्वास जब लए । अवधि भूमि पष्टम
लौं होइ । काय बिक्रिया तहांलग जोइ । साततत्व चरचा मिलि करैं । जिन पूजा जिय मैं निति धरैं ॥

* दोहा *

आउरही षटमास जब ॥ सुभ उपजोग कराइ । सुन मगधेसुर जिन जनम । कथा परम पदपाइ । इसही जंबूद्वीप मैं ॥ भरत क्षेत्र अभिरांम । पाठ देश मैं नगर इक । काकंदीपुर नांम । राजा तहं सुग्रीव हैं । जयनांमां पटनारि । दंपति सुखबिलास बिपुल । करैं राज चितधार ॥ हरि आग्या धन देवलै । रच्यौ नगर जिन जोग ॥ करैं रतन बर्षा हरष । होइ सुषी पुरलोग ॥

* अडिल्ल *

जय रामा नृपनारि एक दिन सैंन मैं । षोड़स सुपन निहार पाछिली रैनि मैं । उठि प्रभाति बरनारि जाय पतिसौं कहै । बीतराग सुत हुंइ सुनै फल सुख लहै ॥ जबलौं रानी भूप परस्पर नेह मैं । तबलौं अमर सुरेस आइयो गेह मैं । थापि सिंघासन मात नहन बिधिवत कियो । वस्त्राभूषन सार चरचि हरषित हियो ॥

* दोहा *

फागुन मास असेत पषि । नौंमी दिवस निहारि । सुरनर खगामिलि गरभ थिति । आए हर्ष अपार ॥ पूजा गर्भ कल्यान करि । पुर मैं उत्सव ठांनि ॥ गयो देवपति थांन निज । करिकैं बहु बिधि ग्यांन । षट पंचास कुमारिका । सेवकरैं जिनमात । काव्य पहेली छंद कहि निसिदिन हिए हरषात । बीते हैं नवमास इम । आयो अगहन मांस । गर्भस्थिति पूरन भई । बाढौ परम उलास । कृष्णपक्ष हैं प्रतिपद भांन मूल सुषकंद । तीनजगत जन सुख करन । लीनौं जनम जिनन्द ॥

* चौपाई *

हरि आए ऐरापति साज । श्री जिननह्वन करन के काज । देवकरैं सब जै जै नाद । नंद बृद्धं कहिहै अहलाद । जिनवर अकल ईसुरईस । बारंबार नवाबैंसीस । गए देवगिरि देवअनंद पांडुक शिल पर थापि जिनंद । क्षीर समुद्र कलस भरवाय ॥ ल्याइ कियौ अभिषेक सुभाइ ॥ पूजा करि कज्जल दे नैन ॥ कियौ तिलक कुंकम

सुख दैन । वस्त्राभूषन भूषित अंग । रूप निराखि लाजै जुअंग । पुष्पदंत अभियांन उचार । लाय नगर जिन मंदिर सार ॥ मात गोद है निरत करंत । पूरब कृत सब पाप हरंत ॥ राखै सुर सेवक जिन जोग । जाय नाय भोगैं सुख भोग । दोय सहस पूरब जिन आय । धनुष एक सत उनतकाय । तनकी दुति कलधौत सुमान । बाल सहस पचास बखान ॥ भए तरुन सुग्रीव निहार । आये सुरपति हरष अपार ॥ उत्सव करि विवाह नरनाथ । राज छत्र फेर सुर साथ ॥ राज सिंह विष्टर पर देव । थापि हरषसों करै सुसेव ॥ इन्द्र गये निज थान कि जबैं । प्रजा नीति प्रभु पोषी तबैं ॥ बहुत दिवसलौं राज करंत । पालि अनुब्रत निज मन संत ॥ दिसावलोकन इकदिन करैं । उलका पात दिष्टि तब परैं ॥ है विरक्त अनुप्रेक्षा भाइ । लोकांतिक सुर पहुंचे आइ ॥ करि अस्तुति जिन जोग जिनंद । गए ब्रह्म पुर करत अनंद । सुरपति जिन शिवका बैठाइ । गए महा बन हर्ष उपाय ॥ वस्त्राभूषन तजि सबसंग । भए दिगम्बर नगन सुअंग ॥ सहस्र एक नरपति सत्र लेइ । ध्यान धर्यो आतम चित देइ ॥ मन पर्जे युत भये जिनेस । ठाढ़े अस्तुति करत सुरेस ॥

*** दोहा ***

मार्ग सीर्ष है सेतपक्ष प्रथम दिवस अभिधान । तप कल्यानक करतबैं गए आपने थान ॥

युग्म दिवस ब्रत ध्यान धरि उंठ पारने हेत । चित हरपुर सुर मित्र ग्रह जुगयमगाचित देत ॥ नोधा भगति विचारि नृप शुद्ध अहार कराइ । अषैं निधि कहि बन गये ध्यान धर्यो चितलाइ ॥ नृप ग्रह सुर बर्षा करैं पंचाश्चर्य्य अनल्प । जस माहात्म्य जग प्रगट करि जैजै मुख जल्प । [अडिल] कीनौं तप चित लाय ध्यान शुभ मौनसों । अचल किए करचर्नकाज नहिं मौनसों ॥ कर्म घातिया ज्ञान केवल लह्यो ।

पाय चतुष्टय चारि निजातम पद गह्यो ॥

*दोहा*

समो सरन रचना करी इन्द्र कोस पतिआइ । सुरनर खग मिलि आइ पसु जिन बचन सुन हरषाय ॥
कातिग पक्ष शशि किरन सम दुतियां दिनके अन्त । केवल ज्ञान भयो विमल पुष्प दन्त हरहंत ॥

*चौपाई*

गनधर नाम बिदर्भक आदि । अग्रासी निजगुण अहलादि ॥ चारि ज्ञान धारक सब जान । श्री जिन बानी करत बखान ॥ समो सरन सोभा अधिकाय । बरनन करत ग्रन्थ बढ़िजाय ॥ देश देश उपदेश महन्त । धर्म्म देशनकरि भगवंत ॥ आयुरही षटमास प्रमान । समेद शिषरआए भगवान । प्रकृति कर्म्मकी सबतहं छूटि । मुक्तगए सुप्रभुवरकूट ॥ भादोंमास सोप दुतिपक्ष । तेरसि दिवसजान परतक्ष ॥ आयु पुलोमिज पतितसथान । शिव कल्यानककरि सुखदान ॥ सुप्रभास सोईवरकूठजोवंदतसुपातिगछूटि । सुप्रभुपसुगति नाशनकरे । सुरनरगति लहि शिवपदवरें ॥ एक नन सतकोटि बखान । निब्बैलाख सहस नवजान । चारिसतक अस्सीमुनि राज । सुप्रभासपर निज करकाज ॥ सोई कूट बन्दनाकरे । सोरहकोट वरत फलधैर ॥ महिमा कहतपार नहिं लहौं । अलपबुद्धि कैसे गुनगहौं ॥ आगे पुनि श्रेनिक मनलाइ । कहैः कथा कोटी भटराइ ॥ जंबूदीप सिरताज भरतक्षेत्र सबमहिमामाज ॥ आरजिखंड मध्य में बसैं । कहाकदेश अनूपमलसैं ॥ श्रपुर नगरीराज करंत । हेमप्रभ राजागुणवंत ॥ जयानाम रानी मनहार । भागैंभोग सरम दातार ॥ तिनके पुत्र सोमप्रभ नाम । कोटी भट सोहैं अभिराम ॥ एक समय वरसैन सुराज । मंडलीक सब कौ सिरताज ॥ चढि आयो निज बल लैसाथ । ताके संग बहुत नर नाथ ॥ हेमप्रभ निज चमू समेत । निकस्यो युद्ध करनके हेत ॥ भयो परस्पर अति संग्राम । हयगयं पहुंचे जमधाम ॥ सोमप्रभ

निज नास निहारि । आत दुष्यत संग्राममझारि ॥ गदात्रिलोकी निज कर लयो । आगे जाय लरतसो भयो ॥

*दोहा*

इह कोटी भट अतुलबल । वे नर कुंथ शमान ॥ जिस दिसपै वैभुजन सौं । मार करैं घमसांन ॥ जेवरसैं नर नरेस के हय गय रथ भट सार । ते सब छिन में मारि कैं । डारे रनहिमझार ॥ भाग गयो बरसैन तव सोम दत नर देखि ॥ धृग धृग कहैं बिचार । ईबृथा जन्म निज लेख ॥ एक राज के काज । हम नासे जीव अनंत । भो भौ मैं दुख दाइहैं । ऐसो पाप महंत ॥

*चौपाई*

जाय अरन्य महा मुनि पासि । नाश करन करमनि की पासि ॥ मिले बिमल बाहन मुनि धीर । करैं छिनक मैं भव जल तीर । सीस नाय आलोचन करैं ॥ निज पातिग मुनि ढिग उच्चरैं । कहा गुर गुर पूरब पर जाय । किम कोटी भट पदवी पाय । मुनि बर कहै दीप इहां जानि ॥ यही क्षेत्र मरु क्षेत्र बखाने नगर अनूप सेठ धन दत । बहुत द्रव्य सौं रहै प्रमित । अति लोभी कछु दान न देइ । अपकीरत पुरमैं बहु लेइ ॥ कोइ नांम लेत नाहि तवै । क्रोधसहित है निकरयौ तवैं ॥ गयौ गहन मैं लखि मुनि राइ । तीन ग्यांन जुत दुर्वल काय ॥ करि प्रणांम पूछैं धनदत्त । देह क्षीन क्यौं कहिए तंत । सुनिवर कहै सेठ सुनि बात । अतितपकरत अहर्निसि जात । पक्षमास जुगमास वितीत । बृतवाउन्नोदर की रीति । द्वाविंसाति परी सहमन एक ॥ सहत जैन तप दुद्धर टेक । क्रोध लोभ माया अरु मांन । तजैं मुकाति पद हो निदान । सुनि बचन सुनत लोभ तजि गयौ ॥ सेठ उदार चित तव भयो । फुनि मुनि धर्म्म कथा मनलाइ । करि नमोस्तु फिर निज धरि आय ॥ दांन अहार प्रतिज्ञा करी । जिन पूजा जिन जिन प्रति धरी । देखि पात्र नौ विधि बिधिधार । दान देइ च्यारयौ परकार । एकदिवस सुभ शैन मुनीस । आएपरम

धर्म के ईस। निर्मल तन कंपितब्रत इत धरैं। पाखमाश पर भोजन करैं। प्रासुक अंन्न वोषधी जोग। दै अहार तन कियौ निरोग। तप लाइक मुनि तन बलधारि। अस्तुति करै सुवारंवार। मुनि निज मुखसैं बर्नन कस्यौ। सुप्रभु कूट बहुत गुन भरयौ। मुनिबन जाय धरयौ तप जबैं। सेठ चल्यौ जात्रा कौं तबैं सिषिर भूमि पहुँच्यौ चित धारि। जिनवर पूजा करहि बिचारि। प्रांन तजे सुभ से तिहि थांन ॥ सोम प्रभु तुम उपजे आंन ।•वह मुनि वर कौं दांनजु दियौ। यातैं आय सबल तन लियौ ॥ करो जात पुनि भाव समेत। शिव पद्वी पावन के हेत ॥

### * दोहा *

ईहँ सुनि हिए बैराग है ॥ दयौ पुत्र कौं राज। चारित ग्रहन कियो तबैं। करन आतमा काज। शिखर जाय बंदन कियो ॥ सुप्रभास वर कूट। ध्यांन धारि मन अचल किय कर्म्म कालिमां छूट। लहि केवल सिव पुर गए। सोम प्रभ बलवंत। और अनेक भये सुइमि ॥ बरनत लहौं न अंत ॥ (अडिल) ऐसैं सिखर समेद बंदनां जो करैं। सोनिहचैं नर नारि मुकाति नारी बरैं ॥ लोहाचार्य कियौ ग्रंथ लखि मैं लियौ। कठिन जांनि मन सुद्ध सिंधु भाषा कियौ ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचतेतीर्थमहातम्येषुसमेदाचलमहात्मे भाषायामन सुद्धसागरेण वर्णनं सिद्ध कूट सुप्रभासपुष्पदंत मोक्ष गमन दसमो परिछेदा १० ॥

### * सवैया *

कर जुग जोरि कै नमत तीन लोक जन दृढ़ रथ जनक सुनंदा देवी माइ है। भद्दलपुरी मैं जनम सहस पूरब एक आयु तन उन्नधनु नवैं थाइहैं ॥ स्वैतहैं बरन काय सब जन सुखदाय सोहत सुभग चिन्ह सुर तरु पाइह ॥ ऐसे प्रभु सीतल सुशीत करनहार मन सुख सागर नमत सुखदाईहैं ॥

* दोहा *

नव कोडि जलधि गए । पुहप दंत सिव धांम । सीतल जिन जनमें तबै । तिन प्रति सदा प्रनाम ।
तिन चारित्र बरनन कर्यो । सिषर माहातम मांहि । सुनि श्रेनिक गोतम कहै । बरनत शेष थकाहि ॥

* चौपाई *

पुहकर दीप तीसरो जांन । मंदिर नांम सुमेर बखांन ॥ तहां विदेह पूर्व थिति रहै । सीता नंदी मध्यमैं बहै ॥ दक्षिन कूट पूरब थिति देस । नग्र सुशीमांलसैं अशेष । पद्म गुलम नृप राज करंत ॥ देइ दांन पूजै अरिहंत । पट नारी बसंत श्री नांम । सील सुलक्षण सब गुण धांम । तिनकैं सुत उपज्यौ गुणवंत । चंदन संग्या सील धरंत ॥ इक दिन भूप जलद पच रंग ॥ देखि जगत जान्यौ छिन भंग प्रसम भाव अति चित मन दियौ । चंदन सुत कौं नृप पद कियो । दिक्षा लई कियो तप घोर । सहैं परीस्या तनपैं जोर । द्वादश विधि तप करत अभंग । सहैं कष्ट नाना विधिअंग ॥ षोडस भावन जिन मन धारि ॥ तीर्थंकर पद सुख दातार ॥ आयु अंत संन्यास जो लियो ॥ निर्मल भाव मरन तब कियौ । दिव्य पंद्रहै देव महंत । ठाढे बऊ सुर सेव करंत ॥ पद देवेंद्र जलधि बाईस । आयु पुरी सुर नावत सीस । और भेद पूरब व्रत जांनि ॥ कहां लगि अब मैं करौं बखांन ॥ जनम थांन अब सुनि मगधेस । जाकी सेवा करत सुरेस । जंबू दीप सुमध्य महंत । भरत क्षेत्र धनुषाकृत संत ॥ आरज खंड सुमालव देस । भद्दलपुर जिमनगर सुरेस ॥ दिढरथ भूप राज तहं करै । प्रजा नीति मारग अनुसरैं । नारिसुनंदा सील निधान । जिन मणि उपजन की है खान ।

* दोहा *

हरि आग्या धन पति लई । रच्यौ महापुर जाय । तीन काल षट मास लौं । मणिकी वृष्टि कराय ॥ चैत

मास शुभ अष्टमी। अंत जामिनी जांम। जिन माता षोडस सुपन। लखे महा सुख धाम॥ उठि प्रभात अस्नान करि बस्त्राभूषन धारि। सखी संग लेकर चली। पति ढिग जाइ उचार। अवधि चक्षु लखि नृप कहैं! तीर्थंकर सुत होइ। तबैं गर्भ कल्यान हरि। आय कियौ सुख जोय। छहौं कुलाचल बासनी। षटपचास कुमार औंर सुरी सेवैं जननि। हरि आग्या सिर धारि॥

## * चौपाई *

मंगल गीत करत दिन गए। नंदमस पूरन इमभए। माघ बदी द्वादसि सुभवार। श्रीजिनजनम लियौ सुखकार॥ आएहरि दंपाति पातिसाज। जिनचढ़ाय पहुंचे गिरिराज। करि अभिषेक अरचि जिनचर्न। अस्तुति करी जुपातिग हरण। सिव कृतकरआए निज पुरी। सोहरि मंगल गावैं सुरी। तांडव नृत्य इन्द्रकर गयौ। अति उत्साह नगरमै भयौ। पूरब सहस आयुपरमांन। नवे सहस सेततनु जांन। सहस पचीस बालपनगए॥ क्रीड़ाकरत तरुन प्रभुभए॥ पानिग्रहन करि राजकरंत। सहस पचीश सिरी भगवंत। देखि तुसारभर बैराग। इछ्या करी परिगृह त्याग। अनुप्रेक्षा द्वादसि मनभाइ। ब्रह्मलोकसुरपैंडी आइ। करि अस्तुति पहुंचे जिनथांन॥ हरि सिवका थापे भगवान। गए महाबन परिग्रहत्यागि। निजआतम सेती लौलागि। सहस भूपजिन सीसनवाइ। ग्रहनाकियौ चारित सुखदाइ। * दोहा *

माघ महीना कृश्न पक्ष दिवस द्वादसी जानि। कचखीरौ दधिडारि कैं। कीनौ तपकल्यान॥ मनपर्यै प्रभु ज्ञान लहै ध्यान कियौ दिन दोइ। असन हेत हरिपुर गए। मारग सुचिअवलोइ॥ देखि पुनर्बसु भूप तब॥ पडिगाहे ज़िनराय। नौधाभगाति उचारि उरगोपयचरी कराय

## पद्धड़ी छंद

एजिन बन मैं धस्यौ धान। नृपकैं ग्रहपंचाचर्य जांन॥ छदमस्त रहे त्रयवर्ष देव॥ क्षैकिया घातिया

कर्म रोव ॥ सुभपौषसुदी चौदासि सुअन्हि ॥ करि भस्म करमतप ध्यान बन्हि । केवल मार्तंड प्रकासलीन ॥ मिथ्यातमहातमकरनहीन ॥ तवइंद्र कोस पाति आइचर्न । पूजाकरि कैं रचि समोसरन । गनधरइक्यासी भए सर्ब ॥ जिन बानी परखै है अगर्व ॥

*** दोहा ***

पूरब समसोभासकल ॥ बरनतशेष थकाय । मेरी धिखना है अलप ॥ क्यौं करि बरनी जाय । नानादेश बिहार प्रभु कीनौं बृषउपदेश ॥ नरबिद्याधर देवमिलि ।अस्तुति करत सुरेस ॥ आयु रही जबमास. इक आये सिषरि सुमेर । जोग रोध करि ध्यान धरि । निजआतम गुनहेर । श्रवनसुकल सुदिवस दिन । पूरन मासी जांन । बिधुतनांमा कूटतैं । लह्यो सुअबिचल थांन

*** चौपाई ***

सुरपति सिवकल्याणक कियौ । अपनौ जनम सुफल करि लियो ॥ सो बिद्युत बरकूट सुधार । बंदनकरत लहैं पदसार । पसूनरकगति छिन में नास । करैं देवनर गति में बास । बत्तीस कोटि प्रोषधी करै । एक बारबंदनफल धरैं ॥ अबआगें सुनि श्रेनिक भूप । अबिचल राज कथा अनूप । हुंडाकाल दोषप्रगटाय । मिथ्या धर्म चल्यौतव आय ।

*** दोहा ***

मलय देस मैं नगरपुर । भूपमेघरथनाम । अति प्रताप धरभुजबली । बहुनृपकरैं प्रनाम ।

*** चौपाई ***

सभा मध्य इक दिवस नरेस । धर्म कथा कौ करौबिसेस । कौनदांन तें अति सुखहोय । मंत्री प्रति पूछैं नृपसोय । कहैं अमात्य सुनौ नृपबैन । च्यारि दान भाषैजिन अैन॥ औषध शास्त्र अभै अहार । एई दान मुक्ति आधार । घनस्यंदन भूपत सुनि कहैं । और दांन इच्छामम बहैं । प्रोहित सोमसर्म सुततहां । मुंडसाल बोल्यौ नृप जहां । सुनौराइ ए च्यारयौंदांन । करैं दीन राखैं अतिमांन । दान कहे दसबिधि के भेद

करैं भूप सिवलहैं अषेद ॥ गजहय भूम महलबरनारि । तिलस्यंदनदासी सुखकार । अजादान भूपति दसजोग । करि पावै बैकुंठ सुभोग ।

* दोहा *

बिद्या मंद आंधो पुरष । लंपट लोभी दर्भ । गिने न काज अकाज कौ । करै पाप बससर्ब ॥

* चौपाई *

मुंडसालए दांन बताय । मिथ्या धर्म जुदियौ चलाय । जैनधर्म्म करलोपमहंत । दुरगति बंदन काज करंत । नृपति बंसभूपति बहुभए । केतिककाल बीतइमगए । अबिचल नांम भूपइम ॥ सोवन मैं क्रीड़ाकों गए । लखि चारन मुनि सीस नवाय । दुबिध सुन्यौ बृषचित्तलगाय । बिद्युत कूट महातम सुन्यौ । जात्रा हेत हिए मैं गुन्यौ । सोरह लाख जीव लैसंग । जात्रा कीनी भूप अभंग । होइबैराग महाव्रतधार । बिद्युत कूट सीससुखकार । लह्यौ मुकति पदपरम रसाल । छूट्यौ जनम मरन जगजाल । जे नरनारिबंदन करैं ॥ सो शिवरमणी सम्पाति बरैं ।

* दोहा *

महिमां एक सुकूटकी सुरगुरबुद्धि असमर्थ । संपूरन गिरि जोनि मैं कौकबि कहन असमर्थ ॥ ( अडिल )

सिखिर महातम ग्रंथ नाम भाषा कह्यौ । लौहाचार्य सूरिसुजग मैं लह्यौ । मनसुख सिधुानि आपने पठनि कौं । भाषा सरलबनाय ज्ञान के बढ़ानि कौं ॥

* दोहा *

चपल चित बरचरसहस । करत ध्यान बनछीन । बांधन सुमति जंजीर कौं ज्ञान खंभइहकीन ॥

इति श्री काष्टा संगे लौहाचार्य बिरचतं तीर्थमहातमेसुममेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुखसागरेण बरणनं एकादसमोपरिछेद ११

* सवैया *

ताके तनसोहत सुलक्षन । अनेक बिधि सिध पुरजन्म हेमसम छबि काइ हैं । बिमल नृपति तात बिमला

मुदेवी मात गैड़ाकौ चरन मैं मुचिन्ह सुखदाइहैं । चारि बीस चापतनउनत चौरासीलाख बरष प्रमांन
जिन देवजी की अइहैं । ऐसे हैं श्रीयांस प्रभू मनसुख सागर कौं देहु शिवमारग नमत शिरनाइ हैं ॥

*दोहा *

निन्याणबे सुलाखवर । अरु निन्याणबैहजार । नौसैंनंद सीतलगए । जनम श्रेयांस सुधार । तिनके
पंचकल्याणअब । बरनौं सीसनवाय । कूटशंखुली सिषरिपैं । आविचल पदबीपाइ । * चौपाई *
पुष्करार्द्धसुभदीप महांन । मंदिर मेर सुमेरबखांन । तहां बिदेह सुपूरब नाम । जहांकाल चौथौ सुख
धांम । सीतानंदी मध्यमैंबहैं । निर्मल जल आति सोभालहैं । उतरकूट देससुभ बसैं । नांम सुकक्ष क्षेमपुर
लसैं । नलिन प्रभाराजाराजंत । आरिभंजन हरिजिमगाजंत । सहस्र रवन परम पुनीति । जिमअंतस्वामी
सुभरीति । सुनिकैं राजा आति आनन्द । लैपरवार जाइ जिनबंदि । सागारीअनगारमहंत । द्वाविधि धर्म्म सुनि
नृपहैसंत ॥ भोगलखे भोगेंद्रसमान ॥ अक्षविषैं विषसमनृपजांन । राजसुभ्रम कारनलखि लीन । नृपपदवी
निज सुतकौं दीन । त्यागि परिग्रह चारित लियौ । निर्जनबन मैं आति तपकीयौ । एकग्राम दिनप्रति
जुघटाइ । द्वात्रिंसत दिन दिनहि वढ़ाइ । षोडसकारन ब्रतकरि राज । निश्चै अरुबिवहार समाज । भावन
भावैं निजसनलाइ । जिन पति पदबांध्यौ सुखदाइ । धरि संन्यास प्राणतजि दिए ॥ पूरन आउभाउ सुभ
किए । सोलम स्वर्ग इंद्र पदधरैं । ठाड़े सबसुरसेवाकरैं । पुष्पोतर विमांन थितिसार । करैं भोगसबसुखदातार
द्वाविंशति सागर थिति परी । जिन सेवा छांड़ैं नहिधरी ॥ बाईस सहस वर्ष जबजाइ । मांनसीक
आहारकराइ । ग्यारह मास बितीतैंजबैं । सास उसास लेहिं सुरतबैं ॥ * दोहा *
आयुरही छहमास जब । तब जिन पूज करंत । सुनि श्रेनिक बरनौ जनम । श्री श्रयांस भगवन्त ॥

## * चौपाई *

जंबूदीप क्षेत्र है भरत । कौसल देश कहन असमर्थ ॥ सिंवपुरी नृप बिमल बिष्यात । बिमला रानी बिमल सुगात ॥ रतन बृष्टि तिनके घर होइ । सुखी बसैं पुरजन सब लोइ । आगैं रिति मितिमास प्रमांन ॥ धनद रच्यौ पुर श्री भगवान । जेष्टवदि षट निसि अन्त । सुपन लखि जिन मात तुरंत । षोडस मांन प्रात उठि जबैं ॥ जाइ कहे जिनपति सौं तबैं । बिमल भूप लखि अवधि बिचारि । तीर्थंकर सुत उपजैं सार । इतनें मैं आए हरिदेव । गर्भ कल्यांनक करि सुरसेव

## * दोहा *

षट पंचास कुमारिका । निज निज काज करंत । गूढ पहेली छंद कहि । माता मन हरषंत ॥

## * चौपाई *

ऐसी रीति गए नवमास । दंपति मन मैं धरैं हुलास । फागुण बदी द्वादसी जांन । जनम लियौ श्रेयांस भगवांन ॥ ( अडिल ) आए हरि गजराज साजि हरिपुरि बिषैं । सची प्रसूत ग्रहजाइ दृगनि सौं जिन दिषैं । है प्रसन्न थुति कारी मात निद्रारची । लैकैं अंक जिनेस इन्द्र कौं दे सची ।' सक्र लेइ जिन थापि सुर गिर गए । क्षीरोदक भरि ल्यायन्हवन करते भए । अरचे पदव सुद्रबसर्व आभरन लै । पहिराए मन सुद्ध सिंधु जिन सर्नाह ॥ कहि श्रेयांस जिन जगत श्रेयकारी सदा । पुन ऐरापति थापि पुरी आएतदा । मात गोद दै सक्र नृत्य तांडव कीयो । सेवा करन सुरराखि देवपुर मगलियो ॥

## * सोरठा *

पिता कियो उत्साह । जाचिकजन बहु दर्व दे ॥ रही नहीं कछु चाह । जिन दर्शन मन तृपाति है ॥

* दोहा *

बिबिधि देव खगरूप धरि । जिनमन अति हरषाइ । ईकईसलाख बरष गए । बालष्याल जिनराय ॥

* चौपाई *

पांनि ग्रहन शक्र मिलितात । करि मन हरषे पुलकित गात । ब्यालीसलाख वर्ष करिराज । रितु बसंत लखि नृप पदत्याजि । द्वादस भावन भावैं सार ॥ लौकांतिक आए तिहिवार ॥ करैं वीनती सीस नवाय । निजपुर गए प्रसन उपजाइ । ल्याय बिमल प्रभसिवका इन्द्र । जै जै करत चढ़ाय जिनंद । जाए बिपिन बस्त्रादिक त्यागि । ध्यान धस्यौ आतम लौ लागि ॥ * दोहा *

सहस राय अवनीस पद । निज निज सुत को देइ । श्री जिन चरन प्रनामकरि । शुभ चारित गहिलेइ ॥

* चौपाई *

बेला व्रत धरि कैं जिन भूप । अरिष्टनगरनरनाह अनूप । गए गेह करिकैं आहार ॥ निज आतम धरिध्यांन सुवांर । पंचाचार्य भयौ नृपगेह । जै जै सुर कहि करैं सनेह । दोय बरष छदमस्थ जो रहै । कर्म घातिया प्रकृति जु दहै ॥ तेदू बृक्ष तलै अरिहंत । धस्यौ ध्यांन जिन मनकरि संत । केवल ग्यानभांन प्रग टाय । जग मिथ्यातम नास कराइ । आए इन्द्र संग लै सची ॥ समोसरन की रचनां रची ॥ कुंथ सौनि आदिक गनधार । जिन बानी के हरषन हार । सतहत्तरि परमांन बखान । चौरासी हजारमुनि जांनि ॥ सब पूरब सम रचनां कही ॥ ग्रंथ उक्त करि जांनौं सही । सहसवती सदेस विहरंत कृपा धरम उपदेश करंत । रही मास मिति आइ जिनन्द । आए सिषरि सुरासुर बन्द । जोग रोध चढ़ि कैं गुनठान । कूट

साकुली प्रकृति जुहांनि । पंच लघुक्षर काल मझारि । चिदानन्द सिवपद लहिसार ॥ * दोहा *
कूटसाकुली सीस पर । सो इंद्रादिक आइ । सिवकल्यांणक कर गए । मनमें अति हरपाय ।

* चौपाई *

सुनि मुगधेस साकुली कूट । बंदितनरक पसु गति छूट ॥ महा पुन्य थानिक हैं सही । अति महिमां जिन श्रुति में कही ॥ कोडा कोडी छिनवैं जांनि । अरु छानवे किरोर वखान ॥ लाखछ्यांनबे सहस पैंताल । पांच सतक ब्यालीस मुनि पाल । इतने मुनि सिव पद तहं लहैं । व लमख त्यागि सुनिजगुनगहै कूट बंदना करै इक वार । कोडि प्रोषधी फल दातार ।अब आगे सुनि श्रेणिक भूप । मन वंछित फल कथा अनूप । जंबू दीप दीप सिरदार । भरत क्षेत्र तहं धनुषाकार ॥ आरज षंड नांम सुभ देस । नगर कलपपुर वस अमेस ॥ नंद सैन नरपति सुखदाय । करैं राज अरि नाश कराइ । त्रिजैं सुसेना रानी सार । ताजुत भोग भोगैंजु अपार । इकदिन आम्र विपन मैं जाइ । लखि मुनि भद्र केवली राइ ॥ करनमोस्तु सुनि धर्म्म विसेष । यह संसार अथिर करिलेख। पूछैं भूप आतमा काज ॥ क्यों करि होइ महा मुनि राज । तन कोमल तप होय न लेस । धारि सकैं नहि चारित भेस ॥ सिव पदकी इच्छाजे रहैं । सो उपाव वहि भूपति कहैं ॥ बोले केवल ग्यानी धीर । सुनौ नृपति अविचल पद सीर । सिखरि कूंट संकुली धांन । बंदित सिव पद लहै निदांन । सुनि नृप सीस नवाय । जात्रा करन चल्यौ हैं राय ॥ एक कूट लै संघ सुसंग । पूजा दान जु करत अभंग । जात्रा करी जाइ नृप जबैं । अति वैराग भयो जिय तबैं ॥ दैसुतराज दिगंबर भयो । कूट संकुली परि सिव गयो । * दोहा *
सुनि श्रेणिक इहिविधि बहुत ॥ मुक्ति गए नर नाह । यात्रा करि सिव कूट की नर पद लीनौं लाह।

महिमां सिखर अगम्यगम। को कबि कह न समर्थ। जौ मनमैं बांछा करैं सो पावै निज अर्थ ॥

*** अडिल ***

लोहाचार्य सूरि सिखरि सुर तरु कह्यो ॥ मन कल्पित फल देइ। फैलि जग जस रह्यौ ॥ मनसुख सागर जांनि आपनैं काज कौं कर्यौ ग्रंथ नर भाष त्यागि कै लाजकौं।

इति श्री काष्टा संगे लोहाचार्य बिरचतेतीर्थमहातम्येषुसमेदाचलमहात्म भाषाया मनसुपसागरेण वर्णनं सिद्ध कूटवर सांकुलीजाम श्रेयांसनाथ मोक्ष गमन द्वादसमो परिछेदा ॥ १२ ॥

*** सवैया ***

अमल अनंत गुन सोभित सुवर्ण काय चंपापुर नगर सुजनम बखान्योहै। जननी जयासु देवी जनक हैं बसुदेव उन्नत सुतनु धनुष सतरि प्रमांन्योहै। लक्षण महिष चिन्ह सेवत सुरेंन्द्र सत मंदारगिर कूट सेती कर्मन को भान्यो है। ऐसे बास पूजि जिन बसत जो थिर थांन मन सुख सिंधु नमि सुकृत भी जान्यौ हैं ॥

*** दोहा ***

बास पूज्य बसु दर्ब सौं। जे पूजैं मन लाय। बसु करमनितै रहित हैं ॥ बसु गुन जुत सुख पाइ ॥
तिन चरित्र मनुलाय कैं सुनि श्रेनिकनर इंद। मन वच काया सुद्धकर। ज्यौं पद लहैं सुरिंद ॥

*** चौपाई ***

पुष्करर्द्ध मैं दीप महांन। पूरब दिगजो मेर बखान। सीता सरिता उज्जल नीर। ताके पूरब तटके तीर बत्सकावती देस इक बसै ॥ सुर पुरवत सोभा सब लसैं ॥ रतन पुरी पुर उत्तम धांम। अति सरूप गुन जुत नर ठांम ॥ पोद्मोतर नांम नृप भूप ॥ सुरपति वत सोभित हैं रूप ॥ धर्म्म विषै हित अति शांत

धारि । पूजा दान अधिक बिस्तार । नीति मारग नागरि प्रति पाल । दुरजन जन कोहै उर साल ॥ अति प्रताप राजै नर ईस । बहु नृप आय नवावैं सीस ॥ गुन प्रिय गुन गन जुतहै प्रिया । कुटल रहित सरल सुहिया । सो नृप रानी सहत मनोग । मन वंछित वर भोगैं भोग ॥ नगर वाह्य मन हरि गिरि एक । मन हर सोमा लसैं अनेक । तहं आएजु जुगंधर नाम । तीर्थंकर सवजन सुख धांम । पोह्वोतर नृप सुनि हरषाय । पूजन द्रव्य लेइ नरनाह ॥ जाइ चरन अरचे भगवंत । अस्तुति करि बहु गुन गावंत । करि नमोस्तु नर कोष्ट मझारि । बैठौ मन आनंद अपार । जिन मुख उदित धर्म्म सुनि लियौ । द्वादस भावन मैं चित दियौ ॥ इंद्रजाल जग रीति बखांन । सत्या सत्य न लखे अजांन ॥ पंच परावृतन यहि जिय करैं । थिति छिन एक नहीं अनुसरैं ॥ देखत देखत इह जगजाइ । इंद्र धनुष सम जांनि सुभाय ॥ अब कीजे कछु आतम काज । पुत्र बुलाय दीजिए राज ॥

* दोहा *

पोह्वोतर वैराग ह्वै । निज सुत दीनौं राज ॥ परिग्रह तजि तप ग्रहण करि । करन लगे निज काज ॥ बहुत राजवी साथि ले दुद्धरतप जुत होइ । पोह्वतर मुनि राय अति । आतम रसलौं जोइ ॥ अठाईस जुत मूल गुन । उतर गुन सुबिचार ॥ चौरासी लख आदरैं । करै बरत अनगार ॥ एक दसांग अधीत श्रति । नय बल श्री मुनि राय ॥ षोडस कारण भावनां । भावैं निज लौं लाय ॥ * चौपाई *

तीर्थंकर पदवी दातार । उतिम नांम करम अवधार ॥ बिबिधि तपोधन तप अनुसरैं ॥ पूर्व कृत बसुकर्म्मनि हरैं । अंत समैं अन सन व्रतलेइ । निरती चार हिए मै देइ । प्रांण अंतकरि तजि सब आस । महा सुक्र मैं कीनौं बास । महा सुक्र अभिधांन प्रतिष्ट । आमराद्धिप ह्वै सब सुर इष्ट । महा शुक्रसु

बिमांन मझारि । सेज्या तहं उत्पात सुसार ॥ अंत महूरत जोबन पाइ । हस्त च्यारि उन्नत सुभकाय । सप्तधातु बर्जित तनु धरैं । सब सुर मिलि सेवा बहु करैं ॥ षोडस उदधि आयुपरमांन । लेश्या पदम विसेष बखांन । अष्ट मास बीते सुभ स्वास । सुरभित सहित बहत है बास । षट दस सहस वर्ष जब जांय । मांनसीक आहार कराइ । अवधि चतुर्थ भूम लौं होइ । काय बिक्रिया जहां लौं जोइ ॥ ❋ दोहा ❋ इस बिधि सुर सुख भोगकैं । सुनि मगधेसुर राइ । षट मासा पुरही जबैं । जिन पूजा सुकराइ ॥

❋ सोरठा ❋

आगे जिन अवतार । होय तीन जग सुख करन । भो सुनिए मन धार । मन बच काया सुद्धकरि ॥

❋ चाल छंद ❋

इस जंबूदीप मझारा । सुर गिरि सुंदर मन हारा । तिस दक्षिन भरत बिराजे ॥ षट खंड मांहीं शुभ छाजैं ॥ तहं अरज क्षेत्र अनूप सब जन सुख कारन रूप । इक अंगदेस तहँ सोहैं । देखत जन मन मोहैं ॥ चंपापुर सुर विख्याता ॥ बहु सोभ सकल सुख दाता ॥ तहं को बसु पूज्य नरेस । विख्यात सुदेस विदेश ॥ रानी जयावती नांम ॥ अति प्रिय पति हैं सुख धांम ॥ राजा रानी हित जोगैं । मन इछत भोगैं भोगैं । सख सिंधु मगन ह्वै राय । जानौं न काल कित जाइ । जिन जन्म लेइ जिन ग्रेह सुख बरनत पार न तेह ॥

❋ दोहा ❋

सुनासीर स्वावधि लख्यौ चंपापुर जिन राय । गर्भस्थिति षट् मास गति । कीनौं अपनौं काज ।

❋ सवैया ❋

आयुसु धनद पाय चंपापुर आयत बनौ द्वादस जोजन प्रमिति परकरियौ । पंचाश्चर्य तीनकाल करत

हरषधार मंदिर बिचित्र सुरपुर सोभा हरियो ॥ सजन सनेही रूपके निधांन सब नरनारि रूप निरखि सुदेवी पाइ परियौ । मंगल सुगान नृत्य बीते पटमास इम सौंधे गर्भदेवी आइ हिये भक्ति धरियौ ॥

* दोहा *

भूमशाभा अषाढ़ पक्षि षष्ठी शर्ताभषनाम । महा सुक्र सुरराइ तिथि गर्भ कियो सुख धाम ॥

* चौपाई *

करत सेव सुरी सब आइकै । अति आनन्द महा सुख पाइकै ॥ करलिये बरवस्त्र मनोहरं । विविधि भोजन भूषन भासुरं ॥ केइक चंदन केसरि गारती । केइक चवर लिये सिरढारती ॥ केइक छत्र लिये कर फेरती । केई एक मात मुखांबुज हेरती ॥ कहत काव्य कलागुन गावती । शुभ पहेली कथा मनभावनी ॥ सुरभि युक्ति सुपुष्प विसेषती । सुरविसेज सुजन्म सुखेलती ॥ धरति चर्न सुनृत्यति भावसों । ताग्रद ताता तता करचावसों ॥ झुनन झुनन नूपुर बाजती । तनन तानन आनन साजती ॥ सुर ससि चिंता गीत उच रती । जननि अग्र करै शुभ आरती ॥ इंद्र सुअन्य सुसेव करैं सुरी । सकल उत्सव होत महा पुरी ॥

* दोहा *

फागुन सुकल पक्ष शुभ दिन चतुदसी सार । वरुन जोग जिन जनमियौ त्रिभवन सुख दातार ॥

* चौपाई *

चौनिकाय सूर सुचक देखि चिन्ह लष्यौ निज जन्म विशेष ॥ नाग जुसजि गज लायौ तहां । चंपापुर जिन जन्मे जहां ॥ लैप्रभु हरि सुर गिरपर जाइ । पयनिधि जल कलसा भरवाय । मञ्जन करि पूजा रचि तबै । अस्तुति करत कहत धन अबै ॥ ग्रह ल्यायौ बहु हिये अनंद । वास पूज्य

कहि जयो जिनंद ॥ अंकमात कैदै सुखपाय । नृत्य कियौ पुन निज पुरजाय ॥ श्रीनृप जिन वसु पूज्य निहारि । जयावती जननी दृग धार ॥ देखि देखि अति हर्षित गात । बढ्ढ पुलकित निज तनन समाज ॥ पुर उत्सव कर दान जुदेइ । मन बांछित देवढ्ढ जसलेइ ॥ गेह गेह मंगल सानंद । सब जन के नाशै दुख फंद ॥ रोगी चकित न दीसे कोइ । नृत्य गान सब थानक होइ ॥ इस विधि उत्सव जुत पुरसार । बाल रूप जिन राज कुमार ॥ जंबूनन्द तन सोभा धरे । सुर बालक सब क्रीड़ा करे ॥ सत्तरि धनुष सुकाय उतंग । बज्र वृषभ नाराच अभंग ॥ लाख बहत्तरि अष्ट प्रमान । वासु पूज्य जिन आयु बखानि ॥ अष्टादस लख वर्ष वितीत ॥ बाल कुमार अधिक सब प्रीति ॥ इक दिन द्रव्य बिचारन करै । आतम गुन निर्भैमन धरैं ॥ हिये उपज्यो संवेग अपार । जल फेनोपम लखि संसार ॥ इहिजिय काल अनादि अनंत ॥ भ्रमना नहिं पायौ अंत ॥ परभव भावरूप है गह्यो ॥ तजि गुनरूप न कबहु गह्यौ ॥ मोह भूपअपने बसिलेय । अष्टकर्म काराग्रहदेइ ॥ कुमति सुता दीनी परनाइ तिन अपनै बस नाचनचाय ॥ अपनी बिभौ मोहनेदई ॥ डारि निगोद खबर नहिलई । भाग्य जोग्य तहंतैनिकसंत । लक्ष्य चौरसी जोनि भ्रमंत । फुनि निगोद मैं फुनि गति च्यारि । फिरत फिरत नहि पावैंपार । इमचित तजि नवरसबेग । लौकांतिक सुरआए वेग ॥ करजुग जोर नमस्तुकियो । प्रनमलिए थुति कर हरषियो ॥ धन्य धन्य प्रभुतारनहार । तुमबिन को इह बातविचार । जगत जीव तुम नामहि तरैं । गुन गावत भव भव दुखहरैं ॥ थुति करि गए आपने थान ॥ परम सरमसी भाव बखान । सिवकापर जिनलए चढ़ाय । सक्रकंध धरि अति हरषाय अटवी महा मनोहर

नांम । जाइ तहां कीनौं बिश्राम। जंबूतरु तलि तजि निज ग्रंथ। लीनौं तप जान्यौं सिवपंथ। तपकल्यानक सुरपति कीन। किए पूर्व भवपातिग छीन।

* दोहा *

पूजा करि बिनती करी। हरष हर्ष गुनगाइ। सीस नवाय अति बिनसौं। निज पुर गएसुभाय। फागुण कृश्न चतुर्दसी। उड़ बिसाष आभिरांम। दिन के अंत लियौ प्रभु। महाब्रत सुखधांम। छहसैछिहतरि नृपति तबैं। त्यागि परिग्रहभार॥ निज पदनामि दिक्षालई॥ करन तपस्यासार॥

* चौपाई *

बेला ब्रत धरि निज पद जदा। ध्यांन धरयौ निहचल तनतदा। सुद्धातम गुनमन अति लीन॥ करन मोह अरिसेना क्षीन। चौथौ ज्ञांन प्रगट भयौ जहां। बेला ब्रत धाखौ जिन तहां। चर्या करने उठे जिनराइ ईर्यापंथ चले मनलाइ। सिद्धारथपुर पहुंचे तबैं। सुंदरनांम भूपलखितबैं। ह्वै सन्मुख प्रनम्यौ नरईस। बारंबार नवावैंसीस। जथायोग्य बिधिवत बिधि धार। धेनुदुग्ध दीनौ अहार। अस्तुति करैं हरष निज अंग। पुन्य सर्म जन कियौ अभंग। अखैनिधि बोले जिनदेव। मनिबर्षावैं सुरस्वमेव। पंचाचर्य कियौ नृपगेह। दांन सुजस करि धरि हिए नेह। फिरि तीर्थंकर बनमैंआइ। आतम ध्यान रहे लौंलाइ। एक बर्ष छदमस्थ बखांन कर्म्म कुलाचल नासि सुजान। केवल ज्ञांन भयौ उद्यौत। भव्य भवांबुध तारनयोत जैजैकरत। सुरासुर सक्र आइ ज्ञान कल्यानकचक्र। समोसरन बिधि पूरब रच्यौ। धनद देव अपनै करसच्यौ निज २ सभाथांन निज जीउ। करैं परस्पर प्रीति अतीव। जिनबानी अमृत करिपान। ह्वैसंतुष्ट हरष उरआंन। केतक जीव महा ब्रतधारि केतकलेइअनोंब्रतसारि। केइक सीलग्रहन करितहां छ्याछठि गनधर जुताजिनजहां। माघसुकल दुतिया दिन अंत। कियौ ज्ञांन कल्यानक अनंत। करिबिहार बरदेस जिनेस॥ सहस बहतरि संगअसेस। धर्मोंपदेस दीयौ

जोग ध्यान दीयौ चितलाइ। कृस्न अषाढ़ अष्टमी
हितखांन। रही आयु इकमास प्रमान। गिरिमंदार कूटपरि जाइ।
* दोहा *
सार। अबिनासी पदजिनसंचार।
मोक्ष कल्यांनक करि तबैं पूजाकारि लैदर्ब। जिन स्तुति करि कैं गए। निज निज थांन किसर्ब॥ चंपापुर
के निकट आति है बैकूट प्रासिद्ध। जेनरपूजैं भावधरि। तेपावैं सिवसिद्धि। एककूंट बंदन किए। कोटि बर्त फल
* अडिल *
होइ। सिखर कूट जिन बीसनामि। को फल बनैं सोय।
सोई सिखर सुमेर सिखर प्रधांनहैं। आतिसैंवंत महंत भव्य सिवदान हैं। लौहाचार्य सिखरि महातम
बरनियौ मनसुख सागर देखि सुहित भाषा कीयौ॥
इतिश्री काष्टा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थ माहात्म्येषु समेदाचल माहात्म्ये भाषा यामन सुखसागरेण वर्णन सिद्धकूट मंदागिरकूट श्रीवासु पुज्य जिन मोक्षगमन त्रयोदसमो ध्याय १३॥

* सवैया *
बिमल उपाइ ज्ञांन धर्म भए निधान कंपिला जनमथांन कृत धर्म्म तातहैं। मातहैं सुसीमादेवी लाखन
बाराह सेवी लाल बरन आतिसुंदर सुगातहैं। साठलाख बरष आयु हैं प्रमान प्रभुउन्नत सरीर साठि धनुष
सुहात हैं। ऐसें बिमल जिन मन सुखसागर कौं देहु मीत बिमलनमत हरषातहैं। * दोहा *
बास पूज्य सिवपदगए बीते सागरतीस। बिमल नाथजनमे,तबैं।तीन भुवन के ईस॥ बिमल करौ मल रहित
बुध। नमौ सीस करनाइ। तुमरे पंचकल्यांन अब। बरनौं आतिसुखदाइ॥ * चौपाई *
उत्तम खंड धातु की जांनि। पश्चिममेर बिदेह बखांनि। मध्य बहै सीतोदानंदि॥ दाक्षिन कूट देस एक
संदि॥ परम मन्य है नाम बिख्यात। बसैं तहां सब उत्तम जाति। महानगरपुर पदम नरेस। करै राज

जिमनाक सुरेस ॥ पूजादान विषैं अति लीन । पोक्षजन लखि दुखित दीन । अति प्रताप अरिजन भयवंत बिबिधि भेटदै सेव करंत ॥ इतिभीति ब्यापैं नहि कदा ॥ रहैं सुखित मैं पुरजन सदा ॥ इक दिन बन पीतंबर जहां ॥ सर्ब मुक्ति मुनि आए तहां । सुनि आगमन भूप बन गए । सीस नवाय पदबंदत भए ॥ बृषउपदश करैं मुनि राज ॥ च्यारि बरग फल सुनि नरराज ॥ प्रथम बर्ग हैं धर्म प्रधांन। जातैं तीनूं साधैं निदान ॥ धर्म्महीतैं आति लक्ष्मी होइ ॥ सर्ब अर्थ पूरैं नरलोइ । धर्म हतैं सब सीझैं काज । धर्म्महितैं है आतम काज । सोई धर्म्म बर्गा सुनि राइ । पुलकित है नरपति हरषाय । काम बर्ग मुनि कहै दुतीय । अर्थ बर्ग फुनि भाषै तीय । काम बर्ग कारिज संसार । पुन्य उदै पावैंनरनार ॥ अर्थ मिलै शुभ के परसाद अर्थ बिनां सब कारिज बाद ॥ मोक्ष बर्ग साधनहैं श्रेष्ट ॥ तीन लोक मैं होइ सजेष्ट ॥ आवागमन रहित पदहोइ ॥ सीस नवावै त्रिभुवन लोइ ॥ मोक्ष बर्ग सुनिकैं नरनाथ ॥ जानै मुनि शिवमारग साथ ॥ ह्वै बिरक्त सुत कौ देराज । जात रूपधरि ताजिकै लाज ॥ तेरहबिधि चारित प्रतिपाल ॥ अतिं चारपरमाद जोटाल ॥ ग्यारहअंग कियो अभ्यास । ग्याना वरणकियो कछु नास ॥ षाडस भाई भावनासार । करैं तपस्या सुचि आचार । तीर्थंकर सुगोत बांधियो । निजआतम सातासांधियो । अंतसमैंब्रतधरि संन्यास । सहश्रारि मैं कीनो बास । परी अठारा सागरआव । सुरसेवैं अतिमन धरिचाव । बारसअठारह सहसबितीत । करैं आहार मानसीक प्रीति ॥ मास गए नव मास प्रमांन ॥ सास उसास लहि सुख दान ॥ इंद्र बिभूति सकल तिन लही ॥ एक भवतारीथिति लही ॥ होय जहां जिनवर कल्यांन ॥ जाइ निक्रिया धर गुण खांन ॥ सप्त तत्व षट द्रब पुनीति ॥ चरचा करैं धरैं शुभ रीति ॥ इस प्रकार पूरन करि आव ॥ रही मास छह सेष सुआयु मूर्छित माला लखि निज अंत ॥ अष्टदरबि जिनपूजकरंत ॥ अब आगे सुनि सेनिक राय ॥ जहां बिमल

जिन जन मै आइ । जंबू दीप लसैं अभिराम । भरत क्षेत्र तामैं सुख धांम । देस हिरन्य मनोहर थांन ॥ नगर कंपिली तहां बखांन । कृत बर भूप राज सुख करैं । बहुत राइ अग्या सिर धरैं ॥ नांम सुसीमां हैं नृप त्रिया । शुभ लक्षन सोभित तन क्रिया । ते दोऊ दंपाति मनलाइ । बिलसैं भोग मनोगत राइ ॥

### * दोहा *

हरि भंडारी आइ कैं । करि अपनो नियोग ॥ मणि बरषाये मास षट । राचे सुर श्री जिन जोग ।

### * अडिल *

एक दिना जिन मात सौधपर सौवती । सोलह सुपिन विभिन्न अंत निसि जोवती । प्रात जाय पतिया सिक है बिधिवत सबैं । तीर्थंकर सुतहोइ नृपति भाषैं तबैं । करैं परस्पर नेह नारि नरहैंजहां । आइ बिजोडा देव करै जैजै तहां । कीनौ गर्भ कल्यान बस्त्रआभरन दै । गएथान सुर सुरी मात की सरनैंहैं

### * दोहा *

जेष्ट मास भ्रमराभपष । दसमी दिवसनिहारि । बिमलनाथ जिन देव कौ । भयौ गर्भ अवतार ॥

### * चौपाई *

आए देवी सेवनिजोग । करैं काज सबआपन योग । पूछैं गूढ़ कथा मनुलाइ । निनैं करि जिन मात कहाय तीनज्ञांन जुत जिन उरबसैं । तिहं प्रभाव जिन संसैनसैं ॥ छंद पहेली दोहाकहैं ॥ ताकौं सब प्रति उत्तर लहैं । नऊ मास बीते इह रीति ॥ दिन दिन सुरी करै सब प्रीति । माघ सुकल शुभ चौथि बखांन तिसदिन भयौ जनम कल्यांन । पूरब सुर उत्सव हरि कियौ । नन्हवन जथावत हरि हरषियो । बिमल नाथ मिथ्या मल हर्न । आइ इंद्र सत सेवैं चरन ॥ इंद्र गए थुति करि निज थांन । राखे सुर सेवैं भगवांन । जिन बालक सुर सेवा करैं । बालक रूप आपनौं धरैं ॥ केइ होय कबूतर देव । केई मोर रूप धरि सब ।

केई ताम्रचूड होजाय । मुनिया भेष धरत अधिकाइ ॥ जिनवर तन बंधूक समांन ॥ उन्नत साठिधनुष परमांन । बर्ष साठलख आय जो परी । जिन बांनी अंमृत रसभरी ॥ पंद्रहलाख बरष प्रभु बाल । कीनी केलि क्रिया सिसु ख्याल ॥ पांनि ग्रहन राज पद धारि । कियो इंद्र क्रतवर सुख कार ॥ तीस लाख मिति बर्ष महंत ॥ राज कियौ जिनवर मत संत ॥ देखि सुतारा पटल जिनराइ । है बैराग्य चितअधिकाइ । लौकांतिक पैडी सुर जहां । आय करैं थुति श्री जिन तहां ॥ इंद्र लाय सिवकासिवरूप । बैठाये जिन पति जग भूप ॥ बन मैं जाय महाव्रत लियौ । जात रूप अपनौ प्रभु कियौ ॥ सहस एक भूपति सिर नाय । दिक्षा धरी परम पद पाइ । मन पर्यै उपज्यौ प्रभु ग्यांन । कीनौ मघवा तप कल्यांन । माघ शुक्ल दिन चौथि अनंद । गए सुरासुर श्री जिन बंदि । जुगल दिवस धरि ध्यांन जिनेस । गए महा पुर नंद नरेस । नोधा भक्ति करी नर राय । श्री जिन राज अहार कराय ॥ अक्षय निद्धि कहि जिन बंन गए । पंचाचर्य राय ग्रह भए । रहि छदमस्थ बरष त्रय सार । करम घातिया प्रकृति निहारि । माघ स्वेत पख षष्टी जबैं । केवल ग्यांन प्रगट है तबैं । कल्यांणक सुरपति तब कीन । समो सरन तहं रच्यौं प्रबीन । पचपन गण धर ग्यांन अपार । बांनी परखैं संसै हार । करि बिहार द्वात्रिंसत देस सेवा करैं सुरासुर सेस । सिखर सुमेद आय भगवांन । क्रतभंजन हैं कूट महांन । जोग रोध सिव नारी बरी । जैजै कार भयौ तिंह घरी । चैत असेत अमावसि जानि । कियौं सक्र तब सिव कल्यांन । नर सुर खगपसु हरष अनंत । क्रतभंजन सुकूलनमत । सत्तरकोटि सातलख सार । छहहजार सत सात निहार । ब्यालीस अधिक महा मुनि राज । क्रत भंजन पै है सिव राज । सोई कूट मनुज मनु लाय । बंदन करै हरष उपजाय । यसु शुभगति नास करंत । सुर नर गति सिव थांन लहंत ॥ गोतम कहैं सुनौं मगधेस

सुप्रभु कथा अनूप नरेस । जंबू दीप सुपूर्व विदेह । सीता नदी बहै शुभ गेह । उत्तर कुल देस मद याल । नगर हिरन्य पुरी अघटाल । नृप क्रत सैन तहां को भूप । राज करै पुर जन सुख रूप ॥ अरिवै श्रवन प्रजा दुख देई । क्रत सेना पुर लूटि जो लेई । निज बल लेनिकर्यौ क्रत सैन । नृपवै श्रवन महा दुख दैन ॥ जुद्ध परस्पर भयौ अपार । नृप वै श्रवन हार दुख धार । त्यागि भूप पद दिक्षालई । क्रोध सहित तपकरि मृत्यु भई ॥ मरिकैं चौथे दिवमैं देव । भयौ सकल सुरकैं जुसेव । मालवदेस अवंती पुरी । नरनारि मानौ सुरसुरी । रुद्रदत्तराजा बलवान । ताकैनारि सुधर्म्माजांनि । चयौवै श्रवन चरतहैं आइ । सुतसुप्रभनांम उपजाइ । महासरूपी सील गुनमान । तेज तपस्वी सील निधांन । एकसमैं मुनि आए तहां । नगर अवंती बनहै जहां । फुनि नृपगयो वंदन काज । सुप्रभनांम नम्यौ मुनिराज । पूछैं मुकति गमन के हेत । दुविध धर्म उपदेश जुदेत । जिसथांनिक उपज्यौ सम्यक्त । सवल्य तपस्या अपनी सक्त । महापुन्य तीरथ जो नमै । सोनर निहचै सिवपुरगमैं । सिखर कूट क्रतभंजन नाम । वंदन करतलहैं सिवधाम सुनि करि भयौ संध संयुक्त । सुप्रभनांम मुनि वानी उक्त । जाय सकल नगपरि जिन थांन । पूजाकरी हर्ष उरआंनि । समाकित की प्रापति जिहभई । तिंह मिथ्यात प्रकृति नासिगई । प्रसम भाव चितमैं अति भयौ ॥ संग त्यागी शुभ चारित लयौ ॥ एकअवर बनकोट नरेस ॥ धार्यो तहां दिगंवर भेष ॥

## * दोहा *

करी तपस्या अतुल अति । क्रत भंजन जहं कूट । सिवरमनी लहि छिनक मैं । जनम जरामृत छूट ।

## * अडिल *

सोई कूट प्रधान जांनि जौं नरनमै । कोट प्रोषधी पाइ महाफल सिवगमैं ॥ लौहाचार्य कह्यौ जो प्राकृत

बचन सौं। मन सुख उदधि जो हेत सुभाषा रचन सौं ॥

* दोहा *

सुगति दैनि अघहरनकौं। यासम तीरथनाहिं। अन्य क्षेत्र अतिसैंघनी। देखत दुख मिटि जांहि ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोंहाचार्य विरचते तीर्थमहातमेखुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुद्धसागरेण बरणनं सिद्ध कूट कृतभंजन ऊपर बिमलनाथ मोक्षगमनौ नांम चतुर्दसोध्याय ॥ १४ ॥

* सवैया *

दर्शन ज्ञांन सुखसता हैं अन्त जाकै जनम बिनीता थांन तात सिंघसैनहैं। सूर्यादेवी मातहेम बर्न सुभग देह उन्नत पचास जग जस लैंनहैं। सेह चिन्ह चरन मैं तीसलाख बर्ष की आयु लखि जीवन जो जाग जल फैन हैं ॥ ऐसे हैं अनंत जिन ब्रत धारि लियौ तिन मन मैं मोंको सुख दैन हैं ॥

* दोहा *

गए जलधि नौबीत कैं। बिमल नांथ सिव थांन ॥ जनमे जबरहि अनंत जिन तीन भुवन भगवान ॥ गुन अनंत महिमा अतुल मेरी मति अति हीन ॥ भक्ति भक्ति बस होइ हम करौ चरित्र नवीन ॥

* चौपाई *

खंड धातकी पूरबमेर। पूरबनांम बिदेह सुहेर। तामैं दुर्ग देस सिरताज। नगर अरिष्ट पदमरथराज। पुन्य प्रताप महागुणवंत। अरि कुलकीनौ छिन मैं अंत। निज भुजबल राजैं नरईस ॥ बहुविधि आइ नवावैं सीस। इकदिन सभा मध्य जिनराइ। माली तबैं जुहारयौ आइ। नांम स्वयंभू तीरथराज। आये बनमैं धर्म जिहाज। तिनप्रसाद चिरजीयौ नरेस। आंनि फिरै तुम देस बिदेस। सुनि नरेंद्र हिए हर्ष अपार। करी परोक्ष बंदना सार। निज अंकुस आभूषणदेइ। पुष्प जीव की बिदा करेइ। लै पूजा पाहर

अनागार नृपमुनियो तहां ॥ नृपजाइ । अर्चन थुति करि सीस नवाय । श्रावक धर्म्म अनंतर जहां । अनागार नृपमुनियो तहां ॥ हैं बिरक्त वैराग पंचमहाब्रत सुमति जुसार । तीन गुपति सिव सुखदातार । तेरह बिधि चारित सुनिभूप । हैं बिरक्त वैराग सरूप । ततक्षिण धनुद तनुज दैराज । आपुन भयौ महा मुनि राज । पाखमास उपवास करंत । नानाबिधि तप हिए धरंत । ग्यारह अंग पढ़ैमनुलाइ । ध्यान धरन मैं अह निसि जाय ॥ आयु पूरन करि धरि संन्यास ॥ कीनौ सुर्ग सो लहै बास । पुष्पोतर विमान मनहर्न । ठाढ़ेसुरसेवैंजुगचर्न । द्वाविंसति सागर परवान परी आयुसुख सहित सुजान । कृतम अकृतम श्रीजिनधाम । निति प्रति सबकौं करैं प्रनाम । मन बंछित सब भोगैं भोग । व्यापै नाहि रोग तन सोग । बहुतक अमर सभा थितिकरैं । छहौं द्रबचरचाविस्तरैं ।

## * अडिल *

इहबिधि सो वह देव आयु पूरनकरी । सेषरही पटमास माल मूर्छाधरी । मरन चिन्ह लखि अमर भाव बिकल पत जौनिसि दिन लै बसु दर्ब चरन श्रीजिनजजैं ।

## * दोहा *

आगें सुनि मगधेस नृप जिन अनंत अवतार । धर्म प्रगट करि मुक्ति लहि तीन लोक सुखकार ॥

## * चौपाई *

सब दीपन के मध्य बखांनि । जंबूदीप अनूपम जांनि ॥ भरत क्षेत्र मैं कोसल देस । साकेतापुर बसैं सुबेस ॥ सिंह सैनि नगरी पति कहां । नरनारीजन सब सुखलहां ॥ सूर्या देवी नारि समेत । करैं भोग दंपति अति हेत ॥ सोपुर सोभा करी धनिंद । मान बर्षा तहं करै सुरेंद्र ॥ इहि बिधिसौं बीते पट् मास । नगर बसैं महा सुखरास ॥ सूर्या देवी इकदिन रैनि ॥ सोध सिषरी करती सुख चैन । सोला सुपिन देखि निसि अन्त ॥ कहैं प्रातपति सो हरषंत । अवधि ज्ञांन बलि भाषैं राइ ॥ तीन जगत

पति सुत उपजाइ । करैं परस्पर दंपति नेह ॥ मगल गांन होइ तिन गेह। कार्त्तिक बादि एकदिन [illegible] ॥ कीनौं इन्द्र गर्भ कल्यांन । राखि सुरि सेवन जिन मात ॥ जांनि नयो सुरपुर अवतार । छप्पन देव कुमारी आइ ॥ निज निज सब ग्रह काज कराय । गूढ़ प्रश्न पूछैं सुरनारि ॥ उतर देइ मात चितधारि । गए महिनां नौ इहि रूप ॥ जनमे तीन जगत के भूप । आइ इन्द्र सुर गिरि लैगयौ। जन्म कल्यांण इह बिधि ठयौ ॥ अनन्तनाथ गुन अन्त न लहौं। अल्प बुद्धिमैं कैसैं कहौं । जैजै करत नगर फुनि आइ । जिन मात के गोदथपाइ । तांडव नृत्य इन्द्र तव कियौ । निरषि निरषि जिन सुख हरिषियौ । बालरूप सुर सुरपति थाय । गए सुछिन मैं सुरपुर आय । जिन बालक सुरबाल समेत। क्रीड़ा करैं धरैं बहुहेत। अगूठा अमृत रस थापि । करैं सरीर पुष्ट अतिजांनि। दस आतिसैं सोहै सुखदाइ । एक सहस बहु लक्षन काइ । वरस तीसलखि आयु महंत । काय पचास चापि बलवन्त। सातलाख पंचास हजार। बालरूप बीते मनहार। पांनिग्रहन करि कीनौं राज । विधि पूरव सब बन्यौं समाज । पंद्रहलाख बर्ष मर्जाद । प्रजा पोषन करि अहलाद । इक दिन सिंघ पीठि थिति देव । ठाढे सुरनर करत सुसेव । उल्कापात देखि दिसि एक । मन मैं श्री जिन धखौ बिवेक ॥ छिन बिध्वंसी इह संसार । बिविधि रूप जग दुष भंडार । द्वादस बिधि सुभावन भाय । सुर लौकांतिक पहुंचे आइ । अस्तुति बिनैं भक्ति चित धारि । करि कैं गए ब्रह्म सुरस्मार । सागरदत पालकी जबैं । जिन बैठाये मघवा तबैं । गए सहेत कवन के मध्य । जै जै करैं देव आनिवध्य । सुभ दुकूल आभूषन त्यागि। निहचल ध्यांन आतमा लागि । दस सत भूप राज तजि जहां। करि प्रनांम तप लीनौं तहां।

*** दोहा ***

जेठ असितथिति द्वादसी। जिन अनंत तप लीन। सुरनर खग सुत इन्द्र मिलि । तप कल्यांनक कीन ॥

*** चौपाई ***

निज निज थांन गए सबजीव । दुर्द्धर तप जिन करै अतीव । मनपर्यै उपज्यौ तिनिवार । जुगल दिवस जिन बृत धार ॥ तदनंतर पारन चित लाय ॥ धर्मगढ़ पुर गमन कराय । नृप बिसाख लखि अस्तुति करी । नौधा भक्ति हिए में धरी । प्रासुक धेनु दुग्ध आहार । करिकै अखै निधि उचार पंचाचार्य देव तब कियौ । नर नारी तब लखि हरषियौ ॥प्रभुजी जाय बिपिन धरि ध्यांन ॥ जुगल वर्ष छद मस्थ बखांन ॥ घात घातिया कर्म्म महंत । जे चेतन गुण घात करंत ॥ केवल ज्ञांन भांन प्रगटाइ मिथ्या तम छिन मांहि नसाय । समो सरन रचना धर निंद ॥ कर थुति करैं सुरासुर इंद ॥ व्योम बांन मिति मन धर सार । जिन बांनी धुनि परखन हार । द्वादस सभा जीव सब भरे । जिन भाषा समझैं रुचि धरे । केवल कल्यानक करि इंद । गयो निजासपद हरष सुरिंद । तीनकाल बांनी धुनि होय । धर्म बखांन सुनै सब कोय ॥

*** दोहा ***

नष्ट कला तिथि चैत की उपज्यौ केवल ज्ञांन । व्रत बिधान जे नर करैं । तिनको होय कल्यांन ॥

*** अडिल ***

नाना देस बिहार कियौ जिन राजनैं । दुबिधि धर्म्म उपदेश भव्य जनका जनैं । मास एक थिति आयु रहीपर मिति जबैं । आऐ सिषर सुमेद सुरासुरजु तबैं ॥

*** दोहा ***

समौ सरन तहं परिगयौ । कूटस्वयंभू शीस । जोगरोध श्रीजिन रहै । तीन लोक के ईस । जेठ सुकल तिथि चौथि कौं । मुक्ति बास प्रभुकीन । गुन अनंत जामैं लस । मुष्य आठगुन लीन । नरसुर गलपसु असुरपति । आए अति आनंद मंगल गान बिधान करि पूजा करि रजवंदि ।

*** अडिल ***

सिवकल्यानक सक्र कियो बहुकूटपै । जेनर नमै त्रिशुद्ध पाप सबछूटपै । नरक पसुगति नास देव पदनर । लहै । क्रम क्रम सौ सिव जाय जैन बचयौ कहै

*** दोहा ***

और मुनी सुरसिव गए ॥ वहैकूटसिर थान ॥ जो आगम गिनती लही । तिन कौ करो बखान ।

*** अडिल ***

मुनिवर कोडाकोडि छ्यानवैं जानियो ॥ सतरि कोडि लाख सुसतरि मानियो । सतरि सहस प्रमांन सानसै अघहरी । कूटसुयंभू सीस मुक्ति रमनी वरी ॥

*** दोहा ***

ऐसे क्षेत्र पुनीति की महिमा कही न जाइ ॥ भक्ति सहित जात्राकरैं । तिनके दुख्य नसाइ । औरकथा श्रेनिक सुनो । च्यारि सैननृप बात । जात्राकरि जो फल लह्यौ । सोबरनौं अवतार ।

*** छंदचाल ***

यह जंबूदीप विराजे । बलया कनसोभाछाजे । तहं भरतक्षेत्र सुखदाइ । धनुषा कनसोभपाइ । कौसांबीपुर इक सोहै । देखत सबजन मनमोहै । एकसेठ बसै बृनसेन ॥ धारिद्रव्य प्रचुर सुख दैन ॥ बरनी सुमसैना नांम । बहुरूप सील गुनधाम । तिनको कोई पूर्ब नियोग । भयो पुत्रअसुभके जोग । छिनमैं लक्ष्मी सबनासी । समदत नांम सुखरासी । फुनि मात पिता तिस मूवा । तबही अति कुष्टत हूवा । उच्छिष्ट उदर भरि जीवैं । सरसरिताको जलपीवैं । इक दिन बनभ्रमतो डोलैं । मुनि देखि प्रनम इमबोलैं ॥ मै कौन सो कर्म कमायौ ॥ जासौं इहविधि दुखपायौ ॥ मुनि निरखि दयाउरआंनि ॥ बोलेशुभ अंमृतबानि । इहअंत रायबलकर्म ॥ उपज्यौ बलवन्त असर्म्म । जय पूजा जिनवर करिए । पूरब कन पातिग हरिए । सुनि बोल्यौ इमसमदत्त । सुनियौ मुनि बच रत ॥ मेरो मन चंचल रूप । तन छीन पेट जिमि कूप ॥ कैसे बृत पूजा कीजै । किंहि विधि जय ध्यांन धरीजे ॥ सबसौं मैंहौं असमर्थ । कछू होय नहीं बिनअर्थ ॥

* दोहा *

फुनि मुनि बोल्यौ मधुर वच । निज मन लेकरि संत ॥ सिखर सुमेद जात्रा करौ । लक्ष्मी होय अनंत ॥ सुनि बूझैं समदत्त इम । किहिं बिधिं जात्रा होय । सो भाषौ अनुकंपि धरि । भाग उदै तुम जोय ॥

* चौपाई *

कहैं तपोधन हित मित बैंन । श्री जिन मारग भाषित अैन ॥ पीत बसन पहरैं मन सुद्ध । जिन ग्रह जाय नमैं धरि बुद्ध । संघ भक्ति जिन सक्ति समांन । करैं च्यारि बिधि बिधिवत दांन ॥ इह प्रकार जो जात्रा करैं । लहि लक्ष्मी सिव लक्ष्मी बरैं । दै उपदेस गए मुनि राज ॥ नमि समदत चल्यौ निजकाज आम्र बृक्ष तर बैठि तुरंत । निज मन मांही सोच करंत ॥ मोकौं मिलै बसन केहि पीत । जात्रा होय कौनसी रीत । इह बिधि चित करैं तिस ठौर । कारन आइ बन्यौ इक और ॥

* दोहा *

पदम प्रभु पूजा निमति । इक बिद्या धर आय । पूजा श्रुति कर न्याय जुत । वनमैं केलि कराय ॥ दीन हीन दुखित निरखि । दया दांन बहु देइ । जैन धर्म्म धर्म्मज्ञ अति । पर उपगार करेइ । सो चतुर सम दत्त लखि । खग पूछै कुसलात । तरुन रूप है के कहै । अपने दुख की बात ॥

* चौपाई *

गद गद बचन सुनै खग जबैं । करुणा भाव भयौ हिए तबैं ॥ दिए वस्त्र पीरे आभर्न । चलौ साथ लै जात्रा करन ॥ पूजा दांन करत वह गए । सिखर सुमेर निहारत भए । कूट स्वयंभूपैं जिन नाथ अनंत नाथ कौ सिव कल्यांन ॥ जहां जाय जिन पूजा रची । भगति बहुत अपने मन सची । विदा किये खग कौतिहिं घरी । आय दिगंबर पदवी धरी ॥ तप करि धारि संन्यास महंत । सुर पद सोलम सुर्ग लहंत । द्वाबिंसति सागर थिति धार ॥ और कथा कौ सुनि बिस्तार

* दोहा

इह सुनि जंबू दीप मैं । भरतक्षेत्र तहं जांनि ॥ तहं कुर जंगल देस मैं । हथनांपुर सुभ थांन । रतन सैंन भूपत जहां । सूर बीर अभिराम । मलया देवी नारि घर । सीलवंत सुख धांम । तिनकै सोम दंतचर सोलमं स्वर्ग मझारि । सुरपद तजि तहं जनमियौ । चारिसैन सुतसार । रतन सैंन दिक्षालई । चारि सैंन दै राज । प्रजा पोषनां करत सुख । राखत सबकी लाज ॥

* अडिल *

एक दिन बन केलि करत नरपति गयौ । महादरिद्री पुरष एक देखत भयौ ॥ पूर्व भवस्मृति जांनि कहै मुख से तबैं । सिखर जात प्रसाद लह्यौ इह पद जबैं ।

* दोहा *

आंनि फिरी परदेस मे । विभौ भई अति गेह । सेवा करैं अनेक नृप । राखै सब जन नेह ॥

* अडिल *

फुनि अब जात्रा करहु जथावत गिरितनी । जौ मन वंछित काज होय सब विधि बनी ॥ जनम जरा मृतिनासिवास सिव मैं करौं । आवागमन निवारि कर्म आठौं हरौं

* दोहा *

ऐसी मनहि विचार नृप । फुनि आये निज गेह । अवर दस क्षौहनि संग लै । चल्यौ भक्ति धरि नेह

* चौपाई *

थांन थांन जिन पूजा करैं । च्यारि प्रकार दांन बिसतरैं । सब जीवन कौ राखै मांन । परम विवेक बुद्धि की खांनि ॥ जाय सिखर जिन जात्रा करी । कूट कूट पूजा बिस्तरी । जेठे सुत कौं दीनोराज । आप लियौ तप आतम काज । चारि सैन दुद्धरतप धारि । सिव पदवीपाई सुख कार ॥ भाव सहित जो जात्रा करैं । सिव रमनी सो निहचै बरैं ॥ कूट स्वयंभू बंदैं कोइ । कोट प्रोपधी फल तिस होय ॥ जो सब गिर बंदैं मन लाइ । ताको फल बरन्यो नहिं जाइ ॥

* दोहा *

रचि भाषा मनसुख उदधि। जानौ इह सिव पंथ ॥
लौहाचार्य नैं कह्यौ ॥ सिखर माहातम ग्रंथ ॥ इतिश्री काष्ठा संगे लोहाचार्य बिरचते तीर्थ माहात्म्येषु समेदाचल माहात्म्ये भाषा यामन सुद्धसागरेण बर्णनं सिद्धकूट स्वयंभूपर अनंतनाथ जिनमोक्ष गमन पंचदसमो परिछेद ॥ १५ ॥

*** सवैया ***

रत्न सैना तात मात सुव्रता सुनै
कर्म हरन हार धर्म्म कहन हार सिव केल हनहाररत्न पुरजनम हैं। दशलाख पूर्व आयु पैतालीस चाप काय देखि जग सुप्र
बिख्यात बज्र दंड चरन चिन्ह हेम दुति तनहैं। सिंधु नामि सुफल जनम जानि हर्षित ह्वै मनमैं ॥
समजाइ बसै बनमैं। ऐसे धर्मनाथ जी कौ मनसुख

*** दोहा ***

तिनके पंच
जिन अनंत मुकतैं गए। बीते सागर चारि। धर्म्मनाथ जनमैं जबैं। त्रिभुवनसुखदातार। कूदत रवि
कल्यानक अब। बरनौं आगम देखि। धर्म्मा धर्म्म प्रकास करि। सिव रमनी छबि पेषि। पूजाखंड धातु की जांनि
प्रगट करि। भव्य जीव सिवराह। भाव सहित जात्रा करैं। लेइ सुनर भवलाह। तामैं नगर सुसीमां
पूरब जहां बिदेह बखानि। सीता नंदी याम्यादिसि कूल। देस बत्स नामा सुखमूल। प्रजा पोषनाकरैं
सार। बसैं नारि नरसब गुनधार। आति प्रतापी दसरथनाम। राजा राजकरैं सुखधाम। सरद पूरणमास
नरेस। निसि दिन पूजाकरै नरेस। धर्म ध्यान सौं राखैं प्रीति। निकट भव्य जनकी इहरीति। अठाईस मूल
लखि रैंनि। जगत समस्त जांनि हिए फैंन। ह्वै बैराग्य महारथ राज। सुतकौं देय हुवे मुनि राज। *** दोहा ***
गुण धार। उतर गुनकौ करै बिचार। द्वद्धर ब्रत धारै मुनिराइ। षोड़स कारन करि मनलाइ।
तीर्थंकर के गोतकौं। कीनौं सदरथ बंध। अंत समैं संन्यास लै। तजे प्राण तजि धंध। उपजे छिनमैं जाइकैं

जहं सर्वार्थ सिद्धि। पद अहमिंद्र लह्यौ तहां। पाई बहु विधि रिद्धि पूरव समसव जानिए। आयु कायु सुख सर्व। सबसुर मिलि चरचाकरैं। सात तत्व षट दर्व। त्रय त्रिंशत सागर उमर बीते हैं इह रीति। रहिमास षट शेष जब। जिनपूजा करि प्रीति ॥

## * चौपाई *

अब सुनि श्रेनिक जिन अवतार। धर्मनाथ स्वामी विस्तार। यहजंबू वरदीप महंत। सबदीपन के मध्य बसंत। भरत क्षेत्र तहं कौशल देस। रत्नपुरी जिम पुरी सुरेस। रत्नसेननृप राजसुकरैं। राजा प्रजानीति पगधरैं सो मृतसैना भूपति नारि। दंपति भोगे भोग अपार। तहां आय धनपति सुररच्यौ। नौ द्वादस जोजन विधि सच्यौ। रत्नवृष्टि करि तीनू काल। बीते इमषट् मास विसाल। थिति बैसाखअष्टमी ऐंन। करैं मात निजमंदिर सैंन। सो अहमिंद्र चरचइआय। गर्भस्थिति करि सुभलखाय। षोड्स मिति उठि मज्जन कियो। प्रातजाइ पति सौं कहि दियो। श्रीजिन जनम सुपन फलजानि। हरष-परस्पर करैं बखान। इतनेमें आयो अमरेस। जैजै करत सुरासुर शेष। सिंह पीठि थापे जिनमात। करि अस्नान पूजहरषात। गर्भ कल्यानक कीनों जबैं। निज निज धाम गए पुनि तबैं। छप्पन देव कुमारी आइ। निज नियोग साधे सुखपाइ। निति प्रति गीत नृत्यघर होय। उत्सव करैं सकल पुरलोइ। क्रम करि बीते हैं नवमास। पूरन भए गर्भ की आस। माघ शुक्लतेरसि अति सार। लीनौं धर्मनाथ अवतार। मघवा ऐरापति साजिलीन। जैजै सकल सुरासुर कीन ॥ आये नगर जिनालय चढ़ाय। भक्ति सहित सुर गिरि लेजाय ॥ विधिवत नान्ह पूज्य करिवंदि। गंधोदिक लै भद्र अनंदि ॥ वस्त्राभूषन सब पहराइ। माता गोद दिए पुरआय ॥ तांडव नृत्य कियो तब इन्द। गयो राखि सुरसेव जिनन्द ॥ मति श्रुति ज्ञान अवधि प्रभुधरैं। बाल केल करि सब मनहरैं॥ पैंतालीस चाप उतंग। वज्रकाय द्युति हेम अभंग ॥ दसलख सबैं आयु परमान। सहस एक वसु चिन्ह

बखान ॥ दस अतिसैं जुत जन्म जिनेस । बर्ष अढ़ाई लखि सुभेस ॥ गयो ब्याह करि नृप पद धारि । बरस पांचलख नीति बिचारि ॥ एक समैं प्रभु सभा समेत । बैठे बात करें हित हेत ॥ इतनै इन्द्र धनुष देखियौ ॥ नासनीक सब जग लखियौ । निज हित निरखि प्रसम उपजाइ ॥ राज दियौ सुत कौं सुखदाय । द्वादसानु प्रेक्षा भावन्त ॥ सुर लौकांति तव आवन्त । थुति करि ब्रह्म लौक सुरगयौ । सक्र पालकी लावत भयौ ॥ नाभिदतपुर श्री जिन थाप । गए लवन वन श्री जिनथाप ॥ *दोहा* धर्म्मनाथ जिन राजजहं ॥ जात रूप करि अंक । चौबीसौं परकार कौं ॥ तजियौ जिनवर संग । आतम ध्यांन धस्यौ तबैं ॥ लषन आतम रूप । निरखि धरननमि सहस इक ॥ दिक्षा लीनी भूप । अडिल

तप कल्यांणक सक्र कियौ हरषाय कैं ॥ क्षीर सिंधु केशडारियौ जाइकै । जन्म दिवस तबजांनि सक्र सुरनर जबैं ॥ निज निज थांन के गए सुनामिनमिकै तबैं ॥

* दोहा *

दिन द्वै करि ब्रत ध्यांन धरि । उठे असन के हेत । धरमनमी जिनपुर गए ॥ सुधर सैन से केत ।

* चौपाई *

जिन मुनि भेष लए धरि सैन । जांने ए प्रभु जग सुख दैन । नौधा भक्ति करै तवराइ । धेनु दुग्ध आहार कराइ । अषैं निधि जिन जव उच्चरैं ॥ पंचाचार्य देव तहं करैं । फुनिवन आइ धस्यौ प्रभुध्यांन । एक बर्ष छदमस्थ बखांन

* दोहा *

पौष सुदि दसमी सुदिन । कर्म्म घातिया नास । केवल ग्यांन भयौ तबैं । लौका लौक प्रकास । समौ सरन रचियो धनपति । द्वादस सभा बिसाल । आइ सुरासुर नर पसु । बांनी सुनै रसाल ॥

* चौपाई *

गनधर तेतालीस सुनीस । आदि अरिष्ट सैन गन ईस ॥ बिबिधि देस मैं करयौ बिहार । दीनौ धर्म्म देसनांसार ॥ मास प्रमांन रहि थिति जबैं । समेद सिषर आए प्रभु तबैं । पोष सुदि दसमी थिति जांनि । कीनैं सक्रग्यांन कल्यांन ॥ पुंन्य पाप सम करि जिनराय । समो सरन तब बिमोनसाय । कूटदत पर ऊपर गए । जोगरोध निज गुनलौ दिए । जेष्ट सुकल तिथि चौथि बखांनि । गए अचलपुर श्री भगवांन । तनकपूर समजब खिरि गयौ । वेनष केस गाय जो दियौ ॥ इन्द्रआय श्री षंड मगाय । अगर कपूर सुरभि बहुल्याय । सुर रचितन माया मई कियौ ॥ वेनष केस गाय जो दियौ । अगनि कुमार प्रणमि युगचर्न । प्रगटी अग्नि भस्म तन कर्न । छिन मैं छारभई अति सीत ॥ ताल लगावैं सुरनर प्रीति । पूजाकरि बसु बिधि लै द्रर्ब । जैजै करैं अमर गनसर्ब ॥ इह बिधि सिवकल्यानक सार । करि करि निज निज पुरसाचार । सोई कूटदत वरपूत । बंदित सुर नरगन संजूत । नरक पसुगति छिन मैं हरैं क्रमक्रम सौं सिव नारी बरैं

* दोहा *

महिमा दतबर कूटकी । मोपै कही नजाइ । इतनैं मुनि तहं सिवगए । संख्या कहो सुभाय ।

## अडिल

कोडि उनईस बखान लाखनौं जानिए । नौहजार सतसात पचास खेवांनए । भए निरंजन सिद्ध लह्यौ पद आपनौं । कर्म्म कुलाचल भांनि हींनि सब पापनौं ॥

* दोहा *

और कथा मगधेस इक । सुनौं सुद्ध मन लाय ॥ भाउ दत्त नृप जात्रा करि । फल पायौ सुखदाय ॥

* चौपाई *

जंबू दीप सुचक्राकार । लख जोजन ताकौ बिस्तार । भरत क्षेत्र चापाकृत जांनि । श्री पुर नामैं

नगर बखांन ॥ भवदत्त नांम तहांहैं भूप ॥ त्रिया महेंद्रदता अति रूप । दंपति पूजैं श्री जिव राज ॥ निति प्रति दांन देइ हित काज ॥ संघ भक्ति विधिवत बिस्तरैं ॥ जैंन प्रतित हिए मैं धरैं । द्रव्य खरचे जिन मंदिर कियो । बिंब भरा द्रव्य बहु दियौ ॥ च्यारि प्रकार संघ लै साथि । जात्रा हेत चल्यौ नर नाथ। जाइ सिखर परि पूजा करी । इंद्र धनुष की विधि उचरी । निस मैं ध्यांन धर्यौ मनु लाय। लखिकैं निर्जन थान कि जाय । निसि दिन तीन बितीते जबैं । अंतर कथा सुनो इक तबैं ।

* दोहा *

प्रथम स्वर्ग के इंद्र की ॥ बैठी सभा सुनंत ॥ समकितकी चरचा करैं । देव परस्पर अंत ॥ भरत क्षेत्र मैं कौन नर । समकित सहित बखांन ॥ सक्र चवैं निज मुख थकी भावदत्त नृप जांनि ॥ सो आयोहैं सिखरि परि ॥ कूट बंदना हेत ॥ पूजा करि अब ध्यांन धरि । तिष्टै निहचल देत । देव अनखुषा अंबिका। चल्यौ परिक्ष्या लैन । बिन देखै मानो नहीं । इंद्र कहे जे बैंन ॥ तीजे दिनके अंत निसि । आइ कियो उप सर्ग । भाव दत मन बचन । चल्यौ नहीं तन वर्ग ।

* चौपाई *

इतनें मैं पुनि भयौ प्रभात । नमस्कार करि सुर हरषात । रतन अमोलि बस्तु वउ लेइ । बिनौ भक्ति करि भेट धेरइ । कहे बचन सुर अस्तुति किये । सुरपति भेट तुमेए दिए । भाव दत तब ऐसें कही मेरे काम न यको सही । अति आग्रह सुर करि तिंहि थांन ॥ भावदत यको नहिमांन । निश्चल चित देखि सिर नाय ॥ कहे धनि समकित धरराय ॥ तुम अस्तुति जिम सुर पति करी । इहमैं देखी सो इहघरी बारंबार प्रणामि सुर जबैं । एक भेरि दीनी करैं तबै। भेरी सष्ट जहां लौं होइ॥ नौकरार गद नासन सोय ॥ इह गुन सुनि करि भेरी लेइ । पर उपगार चित में देइ । याद करौं तब प्रगटौं आय । ऐसा कहि सुर

सुर पुर जाय। भावदत पुनि संघ समेत। आयो गेह राज सुख हेत। शुक्ल चतुर दसि व्रतकोधारि। सांतिक पाठ जंत्र रचि सार। राजा रानी पूजा करैं। भाव भक्ति अपने हिए धरैं। तिस दिन भेरि बजैं दिन रात। सुनत सबदवाके गद जात। मास मास इह रीति बखांन। देस देस जस भयो निदांन। इह विधि सौं बहुते दिन भए। बहु रोगी आरोगित भए। राज ग्रही को भूप बिसेष। वाइ पीडित नारी एक। भेषज करी अनेक प्रकार। अधिक रोग बाढो दुख कार। भेरि सुजस सुनि आयौ तहां। भावदत्त भूपति पुरजहां॥ पूछै नृप भेरी की बात। कहै नगर बासी दुखदत। परबी परे मास के अंत। सुनत सबद गद नसैं तुरंत। भेरि बजैं जबलौ सुखदाइ॥ तबलौं पूंन नासि है जाय निज अमात्य सौं भूपति कहै॥ इहांउपाय कौंनसरदहै॥ मंत्री कहैं चिंतमति करो॥ एकबात मेरीजियधरो दरबि खरच करिए नृपअबैं। जाइ रोग छिन मये सबैं। जाके सष्ट सुनत दुखजाय। घसिलगाय गदक्यों नमिटाय। राजासुनि मनभयो आनंद। रोगनास कौपायो छंद ❋ दोहा ❋

भेरि अनुचर शीघ्र तबैं। लीनौं एकबुलाय। मिष्ट बचनतब योप करि। बातकहै इमराइ॥ *चौपाई*

कोटदर्व तुम हमसौं लेइ। भेरी सष्ट सुनाइ जु देइ॥ सुनि किंकर ऐसैं उचरैं॥ नृप अग्या बिनु कैसैं करैं। फुनि। भूपति इम बोलै बैंन। सुनु सेवक हम तुम सुख दैन॥ गुप्ति द्रव्य लै कोटि सुजान॥ भेरिखंड रंचक दे आंन॥

❋ दोहा ❋

बात मानि राजा तनी। ग्राप्ति दर्व लै लीन॥ भेरि खंडकरि छिनक में। आइ भूप कौं दीन॥ राज ग्रही को भूप तब। लै घसि देह लगाय॥ बाय बिथा नास तुरत॥ देह अरोगित थाय॥ हरिषित होय नरेस॥ फुनि आयौ अपने धांम। खण्ड खण्ड होइ सब गए॥ भेरि लोभ बस दाम॥ भेरि सेवक भरि लखि। चिंता

तुर अति होइ ॥ जौं कदापि राजा सुनैं ॥ दुख दे डारै खोइ । वही भेरि की खोलि परि ॥ करि भेरि इक आन
बाजै भेरि अनेक बल ॥ रोग नासनहि जांन राजा मन मैं सोचित करि ॥ कहैं कौनइहबात ॥ सुमरन कीनौ
देव वहै ॥ आयौ सुर हरषत ॥ कहै राय सुनि देवजी ॥ भेरि गयौ गुनआज ॥ सोहम सो तुममाति कहौ ॥
अबवह कौनेकाज ॥ देव चवै इम्रत बचन ॥ सुनि भूपति मनुलाय । मो भेरी गदनासनी । गई लोभवसिगइ ।
यह भेरी है कृतिमअर्व । क्यों करि नासै रोग । सुनितराय चक्रति भयौ । बढ्यौ हिए मैं सोग । रोग नासिन
भिरि यह । खोये अनुचर मूढ़ । खंडखंड करि लोभ वासि । करि राखी पुनि गूढ़ ॥ धृगहै ऐसे लौभकौं । धृग
अनुचर धृगलोग । धृगइह राज बिभूतिकौं धृगपंचेंद्री भोग । देव कहै सुनि भूपअव । राज करौ सुखदाइ ॥
और भेरि तुमलेऊ अब । सबगुन आगमराइ । भाव दतसुर सौं कहैं । सुनौं देव मुझि बात । राज करत
बहु दिन गए । बृथा मनुष भवजात । जाय सिखर परि तपकरौं हरौं पूर्व कृत कर्म्म । जन्म जरा म्रति नासि
करि । लहौं मुक्ति गत भर्म्म । राज दियौ सुत जेष्ट कौं । संघ साथि लै राय । सिखर जाय करि कूट नमि । व्रत
लै तपजुकराय । पाखमास उपवासकरि । सही परीस्याघोर । जिन गुनसता सक्ति सब । ध्यान कियौ वल
फौर । कूटदत बरसीसपर । कर्म घातिया नासि । केवल ज्ञान प्रकासि करि । कीनौं सिवपुर वास । इह विधि
जो नरभावधरि । करै जात्रा मनलाय । इष्टवस्तु पावैं तुरत । सेवकरैं सुरआय । कोडि प्रोषधी फललहैं । कूटसुदत
नमंत । जो सब गिरि वंदैंमनुष । तिंहिफल लहैं अनंत । लोहाचार्य मुक्ति मग । इहश्रुत दियौ वताय ।
मन सुखसागर पठिनकौं । भाषा रची बनाय ॥

इति श्री काष्टा संग लोहाचार्य विरचते तीर्थमहातमेखुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुख सागरेण वरणनं सिद्ध कूट दतवर
धर्मनाथ जिनमोक्षगमन नामषष्टदसोध्याय ॥ १६ ॥

### * सवैया *

विघन हरन हार सुखसांत के करन दुखनासन जिनेस नागपुर अवतरे हैं । बिश्वसेनि नृपतात ऐरादेवी नाम मात मृगकौ चिन्ह तन हेम दुति धरे हैं । धनुष चलीस काय एक लाख बर्ष आयु सहस अठोतर सु चिन्ह आयु पेर हैं । ऐसे सांतिनाथ जीकौं नमैं मनसुख सिंधु उनही के चरन की आसहमकरे हैं।

### * दोहा *

धर्म नाथ सिवपुरगए ॥ भए जल दधि जवतीन ॥ शांति नाथ सिवसुख करन ॥ जनम अएतब लीन ॥ जिन के चरनांबुजजुग्ल ॥ नमौं जोरि करि दोइ । कहत पंचकल्यान अब ॥ बिघन सांति सबकोइ

### * चौपाई *

इहजंबूबर दीप महांन । तहां बिदेह सो पूरब जांन । सीता नंदी मध्य में बहैं । अंमृत सम पांनी तसु कहैं ॥ याम्य कूल दिसिबसैं सुदेस । लखि बिभूति लाजे अमरेस । पुंडरीक नगरी मनहार । बन उपबन सोभा अधिकार । श्रीयखेन नामैं नरपाल । दुर्जन जनकौ हैं समकाल । सहसीमयु रांनीअतिसंत । सीलरूप निधि बहु गुनवंत ! राज भोग भोगैं दिन राति । जानैं नहिं काल कित जात । उत्तम कार्य करै मनु लाय । श्री जिन भक्ति धरैं हिय राय । मृतक पुरुष लखि है बैराग । छिनमैं राज बिभै सब त्यागि ॥ राज भार जेठे सुत दियौ । जाइ महाब्रतं गहि लियौ । जैंन महाब्रत दुद्धर धारि । कीनो बृत द्वादस बिधि सार । दर्श बिशुद्ध भावनां भाय । तीर्थंकर पद लै सुख दाइ । उदैं परीस्या आवैं जबैं । धरि सम भाव सहैं मुनि तबैं । आयु बितीत भई इह रीति । ब्रत सन्यास धारि अति प्रीति । मरन कियौ निज गुन चित देइ । जासौं सिव पुर गमन करेइ । जहं-सर्बार्थ सिद्धि बिमांन । सिवँ नगरी लघु लात

समांन । पद अहमिंद्र लयौ गुन धार । ठाढ़े सुर सेवैं अधिकार ॥ निर्विकार हिए समता धरैं । चरचा सात तत्व की करैं । आउ परी सागर तेतीस । तीन ग्यांन जुत बिस्वा बीस । पूरब सम सब जांनि जुलेहु । मन बच काय चित निज देहु । अंत मास षट आव जो रही । तब जिन पूजा हिए सरदही आगे कथा सुनौं मग धेस । जहां होय अवतार जिनेस ॥ यह जंबूबर नांम सुदीप । लवणार्ण वतिस लसैं समीप । भरत क्षेत्र मैं आरिज खंड । सोहैंतहं कुरु देस अखंड । गजपुर नांम नगर इक बसै । अमर लोग पुर सोभा लसैं । विश्व सेनि नृप राज करंत। बहुत देसके नृप सेवंत । ऐरा देवी हैं पटनारि रूप सील गुन लक्षन धारि । ते नर नारि करैं सुख भोग । श्री जिनवर थुति जनम नियोग । हरि आग्या ले धनपति आइ । रतन बृष्टिकर नगर रचाय । पछिम रैनि सैन जिन मात । सोरह स्वप्न लखे सुख दात । उठिकरि प्रात स्नांन सिंगार । अलि साथि ले चली विचार । सभा मध्य पति लखि नमि जबै । अर्द्धासन नृप दीनौं तबैं ॥ आगम कारन पूछे राइ । भिन्न भिन्न सब सुपन बताय ॥ ग्यांन चक्षु लखि जांन्यौ भूप ॥ जिन जन्मोत्सव होइ अनूप । ऐरा देवी सुनि हरषंत । करैं परस्पर नेह अनंत । भादों बदि सप्तमी जांनि । आइ सक्र करि गर्भ कल्यांन । कीनौं उत्सव अधिक सुरेस ॥ इति भीति नासी वह देस ॥ छहौं कुलाचल बासनी जबै । गर्भ सोधना करती सबैं॥ पट पंचास कुमारी आइ ॥ जिन माता सेवैं सुख दाइ ॥ कथा पहेली करत हुलास ॥ इइ विधि सों बीते नव मास ॥

*दोहा*

जेष्ट मास अलि अभ पक्ष । चतुर दसी सुख दांन ॥ तीन ज्ञांन संयुक्त तब । लियौ जन्म भगवांन । निज निज चिन्ह विचार सुर । आए चतुर निकाय ॥ जन्म कल्यांन करि सबैं । निज निज

थांन किजाय ॥ सुद्ध सुवर्ण समांनतन । सांति नांथ जिननांम ॥ बालपनैं क्रीडा करैं । सब जनकै सुख धांम । आयु एक लख बरसकी । तनुज चाप चालीस ॥ बाल केलि मैं तेवरस ॥ गए सहस पचीस ॥ दक्षन पग मृग चिन्ह सुभ । दस अतिसैं जुत देव । बिश्व सेन सुत तरुन लखि । करत सुरा सुर सेव पानि ग्रहन करि भूप तब । कियौ राज अभि षेक ॥ सक्र सुरा सुर मिलि करैं । जै जै घोष अनेक ॥ जनम्यौ आय गेहमैं । चक्र रतन अभिरांम ॥ जिनवर चक्री मदन पद ॥ सांति नाथ सुख धाम । आंनि फिरिछह खंड मै चक्र रतन की जांनि । एजिनेंद्र पदवी धरैं त्रिभवन आग्या मांन ॥

## * चालछन्द *

सबरे छहखंड जो साधैं । चक्री जनसवनि आराधैं । तबचौदह रतन जो पाए । नौ निधि आयुनेत आए । चक्रवति बिभौ अधिकारी । तिह सौं जिन लक्ष्मीभारी । किमबरनौ राजबिभूत । मेरी अति बुद्धि कभूत । तिसतैं भुगतैं सुखसागरैं तबबर्ष पचासहजारैं। इकदिन बैठेहरिपीठे। चपला चमकत लखि जुगदीठै इहजग वस त्रंचल जान्यौ । बैराग हिएमैं आन्यौ । तबलौकांतिक सुरआवैं । जबद्वादस भावन भावैं । थुति करिबेनिज पुरजाई । सचीयत तबसिव कल्पाई । गङ्गातट अटवी भारी । तहं जाइ भए बृतधारी । मनपर्यै ज्ञान प्रकास्यौ । जैजै जै देवानि भास्यौ । जादिन तपकल्यानक कीयौ । अपनौं अपनौं मंगल लीयौ बोइदिन व्रतकरि जिनराई । सोमनस नगरतबजाई । पिय मित्र नृप जिनवर देखे । नमिं जन्म सुफल करि लेखे । गोदुग्ध अहार जो दीनौ । थुति करि शुभ संचै कीनौ । सुरपंचाचय बखानै । बनजाय धरयौ प्रभु ध्यानै । तबकीनौ बिबिधि प्रकारी । जिन संयम दुद्धरधारी । मर्जाद जो षोड़सबर्ष । छदमस्थ रहे जिनमर्ष । दसमी सुदि पोष महंत । प्रभु ज्ञान भयौजु अनंत । समवाद सरनकी रचना । धनदेवकरी अति रचना ॥

* दोहा *

देवमनुज खग व्यौंमचर ॥ आए सब तिहिं थांन ॥ मिलिसक्रादि करैं। सबैं श्रीजिन ज्ञांनकल्यान।
तीन कली बानी खिरैं ॥ भव्य जीव हित हेत ॥ जे हिएधारैं भावसौं ॥ ते पावैं सिव खेत ॥ (: अडिल)
सांतिनाथ जिनराइ सांति करताभए। करि बिहार बहु देस सिखर उपरगए। रहिमास मिति आयु जो
गरोथ न कीयौ। जहं प्रभास बरकूट ध्यान तुह धरि दियौ

* दोहा *

सितवैसाखी प्रथम दिन सांति गए सिवलोक। मन सुखसागर भावसौं करमु कलित दे धोक।
वही कूट परि सिव गए ॥ मुनिवर और अनेक ॥ श्रुतलखि कछू संष्या कहौं ॥ जितनौ हिए बिबेक ॥

* अडिल *

कौडा कोडि एक कोडि नौ सतक नौ। फुनि नौलाख प्रमांन जानिए सहस नौ। नौसैं अधिक
निन्याणवैं मुनिं इतनें कहे। भए निरंजन सिद्ध आपनैं गुनलहे। सोप्रभास बरकूट नमत जो भावसौं ॥
सोनर सुरगति पाय लहै सिवचावसौं। नर्क पसुगति नास करैं छिनमें। सही धरै हिए सम्यक्तजैन श्रुतिइमकहि।

* चौपाई *

कूटप्रभास कथा सुखदाइ। जात्राकरि सुदर्शन राइ। सोम सरम द्विज वंदन कियौ। फल निदान
वंदन कौं लियौ। सोमुनियौ इक चित लगाय। बरनन करौ जथावतराय। जंबूदीप अनूपम
सार। भरत क्षेत्र तहं धनुषाकार। देस बिरंच मित्रपुर बसैं। नरनारी अति सोभा लसैं। नांम सुदर्शन
राजै भूप। रानी जैसेना बहुरूप। बहुत बिभूति भूप कैं भई। रोग सोग दुखबाधा गई। दंपति राज भोग
सुख करैं। काल जात हिय मैं नहि धरैं ॥ इक दिन भवन क्रीड़ानृप गयौ। सुनि अनंत बीरज लखि

लियौ। केवल ज्ञानलसैं अवदात। जैजै सद्दहोहि दिनराति। तिनकी तीन प्रदक्षणदई। हिए भगति अति अदभूत भई। नमि कैं पूछैं निज परजाइ ॥ कौन पुन्य इहलक्षमी प्राइ ॥ कहे केवली मुनि नरनाथ ॥ पूरव जनम चलाए साथ। सिपर सुमेद बंदना करी ॥ पूजादांन भक्ति वहुधरी। जोनर मन वचकाय समेत ॥ जात्रा करैं लहैं सिवषेत। इतनी विभौ कौनसी बात ॥ जो तुम राइ पाइ दरषात। इह विधि सुनि नृप मनहि बिचार ॥ करैं राज पुनि सिवदातार। करि नमोस्तु आयौ निज गेह ॥ करैं संघ सामग्री जेह। तदनन्तर इक कथा विसाल। सोम सर्मद्धज की भूपाल ॥ सुनौ श्रवन दै गोतम कहै। जातै भव्य मुक्ति मग लहै ॥ योदनपुर इक नगर मनोग। धन धान्यादि सहित सव लोग ॥ सोम सरम भूसुर धन हीन। तहां वसैं अति आतुर दीन ॥ दुःखकर अटवी अटैं अनेक। जुग चारन मुनि लखि दिन एक ॥ धाइ पाउ मैं दीनौं सीस। गद गद जल्पौ भूसुर ईस ॥ दुखित देखि दया मुनि भई। श्री जिन धर्म्म देसनां दई ॥ जात्रा करौं सिषर की जाइ। तव मन बंछित लक्ष्मी पाय ॥ सोम सर्म नमिकैं मुनि राज। चल्यौ सिपर बंदन के काज ॥ नयैं मित्रपुर पहुच्यौ जाय। जवैं सुदर्सन सिंघ मिलाय ॥ पूजा करैं सुनैं श्रुति जैंन। सोम सर्म उपज्यौ हिय चैंन ॥ राय सुदर्शन भाव समेत। संव भगति अपनैं मन देत ॥ पहुंचे सिषर सुमेर गिरीस। कर जुग जोरि नवावैं सीस। पूजा करत भयौ वैराग। भूप सुदर्शन परि ग्रह त्याग। अपनौं राजपुत्र कौं दियौ ॥ कूट प्रभास सीस तप लियौ। सोम सर्म्म इह देखि तुरंत। धर्यौ महाव्रत मन महं संत। जात्रा हेत एकखग आइ। वर विभूति जुत अति सुखपाइ ॥ सो निज नारि सहित तिह थांन। बंदत फिरैं टोंक भगवान ॥

*** दोहा ***

सोम सर्म लखि खग विभौ। कियौ निदांन जो बन्ध ॥ जात्रा तपफल होइ मुझि। छूटैं दालिद

दुन्ध । आयु अन्त करि प्रांन तजि । बिजयार्द्ध उपजाइ । ह्वै खगेस सुत बिभौ लहि । फुनि जात्रा कौं आइ । भई भवस्म्रति सिपर लखि भयो हिये वैराग । पंच महाब्रत आदरैं । बिभौ करि सब त्यागि । और अनेंक मनुष्य तहि । लीनौ चारित भार । करि करि तप सिव पद लह्यौ । पायौ सुख मंडार । जो नर पूजैं भाव समेत । बसौं कूट प्रभास महंत । कोट प्रोषधी फल लहै । गदैत भव पाय दहंत । सिषर महातम ग्रन्थ यह । कीनौं लोहाचार्य । मनसुख सागर कठिन लखि । भाषा रची सुआर्ज ॥

इति श्री काष्टा संगे लोहाचार्य विरचतेतीर्थमहातम्येपुसमेदाचल महात्म भाषायामन सुखसागरेण वर्णनं सिद्ध कूटप्रभास सांति जिन मोक्ष गमनं सप्तदसमो परिछेद ॥ १७ ॥

## * सवैया *

ग्यानधर नांम कूट सिवमग पग दियौ अजाकौ चिन्ह अवतरे गजपुर मैं । सूर सैनि जनक सु कनक समांन तन श्री मती सुमात हैं । निपुन दया धर मैं । वर्ष पंचासनवैं सहस आयु पैंतीस ऊचाय । ऊंची देह केलि करी बालसुर मैं । ऐसे कुंथनाथ जिन कूंथ वादि जीव रक्ष मनसुख सिंधु नमि हरषित उरमैं ॥

## * दोहा *

शांतिनाथ मुक्तै गए । अद्धायल्प वितीत । कुंथ नाथ अवतार लेकरि प्रगट वृष रीति । कुंथनाथ पद पंकज कौ । मौमन मधुकर रूप । पंच कल्यांनक बरनि हौं सिवपद सादन भूप ॥

## * चौपाई *

जंबूदीप अनूपमथांन । तहां विदेह सुपूरब जानि । बहैं बाहनी सीतानाम । मध्य प्रबाहइनीरगुनधाम । ताकेदक्षन देसबसाय । बत्सदेसनि आवि काय । नांम सिंघपुर नगर मनोग्य । जहांवसैं सब उतिमलोग । सिंघनांम भूपति महाराज । करै राजपुर जन सुखकाज ॥ सिंघसमांन पराक्रम जानि । चौदह बिद्या करैं बखांन । प्रसम भाव

उपज्यौ दिन एक । जव जिय धार्‌यौ परम विवेक। दियौ तनुजकौं तवहींराज । लियौ महाव्रत आतमकाज
अठाईस मूल गुनधरै । पटमाया जिय रक्षाकरैं । पालै सील वाडिनौ धारि ।अतीचार जियधारैं विचार ।
दर्स विसुद्ध आदि भावना ॥ भावैं मुनि आतम पावना ॥ तीर्थंकर पद वांध्यौ गैन । जहां छियालिस
अतिसै होत । दुद्धर व्रत धारैं मुनि राय । अंत समैं संन्यास धराइ । किये भाव सव सौं अविरुद्ध
प्रांण तजे मन वचतन सुद्ध। सर्वार्थ सुनिद्धि अभिराम। पद अहमिंद्र लयौ सुख धांम। तेतीस जलधि
आयु तहं लही । और कथा सव पूरन कही। रही आयु षट मास प्रमांन । तव जिन पूजा रची सुजान
अव मुनि श्रेनिक जन मैं जिनेस । वर्नन करैं होय जिम देस । जंवू दीप भरत जहं खेत ॥ उत्तम जन
उपजावन हेत । कुरु जंगल इक देस वसाय । नाग पुरी नगरी सुख दाय ॥ सूर सैन नामा भूपाल ॥
सब जीवन पै रहै दयाल । श्री यमतीरानी मन हार ॥ सील रूप जुत सदा अचार । जिन के उर तीर्थं
कर होय । जिन थुति करन सकविकोइ । वह पुर धनद आइ पुनि रच्यौ । मानि मानिक मोतिन करि
सच्यौ ॥ तीन काल वरषावैं रत्न ॥ श्री जिन जनम करैं सव जन । श्रावक कै तिथि दसमी निसि
माता पोडस सुभ निहार । उठि करि प्रात जाय पति पास । भिंन्न भिन्न सुभ स्वप्न प्रकास । सूर सैन
सबके फल कहै । वडे भाग जिनत सुत तुम लहै । इतने मैं अमराधिप आइ ॥ गर्भ कल्यांन कियो
हरषाय । देवनि कौं हरि आइसु देइ। नाक लोक पुनि गमन करेय। देवी सेव करैं वहु मात। गत नृत्य करि
अति हरषात ॥ गूढ प्रश्न पूछैं नर नारि ॥ जिन अंवा उत्तर दै सार । क्रम सेती वीते नव मास । पूरन
भई गर्भ की आस । सित वैसाख प्रदिपदा जानि॥ आइ इंद्र करि जन्म कल्यांन॥ * अडिल *
दंती परि हरिल्याय थापि जिन राज कौं ॥ सुर गुर जाय नहावन क्रियो निज काज कौं ॥ पूजै

ले बसु दर्ब आय राज पुर जबैं ॥ नृत्य कियौ सुर रायगयौ थानिक तबैं । * चौपाई *

सुर निज बाल रूप धरि तहां । जिन बालक हरषावैं जहां ॥ केलि करावै धरि खग रूप । जिनवर क्रीडा करै अनूप । पंचास हजार ऊन एक लाख । आयु कुंथ जिनवर की भाष ॥ उन्नत काय चाप सै तीस । हेम बरन तन बिश्वा बीस ॥ द्वाबिंशति हजार मन आंन ॥ सात सतक पंचास बखांन । इतनैं बर्ष बाल पन गए । फुनि बिवाह करि चक्री भए । चक्र नियोग बिभौ सब भई । जिन बिभौति अधिक की बरनई । राज कियौ श्री जिन सुख दाइ । सुर नर खग मिलि सेव कराइ । साढे सैंतालीस हजार बीते बर्ष राज पद धारि । हरि बिष्टर बैठे दिन एक । मौंन धारि हिए करत बिवेक । इहतौ राज दुःख भंडार । अथिर रूप लखिए संसार ॥ इम चिंतत उपज्यौ बैराग । द्वादस भावनसौं चित लाग ॥ इतनें में लौकांतिग देव ॥ अस्तुति करी आइ स्वमेव । तारन तरन कहे तुमनाथ । तुमहीहौ प्रभु सिवपुर साथ

* अडिल *

इह बिचारिमन मांहि करै को तुम बिना । सिवपुर सारथ वाह एक तुमही बिनां । करन योग इहवात दयानिधि जानिए । अष्टकर्म्म अति दुष्ट पुष्ट सबमानिए ॥ * दोहा *

इहबिधि और अनेक थुति । करि जिन थानिक जाइ मुक्ति गमनी पलिकी । सक्रथापि जिनराइ । सुर सरिता तट बिपनमैं । सकल ग्रंथ पारिहार । पंचमुष्टिक चलौंच करि । धरेमहा व्रतसार । मनपर्यै अव बोधलहि । निज गुन भिन्न कराय ॥ सहसराय जिनचरन नमि । उत्तम तपसुद्धराय । मिथुन दिवस श्री कुंथ जिन । धर्यो आतमा ध्यान । गए सुरासुर खग मनुज ॥ करि करि तपकल्यान *चौपाई *

असन हेत तवचले जिनेस । मंदिर पुर बरदत नरेस । देखे श्री जिन इर्य्यापंथ । सोधत आवत हैं निरग्रंथ ।

नौधाभक्ति करी तबसार । दीनौं तहं माशुक आहार । असन अंत काहि अखैं निधान । कांनन जाइ धरयौ मुनि ध्यान । नृपग्रह पंचाचर्य करंत । सबसुर भूपसुजस गावंत । साढ़ाद्वादस कौडि सुरत्न । बरषाए नृपघरि करियत्न । द्वादश बिधि जिनतप तापिताप । निर्मल करी आतमा आप । द्वाविंसत उपसर्ग सहंत । जिंस दिन उदैं जोगिआवंत । थिति छदमस्थ जो षोडसबर्ष । रहे कुंथ जिन तजिदुखहर्ष । च्यारयौ कर्म घातियानासि केवल ज्ञान सूर्य्यपरगासि । लौका लौक बिलौकानि कियौ । समोसरन धनपाति रचिलियौ । द्वादस सभा बापिका तूप । जिनमंडप तिंहि मध्य अनूप । तीन पीठ सुभजाडित जडाव ॥ श्रीजिन अंतरीक सिसुभाव ॥ उपरि तीन छत्रराजन्त । तिंहि लखि त्रिभवन द्युतिलाजंत ।

*दोहा *

चैतशुक्ल तृतियादिवस । आइसुरा सुरराइ । केवल कल्यानक करैं । फुनि निज थानिक जाय ॥

* चौपाई *

तीनकाल जिन बानी होइ । संसैं मेटन समर्थ सोइ । आदिस्वंभू गनधरजांनि । और सबैं दैतीस बखान साठि सहस बस जु कहे । देवी देव असंखलहे । करि बिहारि बहुदेस बिदेस । सेवैं शेष धनेस सुरेस । आयु रही इकमास जिनन्द । आय सिखर सुमेद सुछन्द । पुन्य पाप दोन्यूसम भए । नरसुरखग पसुनिज थलगए । रचना समोसरन की तबै । भई बिनास छिनक मैं तबै । कूट ज्ञान धरऊपर जाइ । जोगरोध कीनौं जिनराइ । जरी जेवरी समजे रही । कर्म प्रकृति जहं सबजन दही । आइ उकल समय समान । अचल भए सिव मैं भगवांन । सम्यक्तादि मुष्य गुनआठ । तेई करन जोग मुखपाठ । और सुगन गुन सहित अनेक । को कबि बरनैं रसना एक । सितबैसाख सु पडिवा जानि । भयौ कुंथ जिन सिव कल्यान । कूट ज्ञानधर पर जिनअर्च । रजपलाय तनकेसरअर्चे । सुरपति गीत नृत्य करि तहां । कहैं सुरासुर जैजै तहां ॥ उतसव करि ते गए सुजान ।

अब मुनि संष्या कहौं बखानि । कोडा कोडि छ्यानवैं कहे । कौडि छ्यानवैं उपरि लहे । सहसछ्यानवैं लाख बतीस । सात सतक ब्यालीस मुनीस । निर्मल करि आतम बिधि नास । कीनौं मुक्ति पुरी मैं वास । सोई कूट मैं जो कोइ । को।डि प्रोषधी फल तिस होइ । नरक पशुगाति नास तुरंत । नरसुर गति लहि मुक्ति बसंत । जो जात्रा करिसिवपदपाइ । अबातिन कथासुनौं नरराइ । जंबूदीप बिषै सुखदेन । भरतक्षेत्र कहियतु हैं अैन देस मनोहर उतिम लसैं । अति सुंदर नर नारी बसैं ॥ भूप जसोधर राज करंत । पुत्र सोमधर भयौ तुरंत ॥ पाय पिता पद पर उपगार । करन सील सुख भोगैं सार । महा बिवेकी सब गुन धरैं । जिन पूजा गुर सेवा करैं ॥ च्यारि प्रकार देइ सो दांन । राज नीति मैं परमसुजान॥ क्रीडा हेत गयौ वन जहां महा मुनी सुर देखेतहां ॥ जाइ निकट नमि जुगपद कंज ॥ अस्तुतिकरि निज पातिग भंज । धर्म वृद्धि दीनी मुनिजबै । तिांथ है प्रश्न करि नृपनबै । कौनधर्म्म सेवन सुखहोइ । किहि बिधिमुक्ति लहै नरकोइ । सुनि मुनि बोले अमृतबांन ॥ सुनौं रायतुम धर्म्म बषांन ॥ दर्शनग्यांन चारित्र जो तीन । करै प्रभावन समकितलीन । श्री जिन चर्न धरैं जिय भक्ति॥ चौविधि दांनदेइ निजसक्ति ॥ जात्रा करैं सिखर सुमेर । धर्म्म चक्र पूजा बिधि हेर । धरसनादि धरै वसु अंग ॥ लहै मुकति तजिकै सब संग ॥ बिन सम्यक्त जीव नहिं तिरैं ॥ इह बिधि मुनि नृप सों उच्चरैं ॥ भव मुनि कहौ कहै इमराव । किहि बिधि उपजै सम्यक भाव ॥ फेरि तपो निधि बैन उचार । सुनौ भूप निज चित दे सार । श्री जिन मंदिर करैं उछाह । पूजा करि नरभौ लैं लाह ॥ च्यारि प्रकार संघ लैं साथ । जात्रा करै सिखर गिरि नाथ ॥ जैन सिद्धांत सुगुरु मुख सुनै । सात तत्व चरचा जिय गुनैं । तब उपजै सम्यक्त सुभाव । परम्रा तम देखनि इहि भाव । सुनि नरेंद्र मानि हर्ष अपार । मुनि पद नमि घर आइ बिचारि । प्रथम कियौ श्री जिनवर

धांम ॥ बिंब भराय खरचि कैं दांम ॥ संघ बुलाय प्रतिष्ठा करी । अपने हिए भक्ति अति धरी । नींद देखि सब संघ समेत । चल्यौ भूप जात्रा के हेत ॥ सिखर सीस मेत्रा धर कूट । करि पूजा अनभौ रम कूट ॥ आइ सुरा सुर नर खग जहां । थांन थांन पूजे जिन तहां ॥ गिरि परि ध्यांन धरैं मुनिराज थान थान ठाढे हित काज । देखि सोमधर गिरि रमनीक । जान्यौ सिवपुर की इह लीक ॥ समकित भाव प्रबल तब भए । चारित मोह कर्म नसि गए ॥ उपज्यौ प्रसम हिए नरराज ॥ करन विचार्यौ आतम काज । जेठे तनुज राज पद दियौ ॥ आपुन पंच महा व्रत लियौ ॥ विविधि महा तप तपियौ राज । केवल ज्ञांन भान उपजाइ । कूट ज्ञांन धर सीस महांन । लियौ सोमधर मुनि शिव थांन॥ और अनेक महा मुनि ईस । लए मुक्ति धिपनां धर सीस ।

## * अडिल *

सो शिवदायक सिखर प्रधान वखांनियौ । ऐसा क्षेत्र पुनीति और नहिं जानियौ ॥ जो नर भाव समेत सुगिर बंदन करैं । नर सुर पद सुख भोग मुक्ति रमनी वरैं ।

## * दोहा *

सिखर क्षेत्र महिमां अतुल ॥ लोहाचार्य वरन ॥ भाषा निज गुन लखि रची । मन सुख सागर सग्न

इति श्री काष्टा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थ माहात्म्येषु समेदाचल भाषा यामन सुखसागरेण वर्णनं सिद्धकूट ज्ञान धरा परकुंथ जिनमोक्षगमन नाम अष्टादसमेः परिछेद १८

## * सवैया *

नृत्य नाम कूटसीसौ भए हैं मुकति इस हस्तनागपुर अवतार तिन लियौ हैं । जनक सुदर्शन है मित्र सैना जननि है स्वर्न सम तन मीन चिन्ह कहि दियौ है । तीन चाप ऊंचीकाय चौरासी वरस आप जाइ बन तप करि ज्ञांन अमि पीयौ हैं ॥ ऐसे अरह नाथजी कौं नमि मन सुख सिंधु जिन

गुन गाय सुभ संचैं बहु कीयौ हैं ।

** दोहा **

याउ यल्य बीते तहां गए कुंश सिव थान । आइ सची पाति अर्हाजिन । कियौ जन्म कल्यान । अरह जिनेसुर चरन जुग । बंदौं मनवचकाय । गर्भ जन्म तपज्ञान सिव ॥ बरनौं हिय हरषाय ।

**चौपाई**

जंबूदीप-जगत विख्यात । तहं पूरब विदेह सिवदात । सीता अपगाउतर कूल । कक्षदेस सोहै मुखमूल । क्षेमपुरी नगरीहैं तहां । धनपति राज करैं नृप तहां । धनरेखा रानी जुतराइ । भोगै भोग सजन सुखदाइ । नगर नारि नरसुखमैं रहैं । मन बंछित सब जन धनलहैं । प्रजा पाल उठि देइ असीस । राज करो राजी अव नीस ॥ बनआनंद नगर तटलसैं । बंदन बन छवि लखि मन हसैं । अरह नंद जिन कै बलधारि । समोसरन आयौ सुखकार । सुनि धनपति मनहर्षित होइ । करि परोक्ष बंदन दिसि जोय । लैपरिवार चल्यौ नरनाथ । दर्बि लिए बसु पूरजन साथ । जाइ प्रनामि पूजायुतिकरी । अपने हिए भगाति अतिधरी । नरकोठे बैठेनरनाह । दुबिध धर्म सुनिबे कीचाह । ग्रहआचार प्रथम सुनि लियौ । मुनि बृष सुनत प्रसम उपजियौ । राज दीयौ सुत कौं तिहि थांन । लियौ चरित्र प्रनामि भगवान । धनपाति मुनिपातिपदवी धारि । सही परीस्या तपकरि सार । बांनी ग्यारहअंग अधीत । त्रसथावर जिय सौं आति प्रीति । सोरह कारन व्रत धरिजबैं । तीर्थंकर पदबांध्यौतबैं । अन्त समैं धरि कैसंन्यास । सर्वार्थ सिध कीनौं बास ॥ पद अहमिंद्र लह्यौ तहं जाइ ॥ तेतिस जलधि आयु सुखदाइ । पूरब सम बरनन और । जांनि लेहु बुधि जन बुध गौर । सात तत्व चरचा दिन रैन ॥ करत आयु बीती सुख दैन ॥ रही सेष षट मास प्रमांन ॥ बसु बिधि पूजा रचि भगवांन ॥

** दोहा **

सुनि मगधेस नरेस अब ॥ बरनौं जिन अवतार ॥ अरह नाथ जिन गुनकथन । सिवलक्ष्मी दातार ॥

* चौपाई *

जंबूदीप लसैं अभिराम ॥ भरत क्षेत्र मैं आरिज नाम। खंडतहां कुरजंगल देस। महिमा कहिनसकै अमरेस। नागपुरी नगरी तहंबसैं॥ घरघर धनधान्यादि लसैं॥सोमबंस मैं सबगुन लीन॥ राइसुदर्शन अति लवलीन॥ नारि मंत्र सेना सुखदाइ। जिनके उरनिज उपजे आइ॥ करै राज सुख संपति भोग॥ रहै अनंदित पुर के लोग

* दोहा *

भव्य जन्म जिनशहरि जांनि पठाइ धनेस। रचि पुरआगम मान मित थुति थुति करैं नरेस॥ तीन समैं षटमासलौं। करैं रत्न की बृष्ट। अति अद्भुत रचनारची। और न यासम सृष्ट॥

* चौपाई *

इकदिन सौंध सिषरि नृपनारि। उठि प्रभांत त्रित ह्वै अहलाद॥ जाय सुपनपति सौं बरनए। फल बिचारि आनंदित भए॥ फागुण सुदी तीज हरिआइ। गर्भ कल्यांनक करि गुनगाय। सेवाकरनि राखि सुरसता। षट पंचास प्रमिति गुन जुता॥ आपुन गयौ इन्द्र सुरलोक। त्रिभवन जिनमिंद्र दै धोक॥ सब निजजोग कुमारी देव। करैं भक्ति जिन माता सेव॥सरम कथा दोहा चौपाई। काव्य पहेली कहत सं भई॥ क्रिया करम करता करनाय। बनैं स्वर व्यंजन बहु लोय॥ कहत श्लोक निरोष्ट बिचार। अन्तर बर्हिलापकासार। गीत नृत्य बीते नवमास॥ जिन जनमें जगपूरन आस। अगहन सुदि चौदसि दिन जांनि॥ आइ इन्द्र करि जन्म कल्यांन। अरह जिनेस जगत जयवंत॥ सुरगिर से आए पुर अन्त। थापि जिनेस जननि के अंक॥ तांडव नृत्य करैं अति वंक। बालक सुर सेवन तजि तहां। गयो इन्द्र अपनें पुर तहां। सुरसिसुजिन सिसु सेवा करैं। क्रीड़ा करि सब जनमन हरैं॥ जंबू नन्द सम देह दियन्त। बरनत चिन्ह लहौं नां हंत। दक्षन चरन मीन मनहार॥ उर्द्ध रेख पगतली

निहार। पदम चक्र असि चाप मनोग। कलस दाम तोरन हय जोग। गज स्वस्तिक अंकुस मन बिंध। चमर छत्र रेषा अनूसंध॥ इनि आदिक लक्षन तन लसैं। एकहजार आठ दुख नसैं॥ सहस वर्ष चौरासी आयु। तीन चाप उन्नत हैं काय॥ निरखि देह दुति अद्भुत भूप। कोट कांमही मंत सरूप॥ इक्कीस सहस बर्ष परजन्त। बालकेलि कीनों भगवंत॥ सक्र भूप मिलि कियो बिवाह। सुरपति पद कौ लीनौ लाह। सहस बर्ष ब्यालीस प्रमांन। राज कियो अबिचल भगवांन। नीत बिनत प्रजा पति पाल। ईति भीतिपुरजन सब टाल। रत्न चतुर्दस नौ निधिसार। अर्हनाथ चक्र पदधार पाइ अनौ वृत धारी धीर। तीन ज्ञांन जुत गुन गंभीर। इक दिन सभामध्य थिति जबैं। स्यांम घना घन देखे जबैं। छिन मैं बिनसे लखि जिन राइ। अथिर जगत जांन्यौ दुपदाइ। अति बैराग हिए मैं भयौ। द्वादसांनु प्रेक्षा चित दियौ। लौकांतिक निर्जरतव आय। अस्तुति करि बैराग दिढाय। गए देवलौकांतिक जबैं। इन्द्र पालकी ल्याए तबैं। भक्ति सहित बैठाय जिनंद। गए महाबन करत अनन्द। भए दिगंबर परिग्रह त्यागि। निज चिद्रूप ध्यांन तब लागि। नृपति हजार जात पद धार॥ करि नमोस्तु तप लीनौ सार। अरहनाथ सब परिग्रह टाल। मन पर्यै उपज्यौ तत्काल। अगहन सुदि दसमी सुख दाय। भए भूप जिनवर मुनि राय॥ तप कल्यानक मघवा कियौ। सुर नर खग पसु हर्षित हियौ। निज निज थान गए सब जीव। द्वै दिन मौंनि ध्यांन धरि देव। चले असन कारन तब एव। पाठ अढाई सुद्ध निहार। धरैं चरन चितदया सुधारि॥ गजपुर जाय राज पद देखि। ऐरा नृप जिन आवत पेखि। ह्वै सनमुख करजोरि नरेस। अस्तुति करि नमि भूप जिनेस। आगैं ह्वै मंदिर ले गयौ॥ तिष्ट तिष्ट कहि आसन दियौ। प्रासुक धेनु खीर अहार। नौधा भक्ति सहित दै सार।

करि भोजन सुख अखै निधांन। तिंहि औसर बोले भगवांन। आइ अमर जे जै उच्चरैं। पंचाचर्य्य भूप ग्रह करैं॥

* चाल छंद *

फुनि आए श्री जिन बन मैं॥ आतम अवलोकि निम नमैं॥ लखि निर्जन प्रासुक थांन। धरि ध्यान खड़े भगवान॥ सुद्धातम गुन सु[illegible]ारैं॥ पूरब कृत फंद उचारैं। निश्चै नय लोक प्रमाणैं। बिवहार देह मम जानैं। निश्चय जग जीव अबंध। बिवहार पर्यौ जिम धंध। निश्चय गुन तीन्ह अनंत। बिवहार उदै आवंत। जिय धरैं चतुष्टय च्यार। सुद्ध प्रांन च्यारि प्रकार। इनकौं नहिं धारैं जीव॥ दुख सहैं निगोद अतीव। जग जौनि चौरासी लख। बहु कष्ट सहे विधि साख॥ निज गुन धारैं जीय वही। बसु कर्म्म नसैंगे तबही। इह विधि जिन मनहि बिचार। तप कीनौं सिवदातार। बसु दुगुन बरस छदमस्थ॥ कर कर्म घातिया अस्थ।

* दोहा *

कातिग सुदि एकादसी। उपज्यौ केवल ग्यांन। हरि आयसलै धनंद॥ तब समोसरन रचिअंद। पूरब सम सब जांनिए। कोट पीठ बन तूप। बीथी गो पुर नृत धर। सोभावनी अनूप। कुंभ सेनि आदिक तहं गनधर तीस लसंत। च्यारि ग्यांन जुत जिनसु। धुनि बर्नन भेद करंत। देवी देव अनंत जहं। करैं नृत्य गुन गांन। नर नारी पूजा करैं। अंतरीक्ष भगवांन। तीन काल बानी खिरैं। सब जन संसे हरन। मन सुख सागर नमहि तब। अरहनाथ जिन चरन। देस विदेस बिहार करि। बृष उपदेस करंत। आयु रही इक मास जब। सिखर गए भगवंत।

* चौपाई *

नाटिक कूट सीस जिन राइ। जोगरोध धरि ध्यान सुभाइ। चैत कृस्न दिन अंत [illegible] जांनि। भए सिद्ध अबिचल भगवांन। आए सुरासुर सक्र नरेस। लै पूजो याहार सुभ भेस। क्रया हुतासनकरि

रजबंदि। निज निज मंदिर गए अनंदि। सोनाटिक बरकूट प्रसिद्ध। वंदन करैंत लहै सिवरिद्ध। नरक पसुगति नासन करैं। श्रीजिन सासन इम उच्चरैं। गए मुकति मुनिवर तिहिथांन। तिनकी संख्या करौं बखानि। निन्यानवैं हजार सुजान। नौसैनि वैं इहपरमान। इतनै की मैं संख्या लही। नाटिक कूटमुक्ति मगसही * दोहा *

नृत्यकूट जात्रा करी। सुप्रभा नाम नरेस। तासुकथा मगधेस सुनि। भव्यंलहैं उपदेश॥ * चौपाई *

सकल देश सबमैं परधान। नगर भद्रपुर तामैं जानि। भूप अनंद सैनि हैंजहां। सुखी प्रजासब दीसै तहां। विजया पटरानी जुतभूप।। राजभोग सुखकरैं अनूप। तिनकैसुप्रभ सुतइकभयो। नृपति राज पदताकौं दयौ। आपजाइ वन दिक्षालेइ। आवागमन जलांजुलिदेइ। सुप्रभ राजकरैं सुखदाइ। प्रजाधर्मारग चलिजाइ। एकसमैं निजसभामझारि। जितिहै धर्मकथाबिस्तार। तिहि अवसरवनरक्षक आय। वेणपात्र भरि पंकज ल्याय। निजकर एक सुमन नृपालेयौ। फेरत म्रतक भ्रमर पेषियौ। भयौ हिए वैराग्यअपार। राजा मनमैं करै बिचार। ताही समैं एकमुनि राज। आए तहं असन केकाज। नौधाभक्ति करी तवराइ। प्राशुक भोजन देमुनिराइ। फुनि थुतिकरि थुति कीनीभूप। पूछें धर्म्मा धर्म्मसरूप। मुनि बोलेसुनि क्षिति पतवैन। जिन भाषित बृष है जग ऐंन। पूजा दान दया वृतबर्नै। सीलसुतप ए सब अघहर्नै। कल्याणक जिनवर जिहथांन। जात्रा करत होइकल्यान। सिखर महातम बर्नै मुनीस। सुनि नरेस मुनिनायौ सीस। धर्यौ ध्यान सुनि बनमैं जाय। चल्यौ सिखर भूपाति हरषाय। च्यारि प्रकार संघलै साथि। पूजा दान करत नरनाथ। जहां जाय नामि नाटक कूट। सबगिर वंदित पातिगछूट। तप कारन सुतकौंदेराज। लीनौं वृत निज आतम काज। अचिरकाल मैं त्यागे प्राण॥ लहे स्वर्ग सोलह विमान * दोहा *

सोपुनि जंबूदीप मैं भरतक्षेत्र रूजु खंड। सुरम्य देश योदनपुरी। नृप श्रीखंड प्रचंड। तिनके सुत है

सुगन जुत सुकंभव नाम प्रसिद्ध। जात्रा सिखर सुमेरकर। लहै मुकतिपद रिद्धि। नाटिक कूट प्रसिद्धसो जो बंदैं मगधेस॥ नरपसुगाति नासकारि नरगाति लहै सुरेस। धन्य भाग वे मनुजहैं। बंदैंसिखर सुमेर। मनुष धारि भवसिव बैरैं॥ जन्म धरै नहि फेर॥ कोटिछियानवैं प्रोषधी। बरत कियौ फल होय॥ सोई नाटिक कूटकौं बंदनकौ फलजोय॥ ऐसे सिखर समेद गिर॥ महिमा कहिनजाइ लोहाचार्य कृतनिरंखि॥ भाषा सुगम बनाय॥

इति श्री काष्टा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहातमेखुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामव सुद्ध सागरेण बरणनं नाटिककूट परअरहनाथ जिनमोक्षगमन एकोनवविस परिछेद॥ १९॥

## * सवैया *

जाके पद पूजत सुरेस सतभावसेती कुंभराय जनक सुरेखा देव माइहैं॥ कलस चरन चिन्ह हेम के बरन तनधनुष सची सुप्रभ उन्नत सुकाइहैं॥ मिथुला जनम आइ साढ़े दसआयु हैसंवल सुकूट सीस सुकाति सुभाइहैं॥ ऐसे माल्लिनाथ सुबिधि मल्ल मल्लडारै मनसुख सागर नमित तसु पाइहैं

## * दोहा *

वर्ष किरोरहजार जब बीते अरह जिनंद। मल्लिनाथ जिनजन्म लै॥ कीनौ त्रिजग अनंद॥ तिनके चरनांबुज सुनामि॥ सारद सुमरि सुभाइ। गर्भ जन्म तपज्ञानसिव। वरनैं हिए हरषाय॥

## * चौपाई *

वलयाकृत यह जंबूनांम। दीपनमध्य दयसुभधांम। अचल सुमेर अचल हैं जहां॥ श्रीजिन नन्ह होतहैं तहां। प्राचिनाम विदेह प्रसिद्ध। धनधान्यादि लसैं बहुरिद्ध॥ देस वतसकावती महंत॥ उपमां कहत न पाउ अंत॥ बीतसोक पुरसोहैंपुरी। नागर हैंमानौ सुरह पुरी। आति उतंग राजैं जिनधाम॥ रतन मई प्रतिमां

अभिराम । समोसरन बिहरै सर्बदा । बानीखिरैं जथारथ तदा । बर्तै काल चतुर्थमसार । ह्वै मुनिभवदधिउतरैपार ।

## * दोहा *

महिमा सोपुरदेसकी । बरन कोविधि सार । पंथवृधि भयधारमन । नाहि कियौ बिस्तार * चौपाई *
वे श्रवन नांमां तहं भूप । लखन जुतरतिपति समरूप । महा प्रतापी सुगुन अनेंक । न्यायवंत हिएधार बिवेक । तीन काल अरचै अरहंत । प्रसम सहित पुर राज करंत । इक दिन श्री मुनि अटवी आय । मुनि भूपति चाल्यौ हरषाय । नगर बाह्यवट बिटप जुएक । तापरि पंछी वसैं अनेक । छाया सघन बड़े बिस्तार । अति सीतल परमलगुन धार । राइ सराहन करिकैं जाहां । फुनि आगैं चाल्यौ मुनि तहां । विद्युत पात भयौ बट सीस । भस्म भयौ छिन मै नग ईस । राइ जाय मुनि सीस नवाय । दुविधि धर्म सुनियौ चितलाय । च्यारयौ गति चौरासी लाख । जोनि निभेद भिन्न मुनि भाख । लौका लौक द्रव्य षट वर्ने । कहे तत्व जिय संसै हर्ने नमस्कार । करि उठ्यौ नरिंद । धर्म्म बृद्धि तब दई सुनिंद । आवत मध्य मध्य लखि भूप ॥ दामिनि दग्धित बृक्ष अनूप । छिन भंगुर जांन्यौ संसार । दुख दाई कहि जग निरधार । जात समै देख्यौ वट वृक्ष । आवत नास लख्यौ प्रतक्ष । द्वादसांन प्रेक्षा चित लाइ । पुष्पित भयौ प्रसम नगराइ ॥ अग्रज तनुज राज पद दियौ ॥ आपसु ग्रंथ रहित पद लियौ । निर्जन गहन जाइ कैं जबैं ॥ रत्न त्रय ब्रत धरे तबैं ॥ तप करि अति उठ्यो ग्रमहंत । ध्यान अग्नि बसु कर्म्म दहंत ॥ द्वादसांग ग्यांनी हिय ज्ञान । तप बल कियौ अचल निज ध्यांन । फुनि सोडस कारन धर अंत । गोत तीर्थंकर बंद करंत । ब्रत सन्यास लेयतन त्यागि । निज अनुभूत कियौ अनुराग । वास कियौ सरवार्थ सिद्धि । देव मर्द्धिक पाइ रिद्धि

*** दोहा ***

त्रय त्रिंसत सागर तहां । उत्कृष्टी हैं आयु । तेतीस सहस बरस गए । लेह आहार सुभाव ॥ साढे सोरह मास जब । बीते सास उसास ॥ आवत इहि स्वय मेव थिति । दिस दिस होत सुभास

*** अडिल ***

देव खडे करजोरि सुसेवा करतहैं । देवीं गावैं गीत नृत्य अचारत हैं ॥ रहै सुथिर हरि पीव मूल देही तहां रमैं बिक्रिया धर होत निज मन जहां ।

*** दोहा ***

इह बिधि तेतीस जलधिकी । आयु सुपूरन कीन ॥ सेष रही षट मास जब । माल भई छावि छीन ॥ आंभा रहित सरीर लखि । जान्यौ अपनौ मर्न ॥ चैत्याले मै जायकैं । अरचे श्री जिन चरन ॥

*** चाल छंद ***

अब आगैं सुनि मगधेस । सोचर उपजैं जिस देस । उनीसम जिन पद धार ॥ भावि जीव उतारैं पार । इह जंबूदीप बिराजैं । नाभी सम सुर गिरि राजैं । ताके दक्षिन दिसि सोहैं । इक भरत क्षेत्र मन मोहैं । तामैं हैं आरिज खंड । बरतै जहां धर्म अखंड । तहां बंक देस सुख दाई । उपमां नाहि बरनी जाई ॥ उपमां बन सोभा एक । बापी सर कूप अनेक । मिथुलापुर नगर महंत । कलसा पति कुंभ कहंत ॥ रानीं जुसुरेखा नांम । जुत सील सुलक्षण धांम । दंपति मिलि भोगैं भोग । पालैं सुर पूजा सुनि रोग ॥

*** दोहा ***

इक दिन नाक सुधर्म्म पति । अवाधि ज्ञांन सो जांनि । मिथलापुर उनीसमौं । जनमैं जिन सुखधांम ॥ आयुस दयो धनेस । तव नगर रचना के हेत । पंचाचर्य करौं अवैं । श्री जिन जनक निकेत ॥

* अडिल *

आयौ तुरत कुबेर। रच्यौ जिन पुर तहां ॥ उन्नत कीयौ आवास । कुंभ भूपति जहां । बरषैं उत्तम रत्न
सुमन जलकन झरैं। बाजैं दुंदभि मंद मरुत जन हित करैं।

* दोहा *

इह विधि बीते मास षट उत्सव जुत सर्व । निरखत मंगल गेह छबि । जाय सची पति सर्व ॥

* अडिल *

इह दिन मंदिर सीस सुरेखा सैन में खोडस सुपन निहार पाछिली रैनिमैं ॥ चय सर्वार्थ सिद्धि थकी
सो आइकैं। करि गर्भ थिति प्रात उठि हरषाइ कैं।

* दोहा *

मंजन करि शृंगार जुत । गए नाथ के पासि । कहे सुभफल सुनि तहां । दंपति भए हुलास ।

* चौपाई *

चैत शुक्ल परिमां सुभवार। कीनौ गर्भ कल्याणक सार। सेवन आज्ञा दै सुर सुरी। सक्र गयौ फुनि
अपनी पुरी। मिथुलापुर घर घर सानंद। मंगल गीत जौ होत सुछंद ॥ देवी सेवै श्री जिन मात ॥
करैं मनोगत हिए हरषात। इह बिधि गर्भ दिवस दस भए। अंक मास दस अहिनिसु भए॥ जन्म लियौ
श्री त्रिभुवन नाथ। भव दधि भव्य उतारन हाथ।

* अडिल *

कल्प बासि घर घंटा अनाहद बाजियौ। जोतिष घर हरिनाद सहज गलगाजियौ। संख सद्द अनिवार
भवन सुर गेहमैं ॥ पटहाव्यंतर गेह बजैं अति नेह मैं।

* दोहा *

निज निज चिन्ह सुभाव सौं। जान्यौं जन्म जिनंद। करि बंदन सौ धर्म्म पति। पायौ हिए अनंद।
ऐरापति असवार है। संघ साहित परिवार। मिथुलापुर के गगन मैं। जै जै करत अपार। हरि आयुस

ले कैं सची। जन्म गेह मैं जाय। माता माया नींद रचि। अंक लिए जिन राय। *सवैया*

सहस खयेंदु मांन जोजन सुनाग राज सतहैं बदन अति तन छबि सितहैं। बदन बदन बसु रदन रदन प्रति सर सर प्रति काजीसर रबि मितहैं। कमलनी प्रतिवांन भुजै मातु पुंडरीक बसु सत दल सुभ सोभा छबि अतिहैं। दल दल प्रति नटी नटत समाज जुत सताईस कोट इम अपछरा बिदितहैं।

*** चौपाई ***

जै जै नन्द बृद्धि जिनदेव। चतुर निकाय करैं मिलि सेव॥ सुर गिरिपैंयां डुकवन जहां। जाय न्हवन की बिधिवत तहां॥ करम मल्ल मलि डारन हार। मल्लि नांथ संज्ञा उच्चरैं॥ फुनि आयेपुर उतसव कियौ॥ श्री जिन मात गोद तव दियौ। निज सिसु तट बहुसुर सिसुथाय॥ गयौ जिनालय सुरपति आय। कुंभराइ जिन सुत उत्साह। करि जाचिक जन पूरन चाह। पंचोनर पंचास हजार॥ परी आयु थिति जन मनहार। देह हेम दुति धनुष पचास॥ उन्नत काय लसैं जिन ईस॥ बालपन सतबर्ष प्रमांन। धार अनुब्रत रहे सुजांन॥ इकदिन उल्कापात बिलोक। सकल चराचर जांन्यौ लोक॥ द्वादसान प्रेक्ष्यां चित लाय॥ लौकांतिक सुर पहुंचे आय। अस्तुति करि निज मंदिर गए॥ इन्द्र पालकी ल्यावत भए। प्रभु चढ़ाय गए बन जहां॥ अति उन्नत चंपक तरु तहां। बस्त्रा भरन तजे तिहिवार॥ नमः सिद्धेभ्यः मुख उच्चार। पंच मुष्टिक चलौंचन कियौ॥ निज आतम आतम चितु दियौ। सहस राइ नमि श्री जिन चर्न। लीनौं पंच महाव्रत सरन॥

*** दोहा ***

मघवा तप कल्यांन कर गयौ आपनैं धांम। अगहन सुक्क एकादसी॥ मल्लिनांथ जिन नांम। मन पर्यै उपज्यौ तहां जब बेलाव्रत धारि। नंद सैन नृप सोध फुनि। लीनौं जाय आहार॥ चौपाई

अर्थ निद्धि जिन मुख उच्चरैं। पंचाचर्य देव तब करैं। नौसैचौवन सहस जु बर्ष। जाय विपन कीनौं तग हर्ष। ताही मैं षट्वर्ष प्रमांन। रहि छदमस्थ भयौ तव ज्ञांन। समोसरन रचि हर्ष कुवेर। श्री मंडप सब सोभा हेर। गनधर अठाइस महंत। च्यारि ग्यांन धारी बुद्धिवंत ॥ पूरव सम सब और विभेद। जानहु सास्त्र देखि बिन खेद ॥ कियौ विहार देसपृति देस। दीनौं दयाधर्म्म उपदेश। रही आयु जुग पक्ष प्रमांन। सिषर सीस आए भगवांन। पुन्य पाप प्रकृति सम भई। समोसरन सोभा सब गई ॥ जोग निरोध रहे जिन राइ। निज निर्मल चेतन लौलाइ। फागुण कृष्ण द्वादसी सार। लहि सिवथांन अष्ट गुणधार। इन्द्र कियौ कल्यांणक आइ। संवल कूट सीस सुखदाइ ॥ जिन निर्वाण प्रासु द्वगवाय। करि पूजा अस्तुति गुनगाय। नर सुर पसु खग असुर महंत। निज निज आलय गमन करंत ॥ * दोहा *

धानि घरी वह अहन की। धन्य महूरत जांनि। निसिदिन संवल कूट पैं। इन्द्र कियौ कल्यांन। सिषरमहातम प्रचुर अति। बरन्यौं श्री जिन ग्रन्थ। जांनहू संवल कूटपल। संवल हैं सिवपन्थ अडिल

अब आगैं सुनि राय कथा इकराइकी। जात्रा संवल कूट जथावत भायकी। तदभव सिवपद पाइ अष्ट विधि जारिकैं। किनौ हैं तप स्वल्प निजातम धारिकैं ॥ * दोहा *

जंबूदीप प्रसिद्ध इह भरतक्षेत्र अभिरांम। जोध देस श्रीपुर नगर। इन्द्रपुरी सभधाम ॥ चौपाई

बंकदम नांमां अवनीस। भूप अनल्यनवावैं सीस। विजय पटरानी जुतराय। भोगैभोग अैषसुखदाइ। तिनकै तनुज भयौ बलिवंत। गुन लक्षन कहि लहौं न अंत। सतसेन संज्ञा बुधिधार। जौबनवंत भयौ अविकार। कारन मातपिता तपलियौ। सतसेनिकौं नृपपददियौ। राज बिभूति पाइसुखदाइ। इंद्री जनित सुभोग कराइ। पौंल प्रजाप्रजा समभूप। न्याय नीति चितधारि अनूप ॥ इकदिन सत्य सोनि गुनरास ॥ पूजन हेत गयौ

कैलास ॥ तहां सुलोचन श्री मुनिएक ॥ लखि प्रनाम करि धरि सुविवेक ॥ थिर ह्वै विधि धर्म सुनि राइ । निर्धन धन लहि इमहरषाय। फुनि मुनि सिखर महातम कह्यौ । सुनत भूप दर्शन वृतगह्यो ॥ आइ गेह लै संघमहंत । ज [illegible] तो चल्यौ तुरंत ॥ क्रमक्रमसौं मधुवन में गए । देखि सिखर आनंदित भए । लै पूजो पहार मनहर्न गएकूट परपूजा करन । आत्रिचरन गुनगाय अनंत । त्रिभैंभक्ति हिएधारि सुछन्द । ह्वै वैराग लीयो तपसार । तेरहविधि च रित्रउर धार। संवलकूट सीस सिवगये। सिद्धि गुनज्ञांन रंजन भये। ऐसो कूट नमैं जो कोइ । सोई सिवनारि पति होइ। निन्याणवैं कोटमुनिराय। वही कूटपरि सिवपदपाइ। कोटि छयानवैं व्रतफल होइ । एकबार वंदै जोकोइ ॥ नर्क पसुगति नास करंत। जात्रा करैं भावधरि संत। नर्क पसूगति नैंलहि सिवपदलेइ। जन्म मरन जलांजुल देइ ॥

* दोहा *

इहविधि लोहाचार्यगुर । वरन्यौ सिखर महात्म । मनसुखधि भाषारची कीनौं सुचि निज आतम ॥

इति श्री काष्टा संगे लोहाचार्य विरचतेतीर्थमहातम्येसुमेदाचल महातम भाषायामन सुद्धसागरेण वर्णनं नाम संवल कूट वर्ननं मल्लनाथ मोक्ष गमनं वर्णनं परिछेद ॥ २० ॥

* सवैया *

सुव्रतधर निहारसुमित्र जनकसार नगर कुसाग्र नाम सबसुखदाईहे। मात पदमावतीहैं हेमके वरनतन कक्षप सुलखन सुचरन सुभाईहें। त्रिसत हजार जो वर्ष आयु भाषियतु उन्नत धनुषवीस अति सुभकायहैं। ऐसे व्रतसुकूट निर्जर सिव मनसुद्ध सागर नमत जिनपाइहैं ॥

* दोहा *

चौवनलाख वर्षगए । अन्तर मल्लि जिनेस। मानि सुव्रत जिन जनमियो ॥ हरषे त्रिजग अशेष ॥ नमि मुनि सौ व्रत चरन जुग ॥ सारद सीसनवाय वरनौं पंच कल्यान अव श्री गुर भये सहांय ॥

## * चौपाई *

सबदीपानि मैं नाभिसमान ॥ जंबूनाम सुदीप बखान । भरत क्षेत्र सेवै सुरसुरी अंगदेस चंपावतपुरी ॥ नरनारी सब सुंदरबसैं ॥ धनधान्यादिक रिद्ध बहुलसैं ॥ बनउपवन बापी सरकूप ॥ सुरसरिता जुतलसैं अनूप ॥ हरि बर्मा राजा बलिवन्त। न्याय निपुन गुनवंत अनंत ॥ महाप्रतापी सीलसुभाव। राजकरैं चंपापुर राव। पाबिसेना पटनारि समेत ॥ भोग करैं इंद्री सुखहेत ॥ पालैं प्रजा तनुज समसवैं ॥ कारन एकभयो पुनि तवैं । पुरतट बनआए मुनि तहां ॥ षटऋतु पुष्पफलोत्कर जहां ॥ बनपालिक लखि अचिरजएह ॥ भ्रमैं विपन मैं करसंदेह । अटत अटत देखे मुनि राज ॥ अनंत बीर्य गुन धर्म्म जिहाज । चल्यौ नगर कों मुनि सिरटेक ॥ लै षटऋतु फलफूल अनेक । भेटधरी भूपति के अग्र ॥ दै आसीस बचचवे समग्र ॥ सुनि मुनि आगम राइ अनंद ॥ बस्त्राभूषण दिए सुछंद ॥ करि परोष बंदननृप जबैं ॥ आनंद भेरि दिवाई तबैं । करि सुभेष नृप पुरजन सर्व । लेचाले पूजन बसु द्रब्य । भूपादिक सब जाइ नमंत । अस्तुति करैं हिए हरषंतैं । थिति है दुबिधि धर्म्म सुनि भूप । सागरी अनगार अनूप । मन बैराग भयौ नर राउ । दिक्ष्या लेन चल्यौ हिय चाउ ॥ अग्र सुतकौं दीनौं राज । लीनौं ब्रत नृप आतम काज । दुबिधि ग्रंथ तजि भजि अरहंत । षोडस कारन हिए धरंत । जीवा जीव दर्ब षट भेद । निर्नैं करि निज साता वेद । द्वादस रूप अग्र तप तप्यौ । पूरब कृत दुःकृत सबखप्यौ । तीर्थंकर तब बांध्यौ गोत । तहां पंच कल्यानक होत ॥ अंत समैं धरिकैं सन्यांस । प्राणतनाकजु कीजौ बास ॥ जलध बीस थिति पदवी इंद्र । अरचैं तीन काल जिनेंद्र ॥ सात तत्व की चरचा करैं । निर्विकल्प निज गुन उचरैं ॥ जहं जहं पंच कल्याणक होइ । करैं प्रतक्ष बंदनां सोइ ॥ बीस हजार बर्ष बीतंत । मानसीक तब असन करंत ॥ गए मास दस

सासउसास । लेत् दसौं दिसि होइ सुबास । इह विधिसौं बीती सब आयु । रही शेप षट मास सुभाव । मणि माला मुर्छित जब भई । रतन अभूषन तन दुति गई ॥ मनहि बिचारि जोइ जिन धांम ॥ करि जिन पद अष्टांग प्रनांम । पूजा रची दर्वं वसु ल्याय । अस्तुति करैंसु निज गुन गाए ।

*दोहा *

तदनंतर सुनि मगध पति । इक मन ह्वै अमलांन । सौ चरचइ जिन पद लहै । वह वरनौं सुभथांन ।

* चाल छंद *

इह जंबू दीप मझार । तहां भरत क्षेत्रहैं सार ॥ गंगा सिंधु अचालै ॥ हैं आरिज खंड बिसालै । तामैं सुभ मागध देस । सरब बन उपवन जुअसेस । कदली सहकार अनेक ॥ श्री फल बन सोभा एक ॥ उन्नत द्रुम खारिका राजैं ॥ जाती फल बृक्ष विराजैं । पूंगी फल लगेहैं अनंत । बरनत मैं लहौं नांअंत । ता बन श्री मुनिवर आवैं । जिन भाषित धर्म्म चलावैं ॥ तहां बसैं जुउत्तम ग्रांम । छात्रवत कुसाग्रसु नांम ॥ उन्नत सुभ सोभ महंत । गिरि फटिक शृंग सम संत ॥ पुर मध्य जिनालय सोहैं । सबसौं ऊंचे मनमोहैं ॥ तहां आय भव्य जिन अरचैं । गुन गाय करै सिव परचैं ॥ सुर देवी सम नर नारि । पुर सुर पुर सोभ अपार ॥ राजा सुमित्र तहं राजैं । दुति देखि सची पति लाजैं ॥ भुजदंड प्रताप अखंड ॥ अरि जीत अधिक प्रचंड । नृत नीति प्रजा सब पालैं । ठगजार चौर सबटालैं ॥ पदमावति नारि समेतं । सुख भोग करैं बहु हेतं ॥

* दोहा *

एकह दिनि सौ धर्म पति । सुमिरन जिन कल्यांण ॥ पद्मावती सुमित्र घर । जन्म लख्यौ भगवांन । आग्या दई धनेस कौं । जाइ रच्यौ पुर सार ॥ पंचा चार्य करो तहां । होइ सुखी नर नारि ॥

## * अडिल *

आयौ तवहि कुबेर सक्ति निज धारिकैं । नौ बारह प्रमांन नगर बिस्तारकैं । पुर कुसाग्र नृप गेहरत्न बरषा करैं ॥ बाजैं दुंदुभि सुमन अनिल जलकन झरैं॥ तीन काल मन हरन गान सुर करत हैं ॥ घर घर उत्सव होइ सब जन मन हरतहैं । इह प्रकार षट मास गए अति चावसौं । अब जिन गर्भ कल्यांन सुनौ भवि भावसौं ॥

## * दोहा *

श्रवन दुतिया असित पक्ष । प्रांनत सो सुर आइ । पद्मावति उर थिति करी । तीन लोक सुखदाय ।

## * सोरठा *

एक समैं जिन मात । सैन करत निज महल मैं ॥ सुप्न लखे अवदात । षोडस पछिंम जांमिनि ॥

## * दोहा *

सूर्य उदय उठि स्नांन करि । पहरि आभूषन चीर । सखी संग लै हर्ष धर । गई तुरत पति तीर ॥ व्यक्त व्यक्त सुनि सुपन फल । कहै हर्ष नर नाह । तीन लोक पति होइ सुत । लेह मनुष भव लाह । कहैं परस्पर प्रीतिवच । दंपाति सुख्य अपार । इंद्रआयु सुर सहित कर । गर्भ कल्याणक सार । छहौं कुलाचल बासनी । मघवा आयशपाइ । गर्भ सोधनाकराहिनित । सबैंनिज चितलाइ । छप्पन देवकुमार सब । निज निज काज समारि । सक्रगयौ निज थांन सब । हरषे सुर नरनारि । घरघर मंगल होइनिति । गीत नृत्य संगीत । कोइ कबहुन देखिए । बदन पीत भैभीत

## * चौपाई *

इहबिधिसौं बीते नवमास । आनंद मैं बीते सुखरास । असित दसैं बैसाख निहारि । श्री मुनि सुव्रत जिन अवतार । द्विरद राज साजि आइसुरेस । दीनौं पुलौमजा आदेस । जिन प्रसूति मंदिर मैं जाइ । अंकलेइ प्रभु

जवतुम आइ। जाइ सची निंद्रा रचि अंब। थुति करि गोद लियौ अबिलंब। आइ सचीपति अंकैं देइ। पुलकित ह्वै मघवा प्रभु लेइ। तृप्त न होइ निहारि जिनेंद्र। सहश्राक्षत तबभयौ सुरेंद। दंती पति पैं थापि तुरंत। जय जय नंदि वृधि उचरंत। सुरगिरि जाय नन्ह बिधि करी। भक्ति सहित पूजा बिस्तरी। मुनि सुब्रत वृत धर्म धर्न। जाइ सची पति नामि पुनि चर्न। आइ नगर कीनौ उत्साह। नाक ईस पद लीनौ लाह। मात अंक दै नृत्य करंत। छिनक भूमि छिन नभि बिचरंत। बीन बासुरी बेन बजाइ। ताल मूर्ज मुह्व चंग चढ़ाइ। जल तरंग मिरदंग सितार। सारंगी पटताल बिचार। सिलमदरा कानून जफीर। बाजैं खंजर अति गंभीर। इत्यादिक बाजैं अमलोंन। साढ़े द्वादस कोटि प्रमान। सुरसातौं सुरजुत गुनगाइ। साढे बाराह ताल बजाइ। बालक सुर सुरपति सुरथाइ। नामि जिन लोक गयौ पुनि आइ। पिता आदि पुरजन मिलि सबैं। पुत्रोंत्सव बहुकीनौं तबैं। बीस चाप उन्नत प्रभुकाय॥ तीस हजार वर्ष जिमराइ। हेमबरन सुरबाल समेत। बाल केलि कीनौं सुख हेत। सात हजार पंच सत वर्ष। बाल पन बीते जुतहर्ष। पुनि बिबाह कर राजकरंत॥ नीति सुपथ हिए धरंत॥ पंद्रह सहस वर्ष लगराज। कीनौं मुनि सुब्रत जिनराज। प्रसम मैं जब पहुंच्यौ आय। कारण एक भयौ सुनिराय। धन धानि गजप्रभु ह्वै असवार। चले चमूले करन बिहार। सो गजलखि पावस ऋतु जबैं। पूरब भव जिन जान्यौ तबैं॥ ह्वहौं नागदत पर जाइ॥ माघा उदै भयौ गजआइ। इह बिचारि जल असन तजंत। ह्वै बैराग भजैं अरहंत। एह बिवस्था देखि गइंद॥ अवधि ज्ञान लखि कहै जिनंद। अरेमतंग जीव जग भ्रमैं॥ नरक देव पसु नरगति गमैं। क्रोध लोभ माया अरु मान। च्यारौं गति मैं होइ निदांन। चौरासी लखि जोनि भ्रमंत। काया धर दुख सहै अनंत॥ गज सो कहि पूरब परजाई। पंच अणु ब्रत दिए सुणाई॥ निज भूपति पद सुतकौ देइ। जीवा जीव बिचार

करेइ। बारह भावन भाव धरंत ॥ सुरलौकांतिग आइ नमंत। अस्तुति करत प्रसम अधिकाइ। गए ब्रह्मसुर आति हरषाइ। अपराजित सिवकातिह थांन। लाइ सक्र थापे भगवांन। जैजैकारि पालकी उठाइ गएमहाबनमंगल दाइ। बकुल बिटपि नीचें थिति धारि। नमः सिद्धेभ्यः मुखउचार। पंचमुष्टिक चलौंचन कियौ। सहस रायतनजिन व्रतलियौ। क्रस्न दसै बैसाख सुजांनि। इंद्राकियौ जिन तपकल्यांण। मन पर्यै को भयौ प्रकास ॥ सूक्ष्मपुद गलानु सब मास। बेलाव्रत करि रव गिर आइ ॥ बिजयसेन घर असन कराइ। अखें निद्धि जिनवर सुखचर्यौ ॥ पंचाचर्य भूप घर भयौ। वर्ष जु साढ़मात हजार ॥ कीनौं तप आतम चित धार। फुनि बनजाय कियौ तप घोर ॥ बसु बिधि कर्म पटल सब तोर।

*** सोरठा ***

भयौ जु केवल ग्यांन। मुनि सुब्रत जिनराजकौं। तीन लोक सुखदांन ॥ प्रसित नवमि वैसाखकी। समो सरन धर निंद ॥ रचि निज सक्ति समांन सब। राजैं तहां जिनन्द ॥ कल्यांनक बिधि इन्द्रकर।

*** दोहा ***

मल्लिसेनिहू आदिदे। अठदस गणधर सार ॥ च्यारि ग्यांनधारी सबैं। बानी परखन हार ॥

*** चौपाई ***

देश देश बिहरैं भगवांन। दुबिध धर्म्म को करैं बखांन ॥ त्रेपन क्रिया कहि सागार। तेरह बिधि चारित्र अनगार ॥ पुद्गल जीवकाल आकास। धर्म्म अधर्म्म द्रव्य षट् भास। सात तत्व पंचास्तिकाय ॥ नौ पदार्थ भाषे जिनराइ। गुनथांनक चौदहभाषंत चौदह मारग ना बरनन्त। उनईस जीव समास जु कहे। चौबीसौं दंडक जिय गहे। मुनि सुब्रत श्री जिनवर ईस। बिहरत गए सिषर गिरि सीस। कूट निर्जरा ऊपरि जाइ। जो गरोध कीनौं जिनराइ। आयु अन्त पहुंचे निर्वांण। आइ इन्द्र करि सिव

कल्यांन। सुरनर असुर तिर्यंच खगेस । वंदें रज थुति करें फनेस॥ महिमां निर्जर कूट विथार । निज निज थांन गए चित धार ॥ सोवर कूटन में जो कोइ। सुरनर गति लहि सिवपतिहोइ। मन वचकाय भक्ति चित धरें। नरक पसु दोन्यौं गति हरें। आगें और कथा सुनिराइ । निज जात्रा कीनी मनलाइ। कौसल नांम देस विख्यात॥ तहां अयोध्यापुर अवदात । रामचन्द नांमां अवनीस । आइ बहुत नृप नवावें सीस। पटरानी सीता संयुक्त॥ भोगें भोग निगमके युक्त। एक दिवस थिति सभा मझारि। धर्म कथा महिमां विस्तार ॥ तिहिं अवसर इक खगपति आइ। अहमिंद्र दुतिवंत सुभाइ। आइ सभा में देखे राम। कर जुग जोर कियौ परनांम ॥ आज्ञा लहि नभचर थिति भयौ। धर्म कथा सुनि वेचित दयौ। औसर पाइ कहै खगबात। जीव उधारन धर्म विख्यात ॥ लहि सुद्धोप योग जिय सार । भवि जीवन निधि उतरें पार। सुभ उपयोग जुसाधन करें। तौ मन वंछित कारिज सरें । * दोहा *

कहै व्योमचर मिष्ट बच । सुनों रामजी बात। सिपर सुमेर पुनीत गिरि। नमत पाप सब जात ॥

* सोरठा *

मुनिसु व्रत जिनराज। सिव कल्यान कहते भयो। तिनकी जात्रा काज। जात हते हम भाव सौं ॥

* दोहा *

देखि सभा हम आपकी। धर्म कथा संवाद। सुनि आए लखि दरस तुम। भयौ हिए अहलाद
जात्रा के बच रांम सुनि। मुनि सुव्रत कल्यांन। संघ च्यारि विधि संघ लै। ततक्षिण कियौ पयांन॥

* चौपाई *

करतदान पूजा श्रुत सौन। कलह बिवाद करत धरि मौंन ॥ खेचर आदि संघ बहु भूप । मधुबन

गए सुथांन अनूप ॥ पूजा सामग्री सजिसार । मन बच काय भक्ति चितधारि ॥ जै जै करत चले गिरि जहां । मुनि सुब्रत कल्यानक तहां ॥ पूजा करि गुनगाय अनन्त । निर्त कियो हिए धरि सुविवेक ॥ दांन अलप दियो तहां राम । फुनि आए हर्षित निज धाम ॥ राय सहस बाहु भूपेंद्र । खगपति आदिक नमैं मुनेंद्र । कोटि एकपैंतालीस लाख । दिक्षा लीनी श्रीजिन साख । धरि बैराग महातप कियौ । कर्म्म रिपु सुजलांजल दियौ । बिबिधि परीस्या सहि तिंहि थांन । धर्म शुक्ल फुनि धार्यौ ध्यान केवल ज्ञान कियौ परतक्ष । भई आतमा केवल सुक्ष । निर्जरनाम कूट के सीस । मुक्ति गए ह्वै भिवन ईस ।

*** दोहा ***

तिहिं थांनक मुनि ध्यांन धरि । पायौ पद निर्बान ॥ मुनि सुब्रत पर्यंत नामि ॥ संख्या करौं बखान ॥

*** अडिल ***

एक ऊनसत कोडा कोडि बखानिए । सितानिवैं किरोर लाखनौं जानिये । नौसैं अधिक निन्याणवैं मुक्ति गएतहां । सिखर सुमेद सुकूट निर्जरा हैं जहां

*** दोहा ***

एक बार एक कूट कौं । जो नरबंदै कोइ । कोटि प्रोषधी फल लहैं । सिवपद पावै सोइ ॥ ऐसे सिखर सुमेर नग । माहिमां कहत न अंत ॥ बनबच काया भक्ति सौं ॥ मनसुख जलधि नमंत ॥ लोहाचार्यतना वचन । सिखर महातम बर्न ॥ तिहप्रति मनसुख सिंधु कहि ॥ नरभाषा मन हर्न ॥

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते समेदाचल माहात्म्ये भाषा यामन सुख सागरेण वर्णन निर्जर कूट तैं मुनि सुब्रत नांथ मोक्षगमन नाम वर्णनं नाम ईकीसवां पर्व संपूर्ण ॥ २१ ॥

## * सवैया *

आठो अपराजित विमान सों जनम लियौ मिथुला नगर तात विजय सुराइहैं ॥ विप्रो देवी नाम मात हरित वर्ण गात पंद्रह धनुष कंज चिन्ह सुख दाईहैं । आयु हैं वरष दस सहस सुमेर गिरि प्रभव सुकूट सीस सिव पदपाइहैं । ऐसे नमि नाथ नोमि धार कै मन सुख सिंधु प्रनामि चरन हिए हर्ष ब्दाइ हैं ॥

## * दोहा *

गए वर्ष षट् लाख जव । मुनि सुव्रत सिव लोक ॥ जनम लियौ नमि नाथ तव तिनपद मेरी धोक । गर्भ जनम तप ग्यांन सिव । एई पंच कल्यांन । पढै सुनैं अर्चै त्रिविधि ते पावैं सिवथांन ॥ चौपाई

शुभ सहस एकशत मांन । जंबूदीप जिनेश वखांन । मध्य सुमेर मनोहर अंग । एकलाख जोजन उतंग । ताके यमदिसि क्षेत्र वशंत । भरत नांमजुत देश महंत । आर्यखंड वत्स हैं देस ॥ वन उपवन सरकूप असेस । कालिंद्री कूलजल भरपूर । अति गंभीर उर्म्मिजुत भूर । ताही के उपकंठ ज बसैं । को संबीपुर उत्तम लसैं नगर सव सुरपुरी समांन । बसु विधि पूजैं श्री भगवांन । पढ़ैं जैन श्रुत निज मन लाइ । चौ विधि दांन देइ सुख दाइ । पार्थ नांम नृप राज करंत । वंश इख्याक मध्य गुनवंत ॥ न्याय मार्गमैं अति लवलीन । प्रजा दुख नासन परवीन ॥ इक दिन मुनि आहार के हेत । आए भूप गेह सम चेत । दै आहार नमिश्री मुनि चर्न । दुविधि धर्म्म सुनि पातिगहर्न ॥ करि नमस्तु पूछैं फुनि भूप । कहिए मुनि सम्यक्त सरूप श्रीजिन भाषित तत्व सरधान । इहनिहचै सम्यक्त बखान । बर्नन करि मुनि गमन कराइ । ध्यांन धर्यौ निर्जन बनजाइ ॥ पार्थनृपति सम्यक्त गुणधार ॥ राजकरैं पुरजन सुखकार ॥ पुरवहिरवन हैं रमनीक ॥ नाम मनोहर सिव वृथलीक ॥ तहं आए केवली मुनीस । जुगधर नाम नमे सो ईस । बनके नगसेवा

अनुकूल। हरष सहित भए फलफूल। जयनथ शब्ददेव तहंकरैं। पूजैं जिन थुति उच्चरैं। यहअचिरजलखि
माला कार। षटऋतु फलसु मनोहर सार। धर नृपभेट असीस जो देइ। करमुकुलत करबैन कहेइ। तुम
वन आएहैं केवली। सिवनिकेत निरखावैं गली। सुनिवच नृपहैं पुलकित अंग। नमन चल्यौ पुरजन
ले संग। लैवसु दर्ब अर्चि पद कंद। दुक्कृत कर्म कुलाचल भंग। सागारी अनगारी धर्म।
सुनत हिए नृप नास्यौ भर्म। उपज्यौ प्रसम मोह करि छीन। निज पद श्री धर सुनकौं दीन। आप
दिगंबर पद आदर्यौ। जन्म जन्म कौ पातिक हर्यौ। भाई भावना खोडस जहां। तीर्थंकर पद
बांध्यौ तहां। बिबिधि प्रकार महा तप कियौ॥ अंत समैं संन्यास सुलियौ॥ अपराजित बिमांन मैं
जाइ। पद अहमिंद्र लयौ सुखदाय॥ जिन पूजा करि लै सुर संग। सुकल बर्ण भास्वत सुचि अंग॥ सब
मिलि अमर सभा थिति होइ। सात तत्व चरचा चित जोइ। आयु काय भोजन उस्वास। मै पूरब भव
कियौ प्रकास॥ क्रम क्रम करि सुखसिंधु मझारि। सेषमास षट आयु बिचारि॥ सोअहमिंद्र निरंतरसंत।
पूजैं जिन गुन गांन करंत।

## * दोहा *

आगैं अब सुनि मगध पति। नमि कल्यानक थांन। धर्म प्रगट करि सिव गए। अष्ट कर्म अरिहांन

## * सवैया *

जंबू दीप मध्य मेर दक्षिण भरतक्षेत्र। तहां आरिज खंड बंगदेसमौ रहैं। तामैं हैं नगर नांम मिथुला
पुरी सुधांम बन उपबन सर कूप बहु ठौरे हैं॥ उन्नत नगर कोट कांगुरे बिराज मांन मन के हरन
हार छबिपुर धौरहैं। उज्जल अवासु केतु पवन चलत इमि कहत कहत इहां कीसम सोभा नहि औरहैं।

* दोहा *

विजय सैंन अवनीप तहं । करैं प्रजापर्त पाल ॥ जार चौर ठग दुष्ट जन । इति भीति सब टाल। विप्रा पट रानी सहित । भोगैं भोग सुभूप । तदनंतर इक कथन अब सुनि मगधेस अनूप । * अडिल *

प्रथम नाक नाकेस सभा मैं थिति करैं । धर्म्म कथा संबंध अबहि हिय मैं धरैं । ग्यांन दृष्ट लखि कहैं नमी जिन राजजी । मिथला पुर अवतार होइ बृषराजजी ।

* दोहा *

हरि आग्या ले धनपती । आइ रच्यौ पुरसार । नौ द्वादस जोजन प्रमिति । ग्रह ग्रह मंगल चार । तीन काल दुंदुभि बजैं । बरषैं रतन मनोग । साढे द्वादस कोटि मिति । श्री जिन जन्म नियोग ॥

* चाल छंद *

एक दिन निज मंदिर मांहीं । जिन मात सैन कराहीं । निशि अंत सुभ सब देखे । प्रातहि पति पाशि बिशेखे । सोई चरत्रय अहमिंद्र । थिति गर्भ कल्यान जिनेंद्र। आए तहं सुरनाकेश। करिकै निज उत्तम भेष । हरि पीठि थापि जिन मात ॥ करि पूजा हिय हरषात । अश्वनि बदि दुतिया जांन । हरि कीनौं गर्भ कल्यान । सेवैं देवी जिन अंब । त्रिभवन पति गर्भ अवलंब । निज धांम गयौ पुर ईस ॥ हिए भक्ति जु विस्वा बीस । क्रमसै नवमास वितीत । जिन भाषी पूरब। रीति । अषाढ बदी सुमबार दसमी नमि जिन अवतार ।

* दोहा *

आए देवी देव पुनि । चौं निकाय सुर ईस । गजपै थापि जिनेंद्र तब । गए मेर गिरि सीस ।

* सवैया *

पूरबसामांन जिमज्जिन विधान करि अंतुक अभूषन तन पहिराईयौ । लेइबसु द्रब सुचि चरन चढाय

तब बहु विधि थुति प्रभु गुन गाईयौ ॥ फेरि ऐरापति थापि अवधि न जाय जपत जय सुर सुर जिन पुर आईयौ। मात गोद थापि नृत्य करि निज थांनक गयौ मन सुख सिंधु ऐसे प्रभु सिर नाईयौ ॥

* दोहा *

तन उन्नत पंद्रह धनुष। हरित वर्ण दुति वंत। आयु वर्ष दस सहसकी। लक्षन सुगुन अनंत। सहस अढाई बाल जिन। बीते नमिय जिनंद। पांनि ग्रहन करि राज फुनि। कीनौं प्रजा अनंद। धारि अनुव्रत नीति पद। प्रजापाल हिय हर्ष। तीन ग्यान धरि धर्म्म जुत। सहस पंच गत वर्ष ॥

* चौपाई *

एकदिन श्री जिन वन में गए। नाना विधि द्रुम देखत भए ॥ कमल सरोवर जल करि हीन ॥ मलिन जलज पल्लव मवलीन ॥ तनछिन लखि हियहु बैराग ॥ आतमीक पद करि अनुराग ॥ द्वादस भाव न कैं विचार। अथिर रूप जांन्यौं संसार। इतनेंमे लौकांतिक देव ॥ आय जे जे करि स्वय मेव ॥ धन्य धन्नि निज निज गुनधार ॥ भव्य भाव बुधि तारन हार ॥

* सवैया *

अहो नाथ तुम बिन कौंन इह काज करैं दुर्द्धर बरत तुम विन कौन गहिहैं ॥ वसु विधिरूप धरि जीव गुन नासि कीनौं ऐसे कर्म्म। बैरी विन ध्यांन कौंन दहिहैं ॥ निज गुनपाय लौका लौकको प्रकास करि सिव थान जाइ जीव थिर होय रहिहैं। मन बचकात मनसुखसिंधु सेवैं तुमसे उभव दधितरि सिवपुर लहिहैं ॥

* दोहा *

अस्तुति इह विधि लैक सुर। करि बैराग दिढाइ। ब्रह्मलोक बासी अपर। नमि नमि थानक जाइ ॥

## * चौपाई *

विजय सेन पालकी जुल्याये। पुलोम जाय तिन जिन बैठाये। बनमैं जाय दुकूल उतार ॥ नमः सिद्धेभ्यः मुख उच्चार ॥ कायोंत्सर्ग ध्यांन धरि दयो। तप कल्यानक सुरपति कियो। सहस एक नृप नमि नमि नाथ। लीनो तप कियो सिव साथ ॥ मनपर्यै तब उपज्यो ज्ञांन। बेला वृत कीनो तिहि थांन। जाइ नूर्य गिरि क्षीर आहार। देत राउघर लीनों सार। पंचाचर्य तहां सुर कियो। देखि नगर जब हरख्यो हियो। फुन प्रभु बनमैं जाय तुरंत। निश्चलांग होइ ध्यांन करंत। प्रमिति वर्ष नै रहे छदमस्थ। च्यारि घातिया करमनिरथ। मगि शिर सुक्ल रुद्र थिति जांनि। नमि जिन उपज्यो केवल ज्ञान। समो सरन रचियो धनदेव। सुर नर पसु आए स्वय मेव। पूजा करि वसु दर्व चढाइ। निज निज सभा बैठ हरषाय। स त्रह गणधर सुखदातार। श्री जिन वांनी परखनहार। सहस बीस सब संघ बतांहि। ग्रंथ बृद्ध भय बरन्यो नांहि।

## * दोहा *

देस देस उपदेस करि। समो सरन नमि नाथ। गए वर्ष पचीस सत। करत सुरासुर साथ। रही आयु इक मास मित। गए सिखरि गिरि सीस। प्रभव कूट परि ध्यांन धरि। भए मुक्ति के ईस।

## अडिल

रहे सेष नख केस शक्र रचितन तहां। मलया गिरि श्रीखंड प्रमुख सर साचि जहां। प्रनम्यो अगनि कुमार मुकट माणि क्रांतिसों। प्रगटी अगनि महंत भस्म करि सांतसों।

## * दोहा *

सोरज भालनि लाय करि सुर नर खग पसु सर्व। शिव थांनिक पूजा करैं हाथदेइ वसु दर्व। मास अषाढ सुकृष्ण पक्ष तिथि अष्टमी महंत। बिवहारी वसुगुन धरे निश्चै सुगुन अनंत। कल्यांनक निर्वान करि। हरि अपनैं पुरजाय। सो प्रभास बरकूटफल कोकाबिजन बरनाइ। भाव सहिततहं जाइजो पूजैं

नमि शिवथांन । कोटतीस सुप्रोषधी । वर्त कियौ फल जान । जितने मुनि तिहिं थांनसैं । लियौ मुकति पद सार ॥ तिनकीमैं संख्या कहौं ॥ श्रीजिन श्रुत अनुसार । नौसैं कोडा कोडिभीति । अरु पैंतालिस लाख सात सहस नौसैं अधिक ॥ ब्यालीस श्रीजिन भाष । मेघदत को कथन अव । मुनिश्रेणिक मनलाइ । संघ सहित लै शिखर नामि । तपकरि सिवपुरजाइ ।

*** चौपाई ***

श्रीपुर नाम नगर इक बसैं । धनधान्यादि सहित जनलसैं । महा बर्तनामा भूपती । शिव सेनापति रानी सती । दंपति भोग करत दिन गए । मेघदत सुततिनके भए । पाइ पिता पदराज करंत । निति प्रति अरचैं श्रीअरहंत । श्रीषेना तिनकै पटनारि । सील सुलक्षन सबगुन धारि । इकदिन नृपरानी जुततहां । क्रीडा हेत गयौ बनजहां । लखे बसंत सेन मुनि राइ । भक्ति सहित भूपति शिरनाइ । धर्म्म बृद्धि दै धर्म्म बखांन ॥ मन बचकाय सुनौंदे कांन ॥ फुनि मुनि आगम पूछि नरेस । बरनन करै सहित उपदेस । सिखरि महात्म कह्यौ सुभाय । जात्रा फल सिव पंथबताय ॥

*** दोहा ***

नमस्कार करि भूपतव । आयौ अपने गेह । जिन मंदिर मैं जाय कैं । पूजा करि धरि नेह ॥

*** चौपाई ***

च्यारि प्रकार संघ लैं साथि । जात्रा हेत चल्यौ नरनाथ । साततत्व चरचा चितचाव । दांन च्यागिविधि देन सुभाव । क्रमक्रम से मधुवन मैं गए ॥ मधुऋतु समछवि देखत भए । जायकूट परि पूजाकरी ॥ जय जयजय आरव उच्चरी । इतने मे चारन मुनिराज । आए जुगल सुधर्म जिहाज ॥ जिन थुति कीनी प्रसम सरूप । मुनि चित मै बैराग्यौ भूप । निज पद जिन सुतकौं राइ ॥ मुनि पदनमि तप लै शुखदाइ । एककोटि पैतालीस लक्ष्य । भए महा मुनि मुनि परतक्ष । तपकरि अष्टकरम गननाश । ततक्षिन लौकालौक

प्रकास। अविनाशी पद पायौ तहां। कूटप्रभास नाम हैं जहां। ॥ दोहा ॥
मन बचकाया शुद्ध करि ॥ प्रणमैं शिखर सुमेर ॥ सुरनर सिवपद पाइ करि ॥ जन्म धरै नाहि फेर ॥

**॥ अडिल ॥**

लोहाचार्य धर्म्म ग्रंथ वर्णन कियौ प्राकृत रूप अनूप कठिन अति करि दियौ ॥ निज कल्याणक पाठ हेत अति चावसौं ॥ भाषा मनसुखसिंधु रचिबहु भावसौं ॥

इति श्री काष्टा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहातमेसुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुद्ध सागरेण वरणनं प्रभास कूटनै नमि नाथ मोक्षगमन वर्णन नाम बाईसवां पर्व ॥ २२ ॥

**॥ सवैया ॥**

सील सिंधु धारक बिदारक मदन दल सुरी पुर जन्म सुर संभरत हैं ॥ सागर विजय पिता सुमाता शिव देबी नामक चिन्ह चरन सोभासु धरत है। उन्नत सुतन दस धनुप सजल घन बरन बरस आयु सहस चरतहैं। ऐसे नेमनाथ नेमधारअन सुख सिंधु नमत चरन सिव संपाति करत हैं ॥ दोहा ॥
नेम नाथ जिन के चरित ॥ सलप मात्र मनधारि। सुनि श्रेणिक मनलाइकैं। ज्यौं पावैं भवपार ॥

**॥ चौपाई ॥**

दीप प्रथम जंबू बरनाम। मध्य सुदर्शन सबसुखधाम। भरत क्षेत्र दक्षिण दिसि बसैं। अवनि तहां खंड खंड जु लसैं। आरिज खंड खंड सिर मोर। तदवत सोभा औरन ठौर। तहां देशबहु बसैं असेस ॥ जाइ करैं जिन बृषउपदेस। कुरजांगल इकदेस बिसाल। प्रजा सुखित सोहैं गुनमाल। गज पुरनाम नगर प्रसिद्ध। बर विभूत जुत सोहै रिद्ध। लक्ष्मीचन्द्र नृपति परचंड। राजकरैं बहुआरिज न खंड॥ श्रीयमती नांमा प्रिय

प्रिया। सीलसुलक्षन सुंदर तिया। सोलम स्वर्ग देवइक आइ। तिन दोन्यौ के सुतउपजाइ। सप्रतिष्ट अभिधान बिचार। धर्यौ गणक सुभलग्न निहार। क्रमक्रम बढ़ैबाल तियथांन। रूपसुलक्षन अतिगुणवान। शास्त्र शास्त्र बिद्या पढ़ि लई। नृपनिज कारिज मनमें ल्याइ। पानिग्रहन पिताकरि दियो। नारि सुनंदा सुत जुग कियौ। नृप निजकारिज मनमें लाइ। राज दियौ निजसुत सुखदाइ ॥ जाइ सुमिंद्र मुनि शिर नयौ। पंचमहाब्रत तिन गहिलियौ। दुद्धर तप श्रचंद मुनीस। करैं हानि त्रिभुवनक ईस ॥ *दोहा*

पंच अनुब्रत राइ सुत लिये पिता मुनि पास। करि नमोस्तु पुर जाइ निज पूरै सबकी आस ॥

* चौपाई *

राज करैं सुप्रतिष्ट नरेंद्र। अरिगन गज मद हरन मृगेन्द्र ॥ प्रजा पुत्र सम पालैं राइ। इतिभीति भय दूर नसाय ॥

* दोहा *

तिस अवसर मुनि राज इक आए सब सुखकार। नाम जसोधर जगत हित उपजावन गुनधार ॥

* अडिल *

देखि नृपति ऋपराइ अग्रह्वै भक्तिसों। तिष्ट तिष्ट मुख चवै करे थुति सक्तिसों ॥ धन्य तपोधन धीर बीर तुमहौ सही। जेतुमसेवैंचरन मुक्ति तिनही लही ॥ * दोहा *

अस्तुति करि नव भक्ति युत दाता गुन पुनि सात। शुद्ध आहार सुमुनि दियो देखि नृपति हरषात ॥ अषैं निद्धि मुखतैं जुकहि ध्यान धरे बनजाइ। पंचा चर्य अमर कियौ देखि नृपति हरषाइ॥ *चौपाई*

सुख सागर मैंमन नरेस। साधिलिये बहु नृपके देस ॥ बहुत कालबीते इसरीति। भोगै भोग नारिनर प्रीति।

* अडिल *

एक दिना नरनाह सहित नारी तहां । बैठे अति हित मनसो धर्युपर जहां ॥ दिस विलौकन करत एक दिसि देखियौ । उलकापात उद्योत नृपति तहां पेषियौ ॥ * दोहा *

सुप्रतिष्ट नृप देखि इह मन विरक्त अति होय । तव धन पुत्र कलत्र ग्रह उल्कापत पिव जोइ ॥ अष्टान्हिक पूजाकरी । निजमन हर्ष बढ़ाइ । अष्ट द्रव्य शुभ भाव जुत श्री जिन चरन चढ़ाइ ॥ निज सुतकौं सब राजदे भावैं भावनसार । सुमंदिर जिन निकट नृप मुनि मुद्रा अवधार ॥ * अडिल *

पंच महाब्रत सुमति गुप्ति त्रय धारही । वसुकरि गुनमन धारि जिनात्म विचारही ॥ द्वादस बिधि तप करहि लीन मन तत्व सों । सहे परीस्या बिबिधि आपने सत्वसों ॥ * दोहा *

षोड़स कारन भावना मन धरि करहि बिचार । तीर्थंकर सुगोतकौं बंध कियौ सुखकार ॥ अंत समाधि मरन कियो पंच अणुब्रत नाम । तहां जयंत बिमानमैं उपजे सब सुखधाम ॥ * चौपाई *

अहमिंद्र पदवी तिनधार । अंत महूरत जोवन सार ॥ दिव्यरतन मुक्ताफल भले । सहित सुगंधित माला गले ॥ एक हस्तकी उन्नत काय । अति सुंदर लक्षण हितदाय ॥ समुद तीस अरु तीन प्रमान । आवंल तिनकी करी बखांन । लेस्या शुक्ल भाव मनधरैं । छहोंद्रव्य की चरचा करैं । नोः प्रविचार भोग सुखजोइ । सील सहित नारी नाहि होइ । इत्यादिक सोभा गुनगीत । आन्य शास्त्र सौं जानौं मीत ॥ इह जिय जिन उपजैं हरिवंस । सो सुनि श्रेनिक है अवतंस । अथै जंबू बरद पसु नांम । भरत क्षेत्र तामैं अभिराम । देस बत्स नाम तहं एक । कौशांवीपुर हैं सुभ टेक । मघवा नृप नागर प्रतिपाल । दुर्जन जन कौहैं उरसाल । बीत सोकनागिपटनारि । सीलसुलक्षन अति गुनधार। रघु नांमां तिनकै सुतभयो ।

सब जन बल्लभ सुंदर ठयो । वा नगरी मैं अति बलवन्त। सुमुख नांम हैं सेठ महंत । देस कलंग नगरपुर दत । तहसैं आयो बीरक दत । बनमाला तिस तनीं । रूप सुलक्षन सोभा घनी । सुमुख सेठ निज ग्रह मैं थाप । बहु आदर करि राखैं आप । ऋत बसंत बन क्रीड़ा न गयो । बनमाला तहँ देखत भयो । सम्रुख कांम सर पीडित होइ । अति विह्वल है ।चितमैं जोइ ॥ वीरदत कौं अति धन दियौ । देसांतर कौं तिन गमन कियौ ॥ तिस पीछैं उसकी वह नारि । निज ग्रह राखि करैं सुखकार ॥ बस्त्राभरण दिए बनवाय । कांम क्रिया करि सुख उपजाइ ॥

## * दोहा *

कार्य अकार्य नही लखैं । कांम अंध जे होइ ॥ जो जन्मांध मनुक्ष सब । मारग कौं नहि जोइ ॥ द्वादस बरष बीति जब गए । वीरदत तब आवत भए ॥ देखि चरित्र शोक तहं भयो । लज्जित है बन में उठि गयो ॥ धृग संसार अक्ष के भोग । लेन जोग हैं श्री जिन जोग । दिक्षा लै सुरहुवौ सोर । चित्रांगदसौ धर्म्म मझार ॥ सुमुख सहित बनमाला एक । दिन आहार दियौ विवेक ॥ सहित सुधर्म्म सिंघ मुनिराइ। पुन समर्जन करि सुखदाइ॥ चपलापतन भयो इककाल । दंपति प्रांन तजे तत्काल । येही भरत जो क्षेत्र बिसाल ॥ देस तहां हरि बर्ष रसाल । पुरी भोग पुरनांम सु बसैं ॥ नृपति प्रभंजन अति गुन लसैं ॥ बंश नाश हरिबंस बिख्यात । मरकंडूनारी सुखदात ।सुमुख जीव तिनको सुत भयो ॥ बिद्याजुत जोबन तन लयो । वही देशमैं शीलपुरेश । बज्र घोषनारी शुभ बेस ॥ बनमालाचर इनकै आइ । पुत्री बिद्युन्माला थाइ ॥ पूरब पुन्य जोग इहनारि । सिंहकेतु परण सुखकार ॥ ते दंपति है भोग कराइ । एकादिन बन क्रीड़ाके काज ॥ दांनपुन्य करिजुग सुखपाइ । गए नारिनर सब सुखसाज ॥

*** अडिल ***

वादिन सौचित्रांगद देव सुआईयौ। देखि पूर्व भव जांनि रोश उपजाईयौ॥ लैदोन्यौ कौं देवबिमांन चढाईकै॥ खंडकैं तनु सिंधु डारिहौं जाइकैं। पूरब भव जो सुमुखमित्र रघु नांमसौं। पालि अनैवृत देव भयौ सुखधांमसौं॥ कहै देवमुनि देव पाप जनभंगकौं।

*** दोहा ***

संसार्णव पतनकौ। कारणहैं इक काज॥ रबि प्रभु कोय वचन सुनि॥ अनुकंपा चित साज। चंपा पुर के अरण मैं। दंपति थापे जाइ। गमन कियौ निज अमरपुर॥ कियौ कांम सुख दाइ॥

*** अडिल ***

तापुर कौं नृप चंद्र कीर्त्ति सुतरहित है। मृत्यु भयौ तिसकाल सचीमन चिंतहै॥ करे बिचार नरेस थापिए कौंन कौं। गज सुख कलसा देइ न्हावैं जौन कौं।

*** दोहा ***

गंधोदिकसौं पूर गज। छोडि दियौ तिसबार॥ गज कलसा लै बनगयौ। सिंहकेतु सिरदार॥ प्रजा सहित सब सचिवते सिंह पीठपै थाप। करि अभिषेक नरेस पद। सिंहकेतु नृप आप॥

*** अडिल ***

मंत्री पूछैं बात कहो नृप कौंनहो। तात मात फुनि जात देस पुर जौनहो। सुनि हरि बर्ष सुदेस भोग पुरराइहौ। परभंजन हम पिता मृकंडू माय हो॥

*** दोहा ***

सिंघकेतु तिस पुत्र हम रिपु सुर हम लैआइ। सुनि नागर मंत्री सबैं। हिए मैं अति हरषाय॥

*** चौपाई ***

मरकंडू माता सुत जांनि। मारकंडतिस नांम बखांनि। फुनि ताकेसुत हरि गिरि भयौ॥ हरि गिरकैं हिम

गिर सुत ठयौ ।

* दोहा *

इत्यादिक हरि बंसमैं । राजा भए अनेक सुरसेन नृप अतिबली । विद्या अधिक बिवेक ॥ निजभुज बल अरिजीति बहु । कीनौं अति सुख काज ॥ निज नामा कित नगर करि ॥ करैं जहां कौ राज ॥

* चौपाई *

तिनकै सूरबीर सुत भए । जुगनारी जुत तिन सुखलए । प्रथम धारिणी नामा सती । दुतिय सुकांता अति गुणवती । धारिणिसेन सुत उपज्यौ एक । अंधकविष्टी सबगुण टेक ॥ नाम सुकांता दूजी तिया ॥ पति विष्टी तिन सुत जनमिया ॥ अंधकविष्टी नृप पद पाइ । नाम सुभद्रा अति सुख दाइ ॥ पुत्र भए दस अति गुणवान । तिनके नाम सुकरौ बखान ॥

* दोहा *

जेष्ठ तनय सागर बिजय सागर वतगंभीर । दानी बैष सुर द्रुम सरस अरु बीरनि मैं धीर ॥

* चौपाई *

जिनकैं तीर्थंकर अवतरैं । कोबुद्धि तिनको वर्नन करैं ॥ दुतियक्षोभ है पुत्र उदार । सत मित समुद्र तीसरो सार ॥ हिमवन तूर्य्य बिजै शुभ खान । पंचम षष्टम अचल प्रमान ॥ धारन सप्तम अष्टम देख । पूरन पूरन पुन्य बिशेष ॥ अभिनन्दन नवमौ गुन धार । विद्या रूप कला विस्तार ॥ दसमैं हैं बसुदेव मनोग । रति पतिव्रत सुन्दर तन जोग ॥ अंधकविष्टी दस सुत युक्त । दश लक्षन द्रव बहु सुख भक्त ॥ तनया जुग उपजी सुख दाइ । कुंती मांद्री सुंदर काय ॥ समुद बिजैके नारि प्रवीन । शिव देवी रानी गुन लीन ॥ जिनके जठर तीर्थंकर होइ । वर्नन करत सकत नहिं कोइ ॥ औरनके प्रिय तिया मनोग । करि बिवाह सब अपने लोग ॥ पति विष्टीके पदमावती । प्राण बल्लभा अति गुणवती ॥ पुत्र भए त्रिये तिनके सार । उग्रसेन आदिक गुण धार ॥ देवसेन दूसरो महंत । महासेन तीजो गुणवन्त ॥ एक

सुसा उपजी थुति रूप। इन कुटुंब सहित राजैं भूप ॥ सूरी पुर नगर सुखदाइ। सूर वीर नृप राज कराइ ॥

* दोहा *

गंध मादन गिरि जहां आए मुनि तपसार। सुप्रतिष्ट नामां तहां सब जीवन सुखकार ॥ नृप मुनि सब परिवार थुति सूरबीर जहं जाइ। करि नमोस्तु सुनि धर्मको दिक्षालई सुभाइ ॥ *चौंपाई*

अंधकबिष्टी नृप पद पाइ। राज करैं परिजा सुखदाइ ॥ फुनि सुप्रतिष्ट मुनी सुर तहां। गंध मादन गिरि आए जहां ॥ निशा समैं धरि ध्यान सुजोर। करि उपसर्ग शत्रु सुर घोर ॥ सहै धीर धरि श्रीमुनि राइ। केवल ज्ञान सबै उपजाइ ॥ सुरनर खग आए तिस थान। पूजा करै नृत्य गुनगान ॥ अंधक विष्टी गज चाढ़ि जबैं। जुत परिवार सुआयो तबै ॥ करि नमोस्तु ब्रष सुनि मनलाय। सुर उपसर्ग पूछि सुनि राइ ॥ निज सुत भव छैनर ईश। सुनि हरष्यो फुनि नायो शीर्स ॥ * दोहा *

समुद बिजयको राजदे दिक्षा लेइ बिचार। अति तप करि शिव पथ लियो निज आतम सुखकार ॥

* अडिल *

सूरी पुरको राज समुद्र विजय करैं। नरनारी पुरलोग सबनिको मन हरैं ॥ सुनि श्रेनिक मनलाइ जनम जिन राइको। शिव देवी उरआइ होइ सुखदाइको ॥ एक समय सुर ईश सभामैं थुति करैं। जिन जात्राके बचन सकल सुर उच्चरैं ॥ अवधि ज्ञान सुजोय शब्द ऐसै कहैं। समुद बिजय ग्रह श्री जिनवर उपजै सही ॥

* दोहा *

ताही समय सुरेसनै धनपति आज्ञा दीन। नौ बारह जोजन तनी नगरी रचौ नवीन ॥ * सोरठा *

पंचा चर्यकराइ आय धनंद रचना करी। अति उत्सव सुखदाइ गर्भ अगाउमास छह ॥ *अडिल*

शिव देवीकी सेव कुचालाचल बासिनी । करै कुमारी सर रमा नखुद्दासिनी। । बीतेहैं पटमास महा अति सरमसै । बहु उत्सव गुनगान नृत्य कर परम सैं ॥

*** दोहा ***

एकदिन रैनि सुसैनिमैं षोडस सुपन निहार । पूरब बर्नन जो कियौ ताहि देखि मन धारि ॥ कार्तिक शित शुभ छठि दिन ऊखा नक्षत्र बखान । सो अहमिन्द्र सुर तहां गरभ स्थित भगवान । प्रातसमैं जिन मातउठि । मंजनकरिशृंगार । निकट जाइ पति सैं सुनैं । सुपनै फल सुखकार।

*** छंदपद्धडी ***

जिनमंदिर मैं जिन मात । आइ सुर बनिता सेव करैं सुभाइ केई नाचैं गुनगावैं विशेष केई सुकर दिखावैं शुद्ध सुरेष केई वस्त्राभूषण हाथ लेइ । जिन माता के करमांहि देइ केई ले सुमन सुगंध सारैं। पलंकरचैं सुखसहित धार। केई मंजन करि जल सु ल्याइ । गज चरन प्रक्षालै अति सुभाइ । केई ग्रहकाज करै मनोक्ष । रस काव्य पहेली मात जोग । केईतनरक्षा करत सेव। केई कर जै जै देव देव । इत्यादिक और अनेक रीति । निज निज कारज करि करैं प्रीति । जिनमातानन सोभा लसंत। सुख बर्नन कहत लहन अंत । नवमास वितीते इसप्रकार । सुनि श्रेनिक जिम जन्मावतार ॥

*** दोहा ***

श्रावन शुक्ल सु छठि को । चित्राउड सुखदाइ । तीन लोक सुखकरन कौं। जन्म लियौ जिनराइ ॥ अपने अपने चिन्ह सौं । सुरजान्यौ सुविशेश। निज निज जान सु चाढ़ि तहां । आए सकल सुरेस ॥

*** सवैया ***

सूरीपुर शक्रआय ऐरापति साजि ल्याय जिन जी चढ़ाय सुर मेर गए तबहीं । पांडुक शिला पैंप्रभु पूरब सुमुख थापि क्षीरोदिक ल्याइकर कर कुंभज वहीं जिन कौं नहाय बसु द्रव्य चढ़ाय अति मनहरपाय नेम

नाथ नामजबहीं । कहि गेह लाय मात अंक थापि नृत्य कर कहत सुफल सक्र पनौ मेरौ अवहीं

*** दोहा ***

कल्यानक जिन जन्म को । करि सुरपाति निज थान । । जाइ भक्ति बसि होइ हरि । करै भोग सुखखांन

*** चालछन्द ***

जिन बाल अवस्था राजैं । देखत सब जन दुखभाजैं । जिन श्रवन कुंडल सोहैं । दुतिनील वर्ण मन मोहैं ।
लटपट पगधरत मनो गैं । सबजीवन को हरैं हसो गैं । करही कर करत विहारैं । नरनारी जनसुख कारैं ॥
बसु सहस सुलक्षण काया । गुनकहत पारनहिं पाया । आलिसैं दसयुत जिनराइ । वह बाल क्रिया सुख दाय ॥

*** दोहा ***

तदनंतर वसुदेव सुत । कृस्न नाम गुणवंत । भ्राता हैं बलदेव जिस । बलनारायणशंत ॥ *** चौपाई ***
जिनवर क्रीडादेखि सुभाइ । हर्ष हिए आति अंगन माइ । सब परिवारसहित नरईस । समुद बिजैं नृपराजै ईस ।

*** अडिल ***

एक समय श्रीकृस्न गये मुथरा तहां । कंशराय ह्वां भूपजुद्ध हूवौ जहां । मारयौ मुथरा राय नारि जीवंजसा ।
गई तात के पासि कहै मो पति नसा । जरासिंधु सुनि बात कहे किन नाशियौ । आति गदगद ह्वै वचन
तवै तिन भाषियौ ॥ कहै कौंन श्रीकृस्न कहां वहरहत हैं ॥ नास करैं छिनमाहिं जरासिंधु कहत हैं ॥

*** सवैया ***

पुत्रन कौ आज्ञा देइ सूरी पुरजाइ तुम आयसु को पाय सैन लेइ तव चले हैं । आदि दस भ्रात सब आइ रन
भूमि जुद्ध कीयौ नहि टले हैं । जरासिंधु सुत बिजबल सही न देखि भाग गए छिन मांहि सब मदगले

हैं। हारे सुत जानि और पुत्रन कौं आज्ञा दीनी तेउ आइ हारि गए जान्यौ अति बले हैं। * दोहा *

समद विजय तबैं। मंत्री सो इक बात। कौंनमतौ अब कीजिए ॥ ज्यौं होवैं कुसलात ॥ सुनि मंत्री ऐसै कहै। सुनौं नृपति ममबैन। जोबलवांन बिरोध है। तजे देश है चैंन। नगर दूसरो कीजिए। इहां तैं चलि सुनि राइ। जरासिंधु को मरन ध्रुव। निश्चै कृस्न कराइ। इह विचार मनमाहिं कर हुंडासर्प्पिनि काल। दोष जानि ताजि नगर कौं। चले तबैं तत्काल ॥ * चौपाई *

सिंधु देव जिन आगम देखि। अपनौं जन्म सुफल करि लेखि ॥ नौ द्वादश जौजन परमांन। जल संकोच कियो सुरथांन। नंदआय नगरी सुचि रची। मणि मानिक मोतिन करि खची ॥ जिनवर सौध सत षनै किये। पंच षनौंति षनै कै दिये। पंचाचार्य कियो सुरसार। सदन थापि जिन हर्ष अपार। ऐसी क्रिया करी सुरराइ। अमर नगर फुनि गमन कराइ। समुद विजै नृप सोभित जहां रत्नाकर त्रयुत तहां ॥ * दोहा *

सुखकर श्री जिन नेंमजी। क्रीड़ा करै सुभाइ आगैं बर्नन और कछू। सुनिए श्रेनिकराइ। जरा सिंधु लखि पुत्र कौं। हारजांन दुख मांनि काल जमन आग्या लई। गमन सूरपुर थांन चौपाई

आय देखि सूरिपुर तबैं। जांन्यो भाग गए जन सबैं। आगैं देखि चल्यौ कुलसुरी। माया रची भक्ति अनुसरी। चिता अनेक जलत तहां करैं। रुदन रूप नारी तन धरैं। कालज पूछैं मन लखि नारि। कारंन कौंन कहो तुम सार। देवी कहै सकल यदुवंस। अग्नि जले सब भए निरंस। सुनिकारि फिरि आयो निज थांन। पिता अग्र सब चरित बखांन * दोहा *

सुख करिकैं तिष्टैं तहां ॥ कारन हवौ और राज ग्रही कैवानिकइक। गयौ द्वारिका ठौर। रत्नादिक

बहु लेइकैं। फुनि राजग्रह आइ जरा सिंधु कैं जाइ तट। रतन सुभेट कराइ। * चौपाई *
रतन देखि पूछै नरराय। सब विरतंत तिन दियौ बताय। सुनि जादू कौंप्यौ नरनाथ। लडने चल्यौ चमूले साथ॥ सुनि श्रीकृश्न और बलदेव। मनमैं उपज्यौ अति अहमेव। मंत्र विचारनेम ढिग गए। जिन मुख हर्षित देखत भए। जयउपनी जानी मनमांहि। जीति होय इम मिथ्या नांहि। सेन्याले आए रनबीच। शुद्धभयौ अति बहु जनमीचि। श्री श्रीकृश्न जीति तबभई। तीन खंड जन आज्ञा लई॥ आवे लोग बहुत तिसमैं॥ सुख मैं काल बहुत तहां गमैं॥

* सवैया *

इकदिन सभामाहि सागर विजैकौं आदि दसो भ्राता बैठे अतिमन हरषायकैं। कृश्न बलदेव पांच पांडव अनेक नृपबल वर्नन बात कहै सुखपाइकैं। कोई बलदेव कौं बतावै कोई पांडव कौं कृश्न बलवांन कहैं अन्य कौं बताइकै तबबलदेव कहैं काहे झूठी बात कहौ नेमनाथ अति बली देखो तुमजाइ कैं। *सोरठा *

इह सुनि तबहिं मुरारि। कहे नेम बल देखिए। तिस अवसर मनधारि। आए अब निज पेंषिए।

* चौपाई *

तदनूकूल है बातिकैं। बैन परस्पर बल उचरैं। कहै कृश्न प्रभु नेम कुमार। बलदेखन इच्छाअबधार। स्वाभाविक जिन हाथ प्रलंब। करकनिष्टका चक्रनलंब। नारायण निज बल अति कियौ। सरल करन अंगुरी मन दियौ। स्वर्ण शाकुली फुनि पहराइ। अैंचखैंच बिह्वल दुखदाइ। ऊंचौ करि जिन कर पंकाय। कृश्न झुलाय अति हरषाय। लज्जित है नायौ निज सीस। तुम प्रभु तीन भवन बखईस॥ इकदिन सिव देवि ढिगजाय॥ निज सुतव्याह कबै किन माइ। कहै मात सुनि कृश्न कुमार। तुम इहबात करो सुविचार। आज्ञा ले आए निज थांन। निज नारी सौं बात बखान। व्याहमनावो केलि कराय। नेमनाथ सौं अति हरषाय॥* दोहा *

ऋतु बसंत आए नहां। फूले सब बनराय। रोगी गंधारी सबैं। निज जुत है बनजाइ ॥ जल क्रीडा प्रभुसैं करैं। कहि बिवाह की बात ॥ हर्षित जिन मुख लखि तबैं ॥ हरष हिए न समाय ॥ क्रीडाकरि कटि बस्त्र तजि। प्रछालन हित काज ॥ जंबूवती मस उच्चरैं। हम न जोग इह काज ॥ धनुष संख अहिसेज कौं। दलन पराक्रम धार। सो कटि बस्त्र न देइ हम निर्जल कारन सार। सतभामां सुनिइम कहैं ॥ नवदि मूढ एवैन। तीनलोकमैं अति बली त्रिभुवन पतिए अैन।

* सवैया *

जिन सुनि वैंन आए आयुध सदन मांहि संख धनु अहि सेज दलमल डारी हैं ॥ संख धुनि सुनि हरि आइकैं चरन गहे धनुष टंकार सुनि अति भय धारीहैं। आए बलदेव थुति करत अनेक विधि कांपैं कोपन कीजे प्रभु तुम बल भारीहैं ॥ तीनहू भवन सक्र सेव सबकैंरैं आइ चल्यौ निज थांन प्रभु बिन ती हमारीहैं।

* दोहा *

निज मंदिर आए प्रभु। मनमैं हर्ष अपार ॥ हरि बलमतो बिचारिकैं। पत्री भेजी सार। स्वस्ति श्री सुभ बांचिकैं। उग्रसेन नृप राज ॥ राजल कन्यां दीजिए। नेम बिबाहन काज ॥

* सोरठा *

उग्रसेन पढ़ि लेखि ॥ हर्षिहिए नसमातहैं। लगन लिखाय बिसेख

* चौपाई *

आयौ लगन द्वारका जबैं। अति उत्साह भयौ पुरतबैं। लगन लेइ द्विज दांन सुदइ। मंगल पांनि ग्रहन करेइ। सुभ मंडप बेदी तव करी। माणि माणिक मुक्ता रचिधरी। नृत्य बधावा मंगल गांन। गेह गेह उत्साह बखांन ॥ सहज नेमतन अतिसो भाय। और षोडश सिंगार बनाय ॥ सब बिवाह सामग्र साथ। समद बिजैं आदिक नरनाथ। उग्रसेन द्वारैं जब गए ॥ पसुगन आइ पुकारत भए। सुनौं नाथ त्रिभवन पतिबात। बिन तकसीर हमारी घात।

* सवैया *

सुनौंदयानाथ हमउपरि दया विधायमहि छुड़ाय सबजग जस लीजिए। तुम तीनलोक कारन परबंध दयाहेत जांनि सुखलास हमकीजिये। हाहा जिन तुम बिन नाइकैं पुकारैं कहावतसैं हमछूट बनसौं मिलाय दीजिए देखिनेम जिन कहैं धृगहै विवाह इहै कारन जगत तजि स्वारथकौं पीजिये। * अडिल *

स्यंदनेश प्रभु उतरि पाशि खोली जबैं। दै असीस सबन जाइ पसु हरषे सबैं॥ द्वादश भावन भाइ बिरक्त भए जहां। ब्रह्मोतर लोक अपर आए तहां॥ * दोहा *

अस्तुति करि निज पुर गए। शक्रपालकी ल्याय प्रभु चढाय गिरि उर्जिपैं। गए सुआनंद पाय॥

* सवैया *

परिग्रह त्यागि सब ध्याय तरुतल प्रभु ॐनमः सिद्धेभ्ये मुख तबही उचार्‌यौ हैं। पंच मुखी लौंच करि श्रावन सुकल छठि मोह मंदनासि राग दोष सबटार्‌यौहैं। नृप एक सहस सहित सुभलियो तप आतम सुरस लीन महाव्रत धार्‌यौहैं। सुतप कल्यांनक अमरपति कीनौ तप कच लेइ क्षीरोदिक सिंधु मांहि डार्‌यो हैं

* दोहा *

प्रभु ध्यांन मैं लीन है॥ करैं आतमांकाज। सीस नवाय गयौ तबैं। अमरलोक सुरराज। राजल इह सब बात सुनि। चली तबै गिरि नारि। अस्तुति करि सिरनाइकैं छुल्लनी व्रत धारि॥ *चौपाई* नारायण बलदेवकुमार। करि नमोस्तु निजग्रह संचार। राजकरैं श्रीकृष्ण नरेस। तीनखंड सुखकरन विशेस। श्री जिन बेला व्रत करिजबैं। उठे आहारहेत फुनितबैं। ईर्यापथ अवलोकनकरैं। पट काया रक्षा मनधरैं॥ द्वारा वत पुरकै पसार। वीर दत्त नृप प्रभु निहार॥ आगे आय नमोस्तु करी। बिनय भक्ति तिन मनमें धरी॥ तिष्ठ तिष्ठ तिष्ठो मुनि राइ। पडि गाहन विधि करि नर राय॥ माशुक क्षीर सुभोजन दियो। अपनो जन्म

सुफल करि लियो ॥ अैसें निद्धि जिन मुख उच्चैरं । पंचा चर्य अमर तब करैं ॥ साढे द्वादस कोटि प्रमाण । रतन बृष्टि नृप रुदन बखान ॥ दुंदुभि शब्द व्योम अनिवार । होय सुजल कनतन मनहार ॥ सुर द्रुम सुमन सुरभ बहु लिए । जैजै सकल सुरासुर किये ॥ एपांचौ अचिरज नृप गेह । करैं परस्पर सब जन नेह ॥ नेमि जिनन्द बनमें जाय । अचल लोइ आतम लौलाय ॥ षट पंचास अहनि जिन देव । छद मस्तक बरते स्वय मेव ॥ करमघातिया प्राकृति हानि । केवल ज्ञान प्रकास्यो भान ॥ सूक्ष्म थूल चराचर जिते । युगपत भासतहैं सब तिते ॥ जीव अजीव सुगुन परजाय । गए समैमें सब दरसाय ॥ * दोहा *

महिमा केवल ज्ञानकी कौप्रवन बनराइ । कैतो वह गुन सिद्धमें कैजानै निज राइ ॥ अस्वनि सुदि प्रतिप्रद सुदिन अपरान्हक थित सार । कल्यानक सुरपति कियो अति उछाह मनधार * चौपाई *

समोसरन धनपाति रचि लेइ । तीन लोक श्री सोभा देइ ॥ तीन कोट गोपुरहैं च्यारि । नृत्य शाल नाचैं सुर नारि ॥ पूरब वर्नन को उनमान । समो सरन रचना सबजान ॥ जुग जोजन परमान विशाल । क्षेत्र पाल राखे रखवाल ॥ गणधर एकादशहैं तहां । श्री जिन मुख धुनि उपजत तहां ॥ नौसत मन पर्यैके धार । अवधि धारि पंद्रह सौसार ॥ ग्यारह सहस नाग सत कहैं । सिष्यनिकी गिनती यह लहैं ॥ एकादश शत वैक्रिया युक्त । षोड़स सो केवली प्रयुक्त ॥ वेद सतक पूरबके धार । गज सत मितवादी अतिसार ॥ सष्टादस सहस्र परमान । सर्व संघ मित करी बखान ॥ तीन लक्ष श्रावकनी कही । एक लक्ष श्रावकहैं सही ॥ द्वादश सभा बिराजे भले । होत सुधुनियातिक टले ॥ * दोहा *

अलय ज्ञान मेरे हिए सोभा अगम अपार । कौशिक सूरजि किरनि किम बरने अति बुध धार ॥

*** चौपाई ***

आवैं सुरनर खग के ईस । पूजा करैं नवावैं शीस ॥ सुनि श्रीकृष्ण और वलदेव । पूजन आए तजि अह मेव ॥ धर्म्म सुन्यो मन अति हरषाय । शीस नवाय फुनि निजपुर जाय ॥ अर्द्ध चक्र सुख भोगै भोग । करैं राज सब जन सुख जोग ॥ सुत प्रदुमन मदन पद धारि । भानु सुभानु संबु सुखकार ॥ सब परिवार सहित सुख करैं । पूजादान अधिक विस्तरैं ॥

*** दोहा ***

समौसरन श्री नेम जिन नाना देश बिहार । करि आए गिरि मेरपैं सुर करि जैजै कार ॥

*** सवैया ***

आए कृष्ण वलदेव पूजा करि धर्म्म सुन्यो प्रश्न कियो द्वारका की तिथि कहि दीजिये । नारायण आयु फुनि गन धर कहै द्वादश बर्ष पूरी तिथि सुकहीजिये ॥ दीपायन कोप जोग नगर भसम होइ जरद कुमार कर नारायण छीजिये । ऐसी सुनि शीस नाय जाय पुर राज करैं संका मन हरिवंस सेती जानि लीजिये ।

*** दोहा ***

बर्ष सात सत नेम जिन । केवल पदवी धारि । आदि ऊन छप्पन दिना । अंत मास इकसार । उजैयंत परजोग प्रभु । रोध कीयौ जिनराय । लघु पंचक्षर कालमैं सिद्धि क्षेत्र थितिपाइ । चैत असित शुभ आदि दिन ॥ मघवा मन हरषंत । कल्याणक उत्सव करैं ॥ बरनत लहूं न अंत ।

*** चौपाई ***

जै जै सुरनर खग सबकरैं । पूरब कृत पातिग सबहरैं । सुरयुत सिखर सैल परिजाइ । सुनि श्रेनिक निहचैं मनलाय । द्वाविंसति तीर्थंकर होइ । कूट प्रकास धाम शिव जोइ । हुंडा दोष जानि सुरराइ । जाय कूट पैंद्रज कराइ । फुनि जिन थांन अमरपति गयौ । जान्यौ जन्म सफल अब भयौ । जोनर कूट वंदना करैं ॥

स्वभ्रम सूं बिबगाति परि हरैं। सकल सिखर प्रणमैं जो कोइ। तिस फल बरनत अंतन होइ ॥ * सवैया *
ऐसे सिद्ध क्षेत्रसु कर्म जोग पाइयेत होइ मन सुख जिन पूजा क्यौंनैं कीजिए। गेह देह नेह धन जोवन सकल इह चंचला समान छिनक एक मांहि छीजिए। रागदोष त्याग मन समभाव आनि उर संघ कौं चलाइ बहु जनदान दीजिए। फेरि न मिलैगी दांव जांयगे नरक जब सिखर कूटवंदनिज भौ सुधारिलीजिए।

## * दोहा *

सिखर महातम बरनियौ ॥ लोहाचार्य विशेष। मन सुखउदधि सुकथन करि। सुफल जन्म निज लेख।

इति श्री काष्टा संगे लोहाचार्य विरचंत तीर्थमहातमेखुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुद्ध सागरेण वरणनं २३ ॥

## * सवैया *

सुख करन हार हरत दुख संकट के सेवत धरनेंद्र। चिन्ह चीनोहैं। अस्वसेन तात मात वांमा नामा देवि सुभ बाना रसी नगर मैं जन्म शुभ लीनो हैं। सजल जलद तन वरन वरष सत आयु नव धनुष तन ऊंचौ कहि दीनौहैं ॥ ऐसे पार्श्वनाथ मनसुख सिंधु सुख दायकर जुगजोरि कैं नमस्कार कीनो हैं ॥

## * दोहा *

ऐसे पारस नाथ प्रभु ॥ सेवत संकट जाय ॥ तिन गुनकथन चरित करि ॥ हिए हर्ष उपजाय ॥

## * चौपाई *

जंबूदीप परधान। लखजोजन विस्तार बखान ॥ मध्य सुदर्शन मेर निबेक ॥ उन्नत जे जन लाख सु एक ॥ ताके दक्षिण क्षेत्र सु लसैं ॥ भरत नाम धनुषा कृत वसैं। तहां खंड छह सोभा देत। परम धर्म्म सुख कारन हेत ॥ आरिज खंड मध्यमैं सार ॥ आरज जन उपजैं सुख कार ॥ धर्म्म ध्यान ते साधन करैं।

सिवरमणी रामा कौं बरैं। नाना देस बसैं बहु भांति। मानौ अमर लोक की पांति। जहां जाइ समोसरन जिनेंद्र॥ सेवत सुरनर खग धरणेंद्र। पुरपट्टन कर्वट सो भंग॥ षेट गांव कहि लहूं न अंत। तामै कोसल नाम सुदेस। इति भीति दुख होइ न लेस। बन उपबन सोभैं बहु पास। पंथिक छुधिगतनपूरैं आस। कुंवा बापिका निर्मल नीर। सरबिहंग सोभैं बहुतीर। बारिज करि छादित सुखदाइ। पिए मिष्ट जल जन हरषाय। पुष्प पराग मधुर झंकरैं। मानो देससुजस उच्चरैं। तहां तरंगिनि शुचि जलधार। बहै प्रभाव महासुखकार। तटनी तट मुनि ध्यान धराइ। निश्चलांग आतम लौ लाइ। श्रावक जन आवैं तिसपास। सुनैं धर्म्म करि चित्तहुलास। अधिक सुसोभा कही न जाइ। इंद्र जन्म चाहैं तहां आय। नगर विनीता सोभैं तहां। बरनन करत मोहि बुधि कहां। सजल षातिका च्यारौं वोर॥ तिन तट नृत्य करैं शुभ मोर। पुष्प बाटिका सोभा घनी॥ सुमन जात बहु जातन गनी। तहां सरोवर त्रिविधि प्रकार॥ तिन तटतर बर अति सुखकार। मुनि आगम होइ तिस थांन॥ केवल बांनी करैं बखांन। सोपुरजन पूजन उर हार। बस्त्राभूषण बहुत समार॥ आइ अचिर पद धर्म्म जु सुनैं। जीवां जीव भेद हिए मुनैं॥ च्यारिप्रकार दांन कर सुखी। कोई न बदन पीतम भय दुखी॥

* सोरठा *

सोभा अगम अपार बरनत ग्रन्थ बढ़ैं बहु। आगैं सुनि विस्तार॥ कारय मात्र कहि लीजिए॥

* सवैया *

बज्रबाह भूपति नगर मांहि राज करैं बंस हैं इष्याक अति नीति सुखदाइ हैं। सुंदर सुतनु सुभ छबि राजत हैं देवा गुरू ग्रंथ कहिए भावनां सुभाई है। प्रभा करि नांम तिया पिया सिय उनहार तेई दोन्यौं दंपति सु प्रीति उपजाई हैं। भोगत सुभोग बहु धर्म्म मैं लीन नित ऐसी राजपदवी सु पुन्य

जोग पाई हैं ॥

### * दोहा *

एकदेव अहमिंद्र पद आयु पूरन तजि आइ। प्रभा करी के गर्भ मैं। थिति कीनी सुखदाइ॥

### * सोरठा *

पूरन गर्भ प्रमांन। सुदिन महूरत शुभ घरी। प्रसव पुत्र गुणखांनि ॥ मांन अनंद कुमार इम।

### * चालछन्द *

आनन्द नांम सुत जायो। नृप देखि महासुख पायो॥ दुति चंद कला समवालैं। दिन दिन बाढैं सुख मालैं। अति तेज सुलक्षनधारैं। देखत सबजन दुखटारैं। बल वीर्य बमैं शुभ देह। उपजावैं अधिक सनेह। गुन बरनत पार न लहिए। बुधि अल्प कहौं किम कहिए। जेवन तन देखि जु तात। बहुतैं हिय मैं हरषात। अति सुंदर रति समनारि। ब्याही आनन्द कुमार। क्रमसों पद जनक को पायो।

### * दोहा *

मंडलेश पदवी लही। पूरब पुंन्य नियोग। नवैं आउसैं छत्रपति। सुखकरि भोगैं भोग॥ चौपाई

एकदिन सभा मध्य थिति राइ। स्वामी हित मंत्री सुखदाइ कहै सुनौं नृपमो बचसार। ऋत बसंत सब जन मनहार। नंदीसुर पूजा चित धरो। पूरब कृत पातिग सब हरो। सुनिआनंद नृपति सानंद। जाय जिनंद निरखि पदवंद। सुद्ध द्रव्य बसुभाव समेत। पूजा करि बोयो सुभ खेत॥ फुनि नृप मन शंका इक भई। प्रतिमांधात उपल निरमई। रूप अचेतन क्यों सुखदेइ। संसैं नृप निज चित करेइ॥ विपुल मतीगण धर तटजाय। निज शंसैं पूछें नृपराइ। गणधर कहै सुनौ नृपभूप। जिनपूजा फल अदभुतरूप। जैसे भाव करैं इह जीव। तैसे फलको लहैं अतीव। अमरवृक्ष जानें फलदेइ। चेत न रहत

सरूप कहेइ । चिंतामन मनचिंतत करैं । सोजडत्त पदवी कौं धरैं ॥ सुद्ध सरूप बिंब अवलोक । सुद्ध भाव उपजैं गत सोक । सोवह शुद्धभाव परभाव । सुखउपजावन कारन चाव । वीत राग गुन गर्भित लसैं सो सुभाव आतम में बसैं । सोई इहफलदेइ मनोक्ष । इहकारणहैं सबसुखजोग । सुनि राजा हिए संसैंगई निर्मलबुधि नृपतिका भई । नमस्कार करि निजग्रहजाइ प्रतिदिन पूजा रचिहरषाय । राजाकियो बहुदिवस नरेस । मस्तग देख धवलजु केस । निजमनमें जान्यौ इमकेतु । भयकंपाते मानौं दुखहेत । जेष्टतनय सिरदीनौ राज । करण बिचारयौ आतम काज । सागरदत्त तपोवनधरी नमस्कार करि बैठो तीर । धर्म्म श्रवनकरि दुविधि प्रकार । लख्यौ अथिर सब जगसंसार । बहु नृप संग महाव्रतलेइ । तेरह विधि चारित्रधरेइ । तपकरते आनंद मुनीस । जेष्टमास पर्वतके सीश । बृषाकाल बृक्षतल रहैं । अचल अंग सुभध्यांन सुगहैं । सीतसमैं तटनीतट जाय । जोग धरैं निज चित्त लगाय ॥ रत्न त्रयजुत हैं दस भेद । धर्म्म धरैं पालैं बिनखेद । द्वादस बिधि अनुप्रक्षा भाइ । तप द्वादस बिधि करैं सुभाय । खोडस कारन करैं बिचार ॥ तीर्थंकर पदवी दातार ऊंच गोत बांध्यौ सुख कंद । इस बिधि तपै मुनी आनंद । एकदिना सुक्षीर बनाइ ॥ निश्चल ध्यांन धर्यौ मनलाइ । पूर्व सहोदर चर रिपु एक । सप्तमभू दुख सह्यौ अनेक । सोचर बाहन उपज्यौ आय । पंचानन की देह धराय । देखि मुनी कोप्यो बिकराल । लाल नेत्र मुखवक्र जुकाल ॥ आइ अचानक ग्रीवा गही । सब उपसर्ग सह्यौ मुनिसही ॥ करि प्रनांम निहचल धरधीर । निर्मल गुन साधी निजसार ॥ प्रान तजे सुभ भाव समेत । आनंत स्वर्ग परम सुख हेत ॥ उपजत अंतर्महूरत सार । जोबन तनसुभ लक्षण धार । बीस उदधि परमायु प्रमांन । सुख सागर में मगन बखांनि । बीस पष्यगत सासोसास ॥ सुरभि सहत लेवैं गुनरास । बिंसति सहस बर्ष जबजांहिं । मांनसीकआहार कराहिं । पंचम नरक अवधि

परवांन । करैं बिक्रिया तहां लग जांन । देवीनेत्र कमल दिनराइ । तिनसहै भोग करैं सुखदाइ। इंद्र नांम अहमिंद्र उचार । बिबिधि प्रकार करैं सुखसार । आयु मास पट द्रव्य जुलेख । जिनवर पूजा करैं बिवेक । पंचानन मरि नरकहि गयौ। मुनि उपसर्ग महादुख लयौ ॥ मुनि श्रेणिक अहमिंद्र नरेस । जिनथानक तीर्थकर देस ।

*** दोहा ***

सो बरनन मनलाइ कैं । सुनत हर्ष उपजाइ ॥ जिनकी थुति पूजा करैं । सुरपद सिवपद पाइ ॥

*** मोती दांम छंद ***

सुंदर इह जंबूदीप मनोहरं । परम सैल सुद्दटक भासुरं ॥ जामदिसाता सुक्षेत्र बिराजितं । भरतखंड सुषट प्रबिराजितं । सरपमांन मलेछ जनाव्रतं । प्रथम आरिज आरिज आव्रतं । लसत्तदेस अनेक जनाकरं । जिन बिहार पवित्र सुभाकरं ।

*** चौपाई ***

तहां सुकासी देस अनूप हैं । सकल मालव अधिक सरूपहैं ॥ पुर पुनीत बनारसि सोहती । धन सुध्यांन सजन मोहती ।

*** दोहा ***

अस्वसेन नांमां नृपति । राजकरैं सुखदाइ । बामीदेवी नारियुत । अधिक प्रीति उपजाइ ॥ शक्राग्या धनपति तहां । नगर आयु सुभकीन ॥ पंचाचर्य करै जहां ॥ तीनलोक सुखलीन ॥ असितद्वैज वैसाखकी । नखत बिशाषा जानि । सो अहमिंद्र चरगर्भथिति । संपुट सीपसमांन ॥ मुक्ता जिमतिष्टै गर्भ अंतरीख जिनराइ ॥ कुंभव्योम ज्यौं कुंभमें । लखिए व्योम सुभाय ॥ पछिम निशि षोडस सुपन । लखि फुनि पति ढिगजाय ॥ फल सुनि मन हरषत भई । बांमां अंगनमाय ॥

*** चौपाई ***

देवी सेवकरैं जिन माइ । अति आनंद महा सुखपाइ ॥ बीतेहैं नव मास अनंद । जन्म महोछव सुनि

सुखकंद । पौष मास सुभ अलिपक्ष धारि । एकादसमी तिथि कहि सार । बांमां देवी दिसि पूर्व जांन ॥ उदयादि अस्वसेन बषांन ॥

*** पद्धड़ी छंद ***

मति श्रुताकिरण बलि अवधि भास । जिनचर सुभानु तम मोह नांस । उदित त्रिभुवन परकास कर्न सतइंद्र आइ जिसनमत चरन । आयौ तब सचि पाति हरषाय। जिनवर लै सुर गिरि सिखर जाय। मंजन पूजा बिधि सकल साधि । पारस संज्ञा कहि जिन अराधि। फुनि ल्याए कहे करि अंब देइ । तांडव नट मघवा तवइ। सुर सेवन ताजि निज थांन जाइ। ऐसे शुभ जोग जुसुख कराइ ॥ दंपाति लखि श्रीजिन तन मनोग । इक सहस अधिक बछु चिन्ह जोग । उत्सव पुरमैं बहुभांति कीन । जाचिग जन मन बंछित सु दीन ।

*** चौपाई ***

बाल अवस्था श्री जिन पास । नरनारि जिन पूरैं आस । लीला करैं मंजनं मनहरैं। सब जन देखि चरन प्रभु धरैं । सुर नारी जिन अंकै जेइ । जैजै करि माता करदेइ । सुर अपनी वह सक्ति उपाइ । श्री जिन हिए आनंद बढ़ाइ । करैं अनेक बिबिधि विधि ज्ञान । बाल पन क्रीड़ा इम जांनि । आगे जिन कुमार पदधारि । और कथा सुनिए सुखकार । वह पंचानन पंचम नर्क । जासहे दुख रहित जुतर्क । सत्रह सागर आयु महान । भक्ति निकरि तिर्यंच बखांन । जलध तीन बीते इसरूप । महीपाल पुर हूवो भूप । महीपाल अभिधांन जुगही । जिन जननी को जंनक जुसही । रानी मृत्य देखि दुख कियौ । दुर्मति तपसी ब्रत गहिलियौ । पंचानल साधत सो आइ । नगर बन शिवन तिह थाय । सुर गज चढ़ि जिन बनमैं गए । क्रीड़ा करत हर्ष उरभए । करि बिहार ग्रह आवत जबैं । पंथ मध्य तपसी लखितबैं । कोपयुक्त इम वचउच्चरैं । अहो कुमार अति मान जु धरैं । मेरी सुता पुत्र इहसार । मोप्रमांण क्योंनाहीं धार । इमकहि करि

कुठार लै सोइ। दारु खंड नै जिनवर जोइ ॥ कहै पाश सुनि तपसी धीर । इह जुकाठ ताकौं मति चीर ॥ जुगल नाग यामैं सुख करैं । सो ततकाल दुःख लहि मरैं । इह सुनि कहै बड़े सुरज्ञान । ब्रह्मा विष्णु रुद्र तुम जान । ऐसो बचन कहि चीरन लाग । खंड भयौ तन उरध अभाग । जिनवर देखि दया मन लाइ । पंचसुपद तिन श्रवन सुनाय । तिस प्रभावजुग ते भुजगेंद्र। पदमावति हूये धरनेंद्र । धन्यभाग उन सर्पनसार। अंत समैं जिन दर्श निहार । लाज्जित ह्वै तपकरि बुतप्रान । जोतिग देव भयौ सोजान । प्रभु निज सोध आइ सुख करैं । पंचअणुव्रत हिए मैं धरैं। जिन तन सवगद रहत बखान ॥ वाय पित कफ को पनठान । इष्ट बियोग न कबहूं होइ। और आनिष्ट संजोग न जोइ।

## * दोहा *

तीन लोक पति जगत प्रभू । जो सोभागुन युक्त । सो पूरववत जानि फुनि । कहै दोष पुन रुक्त ॥

## * चौपाई *

अति सुख करि वासुखहु गए । त्रिशत सब्द जिनेसुर भए । तब नृप एक अजोध्या भूप । संज्ञा जिस जैंशेन अनूप । भक्ति प्रीति जिनकी हियधारि । भेट बस्तु हयभेजेसार । आइ दूत अस्तुतिबहु करी ॥ भेट बस्तु प्रभू आगे धरी । श्री जिन पूछैं अवधि सुथान । दूतजोरकर करैं बखांन । प्रथम आदि जिन बरनन कियौ । मुक्ति गमन बिबरन कहिदियौ । सुनि पारस प्रभु प्रशमन उपाय । मानुष भव इह यौंहीं जाय ॥ ए दुख दाई हैं सबभोग ॥ आतम काज करन अब जोग । प्रभू मनमैं इह भावन भाइ ॥ लौकांतिक देव तव आय ध्याय ॥ थुति बहु बिधि करि निजपुर गए ॥ बिमल सिवका ल्यावत भए ॥ इंद्रचढ़ाय साजिया जिन जबैं ॥ अश्वनाम बनपहुंचे तबैं ॥ जात रूप धरि जिनवर देह । इंद्रनल माणि तेज सु एह । दुविधि परिग्रह ताजि तिसिबार ॥ नमः सिद्धेभ्य मुखउच्चार । पंचमुष्टिक चलौंचन करैं ॥

पंचमहाव्रत दिढ़ करधैं।

*** सोरठा ***

इह धीरज अब लेइ। तीन सतक नृप छत्रपति। ब्रत धारयौ हैं सोय। श्री जिनपद परनांम करि ॥

*** दोहा ***

पोह कृष्ण एकादसी। प्रथम पहर शुभवार। कंजाशन श्री पार्श्व प्रभु लीन आतमा सार। शक्र क्षीर निधि जाइकै। कच प्रवाह करि लेइ। निज नियोग कल्यांनकर। गमन सुथांन करेइ ॥

*** अडिल ***

बेला करि उपवास देह थिति कारनैं। ईर्यापंथ बिलोकि गमन करि पारनैं। गुलम षेट पुर जाय नृपति ग्रह अभिमुखे। ब्रह्मदत्त बहुभाग भूपति जिनवर लखे ॥

*** दोहा ***

सन्मुख ह्वै करजोरि नमि। अस्तुति करै हरषाइ। नौधा भक्ति सुगुन सहित। पाडि गाहे जिनराइ।

*** सोरठा ***

प्राशुक लै आहार। अषैं निद्धि सुख उच्चरैं। सुरगन हर्ष अपार। पंचाचर्य तहां करैं ॥

**चौपाई**

गहन आइ लागे निजध्यांन। महा घोर तप तपैं महांन। बन आहिछत नगर तट एक। लता बृक्ष नग सघन अनेक। तहां पार्श्व प्रभु अविचल अंग। कायोत्सर्ग रहित सब संग। धरयौ ध्यांन आतम रसलीन। कर्म करन बैरी दलहीन। कारन कल देस इक भयो। सो सुनिए ग्रंथन बरनयो। पूर्बक मठचरत तपकर एव। संबर नांम जोतिषी देव ॥ तिस बिमांन बिहरत बनआय। जिनपर छत्रोपम ठहराय। अवधि बिलोकि कोप अति भयो ॥ लालनेत्र करि उपसर्ग ठयो। महाबात झंझा झंक करैं ॥ बृष महांन गजरसे ढरैं। घटा घोर घन गर्जत बहु ॥ चपल चलत चला चला

चला चहू । मूसल प्रमांन धार जल धार॥ बरषावैं उपलादिक भार । सरपस्यांम तन बरन दिखंत । लोपन लालजीभ ललकंत । अति फुंकार फुंकारैं झाल ॥ निकल महा अगनि समलाल । भस्म होय बन बेलि बिहंग ॥ निहचल हैं तहां श्री जिन अंग । सिंघ स्याल सूकर बिकराल । वानर व्याघ्र गजानन भाल ॥ मार मार करि शब्द प्रचण्ड । मत मतंग सोर कर चंड । और अनेक वैक्रिय धार । कर उपसर्ग महादुखकार । आसन तव कंप्यो धरनेंद्र ॥ तुरत आइ शिरनाय जिनेंद्र ॥

## * दोहा *

निर्विकल्प प्रभू मन भयो । सप्तम गुण तिथि धारि । चेतन गुण निर्मल करन ॥ धर्म्म शुक्ल सुबिचार ॥

## * चौपाई *

पदमावती प्रभूतन सार । असन करण छत्र सुधारि । संबरदेव भज्यो भयमांनि । नरकबन्धकरि अति दुख खानि ॥

## * दोहा *

क्षायक श्रेणी प्रभू चढ़े । मनधरि अति बैराग । गुनथांनक चाढ़ि वार हैं । आतम गुन अनुराग । च्यारि घातिया नाश करि । प्रगट्यो केवल ग्यांन । पारस जिन छदमस्थ रहि । अष्ट एक परमांन । पौष कृष्ण एकादसी ॥ इन्द्रादिक सब आय । कल्यानक पूजाकरी । हिय मैं हर्षउपाइ । समोसरन धनपति सुरचि । भूमि मुकर समसार । श्री मंडप द्वादश सभा । हिए भक्ति अवधारि । सर्वसंघ षोडस सहस । गणधर दस गुणवन्त । च्यारि ग्यांनधारी सबैं । श्री जिन भक्ति धरंत ।

## * सवैया *

ग्यांन के प्रकास लोका लोक कौं प्रकास भयो चेतन सुदृग ग्यांन सतासुख धारी हैं । आठ प्रातहार्य बिराजमांन आठोंजांम ॥ छयालीस सुगुन शुद्ध काया अविकारी हैं । देश देश धर्म्म उपदेश देत जिनराइ सुचि निजगुन पर्याय के बिचारी है । ऐसो अरहन्त पद परम पुनीति जग सोवो भव्य

जीवतुमैं बिनती हमारी हैं ॥

*दोहा*

सेष आय इकमास जब । रही पार्श्व जिनराइ । तब सुमेरगिर शिखरपैं । प्रभव कूटपर आइ ॥ जोग ध्यांन करि सिव गए । भए निरंजन सिद्ध । निज अनुभूति अनंत जुत । लही आपनी शिद्धि । और कोडि इक मुनि तहां । पैंतालीस जुलाख । सहस सात सत सात दस ॥ मुक्ति गए श्रुतभाष ॥ प्रभव कूट सोहैं महत । जो बंदै मनधारि ॥ नरक पसु गति नासिकैं ॥ सुर नर गति संचार ॥

चौपाई

आगे एक कथा सुनि राय । प्रभासेन नाजि संघ चलाइ ॥ इसही आरिज खंड मझारि । अगर देस देसनि शिरदार ॥ गंधपुरी नगरी तहं एक । बसैं पूजा सब सहित बिवेक ॥ प्रभासेन भूपतिबडभाग । जैन धर्म्म मैं अति अनुराग ॥ शांतिजुसेना है पट नार । शील सुलक्षन रूप अपार ॥ दंपति भोगैं भोग महंत । जात न जान्यौ काल अनंत ॥ तिनकैं सुत उपजैं मरजाइ ॥ इह दुख नर नारी अधिकाइ ॥ एकदिन बन क्रीडा कौं गये । सोम सेनि ध्यांनी लखि लये ॥

*दोहा*

करजुग जोर नमोस्तु करि धर्म्म बुद्धि मुनि देइ । प्रश्न कियौ नृपकौं । सुनि मुनि बैन कहेव । जो तुम जात्रा शिखर की । करो नारि नरदोइ । बिंब प्रतिष्टारचिहुतहैं । तौ उत्तम सुत होइ ॥ कोट प्रोषधी ब्रत फल । तुम जानौं भवि लोइ । एक कूट बंदन करत मन बंछित सुख होइ ॥ इह सुनि कैं आयौ नृप गेह । जात्रा करन धस्यौ हिए नेह । देशदेश के भव्य बुलाइ ॥ चौबिधि संघ चल्यौ ले राइ । पूजा दांन करत तहं गए । सिखर सुमेर निहारत भए ॥ पार्श्वनाथ प्रतिबिंब भराइ ॥ करि प्रतिष्ठा हिए हरषाय ॥ और कूट सब पूजन कियौ । दांन आहारादिक नृपहि दियौ ॥ संचैं पुन्य कियौ बहु तहां । फुनि आयो जिन मंदिर जहां । राज करत बीते दिन स्वल्प । भावसेन सुत सुगुन अनल्प । जन्मोत्सव कीनो भूपाल । जाचिग जन

सब किए निहाल। क्रम क्रम वृद्ध भयो सुतसार। कीनौ पानिग्रहन बिचार। कारन पाय भयौ वैराग। अवकीजे आतम बैराग। इह संसार असार महंत। भ्रमत भ्रमत नहिं पायौ अंत

* दोहा *

राजा सुत कौं राज दे। श्रुत सागर सिरनाइ। पंच महाव्रत आदरैं। यासैं कर्म नसाय। तपकरि प्रभव सुकूट पै प्रजासेन मुनिराज॥ और अनेक मुनीश जुत कीनौ आतम काज। जोनर नारी भावसौं॥ जात्रा करैं नरेस मन बंछित फल पाइ। सिवलहै न शंसैं लेश लौहाचार्य आरज गुरु। कीनौं सिखरविलास। भाषा मनसुख सिंधु कहि॥ पूगी जिन मन आस

इति श्री काष्ठा संगे लोहाचार्य विरचते तीर्थमहातम्येसुमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुद्ध सागरेण वरणनं प्रभव कूटपैसे श्रीपारश्वनाथ मोक्षगमन २४॥

* सवैया *

सुमाति सदन भव कदन मदन हर सिद्धारथ जनक सुहाटक बरनहैं। त्रसला सुमात गात उन्नत धनुष सात बर्ष बहतरि सु थिति जु धरन हैं। पंचानन चिन्ह पर कुंडलपुरी बिष्यात ऐसो महाबीर सिवसंपति करन है॥ मनसुख उदधि निहार काल पंचम मैं और कोई नांहि जिन चरन सरन हैं॥

* दोहा *

सन्मति सन्मति देत हैं। परम परम रसलीन। सरम सरम अनुभूति जुत। धर्म्म सुधर्म्म प्रवीन। महाबीर के चरित को। अल्प कथन मन धारि। सुनि श्रेनिक गोतम कहैं। मन बंछित दातार।

* चौपाई *

छत्राकार नगर मनधारि। बसैं नारिनरसब सुखकार। धन धान्यादिक सोमालसैं। अतिगुणवांनसुजनतहं बसैं। सुर सम मनुष रूप अति धरैं। बनितासुर बनता दुति हरैं॥ घरि घरि मंगल गीत बिलास बिद्यु

तडत नारी मुखहास । ऐसी सोभा नगर वखांन । बरनत श्रम उपजै मन आंन ॥ नंद सुबर्द्धन तहां को भूप ॥ सुंदर तन अति अधिक सरूप । धर्म्म बुद्धि धारक धर्मग्य । गुनिजनगुन जानन बहुतग्य ॥ दर्शन ज्ञांन चरित्र सुधार । निहचैं गुन निज हिए बिचार ॥ जाचिग जन सुद्रुम सम जांनि ॥ जिन पूजा बृत अति हित आंन । ग्रही कर्म्म षट साधन करैं । बहु विवेक पटना बिस्तरैं । बीरवती रानीजुत सार । सुंदर सुगुन सुलक्षन धार ॥ मुख मयंकतैं अति सोभाय । बरनत बहुत कथा बढि जाय ॥ तिन कि तनुज जन्म इक लियौ ॥ बंछित जनम न बंछित दयौ ॥ सुभ महूरत सुभ लगन निहारि । अश्व नंद अभिधांन सुधारि । क्रम क्रम बालकुमार सुभयौ ॥ प्रग्या प्रबल सुगुन जुतथयौ । इक दिन पौष्टिल गुर ढिग जाइ ॥ धर्म सुन्यौं अति हित मनलाइ । आगम अर्थ सुगुन मन जांनि । तिनैं करि परकास्यौ ग्यांन । प्रशम भाव हिए मैं लिये । परभव भाव सकल तजिदिये । ग्रंथ त्यागि जिन दिक्षा लई ॥ तप करि अति निर्म्मल बुधिभई । आराधनां ध्यांन धरि लेइ । कृत कर्म्मनि जलांजुलि देइ ॥ घोर बीरतप धीरज धरैं ॥ निज आतम गुन निर्मल करैं । अनसन अमोदर्य बिहिरंग । षट प्रकार तप करत अभंग ॥ प्रायश्चित बिनय मन लाइ । अभ्यंतर तप करत सुभाइ । षोडस भावन भावैं सार । निहचैं अरु विवहार बिचार तीर्थंकर सुनांम को बंध । ऊंच गोत को कियौ प्रबंध ॥ सल्लेखन बृत निज मन धरैं । अंत समैं सुभभावजु करैं ॥ सोलम स्वर्ग अच्युत अभिरांम । निर्जर पति पद लहि सुखधांम ॥ पुष्पोतर बिमांन मन हरैं । अंतमहूर्त तरुनताधरैं । द्वाविंशति सागर मित सही । लेस्या शुक्ल सहित तहां कही ॥ बाईस पक्ष बितीहं जबैं । सुगभितस्वास लेइ शुभजबैं । ग्यारह अगुन बरस अंतरै । मानसीक भोजन आचरैं ॥ सदा मनः प्रवीचार सुभोग । भोगैं भोग आपने जोग ॥ अष्टम अब निलग अवधि निहारि ॥ काया

वैंक्रियां तहां लगधारि । तीन हस्त उन्नत तनलसैं । इसप्रकार सुभ सुरपुर बसैं । भोगत भोग काल बहु बीत । सुखसागर मैंमगन सुरीत । मास एक षट आयु प्रमांन । माला मुर्छित लखि जिय जांन । बिना सीक निज तन लखि लियौ । जिन पूजा करनै चित दियौ । सुभ सुभाव चित अति बैराग । भोग प्रमांण किए सब त्याग ॥

* दोहा *

बरनन कर जिन अवतारकौं । सुनौं मगधपतिईस ॥ अंतम प्रगट जिनेंद्र प्रभू । गुनगाउ नामि सीस ।

*चौपाई*

जंबूदीप मनोहर सार । भरतक्षेत्र इहअति सुखकार । आरजखंड बिदर्भ सुदेस । बसैं सुजन जन उत्तिम देस । कुंडलपुर नगरी इक बसैं । अति अद्भुत सुंदरतालसैं । सिद्धारथ नामां भूपती । राज करैं राजा सम कितो ॥ त्रमलापट रांनी मनहार । गुन गर्भित सुभ लक्षन धार । मनईसित नारी पति जदा । इंद्रअवधि करि जांन्यौं तदा ।

* दोहा *

सिद्धारथ नृप गेंह तुम । जाउ धनद मनलाइ । नगरी रचि मणि बिष्टि करि । शक्र कहैं हरषाय ॥

* सोरठा *

आज्ञा निज सिर धार । आइ नगर रचना करी । कोटि सार्द्धशतसार । दिन प्रति मणि बरषाकरैं ॥

* दोहा *

रसामिति मास बितीतियौ । मंगल नृत्य सुगान । सित अषाढ़ खष्टी स्वस्वनि । ऊषानक्षत्र बखान ॥ पश्चिम निसि षोडस सुपन ॥ लखे महा सुखकार । गज मुख प्रविसत अंत मैं सोच्युतेंद्र थिति धार ॥

*** चौपाई ***

प्रात सूर्य शुभ शब्द अपार । जैजै रव बहु जनउच्चार । तिन करि जिन माता प्राति बोध । उठि अंजन करि काया सौधि । लई सहचारी संमि अनेक । मृदुबानी युत हिए बिबेक । पति के निकट जाइ हरषाइ । अर्द्धासन थिति दीनौं राइ करि । आलाप परस्पर जबैं । आगम कारन पूछो तबैं । पहर एक निशि अंत प्रमान । षोडस सुपन लखे सुखदान । तिनके फल जंपो मनधार । सुनत श्रवन हित तन मन हार । अवधि चक्षु सिद्धारथ भूप । लखि बरनै फल अधिक अनूप । तीनलोक मंगल सुखकरन । सेवैं आइ सुरासुर चरन आतम उपजै अति सुखकार । आतम काज करि सिवपद धारि । सुनि तृशला देवी सुखपाइ ॥ निज गृह गमन कियो सुखदाइ । शुभमन सापित बुध समेत । आए गर्भ कल्यानक हेत । थापे सिंघ पीठ दिपती । करि अभिषेक हरष सुरपती बस्त्राभरण भेट बहु देइ । निज निज थांनक गमन करेइ ॥

*** दोहा ***

सित अषाढ़ खष्टी शुदिन ॥ ऋषि जुज्जखानाम । गर्भ कल्याणक आइकैं ॥ कीनौं पहिलै थांम ॥

*** चौपाई ***

श्रीह्री धृति देवी मनलाइ । कीरति बुधलक्ष्मी हरषाइ । गर्भ सोधना सेवा करैं । श्रीजिन भक्ति हिए मैं धरैं । षट पंचास कुमारी सुरी । सेवाकरन रहैं आतुरी । अन्य देव बनिता तहं रहैं । बहु रस काव्य पहेली कहैं ।

*** सवैया ***

केई सुचि जल ल्याइ मंजन करैं सुभाइ केइ खड़ी नाना बिधि अंस लिए करमैं । केई बहु बिधि सूं करत बिबिधि रूप केई सु सुमन लाइ सेज रचैं सरमैं । केई अंग रक्षा करैं सुकरि दिखावैं केई एक नागबेलि देइ हार हिए हर मैं । केई काब्य रसकी पहेली पूछैं नृत्यकरि केई गुन गावैं सुसर्म जन दै घर मैं ॥

## * दोहा *

इस बिधि देवी सेवकरि ॥ जिनमाता हरषाय । मास जुनव बीते तहां । जन्मोत्सव सुनि गाय ॥ सित त्रयोदशी चैतकी । जन्मे श्री जिनराज । सौ धर्म्म साग मनकर । लेकै सकल समाज ॥

## * चौपाई *

चतुर निकाय देव पति युक्त । आए जैजै रव मुख मुक्त । सची ल्याय जिन पति करदेइ ॥ गज चढाय निज हरष धरेइ ॥ सुरगिर जाइ सची पति जवैं ॥ क्षीरोदिक जल ल्याए तवैं ॥ सहस एक वसु कलस मनोग श्री जिन राज नह्वनके जोग । करि अभिषेक पूजि जिनचर्न । भव अनेक पातिग के हर्न । फुनि आए कुंडलपुर बीच । जग मग पुर सुर मुकट मरीच । जिन जननी के अंके देइ । तांडव नृत्य जु सक्र करेइ । नगर महोत्सव तब अति भयौ । सुरपति जव निज पुरमैं गयो । सिद्धारथ नृप हरषंत । उत्सव करि कहूं लहुं न अंत । जिन बालक पद क्रीडाकरैं । नरनारी जनमन अति हरैं ॥ सरभऊ भेष धरैं मनलाइ । केकी कोकश रूप बनाइ । नृत्य तताथव धुनिधार । जिन गुन गान सुमुख उचार ॥ पावअटपटे जिन भूधरैं । घुटुवन चलत सकल मनहरैं । गले माल मुक्ता फल लसैं । कटि करिधनी कमर शुभ कसैं ॥ हीराकनी जड़त किंकिनी । रुण झुण चरण होय रवघनी । करपल्लव मैं मूंदरी देइ । हिए हरष जन मन हर लेइ ॥ सुर वालापन भेष बनाय ॥ जिनवर संग केलि सुखदाय ॥ काव्य कला अरु श्लोक बखान । दृष्ट कूलवहु विधिमन्न आंन । अंतर्लपन छंद उच्चरैं । बहुरि लायका वहुविस्तरैं ॥ सुर मुनिहर्ष हिएमैं धरैं । तदनुकूल ह्वै सेवाकरैं ॥ द्वितिय इंदु जिम कला प्रकास । क्रम क्रम जिनतन बढैं हुलास ॥ भई कुमार अवस्था जवैं । पंच अनुव्रत धारे तवैं ॥ सुरमिलि अश्वरूप अवधार ॥ जिन चढाय वहु करैं विहार । चपल चाल छिन छिनक्रम वहै । जिम जिनमन तिम हय गतिगहैं । फुनि सुरगज संगार समेत । देखत सब जनमन हरलेत ॥

बस्त्राभूषण करि सोभंत । कर असवार सुजिन हरषंत । वनउपबन बिचरैं मनलाइ । इस प्रकार सुर सेव कराइ । जिन क्रीडा जो करैं मनोग । सो को कबि पटु बरनन जोग

*** दोहा ***

सुरुगुरु शक्र नकहिसकैं । गण धर लहनपार । मंद बुद्धि अतिज्ञमैं । किम गुरु वरनौं सार । जोनग अतिमग्र मन गज ढाहन समर्थहीन । सोनग ससंक ज्ञुसि । सुबली किमढाहैं अति हीन ॥ बरस तीस इस बिधि प्रभु । बालक्रीड सुखलेइ । मति ज्ञांन क्षयो पश महि । प्रगट पूर्ब भव जोइ ।

*** चौपाई ***

लखि पूरब भव श्री जिनराज । चित बिरक्त परनंम समाज । छिनभंगुर जांन्यौं संसार । अंजुलजल बिनशत नहिं बार । अथिर देखियत सब जगरीति । निज आतम सौं करिए प्रीति ॥ इह जबलगि चिंतैं जिनराइ । लौकातिक सुर तबही आय । करमु कलितकर अस्तुति करैं । बारबार चरनन में परैं होजिन जग तुम तारनहार । तुम बिन कोइह करैं बिचार । धर्म्म जिहाज प्रकाशन बीर । जग जल निधि तुम तारनतीर ॥ तुमबिन जगत जीव दुखलहैं । लौकांतिक सुर थुति इम कहैं ॥

*** सोरठा ***

फुनि निज थांनक जाइ । ब्रह्मलोक बासी अमर । चरचा करैं सुभाइ ॥ द्रव्य छहौंनिर्णैं नियत ॥

*** चौपाई ***

शक्र इंदु प्रभु सिव का ल्याइ । प्रशम युक्त जिन राज चढाइ ॥ गए खंडबन श्री जिन देव । नर खग करत सुरासुर गेह । परिगहपरि हरवीर जिनंद ॥ अघहरन कर्म अरि फंद । नमः सिद्धेभ्यः आननयो ॥ पंचमहा ब्रत जिन गहिलियौ । पंच मुष्टिक चलौंचन धार । निज गुन ध्यांन लगे सुबिचार । सुरपति तप कल्यांनक कियौ । अस्तुति करि बहु हरषित हियौ ॥ कचमणि भाजन धरि सुरराय । क्षीरोदधि परवाह

कराइ ॥ निज पदथान जाइ सुखकरैं । जिन पूजा बहु विधि विस्तरैं । * दोहा *

मागशिर दसमी कृश्न शतहस्त रिषि शशिचार नगन दिगंबर रूप प्रभू । लियौ महातप सार ॥ व्रत वेला जिन राज कर । अशन ग्रहन के हेत ॥ कुंडलपुर परवेस कर । ईर्यापंथ चितदेत * चौपाई*

कुंडल नांमां नृप लखि महावीर । भक्ति सहित ह्वै आयौ तीर ॥ तिष्ट तिष्ट प्रभू प्रासुक अन्न । जल प्रासुक तुम जगमैं धन्न । चरन पूछाल अरच बहुदर्व । जन्म सुफल निज जांन्यौं सर्व ॥ क्षीर भक्ति अक्षय निधि चवैं ॥ जै जै आरव बहु सुर रवैं । पंचाचर्य अमर मनलाइ । नृप ग्रह करैं अधिक हरषाय । दुगुन सार्द्ध षड रत्न सुइष्ट । माहिमां कहिकहि करैं सुविष्ट । * दोहा *

जिन आहार करि बन गए आतम गुण मनधारि । निश्चलांग करि ध्यान धरि । परम प्रीति सुखकार ॥

* चौपाई *

धर्म ध्यान मन करैं विचार । विविधि भांति तप तपै सुचार । मन पर्यै उपज्यौ तत्काल । हीन भई भव भ्रमन कुमाल । दर्शन ज्ञान चरित्र विशेष । सब दूषन तजि कर प्रति लेख । घोरवीर चर्य्या तप करैं । माहा वरपातैं उचरैं । सत्माति धरी हिये प्रभुधार । सम्माति नांम कहैं संसार । दिन दिन बढती पदव जोइ । वर्द्धमांन कहते सब लोइ । * दोहा *

सब जिनेंद्र के अन्त मैं । जनमे तीरथ नाथ । यातैं धर्म जनेस सुनि जपैं जांनि शिवनाथ । द्वादस वर्ष प्रमांन प्रभु । रहे छद्मस्थ अखण्ड । फुनि केवल ज्ञांनी भए । तीन भुवन मार्तंड । आप सुरा सुनरंपसू । विपुलाचल बनथांन । दशमी सित अषाढ़ शुभ । कीनौं ज्ञांन कल्यांन । सर्वसंघ चौदह

सहस ।। गणधर ग्यारह जांनि । विद्यमान सो तीर्थ पति । वर्द्धमांन अभिधांम । आयुषा को अन्त लहि । यही शैल के शीस । बिपुल कूटपर ध्यांन धर । होइमुक्ति के ईस ॥

## * सवैया *

एक जिनराज शिवथांन मन वचन काय भाव सेती जात्राकर शिवपद लहै हैं । शिषर मुनिर बीश जिन शिवपद लह्यो औरहू अशंख मुनि सुस्वभाव गहे हैं । ऐसो क्षेत्र नर्कतिर्यंचगति क्यों न नांशैं जायतेई जीवजे अचल पद चहे हैं । बिना पूर्व पुन्य ऐसे क्षेत्र मैं न जाइ जीव मनसुख सिंधु ध्रुव जांनि ऐसैं कहे हैं ॥

## * दोहा *

इह विधि शिषर बिलाश की । रचना सुनि भग देस । करि प्रनांम निज ग्रहगयो । संसैंरह्यो न लेस । कल्यांणक चौबीस जिन । बरन्यो शिषरविलास । भाव सहित जात्रा करैं । लहैं मुक्ति बिधि नांश । भाषा सिषर सुमेर की । सुनैं निरंतर सोय । नरपद सुरपद सौं लहैं । मन बंछित फल होइ ॥ **चौपाई**

मूल ग्रंथ करता महावीर । फुनि गोतम श्रेनिकते हितधीर । ग्रन्थकार तदनुतर जांन । निजमन चितदे सुनौ सुजान । काष्टा संघ जैन आमनाय । मथुरा गछ भव्य सुखदाय । पुष्करगण गुरु मूल बखांन । लौहाचारिज कृपा निधांन । तिनके पट्ट बहुभए जे जती । है निरग्रंथ भए सिवपती । महीचन्द गुरु उपजे संत । तिनको पट्ट माहा गुनवन्त । दीपचंद फुनि भए गुनज्ञ । सकल कला जल निधितज्ञ । तिनके पट्ट भटारक एक ॥ बिदित भए जग सुगुन अनेक । इंद्र प्रस्थ पद पदवी धार । नांम गुलाल कीर्ति सुखकार । तिनके शिष्य ब्रह्म ब्रतवांन । हैं संतोष जलधि अभिधांन । सिष्ट मिष्ट वादी गुनवंत । सबविद्या निधि महत महंत । सकल शास्त्र पाठी सुखधार । भविजन धर्म्म प्रकासन हार । जथानांम

तैं सो गुन लियो । साम्यभाव अमृत रसपीए ॥ तिनके सिष्य अल्पधी धार। मनसुख सिध संग्या
विस्तार। तिन इह सिखरमहातम ग्रन्थ । भाषा कियो जांनि सिवपंथ॥ * दोहा *
सब्दकोश अरुन्याय के। तर्क छंद लंकार। ध्यंमल काव्य प्रबंध श्रुति। पढ्यो न एकोसार। अक्षर मात्र
सब्द पद । अंश बंध जो होइ । पढ़ो सुनौं तुम शुद्ध करैं। दोश न दीजो कोय। धर्म्म ध्यांन साधन
निमत। भव्य जीव हित जानि। सिखरमाहातम भाषा कियो। नहि विद्या अभिमान ॥ बांनवेद शसिगये।
विक्रमार्क तुम जांन। अस्त्र निशित दशमी सु गुरु। ग्रंथ समापत ठान । भू रवि शशि सुमेर सम आयु
ग्रंथ की होइ ॥ पढैं पढावैं सुनहिं जे। सिवपद पावैं सोय ॥

इतिश्री काष्ठा संगे लोंहाचार्य विरचंत तीर्थमहातमेखुसमेदाचल महात्म्ये भाषायामन सुद्ध सागरेण वरणनं महावीर चरित्र संपूर्ण ॥२५॥

श्री रस्तु कल्यांणमस्तु शुभं भूयात् । बांचैं पढ़ैं त्यानैं मंगल दाता शुभ होहु। संपूर्ण लिख्यौं मिती
फागण शुक्ला ३ । सम्वत १९४१ का ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥